भजन-माला

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
249411

विषय-सूची

गीत	पृष्ठ	गीत	पृष्ठ
अ		आओ बसायें मन मंदिर में	258
अरे मन धीरज क्यों न धरे	19	आसरा इस जहाँ का	268
अजब हैरान हूँ भगवान	22	आया शरण ठोकरे जग	269
अफसोस मूढ़ मन तू	22	आओ हंस की सवारी	270
अरे इन्सान अरे इन्सान	24	आदमी हर पल धरा पर	271
अम्बे चरण कमल हैं तेरे	42	आगे है जो देख उसे	272
अँखियाँ हरि दर्शन की	121	आया हूँ शरण में तेरी	285
अब लगाले लगन	137	**इ ई**	
अवगुण बहुत किया दयालु	188	इस तन में रमा करना	23
अब तुम कब सुमिरोगे राम	216	इसी वाणी से गूंगे ही	25
अईला कुछ न कईला	250	इस जहाँ में अगर आदमी	26
अमारी नाव ने गुरुवर	254	इबादत है किसी नाशाद को.	27
अधरम् मधुरम् वदनम्	264	इस हिन्द के है वीरजवां	191
अधमो को नाथ उबारना	265	इक राधा इक मीरा	210
अगर है ज्ञान को पाना	266	ईश्वर अल्लाह वाहे गुरु	266
अमर आत्मा सच्चिदानन्द	267	इतना करना हे मेरे दाता	361
अम्बें तू है जगदम्बें काली	374	**ए/ऐ**	
अरे द्वारपालों कन्हैया से	393	एक समय राजा दशरथ	27
आ		ऐसो जतन बता जा रे	28
आनन्द स्त्रोत बह रहा	25	एक झोली में फूल खिले	29
आसमान पर उड़ने वाले	171	ऐसे राम दरस रस बरसे	30
आराम के साथी क्या थे	175	एक दिन राधे ने बाँसुरिया	30
आयेगा जब रे बुलावा	176	ऐसी लागी लगन	81
आके दरश दिखादो	184	ऐसा प्यार बहादे मैया	133
आजे आही काली आही	244	ऐसे हैं मेरे राम	180
आज थाम ल तु ज्ञान के	249	ऐ मेरी लाडली एक कली	193

ऐसा वरदान दे दो हमें	201	कान्हा कन्हैया नन्दलाला	42
ऐ मालिक तेरे वन्दे हम	230	कभी राम बनके कभी	43
एक हड्डी मुझसे करने	273	कौन कहते हैं भगवान	44
ऐसी शक्ति हमें दो दाता	274	कण-कण में है झाँकी	45
एक बार तो राधा बनकर	341	कैसे जाऊँ मैं पनिया भरन	98
एक दिन तो इस जग से	384	किसी देवता ने आज मेरा	141
उ/ऊ		कोई लाख करे चतुराई	147
उजल बगुला बिन	106	कण-कण में समाये हो	179
उमर का पंछी उड़ता जाये	199	कभी फुरसत हो तो जगदम्बें	186
उधौ कर्मण की गति न्यारी	214	कोई कही री हरि	200
उद्धार करो भगवान	380	कबहुँ किन्हों न भजनवा	207
ओ/औ		कान्हा बंशी बजाये	208
ओ दुनियाँ के रखवाले	31	कोन जनी कोन बेरा	243
ओ गौंवों के चरैया रे	32	किसी गिरते को उठाओ	275
ओम साईं जय साईं	339	करम खोटे तो ईश्वर के	276
ओम नमः सिवाय तू जपले	386	क्या लेकर तू आया	276
क/ख		कमाले धर्म धन प्यारे	277
कटुक वचन बड़े काम के	28	कौन बड़ा परिवारी हमसा	277
कान्हा तोरी जोहत	34	किया था जो तुमने वादा	278
कभी प्यासे को पानी	35	करूँ आरती अम्बे गायत्री	348
कृपा की न होती जो	36	कृष्ण जनम भयो आज	366
कर्मों को भक्तों बना के	36	किया तन और मन अर्पण	370
कभी-कभी भगवान को	37	कभी न बिसरू राम को	376
कहाँ जा छिपे हो प्यारे	38	कोई ऐसा सुन्दर जग में	385
काजल भगवत प्रेम का	39	**ख**	
कोयले की ये डगर है पगले	39	खालो मीठे-मीठे बेर	46
कलियुग की काली रात गई	40	**ग**	
कान्हा है चुपचाप तो	41	गंगा तेरा पानी अमृत	47
कहाँ छिपे हो अरे कन्हैया	41	गंगा जी की भक्ति	50

गुणगान करिये राम का	50
गोकुल बाजे बधाई	51
गजाननं भूत गणादि सेवितम्	52
गोविन्द हरे गोपाल हरे	67
गोविन्द की जय-जय	116
गिरना नहीं है सम्हलना	149
गोविन्द गोकुल आयो	154
गिरजा के लाल गणराज	160
गुरु चरण में जब	168
गुरु मातु पिता	189
गुरुदेव मेरे तुमको भक्तों	194
गुरुदेव अपने दास पर	200
गोद में बसे गंगा मैया के	235
गुरुदेव चरण मा तोर	238
गुरुजी ना नाम नी हो	253
गुरुदेव दया करके	279
गंगे नमामि नमामि	280
गुरु मेरी पूजा	349
गाइये गणपति जगवन्दन्	353
घ	
घायल बनाने वाले	49
घर-घर में महके प्यार	51
घर में भजन कभी	53
घनश्याम तुम्हें ढुढ़ने	54
घर आये मेरे राम-लखन	148
घट-घट में जो रमा है	175
घर में पधारो गजानन जी	227
घुंघट के पट खोल रे	383
च	
चादर हो गई बहुत पुरानी	55
चमन गुलज़ार जो करते	56
चली जा रही है	57
चेत रे गुमानी फिर से	58
चित्त ना धरो चित्त	59
चम्पा फूल आधी रात	228
चल संगी भोला ल मनाबो	242
चुटकी भर सिंदुरवा	248
चलो साथियों एक आँगन	281
चार दिना रो चमक	282
चली जा रही है उमर धीरे	381
छ	
छम-छम बाजे रे पायलिया	32
छोटी-छोटी गैया	60
छोड़ दे हर अवगुण	60
छोड़कर सारे पागलपन	135
छत्तीसगढ़ दाई तोर	242
छम-छम नाचे रे मीरा	246
ज	
जय-जय माँ जय-जय माँ	47
जल जइयो जल	52
जय माधव मदन मुरारी	53
जिसकी धरती चुम रही है	58
जीवन में अमृत रस घोल	61
जग में सुन्दर है दो नाम	61
जगत में जो भी आते हैं	62
जो बैठे चरणों में तिहारे	62
जल जाये जिव्हा पापिनी	63

जाग मुसाफिर क्या सुख सोये	63
जब भक्त नहीं होंगे	64
जब मोहन के अधर चढ़ी री	65
जब नैया तेरी डोले रे	66
जब तेरी डोली निकाली	66
जीवन ज्योति जगे माँ	87
जय राम कृष्ण राम	140
जो बीत गए हैं	141
जय जय जननी श्रीणेश की	143
जय–जय मंगल मूरती	148
जय–जय नारायण	157
जरा इतना बता दे कान्हा	159
जगत में स्वारथ का व्यवहार	161
जय शंकर सुखराशी	167
जय–जय शंकर कृपालु	167
जय–जय भगवती सुरभारती	168
जायेगा जब जहाँ से	176
जपिऐ नित राम नाम	181
जय माँ जय माँ	185
जय जय जय हे वीणापाणी	186
जगमग जगमग हो राहें	204
जीवन की शाम आई	206
जय सरस्वती वर दे	208
जग का रिस्ता कच्चा धागा	211
जपो राम जपो श्याम	215
जपा राम राधेश्याम	216
जागो मोहन प्यारे	219
जीवन सुना होता है	225
जिनगी के आँसु ला पोछ	236
जय गायत्री मईया	240
जय जननी दुर्गा माई	241
जय हो जय हो गणराजा	243
जैसी करनी वैसी भरनी	246
ज़िन्दगी एक किराये का	283
जीवन में कुछ करना है	284
जब कोई नहीं आता	284
जय जय हे जगदम्बें माता	285
जिसने पकड़ी प्रेम की डोरी	286
जग जननी जय माँ अम्बें	287
जिन्हें है मोक्ष की इच्छा	288
जिसको नहीं है बोध	289
जीवन तुमने दिया है	336
जीवन बड़ा अनमोल है	337
जो करते रहोगे भजन	338
जनम तेरा बातों ही बीत	346
जो शरण गुरु की आया	347
जय–जय राम रमैया	353
जैसे सूरज की गर्मी से	355
जय गणपति वन्दन	363
जपले हरि का नाम	364
जहाँ डाल–डाल पर सोने की	373
जीवन के दिन चार है पगले	377
जब होगा सच्चा प्यार	380
जिन्हके हृदय हरिनाम बसे	381
झ	
झन पियो दारू गाँजा	237
झीनी झीनी बीन चदरिया	324
झुला झूलत बिहारी वृन्दावन	351

ठ		तु अपने आपको इन्सान	198
ठुमक चलत रामचन्द्र	132	तेरा रामजी करेंगे बेड़ा पार	217
ठठरी छोड़ चले बन्जारा	132	तेरी करूँ मैं वन्दना	232
त/थ		तू रंगाई जाने रंग मा	254
तू करले आज हवन रे	13	तेरी याद दिल में	289
तुम्हारी जय जय हो	16	तेरी हीरा जैसी श्वाँसा	290
तेरा नाम सबके लब पे	16	तू केवल रखवाला	291
तुम्हीं शांति हो विश्व की	17	तुम्हें तज मैं कहाँ जाऊँ	292
तेरी पनाह में हमें रखना	18	तुलसी महारानी नमो नमः	350
तूने बंशी तपस्या करी	23	तन का तनिक भरोसा	351
तेरे एहसान का बदला	55	तुम मेरी राखो लाज हरि	360
तुम न आये प्रभु जी	69	तुम बिन मोरी कौन खबरले	363
तोरा मन दर्पण कहलाये	70	तू राम भजन कर प्राणी	376
तूने अजब रचा भगवान	70	**थ**	
तुम्हारा प्यार मिल जाये	71	थोड़ा ध्यान लगा गुरुवर	192
तोरी गठरी में लागा चोर	71	**द**	
तेरी माया का न पाया कोई	72	दया करो गणराज	24
तीन लोक के स्वामी दौड़े	73	दो दिन का जग मेला	49
तु दयालु दीन हौं	74	दशरथ ने कहा यूँ कैकई से	78
तेरी मेहरबानी का है	75	दाता एक राम जी भिखारी	78
तेरी बन जायेगी	76	दुःख में मत घबराना पंछी	79
तु लाख हिफाज़त कर ले	77	दुनियाँ से जा रहा हूँ	80
तेरा प्यार पाके हमने	93	दीनन दुःख हरन देव	80
तु शब्दों का दास	133	दाग तो धोया नहीं	81
तुम चन्दन हम पानी	134	देख तेरे संसार की हालत	145
तू ही राम है तू ही रहीम	147	दुनियाँ में आये हैं लेकिन	146
तेरी भक्ति के पंखों ने	182	दो घड़ी भगवान का	153
तारों में चन्द्र समान हो आप	193	दाता तेरे कई नाम	177
तेरे मर्जी का मैं हूँ गुलाम	195	दुनियाँ ये तुम्हारी है	230

दुनियाँ के झमेलों में	293	निसदिन नमो गणपति चरण	367
दुनियाँ किराये का घर	294	नाम जप की न टूटे लड़ी	382
दुनियाँ में ऐसा कहाँ	295	नहीं देखता करनी अपनी	390
दया की है कमी दाता	296	**प/फ**	
दया की सिन्धुदाता	298	प्राणी मत कर तु अभिमान	56
दुनियाँ हो गई पुरानी	327	प्राणी जीवन गति अन्जानी	85
दर्शन दो घनश्याम	337	प्यासा पपीहा पुकारे	85
दूर नगरी बड़ी दूर नगरी	344	पहले पाँव पखारूँ प्रभु	86
दु:खहर्ता बनके	347	प्यार नहीं सुर से जिनको	115
द्रोपदी की लाज राखी	359	प्रभु जी अब की बार	120
दुनियाँ में रहने वाले क्या	371	प्रेम की अगन हो	136
दुनियाँ चले ना श्रीराम के	388	प्रार्थना सुनिये श्री भगवान	146
ध		पंछी मत रूक पागलपन	149
धोना था मन भूल गया तु	143	प्रथम सुमिर श्री गणेश	156
धनुषधारी राम जी	238	पलभर में भर भण्डार दिया	165
धरती के प्यासे आंगन में	369	प्रभु के भरोसे हाको गाड़ी	226
न		पूछो ने कैसे मैने रैन	226
नन्द के घर कृष्ण आये	34	पानी में मीन प्यासी	227
नीली छत के पीछे बैठा	68	प्रभु मेरे अवगुण चित्त	228
नहीं है मन का कोई ठिकाना	82	प्रभो आपकी कृपा से	261
नदी किनारे खड़ा है पगले	82	प्रभु तेरी करें मन प्रार्थना	274
नाम लिया हरि का जिसने	83	प्रभु के नाम पे	295
नाम हरि का जपले रे वन्दे	83	पायो जी मैंने राम रतन धन	298
नहाये धोये क्या भया	84	पुरी द्वारिका मथुरा देखी	299
नित-नित मोरी राह	177	पवित्र मन रखो पवित्र	300
नहीं चाहिए दिल दुखाना	342	प्रभो अपनी शरण में	300
नत-नित पाप करे तू प्राणी	356	प्रबल प्रेम के पाले पड़कर	329
निर्गुन रंगी चादरिया रे, कोई	357	पग घुँघरू बाँध मीरा नाची	335
ना ये तेरा ना ये मेरा, मंदिर	359	पाप का समन्दर भरा तेरे	364

प्रभु जी तुम बिन कौन सहारा	377
फुल सी मुस्कुराती जियें	196
ब	
बता दे कोई कौन गली गये	33
बाट निहारे घनश्याम	86
बीत गये दिन भजन बिना	87
बोल हरि बोल हरि	88
बाजे रे मुरलिया बाजे	89
बड़ी देर भई कब लोगे खबर	137
बैठ अकेला दो घड़ी	174
बिन भजन के जगत में	191
बोल पिंजरे का तोता राम	213
बनवारी रे जीने का सहारा	221
बतलाओ कैसे पार करें	222
बोल-बोल कागा मेरे	223
बाईबिल वेद पुराण बताते	234
बिहना होगे अंजोर होगे	239
बदलाये जो दृष्टिकोण तो	251
बदनाम है बटमार अगर	301
ब्रह्म की बेला बैठ अकेला	302
बड़ी देर भई नन्दलाला	314
भ	
भगवान तुम्हारी भक्ति में	89
भक्ति बिना सब सुना साधो	90
भला किसी का कर न सको	92
भगवान तेरी महिमा	152
भगवान के सच्चे भक्तों को	157
भोलेनाथ से निराला	162
भरत भाई कपि से उऋण	212
भगवान मेरी नैया	222
भारत में फिर से आजा	223
भाव के भूखे हैं भगवान	302
म	
मनवा रे मनवा जीवन है	15
मेरे मन के अंधतमस्	40
मेरा जीवन तेरे शरण	46
मात अंग चोला साजे	48
मोहे लागी लगन	65
मैली चादर ओढ़ के कैसे	91
मानो तो मैं गंगा माँ हूँ	94
मेंहदी महावर रचा करके	95
मत बाँधो गठरिया अपयश	95
मन ना रंगाये जोगी	96
मैं न जिऊँ बिन राम	96
मेरी पापों की भर गई	97
मंदिर में रहते हो भगवन	97
मेरी बहना ये राखी की लाज	98
मैला तन है मैला मन है	99
मनवा राम नाम तु गाले	99
मैंने तो श्याम रंग ओढ़	100
मेरे रघुवर जी उतरेंगे पार	100
मुझे रास आ गया है	101
मुक्ति का कोई तु जतन	101
मेरी छोटी सी है नाव	103
मन लागा मेरो यार	103
मेरे लक्ष्मण भैया कौन	104
मेरे तो गिरधर गोपाल	104
मंगलदाता बुद्धि विधाता	112

मेरे श्याम तेरा नाम	126	माँ बाप को जो ठुकरायेगा	305
मत जा मत जा यमुना	135	माँ बाप की कलियुग में	306
मैली-मैली चदरिया	144	मुसाफिर कर तैयारी	307
माँ सुनाओ मुझे वो कहानी	150	मनुज जन्म अनमोल रे	308
मेरे मालिक मेरे गुरुवर	155	मोको कहाँ ढूँढे रे वन्दे	308
मैं नहीं मेरा नहीं यह	156	मैं गरीब हूँ बेशक	309
मेरी लगी श्याम संग प्रीत	158	मैं तो हूँ माँ शरण	310
मुझे मेरी मस्ती कहाँ लेके	163	मेरा है बैल बिकने वाला	311
मेरा कोई न सहारा बिन तेरे	170	मेरे श्याम मेरे श्याम	328
मुझे ऐसा वर दे दो	183	मीठे रस सी भरो री	330
मिटा दे अपनी हस्ती को	187	मईया मोरी मैं नहीं माखन	330
मनवा रे हरि के भजन	202	मंदिर में ना मिलेंगे	335
मोह माया को त्याग	203	मेरा जीवन है तेरे हवाले	339
मेरे सच्चे दिल में	212	मैं तो जपूँ सदा तेरा नाम	343
मेरे भोलेबाबा को	220	माँ की महिमा अपरम्पार	348
मन में राम तन में राम	224	मंगल मूरति राम दुलारे	356
मिट्टी का दिया है	224	मत बोल तू झूठे बोल	362
मैं वन्दत हँव दिन-रात	241	मोहन हमारे मधुबन में	368
मन के मंदिरवा मा	245	मोरे श्याम, घनश्याम	375
मोर संग चलव जी	247	मन लग जा प्रभु के चरण	382
महिबा बा तोहरो अपार हो	250	माँ बाप का दिल ना तुम यूँ	387
मेरे मन के मंदिर में	251	मन शिव में ऐसे रमा है	388
मुझसे अधम अधीन	262	मुझे मोह और माया से	389
मंगल मंदिर खोलो	262	मन में खोट भरी और बाहर	391
मेरा रंग बसन्ती चोला	263	मैया कृपा करदो, झोली	392
मत कर तू अभिमान रे	297	**य**	
मैं हूँ माटी का दिया	297	ये तो प्रेम की बात है	105
मेरे कण्ठ बसो महारानी	303	ये कहना साफ गलती है	105
मेरे मालिक के दुकान पर	304	यहाँ कोई भी सच्ची बात	106

ये जग है एक मेला	139	राम नाम सबसे प्यारा	118
ये वक्त की आवाज है	150	राम नाम रस बीनी चदरिया	134
ये धरती है हिन्दुस्तान की	151	रे मनवा अब तो समझ	142
यही विनति है पल-पल	195	राम सुमिर के रहम करे ना	144
ये वक्त न ठहरा है	199	राम नाम रस पीले	178
यह प्रेम सदा भरपुर रहे	217	राम कहानी सुनो रे	214
यशोमति मैया के	221	राधे गोविन्दा गोपाला	215
ये मालिक तेरे वन्दे हम	230	राधा ऐसी भई श्याम	229
ये तुलसी के वाणी रे	245	रघुपति राघव राजाराम	232
ये गर्व भरा मस्तक मेरा	357	रेल चली रे भैया रेल चली	260
ये समय बड़ा हरजाई	366	रघुवर तुमको मेरी लाज	265
ये वो दर है जहाँ, तकदीरें	392	रे मन मुसाफिर	313
र		रानी बेटी मेरी फूटी किस्मत	314
राम रमैया गाये जा	79	रोशनी आवाज देती ही रही	315
राम नाम जपले रे	90	राम से बड़ा राम का नाम	346
रामा-रामा रटते-रटते	107	रहना नहीं देसा बिराना	361
राम का गुणगान करिये	108	राम रहिम में अन्तर नाहिं	372
रख लाज मेरी गणपति	108	राम दशरथ के घर जन्में	379
राम नाम अति मीठा है	109	**ल**	
रे मन मूरख जनम गँवायो	109	लिख-लिख पतिया	33
राम नाम से तूने वन्दे	110	ले गमछा डाल गले	317
राम का नाम लेकर	111	लागे पानी में अगिया	318
राम रमैया रटा करो	111	लगन लगी है तेरे दरश की	331
राम कहने तर जायेगा	112	लोग रखते ही नहीं ईमान	375
राम कथा में वीर जटायू	113	**व**	
रामचन्द्र कह गए सिया से	114	वेदमूर्ति प्रभो हमें ऐसा	18
रामजी तुमरो भक्त हनुमाना	115	वक्त का ये परिन्दा	117
रामजी के नाम ने तो	116	वो काला एक बाँसुरी वाला	119
राम रस ऐसो है	118	वैष्णव जन तो तेणे	138

वह खेत में मिलेगा	153
वन्दे गणपति विघ्न विनाशक	154
वृन्दावन की गुञ्ज गलिन में	164
वन्दे चल सोच समझ के	172
वेद है कहते ज्ञान को	205
वृन्दावन का कृष्ण कन्हैया	219
वह धन्य सुहागिन है	260
वीणा वादिनी श्वेत वसना	328
श	
शत्-शत् नमन तुम्हें हे	15
श्याम-श्याम की रट अब	127
शिव शंकर भोले भण्डारी	127
शिव से काशी कृष्ण से	129
श्याम ने मुरली मधुर	136
शंकर तेरी जटा में	161
शंकर सुमिरो निशिदिन	164
शिव शंकर भोले भाले	166
श्यामा आन बसो वृन्दावन में	218
श्याम तेरी बंशी पुकारे	220
शांतिकुंज तपस्थली नाम है	255
श्याम आओ जमुना तीरे	332
शारदे जय हंस वाहिनी	362
स	
साधो सहज समाधि भली	13
सदा मन हमारा रहे घर	14
सुभ्हान तेरी कुदरत का	74
सीताराम सीताराम सीताराम	102
सुख के सब साथी	119
सुमिरन करले नाम सुमिरले	120
सीने में कितने दर्द	121
सुना है तारे तुमने लाखो	122
संसार के लोगों की	122
सुख चाहे और पाप करे	123
सुख भी मुझे प्यारे हैं	123
साँचा तेरा नाम	124
सबके गुण अपनी हमेशा	124
सीता पूछे राम से	125
सब कैदी फ़रीदों ने	126
सुख शांति चाहने वालों	129
साधु संतो का ये कहना है	138
सपने में सखी देख्यो	160
साईं तेरी याद महासुखदाई	162
सुमिरले नाम शंकर का	169
सोच जरा ईश्वर के वन्दे	173
संदेशो देवकी सो कहियो	189
सारा जीवन व्यर्थ बिताया	197
सागर से भी गहरा वन्दे	202
सब मिल कलश उठायेंगे	203
संसारिका के जल में	209
संगीतम् स्वागतम्	210
सियाराम तुम्हारे चरणों में	231
सुन संगी रे सुन भैया	244
सुख सरिता बहे गुरु	259
सजधज के जिस दिन	316
सरसब्ज उजड़ते देखे हैं	319
साँसों के तार-तार में	319
साथ देती नहीं ये किसी का	320
सुनकर करूण पुकार	321

साधु लपक रहा थैले पर	322
संतन के संग लागरे	340
सुर की देवी सरस्वती माँ	340
सबसे ऊँची प्रेम सगाई	342
सांचे कोई न पति जई	352
सुखहरण प्रभु नारायण हे	358
सारे जग में घूम मची है	367
साँसो का क्या भरोसा	389
ह	
हिम्मत न हारिये	19
हमें तुमने गुरुवर बहुत	20
हर देश में तू हर वेश में तू	59
हो गये भवसागर पार	128
हेरी मैं तो प्रेम दीवानी	130
हे पवन पुत्र हनुमान	130
हे राम सहारा बन जाओ	131
हे गोविन्द राखो शरण	131
हे कन्हैया शरण में	169
हे ! माँ तु मेरी झोली	178
हम तो आये हैं माता	187
हमें गुरुदेव तेरा सहारा	190
हे रोम-रोम में बसने वाले	192
हे ! जन्मभूमि भारत	211
हे शारदे माँ	225
हे प्रभो आनन्द दाता	231
हर करम अपना करेंगे	233
हर प्राणी म रूप तमारा	252
हे महाकाल भगवान	256
हमें निज धर्म पर चलना	312
हम पैदा हुए इस देश में	320
है अगर प्रभु प्रेम पाना	323
हे ज्ञान रूप भगवन	324
हे मेरे गुरुदेव करूणासिन्धु	325
हीरा सी देही मिली हमें	326
हरि नाम का प्याला	338
हे प्रभो मुझे बता	343
हर बात को तुम भूलो भले	345
हे राम हे श्याम मेरी सुनलो	354
हे दु:ख भंजन मारुति नन्दन	355
हमें कौन पूछता था तेरी	378
हम तो दाता तेरे दर पर आ	383
श्री ऋ	
श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन	21
श्रीराम चले आना मेरे राम	140
श्रीमन नारायण नारायण	257
श्रीराम आया है युग की	257
श्रेष्ठ पथ पर सदा चलने	299
श्री बांके बिहारी जी	354
ऋद्धि-सिद्धि के दाता सुनो	365
भोजपुरी गीत-	
देदि हमें वरदान हे मैया	394
जनम से कोई छोटे न बड़वा	394
घर-घर के भूत भाग	395
हरदम झुकाई माथा	396
जे जे दुनिया में आइल बा	397
केहू ना काम आई	398
आज थाम ल तू ज्ञान	399
आवाज दे रहल बा	400
शरण लगाले मइया	400
गायत्री माता की आरती	417
तुलसी, सूर एवं मीरा के दोहे	426

तू करले आज हवन रे

तू करले आज हवन रे, तेरी दो दिन की जिन्दगानी।
तेरी छोटी सी जिन्दगानी, तेरी प्यारी सी जिन्दगानी।।
आज हवन तू करले, जीवन को धन्य बनाले।
मनवा दो दिन का मेहमान, तेरी दो दिन की जिन्दगानी।।
ये महायज्ञ है पावन, भगवान की सीधी पूजा।
सम्पूर्ण मनोरथ पाले रे, तेरी दो दिन की जिन्दगानी।।
तेरा जीवन बड़ा दुखी है, आंधी में उलझी नैया।
ये नैया का है खिवैया रे, तेरी दो दिन की जिन्दगानी।।
जीवन अनमोल तू पाया, माया में क्यों भरमाया।
तेरी छूटे यज्ञ से माया रे, तेरी दो दिन की जिन्दगानी।।
इसे राम कृष्ण अपनाये, पुरूषार्थ गजब का पाये।
तू बनता क्यूँ अनजान रे, तेरी दो दिन की जिन्दगानी।।

साधो सहज समाधि भली

साधो सहज समाधि भली।
गुरु प्रताप भयो जा दिन ते सुरति न अनत चली।।
आँख न मूँदूँ कान न रूँदूँ काया कष्ट न धारूँ।
खुले नयन से हँस-हँस देखूँ, सुन्दर रूप निहारूँ।।
कहूँ सोई नाम, सुनूँ सोई सुमिरन, खाऊँ सोई पूजा।
गृह उद्यान एक सम लेखूँ, भाव मिटाऊँ दूजा।।
जहाँ-जहाँ जाऊँ सोई परिक्रमा जो कुछ करूँ सो सेवा।
जब सोऊँ तब करूँ दण्डवत पूजूँ और न देवा।।
शब्द निरन्तर मनुआ राता, मलिन वासना त्यागी।
बैठत उठत कबहूँ ना विसरें, ऐसी ताड़ी लागी।।
कहै 'कबीर' वह उन्मनि रहती, सोई प्रकट कर गाई।
दु:ख-सुख के एक परे परम सुख, तेहि सुख रहा समाई।।

सदा मन हमारा रहे

सदा मन हमारा रहे घर तुम्हारा,
यही कामना है, यही याचना है।
चरण में तुम्हारे, संमर्पित रहें हम,
यही कल्पना है, यही भावना है।।

मिला प्यार निर्मल हमें तो तुम्हारा,
भले ही विमुख हो, तुम्हीं से रहे हम।
तुम्हीं हो हमारे हितैषी सदा से,
मगर प्यार तुमसे भी कर ना सके हम।।

हमारे हृदय में जगे प्रेम निश्छल,
कि संकल्प हमको करना यही है।
तुम्हारी निगाहें रही नित्य हम पर,
मगर हम तुम्हें क्यों नहीं देख पाये।।

चले किस तरह हम तुम्हारी नजर में,
समझना यही है यही जानना है।
हमें मान पदयश सताने न पाये,
कि पैसे कि झिलमिल लुभाने न पाये।।

शत्-शत् नमन तुम्हें

शत्–शत् नमन तुम्हें हे सविता।
तुम ही इष्ट तुम्हीं हो सद्गुरु।।

तुम ही तो भूगर्भ तपाते, सब पर जीवन रस बरसाते।।
दिव्य शक्ति के स्रोत तुम्हीं हो, सृष्टि चक्र संचालन कर्त्ता।।

हस सब में शुभ ज्योति जगादो, जग में नव प्रकाश फैला दो।।
तुम ही तो हो जगत प्रकाशक, ज्योति पुरूष भीषण तम हर्त्ता।।

प्राण भरा अनुदान हमें दो, प्रतिभा का वरदान हमें दो।।
सृजन शक्ति संधान हमें दो, यज्ञ पुरूष जग मंगल कर्त्ता।।

मनवा रे मनवा

मनवा रे मनवा, जीवन है संग्राम।
भजले राम राम राम, भजले राम राम राम।।

लोक यही परलोक यही है, यही धरा और ब्योम।
यही पुरातन नारायण है, यही सनातन ओम।।
इससे बड़ा न कोई नाम, भजले राम राम राम।।

इसके करतब अजब अनोखे, अजब के इसके खेल।
सूर्य, चन्द्र के दीप जलाता, बिन बाती बिन तेल।।
यही संवारे सारे काम, भजले राम राम राम।।

तुम्हारी जय-जय हो

तुम्हारी जय–जय हो गायत्री माता।

पतित पावनी, जन कल्याणी।
सद्बुद्धि की तू महारानी।।
तुम ही हो, सृष्टि विधाता।।

हंस वाहिनी हंस हृदय दो।
ज्ञान भक्ति माँ और अभय दो।।
हे जग जननी सुखदाता।।

कल्पवृक्ष और कामधेनु माँ।
ब्रह्मास्त्र और पारस हो माँ।।
हे ब्रह्मलोक वरदाता।।

पालन–पोषक तुम तारक हो।
हम भक्तों की उद्धारक हो।।
तू ही है पिता और माता।।

तेरा नाम सबके लब पे

तेरा नाम सबके लब पे, सुबह शाम हो।
हर बुराई से बचे बस, नेक काम हो।।

हम गुनाह के घने, अंधेरों से डरें।
हम तो सच्चे से, यही कामना करें।।
अब न किसी दिल में कोई इन्तकाम हो।।

जिन्दगी खुशहाल हो, हर आदमी सुखी।
रोशनी हो प्यार की, ना हो कोई दुःखी।।
इस ज़मी पे ऐसा तेरा इन्तजाम हो।।

तुम्हीं शांति हो विश्व की

तुम्हीं शांति हो विश्व की इस समय में।
बशी माँ तुम्हीं हो हमारे हृदय में।।

तुम्हीं व्याप्त अंतःकरण में हमारे।
तुम्हारी कृपा से उगे पुण्य सारे।।
तुम्हारा निमय हर जनम में विलय में।।

ध्वनित मातु वाणी, तुम्हारी गगन में।
छुअन है तुम्हारी, प्रभाती पवन में।।
तुम्हीं तेज हो अग्नि, तेजो वलय में।।

बहुत शोक दुःख है, भरा विश्व भर में।
तपन है बहुत आज, हर त्रस्त स्वर में।।
तुम्हीं हो तारणी इस भयंकर प्रलय में।।

जननि साधना हो सफल शक्ति बनकर।
प्रगट भावना हो विमल भक्ति बनकर।।
अहंकार का भाव डूबे विनय में।।

करो माँ कृपा सौम्य सुखकर बनें हम।
महाकाल के श्रेष्ठ सहचर बनें हम।।
बने अग्रणी हम नवल अभ्युदय में।।

वेदमूर्ति प्रभो हमे ऐसा

वेदमूर्ति प्रभो हमें ऐसा विमल वरदान दो।
हम न भटके भ्राँतियों में, वह सुखद सद्ज्ञान दो।।

आपका साहित्य तो सद्ज्ञान का भण्डार है।
देह मन अन्तःकरण के रोग का उपचार है।।
अब वही संजीवनी २ देकर दुःखो से हमें त्राण दो।।

समझकर विष को सुधा भ्रम में न हम पड़ते रहें।
मात्र मनोरंजन न हम साहित्य से करते रहें।।
श्रेष्ठ के स्वाध्याय की, प्रेरणा आगाह दो।।

लेखनी थी आपकी ऐसी सहज सुख दायनी।
आपके हर शब्द से निकली अमर मंदाकिनी।।
भाव का शोधन करो, सद्बुद्धि का उत्थान दो।।

तेरी पनाह में हमें

तेरी पनाह में हमें रखना,
सीखें हम नेक राह पर चलना।

कपट, कर्म, चोरी, बेईमानी और हिंसा से हमको बचाना।
नाली का बन जाऊँ न पानी, निर्मल गंगा जल ही बनाना।।
अपनी निगाह में हमें रखना, अपनी पनाह में हमें रखना।।

क्षमावान कोई तुझसा नहीं, और मुझसा नहीं कोई अपराधी।
पुण्य की नगरी में भी मैंने, पापों की गठरी ही बांधी ।।
करूणा की छाह में हमें रखना, तेरी पनाह में हमें रखना।।

हिम्मत न हारिये

हिम्मत न हारिये, विजय का नाम लीजिए।
सत्य पथ के राहियों, मशाल थाम लीजिए।।

मशाल जो जली जलेगी, आखरी स्वांस तक।
कारवाँ चला है जो चले क्षितिज के पार तक।।
झुके नहीं ध्वज सदा वो काम कीजिए।।

निराली अपनी राह है, राह पर अनोखा है।
भाग्य को सजाने का सिला सुनहरा मौका है।।
समर्थ का है साथ व्यर्थ को विराम दीजिए।।

परम पिता के प्रेम का, प्राणों में प्रकाश हो।
ईश्वरीय ज्ञान का इस तरह प्रसार हो।।
जाग जाये अल सुबह ललाम दीजिए।।

समय की ये गुहार है, प्रभु की ये पुकार है।
तीव्र वेग से बैठे, जगत रहा निहार है।।
लक्ष्य अपना लेके ही विश्राम कीजिए।।

अरे मन धीरज क्यों न धरे

अरे मन धीरज क्यों न धरे॥

एक सहस्त्र नौ सौ के ऊपर, ऐसो योग परे॥
सहस्त्र वर्ष लो सतुयग बीते, धर्म की बेल बढ़े॥

स्वर्ण फले-फूले धरती पर, जग की दसा फिरे।
सूरदास यह हरि की लीला, टारि नाहिं टरे॥

हमें तुमने गुरुवर बहुत

हमें तुमने गुरुवर बहुत कुछ दिया है।
तेरा शुक्रिया है, तेरा शुक्रिया है।।

हमें है सहारा तेरी बंदगी का।
है जिस पर गुजारा हरेक जिन्दगी का।।
मिला हमको जो कुछ तुम्हीं से मिला है।।

किया कुछ न हमने शरमसार हैं सब।
तेरी रहमतों के तलबगार हैं सब।।
दिया कुछ नहीं बस लिया ही लिया है।।

मिला हमको जो कुछ बदौलत तुम्हारी।
तनिक भी न अपनी सभी कुछ तुम्हारी।।
उसे क्या कभी जो तेरा ही लिया है।।

ना मिलता अगर दिव्य आशीष तेरा।
कभी टल न पाता, जगत का ये फेरा।।
तुम्हीं ने तो जीने के काबिल किया है।।

हे गुरुवर हे भगवन सभी के हो दाता।
तुम्हीं सबको देते, तुम्हीं हो विधाता।।
तेरा ही दिया हमने खाया पिया है।।

श्री रामचन्द्र कृपालु भजुमन

श्री रामचन्द्र कृपालु भजुमन, हरण भवभय दारुणम्।
नवकञ्ज लोचन, कञ्जमुख कर, कञ्जपद कञ्जारुणम्।।

कंदर्प अगणित अमि छबि, नव नील नीरज सुन्दरम्।
पटपीत मानहुं तड़ित रूचि, शुची नौमि जनक सुतावरम्।।

भजु दीन बन्धु दिनेश दानव, दैत्यवंशनिकन्दनम्।
रघुनन्द आनंदकंद कोशल, चन्द दशरथ नन्दनम्।।

सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु, उदारु अङ्ग विभूषणम्।
आजानुभुज शर चापधर, सङ्ग्राम-जित खर दूषणम्।।

इति वदति तुलसीदास शङ्कर, शेष मुनि मनरञ्जनम्।
मम हृदयकञ्ज निवास कुरु, कामादि खलदल गञ्जनम्।।

एही भांति गोरी असीम सुनी, सिय सहित हिं हरषीं अली।
तुलसी भावानिः पूजी पुनि-पुनि, मुदित मन मंदिर चली।।

अजब हैरान हूँ भगवान

अजब हैरान हूँ भगवान, तुम्हें कैसे रिझाऊँ मैं।
नहीं वस्तु कोई ऐसी, जिसे सेवा में लाऊँ मैं॥

तुम्हीं हो मूर्तियों में भी, तुम्हीं व्यापक हो फूलों में।
भला भगवान को भगवान, पर कैसे चढ़ाऊँ मैं॥

लगाना भोग कुछ तुमको, यह एक अपमान करना है।
खिलाता है जो दुनियाँ को, उसे कैसे खिलाऊँ मैं॥

भुजायें हैं न गर्दन है, न सीना है न पेशानी।
तु ही निर्लोप नारायण, कहाँ चन्दन लगाऊँ मैं॥

अफसोस मूढ़ मन तू

अफसोस मूढ़ मन तू, मुद्दत से सो रहा है।
सोचा न यह कि घर में, अंधेर हो रहा है॥

चौरासी लाख मंजिल, तय करके मुश्किलों से।
जिस घर को तूने ढूण्डा, उस घर को खो रहा है॥

घट-घट में ज्ञान गंगा, उसमें न मार गोता।
तृष्णा के गंदे जल में, इस तन को धो रहा है॥

अनमोल स्वांस तेरी, पापों में जा रही है।
रत्नों को छोड़ कंकड़, और कांच ढो रहा है॥

संसार सिन्धु से तू, क्या खाक पार होगा।
विषयों के बिन्दु में जब, किस्ती डुबो रहा है॥

इस तन में रमा करना

इस तन में रमा करना, इस मन में रमा करना।
बैकुण्ठ तो यही है, इसमें ही बसा करना॥

हम मोर बन के मोहन, नाचा करेंगे बन में।
तुम श्याम घटा बनकर, उस वन में उठा करना॥

हो करके हम पपीहा, पी-पी रटा करेंगे।
तुम स्वाति बूँद बनकर, प्यासे पे दया करना॥

हम 'राधेश्याम' जग में, तुमको ही निहारेंगे।
तुम दिव्य ज्योति बनकर, नयनों में करना॥

तूने बंशी तपस्या करी

तूने बंशी तपस्या करी कौन सी॥
जब मोहन के अधर चढ़े री तब ही तू बोले॥
नहीं तो बैली रही तू सदा मोन सी॥

छीली गई और छेदी गई मैं तब जाकर खुद को पहचाना।
तपी आग में जो में अकेली, तब में बंशी नाम धराना॥

फिर बजाने वाले को रही ढूँढती ॥

मौन रही बरसो मैं सहेली, तब मैने मोहन को पाया।
मेरे सुर की महकें सारे राग रंग तब खिलने आया॥

वो बजाये तो बजने लगूँ, बीन सी॥

ऐसी घोर तपस्या की तब, हरी अधरो पर है मैं धारी।
फिर भी राधा री मुझसे, देखो कैसी व्यथा हमारी॥

धुन बजे वो बजाये सदा जोन सी॥

अरे इन्सान अरे इन्सान

अरे इन्सान अरे इन्सान, मात–पिता को पहचान॥

भटक रहा क्यों अँधियारे में, भरम में क्यों भरमाता।
पिता रूप परमेश्वर है रे, माता रूप विधाता।
मात–पिता की गोदी प्यारी, सुन्दर स्वर्ग समान॥

मसल चला तू उस डाली को, जिसका है तू फूल।
जिस गोदी में बचपन खेला, उसे गया क्यों भूल॥
मात–पिता के नौ महिनों पर, तेरी सारी उमर कुरबान॥

लाखों जनम ले फिर भी न चूके, मात–पिता का कर्जा।
रोम–रोम तेरा ऋणि है रे, जिसने तुझको जीवन सिरजा॥
माँ के आँसू तुझे पुकारे, पिता का दुखड़ा तूझे पुकारे।
धर्म,कर्म,कर्त्तव्य पुकारे,लौट के आ–२ लौट के आरे अनजान॥

दया करो गणराज छे

दया करो गणराज छे प्रभु विनति हमारे।

भोला भाव की तम निश्वरये विघ्न हारिणि वन्दन करिये।
मांगे है हमि दिन रात, हे प्रभु भक्ति तमारी॥

मंगलकारी नाम तमारो, संकट हारी नाम तमारो।
शिरनी रहेनि अपराधी छो जीवन गुजारी॥

ऋद्धि–सिद्धि नव छो तमे स्वामी, गणपति छो तमे अंतर्यामी।
धन्य कया हमें आज, हे प्रभु तमने निहारी॥

आनन्द स्त्रोत बह रहा

आनन्द स्त्रोत बह रहा, तू क्यों उदास है।
अचरज है जल में रह के भी, मछली को प्यास है॥

फूलों में जो सुवास, ईंख में मिठास है।
भगवान का ज्यूँ विश्व के, कण-कण में वास है॥

टुक ज्ञान चक्षु खोल कर, तू देख तो जरा।
जिसको तू ढूण्ढता सदा, वो तेरे पास है॥

कुछ तो समय निकाल, आत्मशुद्धि के लिए।
नर जन्म का उद्देश्य ना, केवल विलास है॥

आनन्द मोक्ष को न पा सकेगा, तब तलक।
तू जब तलक प्रकाश, इन्द्रियों का दास है॥

इस वाणी से गूंगे ही

इसी वाणी से गूंगे ही भले, जो मीठे बोल सुनाये नहीं।
क्या करता है उन पावों का, जो चल सत्संग में आये नहीं॥

नहीं हाथ किसी भी काम के वो, जो दान करें न धरम के लिए।
बस बंद करो उन कानों को, जो प्रभु चर्चा सुन पाये नहीं॥

उस नाक को बेशक कटवा दो, जो दुर्गन्धी की प्यारी हो।
बस बंद करो उन आँखों को, जो पाप के भाव मिटाये नहीं॥

यह जिस्म राख की ढेरी है, या पड़ी शिला है पत्थर की।
है पशु भला इस इन्सां से, जो विषयों से मुंह मोड़े नहीं॥

इस जहाँ में अगर आदमी न

इस जहाँ में अगर आदमी न रहा,
फिर सुखों का ये अंबार किस काम का।
फूल मुर्झा गये, कलियाँ कुम्हला गई,
खाली ये गुलजार किस काम का॥

आदमी है तो खुशियों का सामान है,
आदमी के बिना सब बिया बाना है।
आदमी ही अगर न रहा दोस्तों,
कुचे गलियाँ ये घर बार किस काम का॥

ये मेरे मेहरबानों जरा सोच लो,
बात तुम ऐ दिवानों जरा सोच लो।
यूँ जो लाशों के अंबार लगते रहे,
फिर रहेगा ये संसार किस काम का॥

प्यार करने को इन्सां बनाया गया,
खाकी तन में फरिश्ता बिठाया गया।
तुमको इतने गुणों से सजाया गया,
खुद को भुला को श्रृंगार किस काम का॥

तुम खुशी दो किसी को, अगर दे सको,
जिन्दगी दो किसी को, अगर दे सको।
बाबू ओमी उतारो वजन पाप का,
सर पे रखा हुआ भार किस काम का॥

इबादत है किसी नाशाद को

इबादत है किसी नाशाद को, फिर शाद कर देना।
इबादत है किसी बरबाद को, आबाद कर देना॥

हर इन्सान के दिल को, समझना मन्दिरो मस्ज़िद।
न टूटे दिल किसी का, ख्याल यह दिल में बिठा लेना॥

खिलाना रोटियाँ, पानी पिलाना भूखे प्यासों को।
किसी मुफ़लिश पड़े, बीमार को जाकर दवा देना॥

निकलना रोज घर से, देखना सड़कों पे बागों में।
पड़ी जो बेकफ़न लाशें, उन्हें जाकर कफ़न देना॥

जिन्हें दुनियाँ ने ठुकराया, उन्हें भी प्यार से मिलना।
किसी बेक़स मुसीबत में फँसे, का दुःख मिटा देना॥

एक समय राजा दशरथ

एक समय राजा दशरथ, खेलन गये शिकार।
हाय मगर तकदीर के मारे, खुद ही बने शिकार॥

पहुँच सरयू नदी के तट पर, लगी जोर की प्यास।
जहाँ घाट पर पानी भरता, बालक श्रवण कुमार॥

शब्द सुना जल भरने का, मारा शब्द बाण फुफकार।
तीर लगा श्रवण को तो, मच गई हाहाकार॥

गये दौड़ के राजा दशरथ, तो बोला श्रवण कुमार।
प्यासे माता पिता को, पानी दे आओ सरकार॥

ऐसो जतन बता जा रे

ऐसो जतन बता जा रे, प्रीत करूँ और दुःख नाहीं होवे।

जैसे किरण में अगन न दिखे, जलता रहे मन जलन न दिखे।
विरहन तिल तिल जीवन खोये॥

निशदिन पल छिन साँझ सकारे, सारी उमरिया पंथ निहारे।
फिर भी दीवानी मीरा न रोये॥

मन अनुरागी तन बैरागी, जाने ये कैसी प्रीत है जागी।
सेज पे जागे सूली पे सोये॥

दोहा–प्रीत किये मत जानिये, कि तुम बिछुड़े मोहे चैन।
जैसे जल बिन मछली, मैं तड़पू...हूँ दिन रैन॥

कटुक वचन बड़े काम के

कटुक वचन बड़े काम के॥
सह लो मेरे भाई, दिन आयेंगे आराम के॥

कटुक वचन कहे रतना नारी–
तुलसी के मन लागी कटारी।
लिखी रामायण आज भी बैठे, भक्त शिरोमणी नाम के॥

कटुक वचन रानी सुरुचि सुनाये–
ध्रुव जी के बड़े काम तो आये।
राम भजन कर आज भी बैठे, ध्रुव तारा आसमान के॥

एक झोली में फूल खिले हैं

एक झोली में फूल खिले हैं, एक झोली में काँटे।
अरे कोई कारण होगा॥
तेरे बस में कुछ भी नहीं है, बाँटने वाला बाँटे रे॥
रे कोई कारण होगा॥

पहले बनती है तकदीरें, फिर बनते हैं शरीर।
ये तो प्रभु की कारीगरी है, तू क्यों है गंभीर॥
रे कोई कारण होगा॥

नाग भी डसले तो मिल जाये, किसी को जीवन दान।
चींटी से भी मिल सकता है, किसी का नामो निशान॥
रे कोई कारण होगा॥

धन का बिस्तर मिल जाये पर, नींद को तरसे नैना।
काँटों पर भी सोकर आये, किसी के मन को चैना॥
रे कोई कारण होगा॥

सागर से भी मिट नहीं सकती, कभी किसी की प्यास।
एक बूँद से पूरन होवे, किसी के मन की आस॥
रे कोई कारण होगा॥

ऐसे राम दरस रस बरसे

ऐसे राम दरस रस बरसे, जैसे सावन की झड़ी।
सीता राम दरस रस बरसे, जैसे सावन की झड़ी।
सावन की झड़ी प्यासे प्राणों पे पड़ी॥

राम-लखन अनमोल नगीनें, अवध अंगूठी में जड़ दीने।
सीता ऐसे सोहे जैसे मोति की लड़ी॥

राम सिया को निहारी, नाचे गावें सब नारी।
चल री दरशन कर आवें, का सोचत खड़ी॥

रोम-रोम को नयन बना लो, राम सिया के दरशन पा लो।
वर्षों पीछे आई है ये मिलन की घड़ी॥

एक दिन राधे ने बाँसुरिया

एक दिन राधे ने वाँसुरिया, नन्दलाल की चुपके से ली थी चुरा।
घर लाई उठा उसे क्रोध में आ, बोली कि निगोड़ी सच बतला॥

क्या मन्तर है, क्या जादू है, जो मनमोहन को मोह लिया।
सुनकर बाँसुरिया यों बोली, ठहरो सजनी, बतलाती हूँ॥
जो कुछ बीता है, मुझको सखी, वह सारा हाल सुनाती हूँ॥

एक बाँस की थी पतली सी नली, जंगल में उगी जंगल में पली।
तकदीर मगर कुछ अच्छी थी, मधुसूदन के मैं हाथ लगी॥
छेदों से भरा है सीना मेरा, आ हाथ लगाकर देख जरा॥
अब तो सब एक ही आन सखी, प्रीतम की श्वांस है जान सखी॥

ओ दुनियाँ के रखवाले

ओ दुनियाँ के रखवाले, सुन दर्द भरे मेरे नाले॥

आश निराश के दो रंगो से, दुनियाँ तूने सजाई।
नैया संग तूफान बनाया, मिलन के साथ जुदाई।
जा देख लिया हर जाई ।
लूट गई मेरे प्यार की नगरी, अब तो नीर बहाले॥

आग बनी सावन की वर्षा, फूल बने अंगारे।
नागन बन गई रात सुहानी, पत्थर बन गये तारे।
सब टूट चुके हैं सहारे।
जीवन अपना वापस ले ले, जीवन देने वाले॥

चाँद को ढूँढे पागल सूरज, साँझ को ढूँढे सबेरा।
मैं भी उस प्रीतम को ढूँढूँ, हो न सका जो मेरा।
भगवान भला हो तेरा।
किस्मत फूटी आश न टूटी, पाँव में पड़ गये छाले॥

हम क्या करते हैं इसका महत्व कम है उसे हम किस भाव से करते हैं इसका बहुत अधिक महत्व है।

–परम पूज्य गुरुदेव

ओ गौवों के चरैया

ओ गौवों के चरैया रे, आजा मेरे कन्हैया।

मैं लुट रही सभा में, जाती है लाज मेरी।
ओ द्वारिका के वासी, आओ न करो देरी॥
तुम बिन कौन मेरी, ओ लाज के बचैया॥

मैं हेरती जहाँ में, कोई नहीं है अपना।
पाँचो पति की ताकत, सब हो गई है सपना॥
कोई नही है अपना,
ओ धीर के बँधैया, आजा मेरे कन्हैया।

पाँसे पलट गये है, किस्मत के आज मेरे।
बिगड़ी बनेगी मेरी, आने से नाथ तेरे॥
ओ बिगड़ी के बनैया, औ रास के रचैया॥

छम छम बाजे रे पायलिया

छम छम बाजे रे पायलिया।
राह चलत लचके पनिहारी, छलके जाये गगरिया॥

गोरा बदन पर भीगी साड़ी, और लगे सुन्दर ये नारी।
मोती बन-बन टपके पानी, बिगत जाये डगरिया॥

चन्द्रमुख जब लट बिखराये, जग सारा ये धोखा खाये।
कोई कहे लो सावन आया, आई कारी बदरिया॥

मुखड़ा पर आँचल मल-मल का,क्या कोई खिलता फूल कमल का।
आई न जाने कौन नगर से, जाये ना कौन नगरिया॥

लिख-लिख पतिया

लिख–लिख पतियाँ, उन संग भेजी, नहीं आये घनश्याम॥

साजन तुम हम एक हैं, कहन सुनन को दोय।
मन से मन को तोलिए, दो मन कभी न होय॥

साजन तुम मत जानियो, तुम बिछुड़े मोहे चैन।
जैसे बन की लाकड़ी, सिलगत हूँ दिन रैन॥

साजन तुम मत जानियों, प्रीत पुरानी होय।
अमर बेल की बेल है, दिन दिन दूनी होय॥

बता दो कोई कौन गली गए

बता दो कोई–कौन गली गए श्याम। २ बार
कौन गली गए श्याम, बता दो कोई–कौन गली गए श्याम।।

कहाँ छुपे मोरे श्याम सलोने, कहाँ छुपे मोरे श्याम सलोने।
ढूँढ थकी ब्रजधाम, बता दो कोई, कोन गली गए श्याम।।

झूठा धीरज आस दिलाकर, अचक अचानक बाह छुड़ाकर ।।
ओ तो गए हैं ओ तो गए हैं ,रह गए यहाँ हम हैं कलेजा थाम।।
कौन गली गए श्याम, बता दो कोई कौन गली गए श्याम।।

वो छलिया निकले हरजाई, जिन संग हमने प्रीत निभाई।।
रोवत आए भोर हमारी रोवत जाए शाम।।
रोवत जाए शाम, बता दो कोई कौन गली गए श्याम।।

ऐसे भाग हमारे फुटे आज तेरे सपने भी रूठे।
बेदर्दी तेरा क्या बिगड़ा, मेरी प्रीत फिरे बदनाम।।
प्रीत फिरे बदनाम, बता दो कोई कौन गली गए श्याम।।

नंद के घर कृष्ण आये

नंद के घर कृष्ण जी आये, सितारा हो तो ऐसा हो।
करें सब प्रेम से दर्शन, दुलारा हो तो ऐसा हो॥

बकासूर को मसल डाला, पूतना जान से मारी।
कंस को केश से खींचा, खिलाड़ी हो तो ऐसा हो॥

कूद पानी के अंदर से, नाग को नाथ कर लाये।
चरण फन-फन पे धर करके, नचारा हो तो ऐसा हो॥

रचाई रास कुंजन में मनोहर, रूप बन करके।
देव दर्शन को चले आये, दिदारा हो तो ऐसा हो॥

कुरु पाण्डव लड़े रण में, जीत अर्जुन की फहराई।
बचाई लाज द्रोपदी की, सहारा हो तो ऐसा हो॥

कान्हा तोरी जोहत

कान्हाऽऽऽ तोरी जोहत रह गई बाट।
जोहत रह गई बाट।।

जोहत जोहत, इक पग ठाड़ी, कालीन्द्री के घाट॥
कालीन्द्री के घाट, कान्हा तोरी जोहत....।।

झूठी प्रीत करी मन मोहन, या कपटी की बात॥
या कपटी की बात, कान्हा तोरी जोहत....।।

मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, दे गयो ब्रज को उजाड़॥
दे गयो ब्रज को उजाड़, कान्हा तोरी जोहत....।।

कभी प्यासे को पानी

कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं,
बाद अमृत पिलाने से क्या फायदा।
कभी गिरते हुये को उठाया नहीं,
बाद आँसू बहाने से क्या फायदा॥

मैं तो मंदिर गया पूजा आरती की,
पूजा करते हुए ये ख्याल आ गया।
कभी माँ बाप की सेवा की ही नहीं,
सिर्फ पूजा के करने से क्या फायदा॥

मैं तो सत्संग गया गुरु वाणी सुनी,
गुरु वाणी को सुनकर ख्याल आ गया।
जन्म मानव का लेकर दया न करी,
फिर तो मानव कहाने से क्या फायदा॥

मैने दान दिया मैने जप तप किया,
दान करते हुए ये ख्याल आ गया।
कभी भूखे को भोजन कराया नहीं,
दान लाखों के करने से क्या फायदा॥

गंगा नहाने हरिद्वार काशी गया,
गंगा नहाते हुए ये ख्याल आ गया।
तन को धोया मगर मन को धोया नहीं,
फिर तो गंगा नहाने से क्या फायदा॥

मैंने वेद पढ़े मैंने शास्त्र पढ़े।
शास्त्र पढ़ते हुए ये ख्याल आ गया।।
मैंने ज्ञान किसी को भी बाँटा नहीं।
फिर ज्ञानी कहलाने से क्या फायदा।।

माता-पिता के चरणों में चारों धाम है,
आजा-आजा यही मुक्ति का धाम है।
सेवा माता-पिता की मन से करो,
फिर तीरथ में जाने से क्या फायदा॥

कृपा की न होती

कृपा की न होती, जो आदत तुम्हारी।
तो सूनी ही रहती, अदालत तुम्हारी॥

जो दीनों के दिल में, जगह तुम न पाते।
तो किस दिल में होती हिफ़ाजत तुम्हारी॥

गरीबों की दुनियाँ है आबाद तुमसे।
गरीबों से है बादशाहत तुम्हारी॥

न तुम होते मुल्ज़िम न तुम होते हाकिम।
न घर-घर में होती इबादत तुम्हारी॥

तुम्हारी ही उल्फ़त के दृग बिन्दु है ये।
तुम्हें सौंपते है अमानत तुम्हारी॥

कर्म को भक्तों बना के

कर्म को भक्तों बना के सीढ़ी, पहुँचो हरि के धाम।
एक सिरे पर राम मिलेंगे, एक सिरे पर श्याम॥

मोह माया तो अंत समय तक, देते रहेंगे धोखा।
कर्म से जीवन सफल बनाने, का है सुन्दर मौका।
लाभ उठा लो इस अवसर का, लेके प्रभु का नाम॥

भक्ति से मन को शांति मिले, और सत्कर्मों से तृप्ति।
दीप भाँति उद्धेश्य बना लो, जब तक जीवन ज्योति।
उज्ज्वल हो संसार ये तुमसे, महको आठो याम॥

कभी-कभी भगवान को

कभी-कभी भगवान को, भक्तों से काम पड़े।
जाना था गंगा पार प्रभु, केवट की नाव चढ़े॥

अवध छोड़ प्रभु वन को धाये, सिया राम लखन गंगा तट आये।
केवट मन ही मन हर्षाये, घर बैठे प्रभु दर्शन पाये॥
हाथ जोड़ कर प्रभु के आगे, केवट मगन खड़े॥

प्रभु बोले तुम नाव चलाओ, पार हमें केवट पहुँचाओ।
केवट कहता सुनो हमारी, चरण धूल की माया भारी॥
मै गरीब नैया मेरी, नावी होय पड़े॥

केवट दौड़ के जल भर लाया, चरण धोय चरणामृत पाया।
वेद ग्रन्थ जिनके यश गाये, केवट उनको नाव चढ़ाये॥
बरसे फूल गगन से ऐसे, भक्त के भाग बड़े॥

चली नाव गंगा की धारा, सिया राम लखन को पार उतारा।
प्रभु देने लगे नाव उतराई, केवट कहे नहीं रघुराई॥
पार किया मैने तुमको, अब तू मोहे पार करो॥

वेद है ज्ञान साम है गान। गान का सीधा-सीधा सम्बन्ध भाव संवेदना से है। -सामवेद

कहाँ जा छिपे हो प्यारे

कहाँ जा छिपे हो प्यारे कन्हैया,
यहाँ लाज मेरी लुटी जा रही है।
दु:शासन के हाथों तेरी द्रोपदी की,
सभा बीच साड़ी खिंची जा रही है॥

उन्होंने कभी मेरी सूरत न देखी,
देखेगा नंगा बदन आज मेरा।
जुए में पाँचों पति हारे बाजी,
महलों की रानी लुटी जा रही है॥

गुरुद्रोण बोलो पितामह बोलो,
तुमसे तुम्हारी बहू पूछती है।
निर्वस्त्र करवा रहे हो सभा में।
जुँबा क्या तुम्हारी घिसी जा रही है॥

अपनी व्यथा मैं किसको सुनाऊँ,
तेरा दर छोड़ मैं किस दर पे जाऊँ।
आशा लगी है तुम्हीं से कन्हैया,
इसी से लगन अब बढ़ी जा रही है॥

खींचा चीर जब दुशासन भी हारा,
मैं समझी थी भगवन तुम्हारा इशारा।
साड़ी के हर तार में तुम छिपे हो,
इसी से यह साड़ी बढ़ी जा रही है।।

काजल भगवत प्रेम का

काजल भगवत प्रेम का, नैनों में यूँ डार।
कण्ठ में भक्ति की माला हो, प्रभु सुमिरन का हार॥

नैनों को बस आस रही है, हरि दर्शन की आस।
प्यास लगे जब कण्ठ को, प्रभु जल की हो प्यास।
कानों में जब भी पड़े, हो सत्संग का साथ॥

हाथों को जब मिले, प्रभु चरणों के फूल।
हाथ करें चरणों की सेवा, माथे चरण की धूल।
प्रीत करूँ प्रभु की भक्ति से, चेतो तो सच्चा प्यार॥

अधरों पर हर पल धरूँ, प्रभु सुमिरन के बोल।
जीवन को पल-पल मिले, हरि अमृत का घोल।
नारायण के कदम वहाँ पर, जहाँ प्रभु का द्वार॥

कोयले की ये डगर है

कोयले की ये डगर है पगले, संभल-संभल के चलना।
लगे माया-मोह की कालिक, बंदे सदा संभलना॥

कहीं दाग ये लग जाये ना, कलियुग है ये छलना।
दीप बने हम प्रभु चरणों में, भक्ति जोग संग जलना।
गीता का जो ज्ञान संग में, फिर काहे का डरना॥

तृष्णा से संयम टूटे है, भोग वासना आये।
भक्ति साधना सत्संग करके, संयम सहज ही पाये।
कहत संत जन साधो सुनलो, मुख का लिखना मलना॥

कलियुग की काली रात

कलियुग की काली रात गई, अब कलियुग जाने वाला है।
सतयुग की लालिमा छाई, अब सतयुग आने वाला है॥

चिड़िया चहचाई शोर हुआ, अब आँखें खोलो भोर हुआ।
बिकराल काल का जोर हुआ, परिवर्तन होने वाला है॥

यह युग संधि की वेला है, चंद रोज का और ये मेला है।
पापों से भरा जो ठेला है, तूफान उड़ाने वाला है॥

यह समय है ब्रह्म मूहरत का, सतयुग आने की सूरत का।
कलियुग की काली मूरत का, अब कण-कण जलने वाला है॥

है शेष समय अब भी जा सम्भल, वरना पछताना होगा कल।
जितना खाया सब देगा उगल, ये हिस्सा भी होने वाला है॥

मेरे मन के अन्ध तमस

मेरे मन के अन्ध तमस में, ज्योर्तिमय उतरो।
जय-जय माँ, जय-जय माँ॥

कहाँ यहाँ देवों का नन्दन, मलियाँचल का अभिनव चन्दन।
मेरे उर के उजड़े मन में, करुणामय बिचरो॥

नहीं कहीं कुछ मुझमें सुन्दर, काजल सा काला ये अन्दर।
प्राणों की गहरे गहवन में, ममतामयी बिखरो॥

कान्हा है चुपचाप तो

कान्हा है चुपचाप तो मुरली बोलेगी।
मन के सारे भेद मुरलियाँ खोलेगी॥
नाचेगा संसार गगन भी झुमेगा।
होठों से जब श्याम मुरलिया चुमेगा।
मुरली की हर तान पे राधा डोलेगी॥
गीता के उपदेश है इनकी तानों में।
जीवन के संदेश है इनकी तानों में।
विष के भरे प्याले में, अमृत घोलेगी॥
वंशी में जो बंधी है रेशम की डोरी।
इसी ने की है राधे के मन की चोरी।
क्या बोलेगी और ये किससे बोलेगी॥

कहाँ छुपे हो अरे कन्हैया

कहाँ छुपे हो अरे कन्हैया, अगन जले संसार ये सारा।

घर-घर अर्जुन भरे पड़े है, कौन उन्हें समझायें।
जीवन है पर मरे पड़े है, कैसे शस्त्र उठायें।
जीवन का रथ रूका पड़ा है, सारथी बन कर आना॥

गीता के उपदेश में तुमने, कर्म का मर्म सिखाया।
जब-जब धरम पे भीड़ पड़ी तब, तुमने आके बचाया।
वचन दिया मुरलीधर तुमने, तुम ही उसे निभाना॥

कुरूक्षेत्र है बना जगत ये, कोलाहल में खोकर।
पाँचो इन्द्रियों के ये पाण्डव, घूम रहे खा ठोकर।
अपने सुदर्शन चक्र से मोहन, तू ही आके बचाना॥

कान्हा कन्हैया नन्दलाला

कान्हा कन्हैया नन्द लाला, ओ मुरली वाला।
ऐसी बजाये मुरली, मुरलिया जादू भरी॥

देखो कुँवर कन्हाई कैसी रास रचाई।
ऐसी तान सुनाई सुध-बुध सब बिसराई॥
बाँकाओ छैला निराला, ओ मुरली वाला॥ ऐसी

कान्हा कृष्ण मुरारी, गोवर्धन गिरधारी।
काहे मटकी फोरी, सुन के मीठी गारी॥
आहें भरें बृज वाला, ओ मुरली वाला॥ ऐसी

माखन चोर दुलारा, नटखट सबको प्यारा।
मन मोहन मन भावन, नाम रटे जग सारा॥
माधव मुकुन्द मत वाला,और मुरली वाला॥ ऐसी

अम्बें चरण कमल हैं तेरे

अम्बें चरण कमल हैं तेरे।
हम भवरे हैं जनम-जनम के, निश दिन देते तेरे॥

तू धरती जग पालन करती, अम्बर का आधार है तु।
सब सुख जुटे सब दुःख टुटे, इस जीवन का सार है तु॥
तु सत्यम् तु शिवम् सुन्दरम्, हम सब चपलीज तेरे॥ अम्बें...

होश में आँसू फूल में श्रद्धा, अन्तर में लेकर उजियारे।
तेरे मंदिर में नतमस्तक, नभ में सूरज चाँद सितारे॥
हम तेरी मुस्कानों में, देखे मधुर स्नेह॥ अम्बें....

कभी राम बनके

कभी राम बनके, कभी श्याम बनके।
चले आना, प्रभु जी चले आना॥

तुम राम रूप में आना।
सीता साथ लेके, धनुष हाथ लेके, चले आना॥

तुम श्याम रूप में आना।
राधा साथ लेके, मुरली हाथ लेके, चले आना॥

तुम शिव के रूप में आना।
गौरा साथ लेके, डमरू हाथ लेके, चले आना॥

तुम विष्णु रूप में आना।
लक्ष्मी साथ लेके, चक्र हाथ लेके, चले आना॥

तुम गणपति रूप में आना।
रिद्धि साथ लेके, सिद्धि साथ लेके, चले आना॥
प्रभु जी चले आना॥

वेदमंत्रों के गान की संज्ञा 'साम' है। न केवल मंत्र पाठ को ही 'साम' माना जा सकता है, और न सिर्फ गाने को ही, बल्कि इन दोनों के मिश्रण को ही 'साम' कहा गया है।

कौन कहते हैं भगवान

कौन कहते हैं भगवान आते नहीं॥
अरचुतम केशवम् कृष्ण दामोदरम्।
रामनारायण जानकी वल्भम्॥

कौन कहते हैं कि, भगवान आते नहीं।
भक्त प्रहलाद जैसे बुलाते नहीं॥
अरचुतम केशवम् कृष्ण दामोदरम्॥

कौन कहते हैं कि भगवान खाते नहीं।
बेर शबरी के जैसे खिलाते नहीं॥
अरचुतम केशवम् कृष्ण दामोदरम्॥

कौन कहते हैं कि भगवान सोते नहीं।
माँ यशोदा के जैसे सुलाते नहीं॥
अरचुतम केशवम् कृष्ण दामोदरम्॥

कौन कहते हैं कि भगवान नाचते नहीं।
गोपियों की तरह तुम नचाते नहीं॥
अरचुतम केशवम् कृष्ण दामोदरम्॥

कौन कहते हैं कि भगवान सुनते नहीं।
द्रोपदी की तरह तुम, पुकारते नहीं॥
अरचुतम केशवम् कृष्ण दामोदरम्॥

कौन कहते हैं कि भगवान दिखते नहीं।
बाबा सुरदास के जैसे तुम देखते नहीं॥
अरचुतम केशवम् कृष्ण दामोदरम्॥

कण कण में है झाँकी

कण कण में है झाँकी भगवान की।
किसी सूझ वाली आँख ने पहचान की॥

नामदेव ने पकाई, रोटी कुत्ते ने उठाई,
पीछे घी का कटोरा लिये जा रहे।
बोले रूखी तो ना खाओ, थोड़ा घी भी लेते जाओ।
रूप अपना क्यों हमसे छिपा रहे॥
कैसी शकल बनाई है स्वान की॥

निगाह मीरा की निराली, पीके ज़हर की प्याली,
ऐसा गिरधर बसाया हर श्वांस में॥
जब आया काला नाग, बोली धन्य मेरे भाग,
प्रभु आये आज साँप के लिबास में॥
ऐसी सूरत बसायी थी श्याम की॥

ऐसे भक्त सूरदास, जिनकी अद्‌भूत थी प्यास,
देखा नज़र नज़ारा घनश्याम का।
जब नैन हुए बन्द, तब मिला वह आनन्द,
चहुँ ओर दिखे रूप राधेश्याम का।
सूर हिय में बसी थी छवि श्याम की॥

खालो मीठे-मीठे बेर

खालो मीठे–मीठे बेर, खिलाये शबरी।
श्रीराम रघुराई लखन जी के भाई हो...।।
जिन्हें देखने को आई, आज सारी नगरी॥

यही है मेरी मधुर मिठाई, यही मेरे पकवान।
खाते जाते प्रेम भाव से, ओ भोले भगवान॥
लाई चख–चख के बेर, अब करो नहीं देर।
मैं तो खोजत फिरी थी, तुम्हें सारी नगरी॥ खालो मीठे.... ॥

मैं हूँ एक गरीब भिलनियाँ, तुम हो अवध कुमार।
मेरी झोपड़िया में तुम आये, हुआ आनन्द अपार॥
श्रीराम गुण गाऊँ, चरण चित लाऊँ।
प्रभु तुमको ही ध्याऊँ, आज सुध बिसरी।।
खालो मीठे–मीठे बेर खिलाये शबरी॥

मेरा जीवन तेरे शरण

मेरा जीवन तेरे शरण, हो मेरा जीवन।

सारे राग विराग हुये अब, मोहो सारे त्याग हुये अब।
एक यही मेरा बन्धन, मेरा जीवन॥

अविरत रहा भटकता अब तक, भटकूं और अभी मैं कब तक।
पा लूँ केवल तुझको ही माँ, एक यही मेरा है लगन॥

तेरे चरणों पर हों अर्पण, जीवन से गुण अवगुण।
सारी व्यथायें दूर करो माँ, हो खुश मीत मेरा बन्धन॥

गंगा तेरा पानी अमृत

गंगा तेरा पानी अमृत, झर-झर बहता जाये।
युग-युग से इस देश की धरती, तुझसे जीवन पाये॥

दूर हिमालय से तू आई, गीत सुहाने गाती।
बस्ती-बस्ती, जंगल-जंगल, सुख संदेश सुनाती।
तेरी चाँदी जैसी धारा, मीलों तक लहराये॥

जितने सूरज उभरे डूबे, गंगा तेरे द्वारे।
युगों-युगों की कथा सुनाये, तेरे बहते धारे।
तुझको छोड़कर भारत का, इतिहास लिखा ना जाये॥

इस धरती का सुख-दुःख तूने, अपने बीच समाया।
जब-जब देश गुलाम हुआ है, तेरा पानी रोया।
जब-जब हम आजाद हुए हैं, तेरे तट मुस्काये॥

जय जय माँ जय जय

जय जय माँ, जय जय माँ-4
दे माँ निज चरणों का प्यार, जय जय माँ.. ॥

उर प्रेम दे अमर स्नेह दे, दिव्य शांति अन्त देह दे।
पूजा करूँ सदा मैं तेरी, दे सुमिरन का आधार। दे माँ.. ॥

तुझको जानूँ तुझको मानूँ, तुझ पर ही निज जीवन वारूँ।
ध्यान रहे तेरा ही निशिदिन, दे भक्ति का उपहार॥

हृदय अभिप्सा से जागृति हो, अभय हस्त मेरे सिर पर हो।
दिव्य प्रेम से ओत-प्रोत हो, जीवन का पारा हार॥

मात अंग चोला साजे

हे माँ हे माँ हे माँ हे माँ हे माँ माँ माँ हे माँ माँ।
मात अंग चोला साजे, हर एक रंग चोला साजे।
मात की महिमा देखो, ज्योति दिन रैना जागे॥
हे माँ हे माँ हे माँ॥

तू ओढ़े लाल चुनरिया, गहनों से करे श्रृंगार।
शेरों पर करे सवारी, तू शक्ति का अवतार॥
तेरे भेद भरे दो नैना, तेरे अधरों पर मुस्कान।
तेरे द्वारे शीश झुकायें, क्या निर्बल क्या बलवान॥
हे माँ हे माँ शेरा वालिये हे माँ॥
तेरे ही नाम का माता, जगत में डंका बाजे॥

हे माँ हे माँ हे माँ
ऊँचा है मंदिर तेरा, ऊँचा तेरा स्थान।
सानी क्या कोई दूजा, माँ होगा तेरे सम्मान॥
जो आये श्रद्धा लेके, वो ले जाये वरदान।
हे माता तू भक्तों के सुख दुःख का रक्खे ध्यान॥
तेरे चरणों में आके, भाग्य कैसे न जागे॥

यदि गायन सुन्दर हो तो, श्रेय उन्हीं को मिलता चाहिए, जिन्होंने इनका भाषानुवाद प्रारम्भ में किया और दुबारा करने का आदेश मुझे दिया। –परम वन्दनीया माताजी

घायल बनाने वाले

घायल बनाने वाले, इतनी तो कृपा करना।
माता पिता है प्यासे, पानी उन्हें पिलाना॥

कंधे पे लेके कावड़, माँ बाप को बिठाया।
तीरथ उन्हें करा कर, सरयू नदी पै लाया।
दुनियाँ से अब चला मैं, ये बात है बताना॥

खेलन शिकार आया, सरयू नदी के तट पर।
प्यारे श्रवण को मारा, इक जानवर समझ कर।
वो काल आ गया था, ले बाण का बहाना॥

दो दिन का जग मेला

दो दिन का जग में मेला, चला चली का ठेला॥

कोई चला गया कोई जावे, कोई गठरी बाँध सिधावे।
कोई खड़ा तैयार अकेला रेऽऽऽऽऽ, दो दिन....... ॥

कर पाप-कपट, छल माया, धन लाख करोड़ कमाया।
संग चले न एक अकेला रे ऽऽऽऽऽ, दो दिन....... ॥

सुत नार तात पितु भाई, कोई अंत सहायक नाहीं।
क्यों भरे पाप का ठेला रे ऽऽऽऽऽ, दो दिन....... ॥

ये नश्वर सब संसारा, कर भजन ईश का प्यारा।
ब्रह्मानन्द कहे सुन चेला रे ऽऽऽऽऽ, दो दिन....... ॥

गंगा जी की भक्ति

गंगा जी की भक्ति जो प्राणी करता है।
मन पावन हो जाता है, भव सागर तरता है॥

महादेव के मस्तक पर है, राजत श्रीगंगा।
गौ मुख से गंगा सागर तक, शोभित श्रीगंगा।
पूजा पुष्पाजंली जो माँ को, अर्पण करता है॥

हर दिन प्रात: उठकर जो भी गंगा तट पर आता।
गंगा के दर्शन कर अपना जीवन सफल बनाता है।
जो श्रद्धा से गंगा माँ की पूजा करता है॥

जनम जनम के पाप सभी, धुल जाते क्षण में सारे।
अपने भक्तों को माँ गंगे, दु:ख से सदा उबारे।
जो गंगा के निर्मल जल में, स्नान करता है॥

गुणगान करिये राम का

गुणगान करिये राम का।
राम प्रभु की दिव्यता का, सभ्यता का ध्यान धरिये॥

राम के गुण गण चिरन्तन, राम गुण सुमिरन रतन धन।
मनुजता को कर विभूषित, मनुज को धनवान करिये॥

सगुण रूप, स्वरूप सुन्दर, सृजन, रञ्जन, रूप सुखकर।
राम आत्माराम, आत्माराम का, सम्मान करिये॥
ध्यान धरिये.....॥

गोकुल बाजे बधाई

गोकुल बाजे बधाई, जन्म लियो है कृष्ण कन्हाई।

दौड़ी-दौड़ी बाँधी आई, राजनन्द को खबर सुनाई।
मोतियन हार निछावर पाई, राज महल में खुशियाँ छाई।
मंगल गान सुहाई, जन्म लियो है कृष्ण कन्हाई॥

भादों की रैन घटा अंधियारी, हुलसत फिरे सकल नर नारी।
प्रभु अवतार जानी सूर हरशे, नव से विविध सुमन बहु बरसे।
जमुना बहे बल खाई, जन्म लियो है कृष्ण कन्हाई॥

नाचे मोर पीछे बोले, लता बेल अपने रस घोले।
बिजली चमके बरसे पानी, धन्य भयी माता नन्दरानी।
चन्दा सोस सुपाही, जन्म लियो है कृष्ण कन्हाई॥

घर-घर में महक प्यार की

घर-घर में महक प्यार की, आए खुदा करे।
नफरत को इस जहाँ से, मिटाए खुदा करे॥
घर है मेरे खुदा का, हर इक आदमी का दिल।
कोई किसी का दिल, न दुखाये खुदा करे॥
हो खत्म लेन देन का झगड़ा समाज से।
खुद को न बहू कोई, जलाए खुदा करे॥
हर सास दे बहू को, सदा बेटियों का प्यार।
बहू बन के बेटी जैसी, दिखाए खुदा करे॥
जात ओ मजहब को भूल कर, इन्सान सब बने।
वन्दे को बन्दा दिल में, बसाए खुदा करे॥

गजाननं भूत गणादि सेवितम्

गजाननं भूत गणादि सेवितम्, कपित्थजम्बू फलचारु भक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाशकारकं, नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम्॥

रखलाज मेरी गणपति, अपनी शरण में लीजिए।
कर आज मंगल गणपति, अपनी शरण में लीजिए॥

सिद्धि विनायक दुःखहरण, सन्तापहारी सुखकरण।
करूँ प्रार्थना मैं नित प्रति, वरदान मंगल दीजिए॥

तेरी दया तेरी कृपा, हे नाथ हम माँगे सदा।
तेरे प्यार में खोवेमति, इतनी कृपा प्रभु कीजिए॥

करते प्रथम तव वन्दना, तेरा नाम है दुःख भंजना।
करना प्रभु मेरी शुभगति, अब तो शरण में लीजिए॥

जल जाईयो जल

जल जाईयो, जल जाईयो, जल जाईयो।
ऐसो जियरा हरि भजन बिना॥

मंदिर सुना दीप बिना, दीप है सुना ज्योति बिना॥

नर है सुना नारी बिना, नारी है सुना पुत्र बिना॥

संगीत सुना ताल बिना, ताल है सुना साज बिना॥

बन है सुना वृक्ष बिना, वृक्ष है सुना फूल बिना॥

घर में भजन कभी

घर में भजन कभी किया नही, अब जंगल में क्या करना है।
अपने आप को बुरा लगे जो, दूजे को क्यों देना है॥

खुद को संभाला कभी नहीं, और दुनियाँ बदलने चला कहीं।
अपने मन में शांति नहीं, और सुख शांति की बात करें॥

जनम-जनम का काम है ये, तू झटपट करना क्यों चाहे।
साधन-साधक संध्या से भी, पल दो पल की बात नहीं॥

सच्ची साधना साधक से, वर्षों तक तप कर बाती है।
भक्ति भावना शक्ति साधना, मन को निर्मल करती है॥

जय माधव मदन मुरारी

जय माधव मदन मुरारी, जय केशव कलिमन हारी।
राधेश्याम श्याम, सीता राम राम॥

सुन्दर कुण्डल नयन विशाला, गहे सोहे बैजन्ती माला।
या छबी की बलिहारी, जय केशव कलिमन हारी॥

गोपियन के संग रास रचायो, लूट-लूट दधि माखन खायो।
माखन चोर गिरधारी, जय केशव कलिमन हारी।

अर्जुन के रथ हाकन हारे, गीता के उपदेश तुम्हारे।
चक्र सुदर्शन धारी, जय केशव कलिमन हारी।

घनश्याम तुम्हें ढूँढने

घनश्याम तुम्हें ढूँढने जायें कहाँ-कहाँ।
आपे विरह की याद-सुनायें कहाँ-कहाँ॥

तेरी नज़र जुल्फ़ में-मुस्कान मधुर में।
सबमें समाया दिल है- छुड़ायें कहाँ-कहाँ॥

चरणों की ख़ाकसारी में-खुद खाक बन गए।
उस ख़ाक पे अब ख़ाक-रमायें कहाँ-कहाँ॥

उनको मरीज़ देखकर, खुद बन गए मरीज़।
ऐसे मरीज़ मर्ज़-दिखायें कहाँ-कहाँ॥

दिन-रात अश्रु 'बिन्दु'-बरसते तो हैं अगर।
सब तन में लगी आग-बुझायें कहाँ-कहाँ॥

मुक्तक-

गज़ब की बाँसुरी बजती थी-वृन्दावन बसैया की।
करूँ तारीफ़ क्या मुरली व-मुरलीधर कन्हैया की॥
जहाँ चलता न था कुछ काम-तीरों और कमानों से।
विजय न टवर की होती थी-वहाँ मुरली की तानों से॥

चादर हो गई बहुत पुरानी

चादर हो गई बहुत पुरानी, अब सोच समझ अभिमानी।

अजब जुलाहा चादर बीनी, सूत करम की तानी।
सुरति निरति तो भरना दीनी, तब सब के मन मानी॥ अब

मैले दाग पड़े पापन के, विषयन में लिपटानी।
ज्ञान का साबन लाय के धोवो, सतसंगत के पानी॥ अब

भई मैली और भीगी सारी, लोभ मोह में सानी।
ऐसे ही ओढ़त उमर गँवाई, भली बुरी नहीं जानी॥ अब

चिंता छोड़ जान जिय अपने, है ये वस्तु बिरानी।
'कहे कबीर' ये राख्य जतन से, फिर नहीं हाथ ये आनी।।

तेरे एहसान का बदला

तेरे एहसान का बदला, चुकाया जा नहीं सकता।
करम ऐसा किया तूने, भुलाया जा नहीं सकता॥

अगर मुझको न तू मिलता, मेरा मुश्किल गुजारा था।
जो पहुँचा है बुलन्दी पर, वो एक टूटा सितारा था॥
दिलों से तेरी उल्फ़त को, मिटाया जा नहीं सकता॥

मेरी हर सांस पर दाता, फ़कत अधिकार तेरे हैं।
मिला जो भी मिला तुझसे, मेरा क्या था क्या मेरा है॥
तुम्हें दुनियाँ की दौलत से, रिझाया जा नहीं सकता॥

बड़ी ऊँची तेरी रहमत, है छोटी सी जुबाँ मेरी।
तुम्हें दाता समझ पाऊँ, है हस्ती वो कहाँ मेरी॥
तेरी रहमत को शब्दों में सुनाया जा नहीं सकता॥

चमन गुलजार जो करते

चमन गुलजार जो करते, सुमन वे और होते हैं।
वतन से प्यार जो करते, सुजन वे और होते हैं॥

महज सपने बुने जिसने, नहीं पाया है कुछ हासिल।
सफलता जो दिया करते, सपन वे और होते हैं॥

सतत् नवशक्ति दे सबको, नयी आशा बँधाते जो।
जगत में प्राण जो भरते, सृजन वे और होते हैं॥

सफल होती नहीं मनुहार, इस पूजा इबादत से।
सफल मनुहार जो करते, नमन वे और होते हैं॥

न इन नज़रों से हो सकता, कभी दीदार है उसका।
मिलन साकार जो करते, नयन वे और होते हैं॥

न मिटती वेदना उर की, महज कुछ भाव वचनों से।
हृदय के घाव जो भरते, वचन वे और होते हैं॥

प्राणी मत कर तु अभिमान

प्राणी मत कर तु अभिमान, ये तो समय बड़ा बलवान।
झूठी तेरी शान, सब दिन होत न एक समान॥

तेरे जैसे लाखो आये, लाखो इस माटी ने खाये।
रहा ना नामो निशान, रे वन्दे मत कर तू अभिमान॥

झूठी माया झूठी काया, वो तेरा जो गुण ना गाया।
जपले हरि का नाम, रे वन्दे मत कर तू अभिमान॥

माया का अंधकार निराला, बाहर उजला भीतर काला।
इसको तु पहचान, रे वन्दे मत कर तू अभिमान॥

चली जा रही है ये जीवन

चली जा रही है ये जीवन रेल,
खिलौना समझकर इसे यूँ न खेल॥

कुशल कारीगर ने है इसको बनाया।
बड़ी अक्लमंदी से इसको चलाया॥
पड़े इसके इंजिन में कर्मों का तेल॥

जरा भी खराबी अगर इसके आवे।
कदम एक भर भी सरकने न पावे॥
सदा के लिए एक पल में हो फैल॥

किसी को चढ़ावे किसी को उतारे।
घड़ी दो घड़ी के मुसाफिर हों सारे॥
यहीं पर जुदाई यहीं पर हो मेल॥

न अपनी खुशी से यहाँ लोग आये।
मगर दिन यहाँ पर सभी ने बिताये॥
कोई समझे मंदिर कोई समझे जेल॥

चले सफ्र भर में राते चिल्लाते।
मगर कुछ महापुरूष हँसते-हँसाते॥
गये हर मुसीबत को हिम्मत से झेल॥

पथिक रेलगाड़ी में जो भी चढ़ा है।
कहीं न कहीं पर उतरना पड़ा है॥
समय ने ही डाली है सबके नकेल॥

जिसकी धरती चूम रही है

जिसकी धरती चूम रही है, मन मोहन के पाँव।
स्वर्ग से भी सुन्दर लगता है, राधा तेरा गाँव॥

यमुना तट पर डोल रही है, ठंडी-ठंडी धूप।
तन की गागर से छलके है, गोपियों का रंग रूप॥
अपनी-अपनी जगह सभी है, एक से एक अनूप।
बहकी-बहकी पवन जहाँ की, महकी-महकी छाँव॥

ग्वालों के संग कन्हैया, लीला रास रचाये।
मुरली की मीठी तानों से, अमृत रस बरसाये॥
गीता के उपदेश सभी को, नन्द का लाल सुनाये।
सांझ सवेरे ज्ञान की बदली, बरसे चारों दिशाओं॥

घर-घर हा-हा कार मचा है, गली-गली है शोर।
राधा का मन हरके देखो, ले गया माखन चोर।
कृष्ण कला के आगे फीके, पड़ गये ये सारे दाँव॥

चेत रे गुमानी फिर ये

चेत रे गुमानी फिर ये जनम ना मिले रे।
माया संग ना चले रे, माया संग ना चले॥

जो तू प्यारा तुझको जितना, सब पर प्रेम किया कर उतना।
अपनापन का भेद हटाकर, ज्ञान की आँखे खोल॥ बन्दे॥

यही रहेगा नाम तिहारा, जैसा कर्म करेगा सारा।
प्रभु की राह पकड़ ले प्राणी, जग में होगा मोल॥ बन्दे॥

चित्त ना धरो

चित्त ना धरो, चित्त ना धरो, प्रभु जी मोरे,अवगुण चित्त ना धरो॥
दया के सागर गिरधर नागर, खाली पड़ी है मेरी गागर।
अमृत रस से भरो, चित ना धरो॥

सब जग ढूँढा तुझे न पाया, कौन है अपना कौन पराया।
ये तो मेरी समझ न आया, बुद्धि हीन बालक भरमाया।
ज्ञान प्रकाश करो, चित ना धरो॥

तू ही तो है मीत हमारा, मैने प्रभु जी तुझको पुकारा।
खाली झोली प्रभु जी मेरी, दे दो भिक्षा करो ना देरी।
करूणा हाथ धरो, चित ना धरो॥

हर देश में तू

हर देश में तू हर वेश में तू, तेरे नाम अनेक तू एक ही है।
तेरी रंग भूमि यह विश्व धारा, हर खेल में तू हर मेल में तू।।

सागर से उठी बादल बनकर, बादल से फटा बरखा बनकर।
फिर नहर बनी नदियाँ गहरी, तेरे भिन्न प्रकार तू एक ही है।।

मिट्टी से अणु परमाणु बना, इस दिव्य जगत का रूप लिया।
कहीं पर्वत, वृक्ष विशाल बना, सौन्दर्य तेरा तू एक ही है।।

यह दृश्य दिखाया है जिसने, वह है देव की पूर्ण कृपा।
तुकड़्या कहे और तो कोई नहीं, बस तू और मैं दोनों एक ही हैं।।

छोटी-छोटी गैया

छोटी–छोटी गैया, छोटे–छोटे ग्वाल।
छोटो सो मेरो, मदन गोपाल॥

आगे–आगे गैया, पीछे–पीछे ग्वाल।
बीच में मेरो मदन गोपाल॥

घास खावें गैया, दूध पीवें ग्वाल।
माखन खावे मेरो, मदन गोपाल॥

छोटी–छोटी सखियाँ, मधुबन बाग।
रास रचावे मेरो मदन गोपाल॥

छोटी–छोटी लकुटी, छोटे–छोटे हाथ।
वंशी बजावे मेरो, मदन गोपाल॥

छोड़ दे हर अवगुण

छोड़ दे हर अवगुण, ओ साधु सुन भाई सुन।

एक हाथ से देकर दुनियाँ, दूजे ले ले लेती रे–२
ऐसी है ये दुनियाँ साधु, रेत पे नैया खेती रे–२
दोनो रस्ते तेरे आगे, इनमें से ऐ चुन॥

मन का मैला धो सका तू, तन का मैला धोया रे–२
सोना चाँदी पाकर भी तू, सत्य खजाना खोया रे–२
कानों में है शोर जगत का, भूल गया हरि धुन॥

साधो संतो की संगति से, दूर सदा तू बैठा रे–२
जिस पानी में कीचड़ फैली, उस पानी में बैठा रे–२
एक दिन तुझको ले डूबेंगे, ये तेरे अवगुण॥

जीवन में अमृत रस घोल

जीवन में अमृत रस घोल।
राधेश्याम, राधेश्याम, राधेश्याम बोल॥

ईश्वर नाम की जपले माला, ये पल फिर न आने वाला।
मानव जनम है बड़ा अनमोल॥

जाग बावरे अब तो जाग, लोभ ईर्ष्या मन से त्याग।
सोया बहुत अब अंखियाँ खोल॥

क्या काटा, क्या बोया तूने, क्या पाया, क्या खोया तूने।
अपने किये कर्मों को खोल॥

मुक्तक–मन के अँधियारे में जलाले, ईश्वर नाम की ज्योति।
तोड़ दे मोह माया के बंधन, चुनले सच्चे मोती॥

जग में सुन्दर हैं दो नाम

जग में सुन्दर हैं दो नाम, चाहे कृष्ण कहो या राम।
बोलो राम राम राम, बोलो श्याम श्याम श्याम॥

माखन बृज में एक चुरावे, एक बेर भिलनी के खावे।
प्रेमभाव से भरे अनोखे, दोनो के हैं काम॥ चाहे... ॥

एक कंस पापी को मारे, एक दुष्ट रावण संहारे।
दोनों दीन के दुःख हरत हैं, दोनों बल के धाम॥

एक हृदय में प्रेम बढ़ावे, एक ताप संताप मिटावे।
दोनो सुख के सागर हैं, और दोनो पूरण काम।।

एक राधिका के संग राजे, एक जानकी संग विराजे।
चाहे सीता राम कहो, या बोलो राधेश्याम॥ बोलो.. ॥

जगत में जो भी आते हैं

जगत में जो भी आते हैं, अपने अपने कर्मों का फल।
सब ही पाते हैं, जगत में जो भी आते हैं॥

निर्धन हो या हो धनवान, कर्मों से बनते असमान।
जब तक भोग न ले कर्मों को, तज नहीं पाते हैं वो प्राण॥

कौन यहाँ किसको छल पाया, सबने अपना आप गँवाया।
मूरख हैं जो ये समझे हैं, औरों ने है धोखा खाया॥

इसीलिए कहते हैं बन्दे, जब तक है श्वांसों के फन्दे।
सद्कर्मों से झोली भरले, छोड़ दे इस दुनियाँ के धँधे॥

जो बैठे चरणों में तिहारे

जो बैठे चरणों में तिहारे, उसे वाणी का वरदान मिले।
मातु जिसकी ओर निहारे, उसे गुणियों में स्थान मिले॥

कंठ समर्पित, गान समर्पित, हृदय समर्पित, प्राण समर्पित।
अर्पित श्रद्धा भाव हमारे, हमें साँचे स्वर का गान मिले॥

शब्द कहाये ब्रह्म सहोदर, कुछ भी नहीं संगीत से बढ़कर।
स्वर साधक जब स्वर में पुकारे, उसे सहज स्वयं भगवान मिले॥

वर दे वीणा वादिनी वर दे, स्वर श्रुति देकर शाश्वत कर दे।
तेरी वीणा जब झंकारे, तब गायक को नव प्राण मिले॥

जल जाये जिव्हा पापिनी

जल जाये जिव्हा पापिनी, राम के बिना।
राम के बिना रे भैया, श्याम के बिना॥
त्रिया कंथ बिन, मत महंत बिन, हाथी दंत बिना।
ग्राम पंच बिन, ऋतु बसंत बिन, आदि अंक बिना।।
नाम बिना नर जैसे, अश्म आगाम बिना।।
क्षत्री आन बिन, विप्र ज्ञान बिन, घर संतान बिना।
देह प्राण बिन, हाथ दान बिन, भोजन मान बिना।
मोर कहे बेकार नाचना, ज्यों घनश्याम बिना॥
पंछी पंख बिन, बिच्छु डंकबिन, आरती शंख बिना।
गणित अंक बिन, कमल पंक बिन, निशा मयंक बिना।
व्यर्थ भ्रमण, चिंतन भाषण बिन, अच्छे काम बिना॥
नयन दरश बिन, शीश पाग बिन, नारी सुहाग बिना।
पुष्प बाग बिन, संत त्याग बिन, गायन राग बिना।
हम सबका बेकार है जीना, रघुवर राम बिना॥

जाग मुसाफिर क्या सुख

जाग मुसाफिर क्या सुख सोये।
आखिर तुझको जाना रे॥
इस सराय में रह न पाये, क्या राजा क्या राणा रे।
काहे पैर फैलाये पगले, घड़ी पल का ठहराना रे॥
इक आवत दूजा चल जावें, कायम नहीं ठिकाना रे।
यह छल भरियाँ सुन्दर परियाँ, काहे देख लुभाना रे॥
इस मकान में चोर बसत हैं, अपना माल बचाना रे।
आ परदेश खर्च मत कीजै, यहाँ तो मुझे कमाना रे।।
दूर देश में जाना तुझको, पास न कछु समाना रे।
ब्रह्मानंद सुखद कर बन्दे, जो आगे सुख पाना रे॥

जब भक्त नहीं होगें

जब भक्त नहीं होगें, भगवान कहाँ होगा।
तेरी मेरी समस्या का, समाधान कहाँ होगा॥

सेवक तो हुए लाखों, और सेवा भी करते हैं।
पर श्रवण कुमार जैसा, सेवादार कहाँ होगा॥

दानी तो हुए लाखों, और दान भी करते हैं।
पर कन्या दान जैसा, कोई दान कहाँ होगा॥

सत्यवादी हुए लाखों, और सत्य भी कहते हैं।
पर हरिश्चन्द्र जैसा, सत्यवादी कहाँ होगा॥

ज्ञानी हुए लाखों, और ज्ञान भी देते हैं।
पर गुरुवर के जैसा, विद्वान कहाँ होगा॥

मित्र हुए लाखों और मित्रता भी करते हैं।
पर कृष्ण सुदामा सा-कोई मित्र कहाँ होगा॥

यदि गायक के गले में लोच हो और वह उचित मुर्छना, आरोह, अवरोह का विचार कर साम गान करे, तो मंत्रार्थ न जानने पर भी भावों की दिव्य अनुभूति हुए बिना नहीं रहती।
–सामवेद (पृ.16)ट्ठ

जब मोहन के अधर चढ़े री

जब मोहन के अधर चढ़े री, तब ही तू बोले।
नहीं तो बैठी रही री, सदा मौन सी।
बंशी तूने तपस्या करी कौन सी-

छीली गई और छेदी गई मैं, जब जाकर सुर को पहचाना।
तपी आग में जो मैं अकेली, तब ये बंशी नाम धराना।
फिर बजाने वालों को रही ढूढंती॥ बंशी..॥

मौन रही मैं वर्षों सहेली, तब मोहन को मैंने पाया।
मेरे सुर भी महके सारे, राग रंक तब खिलने आया।
और बजायें तो बजने लगी जौन सी॥ बंशी..॥

ऐसी घोर तपस्या की तब, हरि अधरों पर मैं धारी।
राधा जले है मुझसे देखो, कैसी है ये दशा हमारी।
धुन बजे तो बजाये, सदा जोन सी॥ बंशी...॥

मोहे लागी लगन

मोहे लागी लगन, गुरु चरणन् की।
गुरु चरणन् की, गुरु चरणन् की॥

चरण बिना मोहे कछु नहीं भावे,
जग माया सब सपनन् की, मोहे लागी लगन गुरु चरणन् की।।

भवसागर सब सूख गये हैं,
भीतर नहीं मोहे तरणन् की, मोहे लागी लगन गुरु चरणन् की।।

मीरा के प्रभु गिरिधर नागर,
आस गही गुरु चरणन् की, मोहे लागी लगन गुरु चरणन् की।।

जब नैया तेरी डोले रे

जब नैया तेरी डोले रे, और मन तेरा घबराये।
जब श्रद्धा तेरी डगमग हो, और सुख शांति खो जाये॥
तप–जप करले तब जब करले तप–जप करले॥

गंगा में स्नान करना क्यों, काशी में करवट लेना क्यों ।
अरे मन मंदिर में मुरख बिठाकर॥ जप करले-- ॥

क्यों भूला ब्रह्मा का पुत्र है तू, क्यों भूला उनका अंश तू।
अरे दिव्य ज्ञान पाने के लिए॥ तप–जप करले--- ॥

जो माँगे सम्पति तुझको मिले, जो माँगे दर्शन तुझको मिले।
अरे दिव्य दान पाने के लिए॥ तप जप--- ॥

जब तेरी डोली निकाली

जब तेरी डोली निकाली जायेगी।
बिन मुहूरत के उठा ली जायेगी॥

जब हकीमों से कहो यों बोलकर।
कहते थे अपनी किताबें खोलकर॥
यह दवा हरगिज न खाली जायेगी॥

ज़र सिकन्दर का यहीं पर रह गया।
मरते दम सुकरात भी यों कह गया॥
यह घड़ी हरगिज़ न टाली जायेगी॥

ऐ मुसाफ़िर ! क्यों पसरता है यहाँ।
बिन किराये के मिला तुझको मकां॥
कोठरी खाली करा ली जायेगी॥

गोविन्द हरे गोपाल हरे

गोविन्द हरे, गोपाल हरे।
जय जय जय, दीन-दयाल हरे॥

घनश्याम हरे, नन्दलाल हरे।
जय जय यशोदा के लाल हरे॥
सुखधाम हरे श्रीराम हरे।
सीताराम हरे श्री राम हरे॥

जै कृष्ण कन्हैया श्याम हरे।
राधापति राधेश्याम हरे॥
बृजचन्द्र, मुकुन्द मुरारी हरे।
यदुनन्दन नन्दकुमार हरे॥

भज केशव कृष्ण कृपाल हरे।
नटनागर दीन दयाल हरे।
मन मान कहा कर ध्यान हरे।
निर्लेप निरंजन गान हरे॥

जगदीश हरे भगवान हरे।
जन रंजन भंजन मान हरे॥
जप ॐ सनातन ईश हरे।
शिव-शंकर शंभु गिरिजा हरे॥

नीली छत के नीचे बैठा

नीली छत के नीचे बैठा, जाने कौन मदारी।
जैसे-जैसे नाच-नचाये, नाचे दुनियाँ सारी॥

निराकार कोई कहता है, कोई कुछ-कुछ रूप बताये।
कोई कहे वो रूप बदलकर, धरती पे आ जाये॥
कोई कहे वो कण-कण में है, पर वो नजर न आये।
वो अनदेखा एक पहेली, ना सुलझाई जाये॥

सुनते हैं उसकी आँखे हैं, सूरज चाँद सितारे।
कब-कब हम करते हैं, क्या-क्या पल-पल हमें निहारे।।
मछली को क्या लेना, त्यों पूछले सागर के धारे।
उस शक्ति की भक्ति करले, ओ बन्दे मतवाले।।

कहते हैं जिसने हैं बनाये, धरती गगन समन्दर।
और सबको जो नाच-नचाये, है एक छूपा कलेन्दर।।
वो मालिक छुपकर बैठा है, हर इन्सान के अन्दर॥
प्रेमभाव से सबसे मिलना, इस दुनियाँ में सिकन्दर॥

तुम न आये प्रभु जी

तुम न आये प्रभु जी सुबह हो गई।
मेरी पूजा की थाली धरी रह गई॥
भोग रक्खा रहा फूल मुरझा गये।
आरती भी जली की जली रह गई॥

मुझसे रूठे हो क्यों आप आते नहीं।
कोई अपराध मेरा बताते नहीं॥
देखते देखते श्वाँस रूकने लगी।
क्या बुलाने में कोई कमी रह गई॥

हाल बेहाल है अब तो आओ हरि।
मन के मनकों की माला बनाई हरि॥
वरना मनके ये मनके बिखर जायेगें।
कौन सी भावना की कमी रह गई॥

ज्ञान भी हो गया, ध्यान भी हो गया।
मेरा मन सारे जग से अलग हो गया॥
इतना होते हुए भी समझ न सका।
फिर भी दर्शन की इच्छा बनी रह गई॥

तोरा मन दर्पण कहलाये

तोरा मन दर्पण कहलाये।
भले बुरे सारे कर्मों को देखे और दिखाये॥

मन ही देवता मन ही ईश्वर, मन से बड़ा न कोय।
मन उजियारा जब-जब फैले, जग उजियारा होय।
इस उजले दर्पण पर प्राणी, धूल न जमने पाये॥

सुख की कलियाँ दुःख के काँटे, मन सबका आधार।
मन से कोई बात छुपे न, मन के नैन हजार।
जग से चाहे भाग ले कोई, मन से भाग न पाये॥

तन की दौलत ढलती छाया, मन का धन अनमोल।
तन के कारण मन के धन को, क्यों माटी में रोल।।
मन की कदर भुलाने वाला, हीरा जन्म गँवाये।।

मुक्तक-
प्राणी एक दिन प्रभु से पूछ, किसी विधि मिलना होए।
प्रभु कहे तू मन को पाले, पा जायेगा मोहे।।

तूने अजब रचा भगवान

तूने अजब रचा भगवान, खिलौना माटी का।
माटी का रे, माटी का,-२ बार
कान दियो हरि भजन सुनन को।
तू मुख से कर गुणगान, खिलौना माटी का॥
जिह्वा दी हरि भजन करन को।
ये आँखे कर पहचान, खिलौना माटी का॥
शीश दिये गुरु चरण झुकन को।
और हाथ दिए कर दान, खिलौना माटी का॥
सत्य नाम का बना के बेड़ा।
और उतरे भव से पार, खिलौना माटी का॥

तुम्हारा प्यार मिल जाये

तुम्हारा प्यार मिल जाये, जिन्हें एक बार जीवन में।
वो वन्दे हो नहीं सकते, कभी लाचार जीवन में॥

नहीं होते जिन्हें आदत, गिले शिकवे सुनाने की।
बिना मांग ही मिलती है, उन्हें हर्षे जमाने की।
कि सपने हो गये उनके, सभी साकार जीवन में॥

मुसीबत आ नहीं सकती, जहाँ गुणगान तेरा है।
वो घर जन्नत से अच्छा है, जहाँ तेरा बसेरा है।
मगर लाजिम है आ जाये, तेरा इतबार जीवन में॥

सबर संतोष मिलता है, तुम्हारे पास आने से।
खजाने भर दिये तूने, जरा से मुस्कुराने से।
जिन्हें भी शौक मिल जाये, तेरा आधार जीवन में॥

तोरी गठरी में लागा चोर

तोरी गठरी में लागा चोर, बटोहिया अब काहे सोय।

पाँच पचीस तीन हैं चोखा, सब मिल कीन्हा सोर।
जाग सवेरा बाट अनेरा, फिर नहीं लागे जोर॥

भवसागर इक नदी बहत है, उतरे जीव बहोर।
कहे कबीर सुनो भाई साधो, जागत कीजै भोर॥
बटोहिया अब काहे सोवे॥

तेरी माया का न पाया

तेरी माया का न पाया कोई पार, कि लीला तेरी तू ही जाने।
तू ही जाने हो श्याम तू ही जाने।
सारी दुनियाँ के पालन हार, लीला तेरी----॥
बन्दीगृह में जन्म लिया, पल भर न वहाँ पर ठहरा।
टूट गये सब ताले सो गये, देते थे जो पहरा॥
आया अंबर से संदेश, मानो वासुदेव आदेश।
बालक लेके जाओ नंद जी के द्वार, के लीला तेरी---॥
बरखा पवन चंचला अचला, कंस समान डराये।
ऐसे में शीशु को लेकर कोई, बाहर कैसे जाये॥
प्रभु का सेवक शेष नाग, देखो जागे उनके भाग।
उसने फन पे रोका है बरखा भार, के लीला तेरी---॥
लो आ गई राक्षसी पूतना, माया जाल बिछाने।
माँ से बालक बहला आई, विष भरा दूध पिलाने॥
तेरी शक्ति का अनुमान, करना पाई वो नादान।
जिसे मार उसे तूने तार, के लीला तेरी तू ही---॥
वासुदेव जी हिम्मत हारे, देख चढ़ी यमुना की।
चरण चुमने की अभिलाषा, थी हिमगोरी ललना की॥
तू ने पग सुकुमार, दिये पानी में उतार।
छुके रस्ता बन गई, जमुना जी की धार---॥
नन्द के घर पहुँचे यशोदा को, भाग्य से सोते पाया।
कन्या लेकर शीशु को छोड़ा, हाय रे दील भर आया॥
कोई हंसे चाहे रोये, जो तू चाहे होये।
सारी जगती पे तेरा अधिकार, के लीला तेरी---॥

मुक्तक-हे दुनियाँ के पालन हारे, महिमा अति महान।
तेरी लीला तू ही जाने, भक्तों के भगवान॥

तीन लोक के स्वामी दौड़े

तीन लोक के स्वामी दौड़े, अपनी सुध बुध खोये।
मित्र सुदामा से मिलकर, करुणा के सागर रोये॥

एक द्वारिका का राजा और एक दरिद्र भिखारी।
दंग रह गये सभी देख कर, ऐसी मित्रता न्यारी।
बोले कृष्ण कहाँ थे अब तक, बाल सखा तुम खोये॥

कृष्ण अनुग्रह देख पड़े, संकोच में सखा सुदामा।
चँवर डुलाने कान पुकारे, रूकमणी और सत्यभामा।
जनम जनम के पुण्य फले तब, ऐसा स्वागत होये॥

लिपट गये पैरों से हरि ने हर छाला सहलाया।
तभी पाँव धोने को उनके थाल और जल आया।
पड़ा रहा जल मधु सूदन ने, आँसु से पग धोये॥

पहली मुट्ठी चावल खाके, कुटीया महल बनाई।
दूजी मुट्ठी से ब्रह्माण ने अतुल सम्पदा पाई॥
तीजी मुट्ठी जहाँ उठाई रूक्मिणी ने तब टोका।
इस पर है अधिकार हमारा, कहकर उनको रोका॥
धन्य धन्य ये अमर मित्रता होय तो ऐसी होये॥

तू दयालु दीन हौं

तू दयालु दीन हौं, तू दानि हौं भिखारी।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप पुञ्जहारी॥

नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मोसों।
मो समान आरत नहिं, आरतहर तो सों॥

ब्रह्म तू जीव हौं, तू ठाकुर हौं चेरो।
तात, मातु, गुरु, सखा, सब विधि हितु मेरो॥

तोहि–मोहि नाते अनेक, मानिए जो भावे।
ज्यों त्यों तुलसी कृपालु, चरण शरण पावे॥

मुक्तक–

ब्रह्मा से कुछ लिखा भाग्य में, मनुज नहीं लाया है।
जो कुछ भी है उसने अपने, भुजबल से पाया है॥
ब्रह्मा का अभिलेख पढ़ा करते, निरुद्यमी प्राणी।
धाते वीर कुअंक भाल के, बहा भ्रवों से पानी॥

सुभ्हान तेरी कुदरत

सुभ्हान तेरी कुदरत के कुर्बान..४ बार

पानी ऊपर बिछा बिछौना, तम्बू तना आसमान।

चाँद सूरज भय, ना जग सारा जहान॥

इस नाज को जो देखने आया, रहा ना बूढ़ा जवान॥

कहत कबीर सुनो भाई साधो, एक वही पहचान॥

तेरी मेहरबानी का है

तेरी मेहरबानी का है बोझ इतना,
जिसे मैं उठाने के क़ाबिल नहीं हूँ।
मैं आ तो गया हूँ मगर जानता हूँ,
तेरे दर पे आने के क़ाबिल नहीं हूँ॥

जमाने की चाहत ने मुझको रूलाया,
तेरा नाम हरगिज़ जुबाँ पे न आया।
गुनहगार हूँ मैं सितमगार हूँ मैं,
तुम्हें मुँह दिखाने के क़ाबिल नहीं हूँ॥

तुमने अदा की मुझे ज़िन्दगानी,
मगर तेरी महिमा मैंने न जानी।
क़रज़दार तेरी दया का हूँ इतना,
कि कर्ज़ा चुकाने के क़ाबिल नहीं हूँ॥

माना कि दाता हो तुम कुल जहाँ के,
मगर झोली कैसे फैलाऊँ मैं आके।
जो पहले दिया है वो कुछ कम नहीं है,
उसे भी संभालने के क़ाबिल नहीं हूँ॥

तमन्ना यही है कि सर को झुकाऊँ,
मैं तेरा दर्शन जी भर के पाऊँ।
सिवा आशबिन्दु के, ओ मेरे मालिक,
मैं कुछ भी चढ़ाने के क़ाबिल नहीं हूँ॥

तेरी बन जायेगी

तेरी बन जायेगी, गोविन्द गुण गाये से।
राम गुण गाये से, श्याम गुण गाये से॥

ध्रुव की बन गई, प्रहलाद की बन गई।
द्रोपदी की बन गई, चीर के बढ़ाये से॥

बाली की बन गई, सुग्रीव की बन गई।
हनुमत की बन गई, सिया सुधि लाये से॥

नंद की बन गई, यशोदा की बन गई।
गोपियन की बन गई, माखन के खाये से॥

गज की बन गई, गीध की बन गई।
केवट की बन गई, नाव पे चढ़ाये से॥

उद्धव की बन गई, भीष्म की बन गई।
अर्जुन की बन गई, गीता ज्ञान पाये से॥

तुलसी की बन गई, सूर की बन गई।
मीरा की बन गई, गोविन्द हरि गाये से॥

मनवा रे हरि के भजन

मनवा रे हरि के भजन करले, भजन करलेगा भजन करले।

पैसे पेंड़ ले उफान टूट जाही, तैसे तन ले प्राण छूट जाही॥
कच्चलुहिया काया के जतन करले॥

चलती गाड़ी कस चलत हे श्वांसा, तैंहा झन करबे भैया रे आशा।
दुनियाँदारी ला छोंड़, तैं प्रण करले॥

तू लाख हिफ़ाज़त कर ले

तू लाख हिफ़ाज़त कर ले, तू लाख करे रखवाली।
उड़ जायेगा एक दिन पंछी, रहेगा पिंजरा खाली॥

न कोई अंजुमन होगी, न ज़िक्रे अंजुमन होगा।
जो दौलत आज है तेरी, वो कल गैरों का धन होगा॥
दो साल काम आयेगें, न रंगी पैरहन होगा।
लिवाले आखरी तो बस, वही दो गज़ कफन होगा॥
जब उड़ जायेगा पंछी रुह का, बेजान तन होगा।
दबा देंगे तुझे सब खाक में, मैला बदन होगा॥

आ गई जिसकी उसे, जाना पड़ेगा बे गुमाँ।
देख ले लुकमान की हीकमत गई सब्र आयेगा॥
कोई जाता है यहाँ से, कोई आता है यहाँ।
एक दिखावा एक तमाशा, एक मेला है जहाँ॥
जिसको ताका मौत ने, फिर वो बचता है कहाँ।
कोई आगे कोई पीछे, सबको जाना है वहाँ॥

न काम आयेंगे रोज़े हस्र ये लब्रेस ये पैमाने।
धरा रह जायेगा सब ठाठ, तेरा देख दिवाने॥
बिछड़ जायेंगे तेरे दोस्त, और एहबाब ये सारे।
सुबह होते ही जैसे कूच कर जाते हैं बन्जारे॥
हवा में मौत के ये ज़िन्दगी नाजुक सफीना है।
यहाँ हरेक को एक न एक दिन फना का जाम पीना है॥

दशरथ ने कहा यूं

दशरथ ने कहा यूं कैकई से, एक बात मुझे भी कहने दें।
चाहे राज भरत को दे देना, मेरे राम को घर पर रहने दें॥

महलों में पला है राम मेरा, जंगल की मुसीबत क्या जाने।
मेरा राम फूल सा कोमल है, काटों की राहें क्या जाने॥
मैं हाथ जोड़ तुझसे कहता, इतना दुःख अब मत सहने दें॥

प्राणों से प्यारा नाम मेरा, आखों का तारा राम मेरा।
है अवध दुलारा राम मेरा, वह ही जीवन धन–धाम मेरा।
यदि राम मेरा जाये तो फिर, मुझको अब व्याकुल मरने दें॥

दाता एक रामजी

दाता एक रामजी भिखारी सारी दुनियाँ।
राम एक देवता, पूजारी सारी दुनियाँ॥

दो दिन का जीवन प्राणी करले विचार तू।
प्यारे प्रभु को अपने मन में निहार तू।
बिना हरिनाम के दुखियारी सारी दुनियाँ॥

नाम का प्रभाव जब अन्दर जगाएगा।
प्यारे श्रीराम का तू दर्शन पायेगा।
ज्योति से जिसकी है, उजियारी सारी दुनियाँ॥

दुःख में मत घबराना

दुःख मे मत घबराना पंछी, ये जग दुःख का मेला।
चाहे भीड़ बहुत अम्बर पर, उड़ना तुझे अकेला॥

नन्हें कोमल पंख ये तेरे, और गगन की ये दूरी।
बैठ गया तो कैसे होगी, मन की अभिलाषा पूरी।
उसका नाम अमर है जग में, जिसने संकट झेला॥

चतुर शिकारी ने रखा है, जाल बिछाकर पग-पग पर।
फंस मत जाना भूल के पगले, पछतायेगा जीवन भर।
लोभ के दानो में मत पड़ना, बड़े समझ का खेला है॥

जब तक सूरज आसमान पर, बढ़ता चल तू चलता चल।
घिर जायेगा अंधकार जब, बड़ा कठिन होगा पल-पल।
किसे पता कि उड़ जाने की, आ जाती कब बेला॥

राम रमैया गाये जा

राम रमैया गाये जा, राम से लगन लगाये जा।
राम ही तारे राम उबारे, राम नाम दोहराये जा॥

सुबह यहाँ तो शाम वहाँ है, राम बिना आराम कहाँ है॥
राम रमैया गाये जा, जीवन के सुख पाये जा॥

भटकाये जब भूल भूलइयां, बीच भँवर जब अटके नइयाँ॥
राम रमैया गाये जा, हर उलझन सुलझाये जा॥

राम नाम बिन जागा सोया, अंधियारे में जीवन खोया॥
राम रमैया गाये जा, मन का दीप जलाये जा॥

दुनियाँ से जा रहा हूँ

दुनियाँ से जा रहा हूँ, रोको ये दुनियाँ वालों।
यह खैंचता है मुझको, अब पकड़ो इसे प्यारों॥

नोटों के बीस बण्डल, छाती पे मेरी रख दो।
धनवान था मैं मुझको, निर्धन न करके मारो॥

तुम जानते हो मैं था, कपड़े की मिल का मालिक।
तन पर हैं तीन कपड़े, उनको तो मत उतारो॥

इक मिनट भी अकेला, मुझको न छोड़ते थे।
अब जा रहा हूँ तनहा, साथ आओ रिश्तेदारों॥

कहते थे जो कि हम तो, तेरे साथ ही मरेंगे।
अब कहाँ पे मर गए हैं, उनको आवाज मारो॥

दीनन दुःख हरण देव

दीनन दुःख हरण देव, सन्तन हितकारी॥

अजामिल गीध, व्याध, इनमें कहो कौन साधु।
पंछीहू पद पढ़ात, गणिका सी तारी॥ दीनन... ॥

ध्रुव के सिर छत्र देत, प्रह्लाद कहं उबार लेत।
भक्त हेत बाँध्यो सेतु, लंकापुरी जारी॥ दीन.... ॥

गज को ग्राह ग्रस्यो, दुशासन चीर सिच्यो।
सभा बीच कृष्ण-कृष्ण, द्रापदी पुकारी।।

कितने हरि आय गए, बस जन आरुढ़ भये।
सूरदास द्वार ठाढ़ो, आँधरो भिखारी॥ दीनन... ॥

दाग तो धोया नहीं

दाग तो धोया नहीं, स्नान किया तो क्या हुआ॥

काशी गया मथुरा गया, बोझ ले फिरता रहा।
मन मैल तो धोया नहीं, तीरथ किया तो क्या हुआ॥

जीते जी सेवा न की, हाड़ ले गंगा गया।
पितु आज्ञा तो मानी नहीं, बेटा हुआ तो क्या हुआ॥

अंग पर भस्मी लगाई, वेष भगवा ले लिया।
गुरु ज्ञान तो जाना नहीं, चेला हुआ तो क्या हुआ॥

ऐसी लागी लगन

ऐसी लागी लगन, मीरा हो गई मगन।
वो तो गली-गली हरि गुण गाने लगी॥
महलो में पली, बनके जोगन चली।
मीरा रानी दीवानी कहाने लगी॥

कोई रोके नहीं कोई टोके नहीं।
मीरा गोविन्द गोपाल गाने लगी॥
बैठी संतो के संग रंगी मोहन के रंग।
मीरा प्रेमी प्रीतम को मनाने लगी॥

राणा ने विष दिया मानो अमृत पिया।
मीरा सागर में सरिता बहाने लगी॥
दु:ख लाखो सहे मुख से गोविन्द कहे।
मीरा गोविन्द गोपाल गाने लगी॥

नहीं है मन का कोई ठिकाना

नहीं है मन का कोई ठिकाना, घड़ी में कुछ है-२
कभी न धोखे में इसके आना, घड़ी में कुछ है-२

कभी तो ये मन गगन पे चढ़ता, कभी है पाताल में उतरता।
कभी ये मूरख कभी सयाना, घड़ी में कुछ है-२

कभी है योगी कभी विरागी, कभी विषय वासना का त्यागी।
कभी करे फिर मलिन चाहना, घड़ी में कुछ है-२

गुरु की सेवा और शब्द गुरु का, है मंत्र इस मन को वश करण का।
गुरु की सेवा में चित्त लगाना, घड़ी में कुछ है-२

नदी किनारे खड़ा है पगले

नदी किनारे खड़ा है पगले, फिर भी तू है प्यासा।
हरि का नाम तो पास है वन्दे, फिर क्यों छोड़े आशा॥

इस जगती नदियाँ में देखो, प्रभु का जल है प्यारा।
छल-छल, कल-कल निर्मल है जल, प्रभु सुमिरन की धारा।
जीवन की गति ऐसो है जस, जल में पड़े बतासा॥

बहती नदियाँ की धारा में, जी जल भरकर पीले।
जनम-जनम की प्यास बुझे है, इस जीवन को जीले।
मृग तृष्णा की भटक मिटे और, मन की मिटे तिपासा॥

जल दर्पण तू देख ले मुख को, प्रभु जल ही तन धोता।
निर्मल तन-मन हो जावे रे, रोज लगा ले गोता।
'श्यामदास' हरि जल का प्यासा, जीवन तोला मासा॥

नाम लिया हरि का जिसने

नाम लिया हरि का जिसने, तिन और का नाम लिया न लिया।

पशु पक्षी सभी जग जीवन को, जिसने अपने सम ज्ञान सदा।
सबका परिपालन नित्य किया, तिन विप्रन दान दिया न दिया॥

जिनने घर में प्रभु की चर्चा, नित होवत है दिन रात सदा।
सत्संग कथामृत पान किया, तिन तिरथ नीर न पीया॥

जिन काम किये परमार्थ के, तन से, मन से, धन से करके।
जग अंदर किरत छाय रही, दिन चार विशेष जिया न जिया॥

गुरु के उपदेश समागम से, जिनने अपने घट भीतर में।
ब्रह्मानंद स्वरूप को जान लिया, तिन साधन योग किया न किया॥

नाम हरि का जपले रे वन्दे

नाम हरि का जपले रे वन्दे, फिर पिछे पछतायेगा॥

तू कहता है मेरी काया, काया का गुमान क्या।
चाँद सा उजला ये तन तेरा, मिट्टी में मिल जायेगा॥

वहाँ से क्या तू लाया वन्दे, यहाँ से क्या ले जायेगा।
मुट्ठी बान्ध के आया जग में, हाथ पसारे जायेगा॥

बालपन में खेला खाया, आई जवानी मस्त रहा।
बुढ़ापन में रोग सताये, खाट पकड़ घबरायेगा॥

जपना है तो जपले वन्दे, आखिर तो मिट जायेगा।
कहत कबीर सुनो भई साधो, कर्मों के फल पायेगा॥

न्हाये धोये क्या भया

न्हाये धोये क्या भया, जो मन मैल न जाय।
मीन सदा जल में रहे, धोए बास न जाय॥

माला फेरत जुग गया, गया न मन का फेर।
कर का मन का डारि के, मन का मन का फेर॥

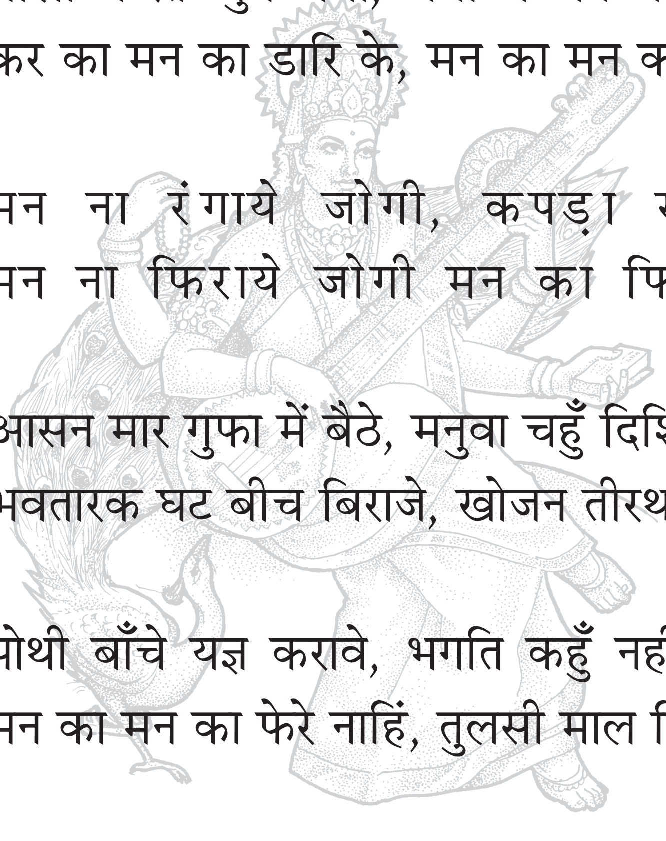

मन ना रंगाये जोगी, कपड़ा रंगाये।
मन ना फिराये जोगी मन का फिराये॥

आसन मार गुफा में बैठे, मनुवा चहुँ दिशि धाये।
भवतारक घट बीच बिराजे, खोजन तीरथ जाये॥

पोथी बाँचे यज्ञ करावे, भगति कहुँ नहीं पाये।
मन का मन का फेरे नाहिं, तुलसी माल फिराये॥

योगी होके जागा नाहिं, चौरसी भरमाये।
जोग जुगत को दास कबीरा, अखल निरजंन पाये॥

मन के भीतर ही छिपी, स्वर्ग सुखों की खान।
मन के भीतर धधकती, ज्वाला नरक समान॥

प्राणी जीवन गति अन्जानी

प्राणी जीवन गति अन्जानी, चलता जो रुख देख हवा का॥
वो ही सच्चा ज्ञानी.......प्राणी जीवन॥

अनगित अबधु सकल जड़ चेतन, नित नभ प्राणों का सम्मेलन॥
सबकी की कठिन कहानी.......प्राणी जीवन॥

कोई नाम सुयश का घायल, कोई धन के पीछे पागल॥
राजा हो या रानी.......प्राणी जीवन॥

कोई बूँद-बूँद को तरसे, लेकिन सागर पे जल बरसे॥
नही काम का पानी.......प्राणी जीवन॥

प्यासा पपीहा जैसे पुकारे

प्यासा पपीहा जैसे पुकारे, देखकर बादल श्याम।
ऐसी लगन से मैं भी पुकारूँ, नाम तेरा सुबह शाम॥

बन जाये मेरी ऐसी सरल सी, निष्ठा तुम्हारे चरणों में।
माता-पिता के जैसा भरोसा, होता है बालक के मन में॥
सागर समर्पित नदियों को जैसे, आता नहीं विश्राम॥

तेरा ही चिंतन तेरा ही अर्चन, तेरा ही वन्दन करूँ मैं।
तेरा मन हर दर्शन करूँ मैं, ऐसे मगन सा रहूँ मैं॥
चंदा को जैसे देखे चकोरा, भूल के सारे काम॥

हे नाथ मुझको तेरी कृपा की, ऐसी प्रतिभा रहेगी।
फूल कमल का जैसे ये सोचे, कैसे ये रात कटेगी॥
सूरज में जैसे खिलकर कमल ऐसे, सूरज को करता प्रणाम॥

पहले पाव पखारूँ प्रभु

पहले पाँव पखारूँ प्रभु फिर गंगा पार उतारू॥

चरण कमल की धूल तुम्हारी, छूने में इसको डर भारी।
हो गई शिला अहिल्या नारी, ऐसी ना हो नाव हमारी॥
मैं क्यों काज बिसारूँ, प्रभु फिर गंगा पार उतारूँ ॥

चरण कमल से गंगा जी में, पावन जल ये पाया।
धोकर पाँव पीयूँ चरणामृत, तर जाये ये काया॥
नैय्या के खेवैया तुम सब, सागर पार तरैया तुम सब-
सागर पार तरैया।
मेल जोल का ऐसा नाता, मैं ना प्रभु से पाऊँ॥

बाँट निहारे घनश्याम

बाँट निहारें घनश्याम, नैना नीर झरे।
आस करें दिन रैन, नैना नीर झरे॥

योगध्यान में चित्त नहीं लागे।
मन की पीर ही पल पल जागे।
लगन लगी तेरे धाम, नैना.... ॥

बाँके बिहारी कृष्ण कन्हाई।
काहे सखे सुध बुध बिसरायी।
कब आओगे मेरे धाम, नैना.... ॥

जीवन ज्योति जगे माँ

जीवन ज्योति जगे माँ, मिटे अज्ञान अंधेरा।
मिटे अंधेरा माँ, मिटे अंधेरा॥

ताकत वर सबको धमकाते, उग्रवाद उत्पात मचाते।
रक्षक, उन्हें बनाओ, तोड़ दो भय का घेरा॥

धन सम्पन्न व्यसन करते हैं, दीनों की सम्पति हरते हैं।
पोषण, इन्हें सिखाओ, भुलाकर तेरा मेरा॥

बुद्धिमान भ्रम फैलाते हैं, रोज कुचक्र नये रचते हैं।
सच्ची, राह दिखाओ, हो रहा नया सवेरा॥

राजनीति शुभ नीतिवान हो, नेता को कर्त्तव्य भान हो।
पक्षपात, मिट जाय, न्याय को मिले बसेरा॥

धर्मक्षेत्र दुर्भाव मिटाये, मानव में देवत्व जगाये।
स्वर्ग, धरा पर बसे, नर्क का उखड़े डेरा॥

बीत गए दिन भजन

बीत गए दिन भजन बिना रे।

बाल अवस्था खेल गँवायो।
जब यौवन तब मान घना रे॥

काहे कारन मूल गँवायो,
अजहूँ न गयी मन की तृष्णा रे॥

कहत कबीर सुनो भई साधो,
पार उतर गयो सन्त जना रे॥

बोल हरि बोल हरि

बोल हरि बोल हरि, हरि-हरि बोल, केशव माधव, गोविन्द बोल।

नाम प्रभु का है सुखकारी, पाप कटेंगे क्षण में भारी।
नाम का पीले अमृत घोल, केशव माधव हरि--- ॥

शबरी, अहिल्या, सदन कसाई, नाम जपन से मुक्तिपाई।
नाम की महिमा है अनमोल, केशव माधव हरि--- ॥

रटले मन तू आठो याम, राम नाम में लगे न दाम।
जनम गँवाता क्यों अनमोल, मूरख अंधे नैना खोल।।

सुवा पढ़ावत गणिका तारी, बड़े-बड़े निशिचर संहारी।
गिन-गिन पापी तारे तोल, केशव माधव हरि--- ॥

नरसी भगत की हुण्डी शिकारी, बन गयो साँवल शाह बनवारी।
कुण्डी अपने मन की खोल, केशव माधव हरि--- ॥

मुक्तक-
क्षणभंगुर जीवन की कलिका, कल प्रातः को जाने खिली न खिली।
मलयाचल की शुचि शीतल मंद, सुगन्ध समीर मिली न मिली॥
कलिकाल कुठार लिए फिरता, तन नम्र पे चोट झिली न झिली।
जप ले हरिनाम अरे रसना, फिर अन्त समय पे हिली न हिली॥

बाजे रे मुरलिया बाजे

बाजे रे मुरलिया बाजे,
अधर धरे मोहन मुरली पर, होंठ पे माया विराजे ॥

हरे-हरे बाँस की बनी मुरलिया, मरम-मरम को छुए अँगुरिया।
चञ्चल चतुर अँगुरिया जिस पर, कनक मुँदरिया साजे ॥ बाजे

पीली मुँदरी अँगुरी में, मुदरी पर राधा का नाम।
आखर देखे, सुने मधुर स्वर, राधा गौरी नाचे ॥ बाजे रे-- ॥

भूल गयी राधा, भरी गगरिया, भूल गये गोधन साँवरिया।
जाने न जाने ये जग जाने, जाने अग जग राजे ॥ बाजे रे-- ॥

भगवान तुम्हारी भक्ति में

भगवान तुम्हारी भक्ति में।
गुलज़ार भी है और प्यार भी है॥

इक हाथ में प्रेम भरी बंशी,
इक हाथ में चक्र सुदर्शन है।
हम वाकिफ़ हैं इन चरणों से,
जहाँ मार भी है और प्यार भी है॥

फिर हिरण्य कश्यपु ने जुल्म किया,
प्रहलाद ने तेरा नाम लिया।
नरसिंह अवतार का रूप धरा,
किया पापी का संहार भी है॥

भक्ति बिना सब सूना

भक्ति बिना सब सूना साधो।

१. ज्ञान बिना बैराग्य, भगति बिनु मिटइ भ्रान्ति कबहूँ ना।

२. सुत, दारा, कुटुम्ब सम्पति पर, बढ़इ प्रीति दिन दूना॥ साधो

३. हरि पद प्रीति रहत नहिं कबहूँ, मन विषयन मँहु लीना॥ साधो

४. भक्ति बिना सब फीको है, ज्यों व्यंजन लगत अलोना॥ साधो

५. जन्म गयो हरि भक्ति बिना यह, आयो हाथ कछू ना॥ साधो

राम नाम जपलो ये

राम नाम जपलो ये, अनमोल खजाना है।
सब कुछ यहाँ रह जाना, यही साथ जाना है॥
सच्चा सहारा राम तेरी, भक्ति पाना है॥

राम नाम हीरा है जो, श्रद्धा से ही मिलता।
प्रभु नाम फूल है वो जो, भक्ति से खिलता॥
आँख दी है रघुवर ने, फिर भी ठोकर खाये।
जिह्वा दी प्रभु ने फिर भी, महिमा नहीं गाये॥
सच्ची भक्ति राम जी की, महिमा गाना है॥

जिसको तू अपना समझा, माटी की है काया।
अम्बर पे उड़ने वाले, पंछी की है छाया॥
ढूढ़ रहा मोल किताबें, झूठे तो हैं सारे।
मुक्ति मिलेगी तुझको, प्रभु जी के द्वारे॥
झूठी जग की शान, झूठा ताना-बाना है॥

मैली चादर ओढ़के कैसे

मैली चादर ओढ़के कैसे, द्वार तुम्हारे आऊँ।
हे पावन परमेश्वर मेरे, मन ही मन शरमाऊँ॥

तूने मुझको जग में भेजा, देकर निर्मल काया।
आकर के संसार में मैने, इसमें दाग लगाया।
जनम-जनम की मैली चादर, कैसे दाग छुड़ाऊँ॥

निर्मल वाणी पाकर तुझसे, नाम न तेरा गाया।
नयन मूँदकर हे परमेश्वर, कभी न तुझको ध्याया।
मन वीणा की तारें टूटीऽऽ, अब क्या गीत सुनाऊँ॥

नेक कमाई करी न कोई, जग की माया जोड़ी।
झूठे नाते इस दुनियाँ से, तुम संग प्रीति तोड़ी।
करम गठरिया सिर पर राखे, पग भी चल न पाऊँ॥

इन पैरों से चलकर तेरे, मंदिर कभी न आया।
जहाँ-जहाँ हो पूजा तेरी, कभी न शीश झुकाया।
हे हरि हर मैं हार के आया, अब क्या हार चढाऊँ॥

भला किसी का कर न सको

भला किसी का कर न सको तो, बुरा किसी का मत करना।
पुष्प नहीं बन सकते हो तो, काँटे बनकर मत रहना॥

बन न सको भगवान अगर तुम, कम से कम इन्सान बनो।
नहीं कभी शैतान बनो तुम, नहीं कभी हैवान बनो॥
सदाचार अपना न सको तो, पापों में पग मत धरना॥

सत्यवचन ना बोल सको तो, झूठ कभी भी मत बोलो।
मौन रहो तो ही अच्छा, कम से कम विष तो मत घोलो॥
बोलो यदि, पहले तुम सोचो, फिर मुँह को खोला करना॥

घर न किसी का बसा सको तो, झोंपड़ियाँ न जला देना।
मरहम पट्टी कर न सको तो, खार नमक न लगा देना॥
दीपक बनकर जल न सको तो, अन्धियारा भी मत करना॥

अमृत पिला सको न किसी को, जहर पिलाते भी डरना।
धीरज बँधा नहीं सकते तो, घाव किसी को मत करना॥
राम नाम की माला लेकर, सुबह शाम भजन करना॥
–पुष्प नहीं बन सकते हो तो॥

दुधारू पशु को दुहते समय यदि संगीत की ध्वनि होती रहे तो वे अपेक्षाकृत अधिक दूध देते हैं।

–पशु मनोविज्ञानी डॉ. जार्जकेर विल्स

तेरा प्यार पा के हमने

तेरा प्यार पा के हमने, सब कुछ ही पा लिया है।
तेरे दर पे आके हमने, सर को झुका लिया है॥

आवागमन की गलियाँ, नाहक रूला रही थी।
जीवन-मरण का झूला, हमको झूला रही थी॥
अज्ञानता कि निद्रा, हमको सूला रही है।
नजरें करम हुई है-२ तेरा आसरा लिया है॥
-तेरा प्यार पा के हमने..... ॥

तेरे प्यार वाले बादल, जिस दिन से घिर गये हैं।
दुर्गुण, व्यसन के पर्वत, उस दिन से घर गये हैं॥
रहमत हुई है तेरी, मेरे दिन ही फिर गये हैं।
तेरी रोशनी में सद्‌गुरु-२, रस्ता दिखा दिया है॥
-तेरा प्यार पा के हमने..... ॥

भवरोग और ममता, इस दिल से जा रहे हैं।
संयम, नियम, आराधन, तन-मन पे छा रहे हैं॥
तेरी कृपा मिल है, सुख शांति पा रहे हैं।
मस्तक पे जब से मेरे-२ तूने हाथ रख दिया है॥
-तेरा प्यार पा के हमने..... ॥

उपकार के लिए तू, अवतार के होके आया।
गुरु रूप में है हमने, भगवान को है पाया॥
नररूप में नारायण, साकार हो के आया।
तेरे शब्द में यह कैसा-२ जादू जगा दिया है॥
-तेरा प्यार पा के हमने..... ॥

मानों तो मैं गंगा माँ हूँ

मानों तो मैं गंगा माँ हूँ, न मानों तो बहता पानी।
जो स्वर्ग ने दी धरती को, मैं हूँ प्यार की वही निशानी॥
मानों तो मैं गंगा माँ हूँ... ॥

युग-युग से मैं बहती आई, नील गगन के नीचे।
सदियों से ये मेरी धारा, प्यार की धरती सींचे॥
मेरी लहर-लहर पे लिखी है, इस देश की अमर कहानी॥
मानों तो मैं गंगा माँ हूँ... ॥

कोई वज़ू करे मेरे जल से, कोई मूरख को नहलाये।
कहीं मोची चमड़े धोये, कहीं पण्डित प्यास बुझाये॥
ये जाति धरम के झगड़े, इनसान की है नादानी॥
मानों तो मैं गंगा माँ हूँ... ॥

गौतम, अशोक, अकबर ने, यहाँ प्यार के फूल खिलाये।
तुलसी, आलीप, मीरा ने, यहाँ ज्ञान के दीप जलाये ॥
मेरे तट पे आज भी गूँजे, नानक कबीर की बानी॥
मानों तो मैं गंगा माँ हूँ... ॥

राग और रागिनियों का प्रभाव धान, गन्ना, शकरकन्द, नारियल आदि पर भी प्रभाव पड़ता है।

-डॉ. टी. एन. सिंह

मेंहदी महावर रचा करके

मेंहदी महावर रचा करके, सुख सपनों से सन्यास लिया।
वो धन्य सुहागन है जिसने, भारत को तुलसीदास दिया॥

मानों यदि रत्ना ना होती तो, तुलसीदास कहाँ होते।
सच पूछो तो रामायण की, रचना भी अरे कहाँ होती।
पति सुख को तजकर के खुद ही, बदले में था सन्यास लिया॥

विद्या में अहम एक नारी को, कुछ धूर्तों ने यूँ दगा किया।
यहाँ मूरख था उस बालक को, विद्योत्तमा का पति बना दिया।
पर उसने मूरख पति को ही, कवि कालीदास था बना दिया॥

मत बांधो गठरिया

मत बांधो गठरिया अपयश की।
तुम करो कमाई हरियश की॥

माता-पिता से मुख हूँ न बोल्यो।
तिरिया से बाते करे रस की॥

धन यौवन ये तन न रहेगा।
बाली उमरिया दिन दस की॥

यम के दूत मूगदरा मारे।
कसक निकारे तेरी मसट की॥

कहत कबीर सुनो भाई साधो।
ये दुनियाँ है मतलब की॥

मन ना रंगाये जोगी

मन ना रंगाये जोगी कपड़ा रंगाये।
मन ना फिराये जोगी मनका फिराये॥

आसन मार गुफा में बैठे, मनवा चहुँदिश धाये।
भवतारक घट बीच विराजे, खोजन तीरथ जाये॥

पोथी वाचे याद करावे, भगती कह नहीं पाये।
मनका मणका फेरे नाहिं, तुलसी माल फिराये॥

योगी होके जागा नाहीं, चौरासी भरमाये।
जोग जुगत को दास कबीरा, अलख निरंजन गाये॥

नहाये धोये क्या हुआ, जो मन मैल न जाय।
मीन सदा जल में रहे, धोये बास न जाय॥

मैं ना जिऊँ बिनु राम

मैं ना जिऊँ बिन राम हे जननी।
राम लखन सिय बन को गये हैं, पिता गये सुरधाम॥

प्रातः भयो हम हूँ बन जइबै, अवध न अइहैं काम।
कपटी कुटिल कुबुद्धि अभागिन, कौन हरो तेरो ज्ञान॥

सूर नर मुनि सब वेद बखाने, वेद पुराण सभी जय गावे।
काहे न किये भल काम॥
तुलसी दास आस चरणन की, जल न पीऊँ बिनु राम॥

मेरी पापों की भर गई

मेरी पापों की भर कई गगरिया, ये गगरिया उतारो मेरे राम।
नाव कागज की ऊँची लहरिया, ये नैया उबारो मेरे राम॥

बहुत सहे दुःख सह नहीं पाऊँ, ढूँढू कहाँ अब मैं कित जाऊँ।
राह सूनी अँधेरी डगरिया, तुम्हीं अब सम्भालो मेरे राम॥

पुण्य न कोई न कुछ करनी, बीचहूँ में चहूँ दिसी बेतरनी।
छाई विपदा की कारी बदरिया, विपदा मेरी टारो मेरे राम॥

लाज मेरी प्रभु हाथ तुम्हारे, मैं तो शरण अब नाथ तुम्हारे।
काहे लीनी न मेरी खबरिया, कहाँ से पुकारूँ मेरे राम॥

मंदिर में रहते हो भगवन

मंदिर में रहते हो भगवन, कभी बाहर भी आया जाया करो।
मैं रोज तेरे दर आता हूँ, कभी तुम भी मेरे घर आया करो॥

मैं तेरे दर का योगी हूँ, हुआ तेरे बिना मैं वियोगी हूँ।
तेरी याद में आँसू बहते हैं, इतना न मुझे तड़पाया करो॥

आते क्यों मेरे नजदीक नहीं, इतना तो सताना ठीक नहीं।
मैं दिल से तुमको चाहता हूँ, कभी तुम भी मुझे अपनाया करो॥

मैं दीन हूँ दीनानाथ हो तुम, सुख दुःख में सबके साथ हो तुम।
मिलने की चाहत का मोह करो, कभी भी मिला मिलाया करो॥

ये दुनियाँ मुझे सताती है, लाखों इल्ज़ाम लगाती है।
मैं तो दीवाना तेरा हूँ, प्रभु तुम उन्हें समझाया करो॥

मेरी बहना ये राखी की लाज

मेरी बहना ये राखी की लाज, तेरा भैया निभायेगा।
तुझे दिल से कभी न भूलायेगा॥

दिन रात देखे मन एक सपना, जब तेरी बारात आयेगी अंगना।
हीरे मोती तुझपे लुटाके, चाँद तारों से डोली सजायेगा॥

हम एक डाल के फूल हैं सारे, एक दूजे को चाँद से प्यारे।
प्यार का बंधन प्रीत की डोरी, कोई कैसे कभी तोड़ पायेगा॥

तू पास हो या दूर कहीं जाये, सारी उमर तू यूँ ही मुस्काये।
तुझपे कभी जो कोई आँच आये, जान तेरी खुशी पे मिटायेगा॥

कैसे जाऊँ मैं पनियाँ भरन को

कैसे जाऊँ मैं पनियाँ भरन को सखी।
देखो कान्हा खड़े हैं, बिरज की ओर॥

यमुना तट पर बंशी बजाये, मन मोहन सबके मन भाये।
ललिता, चन्द्रा सखियन के संग, होली खेले रास रचाये।
लीला निशदिन दिखाये, वो साँझ से भोर॥

नित-नित मोरी राह तकत है, नटखट मोसे जब भी मिलत है।
कंकर मारे फोरे गागरिया, ढीठ न माने झगड़ा करत है।
मोरी झपटे वो सिर से, चूनर चित चोर॥

छोड़ दे बैयाँ कृष्ण कन्हैया, ताना देंगी सारी सखियाँ।
चोरी-चोरी मैं आई हूँ, घर जाने दे वो साँवरिया।
कहीं देखे न सास ननदिया मोर॥

मैला तन है मैला मन है

मैला तन है मैला मन है, मैला बसन हुँ ओढ़े।
राम जी ऐसी कृपा करो अब, मनवा मैल है ये छोड़े॥

पाप की गठरी बांधे प्रभु जी, कहाँ जगत में जाऊँ।
इस गठरी को तज कर प्रभुजी, शरण तुम्हारी आऊँ।
भक्ति में रम जाये ये मन, माया में ना दौड़े॥

मानव होकर मरम न जाना, लाख योनियां भटका।
संतो का सत्संग किया तो, हरि में मन है अटका।
जतन करो प्रभु मिथ्या से, मन कैसे मोह अब मोड़े॥

यौवन में ये अकल न आई, क्या सांचा क्या झूठा।
नारायण का मोल कितना, क्या पाया क्या छूटा।
नारायण अब मांगे भिक्षा, दोनो हाथ को जोड़े॥

मनुवा राम नाम तू गाले

मनुवा राम नाम तू गाले, सुमिरन करले सीता पति का।
मूरख अलख जगा ले---मनुवा राम॥

क्या जाने तू प्रभु की माया, इस पल धुप तो उस पल छाया।
अवसर ऐसा फिर ना मिलेगा, जीवन सफल बनाले॥

तन की क्षण भंगुर नौका पर, देशी आया तू चढ़कर।
राम नाम पतवार, नौका पार लगाले॥

रात बिरानी दिवस वीराना, उस पर काल करे मन माना।
हरि का नाम सुमिर कर पगले, बिगड़ी सभी बनाले॥

मैंने तो श्याम रंग ओढ़

मैंने तो श्याम रंग ओढ़ लियो रे।
सांस को कन्हैया से जोड़ लियो रे॥
औरों से नाता सब तोड़ लियो रे।
सांस को कन्हैया से जोड़ लियो रे॥

घुँघरारे कच में से, झाँकती जुन्हिया ने।
बंसुरी बजैया ने, मोह लियो रे॥

प्रेम के पयोधि बीच पापन को धोये।
मोहन को आँखन में आँज लियो रे॥

अब चाहे माने चाहे न मान री।
मन को बृज बसिया से जोड़ लियो रे॥

मेरे रघुवर जी उतरेंगे

मेरे रघुवर जी उतरेंगे पार, गंगा मैया धिरे बहो।

हे गंगा मैया तेरी दुहैइयां, मैं माँझी मेरी काठ की नैया।
बैठेगें मेरे सरकार, गंगा मैया धिरे बहो॥

नईयाँ हमारी डगमग डोले, बीच भँवर में खाये झकोले।
छूट न जाये पतवार, गंगा मैया धिरे बहो॥

केवट प्रभु के चरण पखारे, रघुनन्दन को पार उतारे।
बरसे है पुष्प अपार, गंगा मैया धिरे बहो॥

कहे प्रभु केवट लेहो उतराई, केवट बोले सुनो रघुराई।
मेरा भव से लगा दो बेड़ा पार, गंगा मैया धिरे बहो॥

मुझे रास आ गया

मुझे रास आ गया है, तेरे दर पे सर झुकाना।
तुझे मिल गया पुजारी, मुझे मिल गया ठिकाना॥

कुछ ग़म नहीं है मुझको, जाये बदल जमाना।
मेरे जिन्दगी के मालिक, कहीं तुम बदल न जाना॥

बुद्धि के दे खजाने, भक्ति के दे तराने।
तेरे घर कमी नहीं है, मुझे खाली न लौटाना॥

तेरी दया हो सब पर, ये जगत के खेवैया।
मझधार में है नैया, उसे पार है लगाना॥

मुक्ति का कोई तू जतन

मुक्ति का कोई तू जतन कर ले,
रोज थोड़ा-थोड़ा हरि का भजन करले॥

संगति कर अच्छे लोगों की,
दवा मिल जायेगी सभी रोगों की।
जिन्दगी को अपनी चमन कर ले,

भक्ति करेगा तो बड़ा ही सुख पायेगा।
भक्ति से आत्मा का मैल छूट जायेग॥
आत्मा के साथ-साथ मन कर ले।

सीता राम सीता राम

सीता राम सीता राम, सीता राम कहिये।
जाहि विधी राखे राम, ताहि विधि रहिये॥

मुख में हो राम नाम, जन सेवा हाथ में।
तू अकेला नाहि प्यारे, राम तेरे साथ में।
विधि का विधान जान, हानि लाभ सहिए॥

किया अभिमान तो फिर, मान नहीं पायेगा।
होगा प्यारे वही जो श्री राम जी को भायेगा।
फल की आशा त्याग शुभ, कर्म करते रहिए॥

जिन्दगी की डोर सोंप, हाथ दीना नाथ के।
महलों में राखे चाहे, झोंपड़ी में वास दे।
धन्यवाद निर्विवाद, राम राम कहिए॥

आशा एक राम जी से, दुजी आशा छोड़ दे।
नाता एक राम जी से, दुजा नाता तोड़ दे।
काम रस त्याग प्यारे, राम रस पाईये।
साधु संत राम रंग, अंग अंग रंगिये॥

गायन–वादन का प्रभाव मनुष्यों तक ही सीमित नहीं है, वरन उसे पशु–पक्षी भी उसी चाव से पसन्द करते और प्रभावित होते हैं। –सामवेद

मेरी छोटी सी है नाव

मेरे छोटी सी है नाव, तेरे जादू भरे पाँव।
डर लागे मोहे राम, कैसे बिठाऊँ तोहे नाव में॥

जब पत्थर बन गई नारी, ये लकड़ी की नाव हमारी।
करूँ यही रोजगार, पालूँ सभी परिवार॥
सुनो सुनो जी दातार, कैसे बिठाऊँ... ॥

इक बात मानो तो बिठा लूँ, तेरे चरणों को धोकर पी लूँ।
मेरा संदेह हो जाय दूर, अगर तुम्हें हो मंजूर॥
सुनो सुनो जी हुजुर, कैसे बिठाऊँ... ॥

बड़े प्रेम से चरणों को धोये, पाप जनम-जनम के खोये।
हुए बड़े ही प्रसन्न, किये राम के दरशन॥
संग सिया लक्ष्मण, मैं तो तुम्हें बिठाऊँ नाव में॥

मन लागा मेरो यार

मन लागा मेरो यार फकीरी में।

जो सुख पायो राम भजन में, सो सुख नाहिं अमीरी में॥
भला बुरा सबका सुन लीजै, कर गुजरान गरीबी में।

प्रेमनगर में रहनि हमारी, भलि बनि आयी सबूरी में॥
हाथ में कूँडी बगल में सोंटा, चारों दिशा जगीरी में॥

आखिर ये तन खाक मिलेगा, कहाँ फिरत मगरुरी में।
'कहत कबीर' सुनो भई साधो, साहिब मिले सबूरी में॥

मेरे लक्ष्मण भैया कौन

मेरे लछमन भैया कौन, नींद सोयो रे मेरे भैया।
हेरत होय घर मैया तेरी, बिन बछुवा बिन गैया॥

जाऊँ अवधपुर माँ मुझसे पूछे, क्या कहकर समझाऊँ जी।
कहाँ है मेरा कुंवर कन्हैया, क्या उनको बतलाऊँ॥ भैया

सारी अयोध्या मुझसे पूछे, कैसे उनको समझाऊँ जी।
नारी कारण भाई मरवाया, कैसे मुख दिखलाऊँ॥ भैया

मेरे तो गिरिधर गोपाल

मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरा न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई॥

छाड़ि दई कुल की कानि, कहा करिअे कोई।
संत्तन ढिग बैठि बैठि, लोक लाज खोई॥

अँसुवन जल सींच सींच, प्रेम बेलि बोई।
अब तो बेलि फैल गई, आँणद फल होई॥

भगति देखि राजी भई, जगत देखि रोई।
दासी मीरा लाला गिरधर, तारौ अब मोहि॥

ये तो प्रेम की बात है

ये तो प्रेम की बात है उद्धव, बंदगी तेरे वश की नहीं है।
यहाँ सर देके होते हैं सौदे, आशिकी इतनी सस्ती नहीं है॥

प्रेम वालों के कब वक्त पूछा, उनकी पूजा में सुन ले ये उद्धव।
यहाँ दम दम में होती है पूजा, सर झुकाने की फूर्सत नहीं है॥

जो असल में है मस्ती में डूबे, उन्हें क्या परवाह जिन्दगी की।
जो उतरती है चढ़ती है मस्ती, वो हकीकत में भक्ति नहीं है॥

जिसकी नजरों में है श्याम प्यारे, वो तो रहते है जग से न्यारे।
जिसकी नजरों में मोहन समाये, वो नजर फिर तरसती नहीं है॥

ये कहना साफ गलती है

ये कहना साफ गलती है, तुम्हें कैसे रिझाऊँ मैं।
सुनो मेरे रिझाने का, सरल रस्ता बताऊँ मैं॥

रिझाया था मुझे भिलनी ने, जूठे चार बेरों पर।
न जूठे मीठे बेरों पर, कभी आँख लगाऊँ मैं॥

रिझाना जो मुझे चाहो, विदुर से पुछ लो रास्ता।
सुदामा की झपट गठरी, खड़ा चावल चबाऊँ मैं॥

न रिझुँ फूल से फल से, न गंगा जीके ही जल से।
हृदय में भेद है जब तक, बता फिर कैसे रिझुँ मैं॥

न रिझुँ गान गप्पों से, न रीझुँ तान टप्पों से।
बहादो प्रेम के आँसू , तुरंत ही दौड़ आऊँ मैं॥

ना दिल में आग है सच्ची, ना आँखो में हैं प्रेमाश्रु।
बतादे तुलसी फिर तुझको, सहज में कैसे पाऊँ मैं।।

यहाँ कोई भी सच्ची बात

यहाँ कोई भी सच्ची बात, अब मानी नहीं जाती।
मेरी आवाज़ इस बस्ती में, पहचानी नहीं जाती॥

बढ़ो आगे करो रोशन, दिशाओं को चिताओं से।
अकारण दोस्तों कोई भी, कुरबानी नहीं जाती॥

महल है भीड़ है मंदिर है, मस्ज़िद है मशीन है।
मगर फिर भी शहर से दूर, वीरानी नहीं जाती॥

कहीं बोतल कहीं सागर, कहीं मीना कहीं साक़ी।
ये महफ़िल ऐसी बिखरी है, कि पहचानी नहीं जाती॥

ये झूठे आश्वासन आप, अपने पास ही रखिये।
दहकती आग पर चादर, कभी तानी नहीं जाती॥

जबाँ बेची कला बेची, यहाँ तक कल्पना बेची।
नियत फ़नकार की अब, कभी जानी नहीं जाती॥

उजल बगुला बिन

उजल बगुला बिन पीपरा न सोहे।
कोयल बिन बगिया न सोहे राजा॥

सास-ससुर बिन, ससुरे न सोहे।
देव बिन अंगन न सोहे राजा॥

भाई भतिज बिन नैहर न सोहे।
बालकबिन गोदिया न सोहे राजा॥

लाल सिन्दूर बिन मंगिया न सोहे।
बलम बिन सेजिया न सोहे राजा॥

रामा रामा रटते रटते

रामा रामा रटते रटते बीती रे उमरिया।
रघुकुल नंदन कब आओगे, भिलनी की डगरिया॥

मैं शबरी भीलनी की जाई भजन मान नहिं जानूँ रे।
राम तुम्हारे दर्शन खातिर, वन में जीवन पालूँ रे॥
चरण कमल से निर्मल कर दो, दासी की झोपड़िया॥

रोज सबेरे वन में जाकर, रस्ता साफ मैं करती हूँ।
अपने प्रभु की खातिर वन से, चुन-चुन कर फल लाती हूँ॥
मीठे-मीठे बेर की भर, लाई मैं छबरिया॥

सुन्दर श्याम सलोनी सुरत, नैनन में बसाऊँगी।
पद पंकज की रजधर मस्तक, चरणों में शीश झुकाऊँगी॥
प्रभु जी मुझको भूल गये क्या, लो दासी की खबरिया॥

साथ तुम्हारे दर्शन की मैं, प्यासी अबला नारी हूँ।
दर्शन बिन नैया तरसे दिल की मैं दुखयारी हूँ॥
मुझको दर्शन दे दो दयानिधि, डालो मुझ पर नजरिया॥

मनोविकारों के निवारण में संगीत को सफल उपचार के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

डॉ. वाल्टर क्यूग

राम का गुणगान करिये

राम का गुण गान करिये॥
राम प्रभु की भव्यता का, सभ्यता का ध्यान धरिये॥

राम के गुण, गुण चिंतन, राम गुण सुमिरन रतन धन।
मनुजता को कर विभूषित, मनुज को धनवान करिये॥

सगुण ब्रह्म स्वरूप सुन्दर, सुजल रंजन रूप सुखकर।
राम आत्मा, राम आत्मा, राम का सम्मान करिये॥

मुक्तक–राम नाम रटत रहा, धरि राखी मन धार।
एक दिन काज सुधारेंगे, कृपा सिंधु रघुवीर॥

रख लाज मेरी गणपति

रख लाज मेरी गणपति, अपनी शरण में लीजिए।
कर आज मंगल गणपति, अपनी कृपा अब कीजिए॥

सिद्धि विनायक दुःख हरण, संताप हारी सुख करण।
करूँ प्रार्थना मैं नित प्रति, वरदान मंगल दीजिए॥

तेरे ध्यान में कृपा, हे नाथ हम माँगे सदा।
तेरे ध्यान में खोये मति, परणाम मम अब दीजिए॥

करते प्रथम सब वन्दना, तेरा नाम है दुःख भंजना।
करना प्रभु मेरी शुभ गति, अब तो शरण तेरी दीजिए॥

दोहा–सुमिरन दीप जलाय के, करूँ हृदय में ध्यान।
शरण पड़े की लाज रख, हे मेरे भगवान॥

राम नाम अति मीठा है

राम नाम अति मीठा है, कोई गा के देख ले।
आ जाते हैं राम, कोई बुला के देख ले॥
बोलो राम राम राम, बोलो राम राम नाम॥

जिस मन में अभिमान वहाँ, भगवान कहाँ से आये।
घर में हो अंधकार भरा, मेहमान कहाँ से आये॥
राम नाम की ज्योति हृदय, जला के देख ले॥

मन भगवान का मंदिर है, यहाँ मैल न आने देना।
हीरा जन्म अनमोल मिला, इसे व्यर्थ गवाँ न देना॥
शीश दिये हरि मिलते हैं, कोई देके देख ले॥

आधे नाम पे आ जाते हो, कोई बुलाने वाला।
बिक जाते हैं राम कोई हो, मोल चुकाने वाला।
कोई जौहरी आके मोल, लेके देख ले॥

रे मन मूरख जनम गँवायो

रे मन मूरख जनम गँवायो,
कर अभिमान विषय सों राख्यो, नाम सरन नहीं आयो॥

यह संसार फूल सेमर को, सुन्दर देखि लुभायो।
चाखन लाग्यो रूई उड़ गई, हाथ कछु नहीं आयो॥

कहा भयो अब के मन सोचे, पहिले नहीं कमायो।
सूरदास हरि नाम भजन बिनु, सिर धुनि-धुनि पछतायो॥

राम नाम से तूने बन्दे

राम नाम से तूने बन्दे, क्यों अपना मुख मोड़ा।
दौड़ा जाये रे–समय का घोड़ा, हो।। दौड़ा जाये रे॥

एक दिन बीता खेल कूद में, एक दिन मौज में सोया।
देख बुढ़ापा आया तो क्यों, पकड़ के लाठी रोया।
अब भी राम सुमिर ले नहीं तो, पड़ेगा काल हथौड़ा॥

अमृतमय है नाम हरि का, तू अमृतमय बनजा।
मन में ज्योति जलाले तू बस, हरि के रंग में रंग जा।
डोर जीवन की सौंप हरि को, नहीं पड़ेगा कोड़ा॥

क्या लाया क्या ले जाएगा, क्या पाया क्या खोया।
वैसा ही फल मिले यहाँ पर, जैसा तूने बोया।
काल शीश पर बैठा जिसमें, किसी को नहीं है छोड़ा॥

मन के कहे जो चलते हैं वो, दुःख ही दुःख है पाते।
माया के बस में जो रहते, घोर नरक में जाते।
जो भी अजर अमर बन जाते, उनका भी भ्रम तोड़ा॥

स्वर्गीय सौंदर्य का कोई साकार रूप और सजीव प्रदर्शन है, तो उसे संगीत ही होना चाहिए।

–रविन्द्र नाथ टैगोर

राम का नाम लेकर

राम का नाम लेकर जो मर जाएँगे।
वो अमर नाम दुनियाँ में कर जाएँगे॥

ये न पूछो कि मर कर किधर जाएँगे।
वो जिधर भेज देगा, उधर जाएँगे॥

ये श्वासों की माला हरि नाम की।
फिर ए अनमोल मोति बिखर जाएँगे॥

अब यह मानो न मानो, खुशी आपकी।
हम मुसाफिर हैं कल अपने घर जाएँगे॥

राम रमैय्या रटा करो

राम रमैय्या रटा करो, कृष्ण कन्हैया जपा करो।
भक्ति से मिल जाये दोनों नाम उन्हीं का लिया करो॥

मन में भक्ति सच्ची होतो, मिल जाये अविनाशी।
पत्थर प्यार से पूज-पूज कर, मिल्यो घट-घटवासी।
इतना सरल है प्रभु को पाना, सच्ची प्रीत तुम किया करो॥

कभी राधा ने कभी मीरा ने, सच्ची प्रीत को जाना।
पूरा जग हो गया बेगाना, नाम का रहा ताना बाना।
प्रभु प्रीतम से लौ लगाकर, सदा ही मानव जीया करो॥

झुठे बेर प्रभु को खिलाकर, शबरी ने मुक्ति पाई।
इतना सब कुछ जानकर, क्या सोच रहे हो भाई।
सच्ची दौलत प्रभु नाम की, पाई पाई तुम लिया करो॥

राम कहने से तर

राम कहने से तर जायेगा,
पार भव से उतर जायेगा।

उस गली होगी चर्चा तेरी,
जिस गली से गुजर जायेगा॥

बड़ी मुस्किल से नर तन मिला,
फिर न जाने किधर जायेगा॥

अपना दामन तो फैला जरा,
कोई दाता वो भर जायेगा॥

याद आयेगी सबको तेरी,
जब यहाँ से चला जायेगा।

सब कहेंगे कहानी तेरी,
काम ऐसा तू कर जायेगा॥

मंगलदाता बुद्धि विधाता

गणेश वन्दना

मंगल दाता बुद्धि विधाता, शुभदायक श्री गणेश।
चरण कमल पे शत्-शत् वन्दन, ब्रह्म, विष्णु, महेश॥

मोदक प्रिये लम्बोदर एक दंत, गजानन हे गणनाथ।
विद्या वारिधि मंगलदायक, गणपति पुत्र उमेश॥

विष्णु प्रिये प्रमोद विनायक, धूमकेतू गणराज।
भाल चन्द्र शिव नन्दन उमासुत, सर्व सृष्टि सर्वेश॥

विघ्नहरण सुख निधि सन्मुख, कृपा सिन्धु महोदर।
द्वारे विनती करत कर जोड़ें, पुष्प लता अवशेष॥

राम कथा में वीर जटायु

राम कथा में वीर जटायु का अपना अनुपम स्थान।
तुलसी ने बड़भागी कहकर, किया जटायु का यशगान॥

सीता हरण समय रावण से, युद्ध किया वीर गति पाये।
शूरवीर शरणागत रक्षक, धर्म प्राण त्यागी कहलाये।
परहित में अपने प्राणों का, धर्मवीर करते बलिदान॥

अन्त समय बोले रघुवर, लो अमर तुम्हें कर देता हूँ।
कहे जटायु नहीं नाथ बस, मुक्ति का वर लेता हूँ॥
मोक्ष मार्ग पर राम रूप में, महाप्राण का महाप्रयाण॥

प्राण विहीन देह गोदी में, लिए राम करुणा बरसाये।
कमल नयन की अश्रुधार से, प्रभु अन्तिम स्नान कराये।
मै ऋणि रहूँगा गिद्धराज का, लक्ष्मण से बोले भगवान॥

त्रेता युग के अवतारी नर, अपने हाथों चिता रचाकर।
मात-पिता सम अग्निदाह दे, त्रिभुवन के स्वामी करुणाकर।
साधु जटायु धन्य जटायु, महाभाग स्तुत्य महान॥

मुक्तक :-
जो परहित को धर्म मान ले, वो सच्चा इंसान है।
तन-मन जिसका कभी न हारे, सचमुच वही महान है॥

रामचन्द्र कह गये सिया से

हे राम चन्द्र कह गये सिया से, ऐसा कलयुग आयेगा।
हंस चुगेगा दाना दुनका, कौआ मोती खायेगा॥
धर्म भी होगा कर्म भी होगा, परन्तु शर्म नही होगी।
बात-बात में मात-पिता को, बेटा आँख दिखायेगा॥

राजा और प्रजा दोनों में, होगी निशदिन खींचा तानी।
कदम-कदम पर करेगें दोनो, अपनी-अपनी मन मानी॥
जिसके हाथ में होगी लाठी, भैंस वही ले जायेगा॥

सुनो सिया कलयुग में काला, धन और काले मन होगें।
चोर उचक्के नगर सेठ, और प्रभु भक्त निर्धन होगे।
जो होगा लोभी और भोगी, वो जोगी कहलायेगा॥

मंदिर सूना-सूना होगा, भरी रहेगी मधुशाला।
पिता के संग-संग भरी सभा मे, नाचेंगी घर की बाला।
कैसा कन्यादान पिता ही, कन्या का धन खायेगा॥

मूरख की प्रीत बुरी, जुए की जीत बूरी,बुरे संग बैठ चैन भागे ही भागे।
काजल की कोठरी में कैसो ही जतन करो दाग भई लोग ही लोग।
कितना जति हो कोई कितना सती हो, कोई कामिनि के संग काम जागे ही जागे।
सुनो कहे गोपी राम।।

राम जी तुमरो भक्त

राम जी तुमरो भक्त, हनुमाना।
इतनी बिनती मेरी सुन लो, दूर ना मोसे जाना॥

तीन लोक हैं तुम्हरें नयन में, ग्रंथ रचे हैं तुम्हरी शरण में।
जहाँ चरण है आपके भगवन, मेरा वही ठिकाना॥

तन में मन में आप सजे हैं, रोम-रोम में आप रमे हैं।
आप जो मेरे प्राण भी मांगे, भगवन मत सकुचाना॥

आपकी आज्ञा मेरी सेवा, आपकी सेवा मेरा मेवा।
दूर यदि तुम जाओ स्वामी, स्वप्न में मेरे आना॥

प्यार नहीं है सुर से

प्यार नहीं है सुर से जिनको, वह इन्सान नहीं।

सुर इन्सान बना देता है, सुर रहमान मिला देता है।
सुर की आग में जलने वाले, परवाने नादान नहीं॥

जग में अगर संगीत न होता,कोई किसका मित न होता।
ये एहसास है सात सुरों का, दुनियाँ ये विरान नहीं॥

सुर में सोये सुर में जागे, उन्हें मिले वो जो भी माँगे।
धर्म, अर्थ और काम मोक्ष भी, जाने उनसे दूर नहीं॥

राम जी के नाम ने

राम जी के नाम ने तो, पत्थर भी तारे,
जो न जपे राम वो हैं, किस्मत के मारे।

राम नाम अमृत है, राम नाम चन्दन,
राम नाम देव जपे, संत करे वन्दन,
महावीर राम नाम, हृदय पे है धारे॥

राम जी के राम को तो, शिव जी ने ध्याया,
तुलसी ने राम जी को, सर्वस्व पाया,
कबीरा भजन कर, गये मतवारे॥

राम राम राम जपो, राम ही ध्याओ।
राम नाम प्रेम ज्योति, घर-घर जलाओ॥
उन्हीं की शरण जा पल ना गवाँ रे।।

गोविन्द की जय

गोविन्द की जय-जय,गोपाल की जय-जय।
राधा रमण हरि, गोविन्द जय-जय॥

ब्रह्मा की जय-जय, विष्णु की जय-जय।
उमापति शिव शंकर की जय-जय॥

राधा की जय-जय, मीरा की जय-जय।
मोर मुकुट बंशी वाले की जय-जय॥

राम की जय-जय, श्याम की जय-जय।
दशरथ कुंवर चारो भाइयों की जय-जय॥

गंगा की जय-जय, यमुना की जय-जय।
सरस्वती त्रिवेणी की जय-जय॥

वक्त का ये परिन्दा

वक्त का ये परिन्दा रूका है कहाँ,
मैं था पागल जो उसको भूलता रहा।
पड़के कुसंग में कुछ भी जाना नहीं,
अपनी माँ के भी दिल को दुखाता रहा॥

लौटता था मैं जब पाठशाला से घर,
अपने हाथों से खाना लिखाती थी माँ।
रात में अपने ममता के आँचल तले,
थपकियाँ देके मुझको सुलाती थी माँ।
सोच के दिल में एक टीस उठती रही,
रात भर दर्द मुझको जगाता रहा॥

सबकी आँखों में आँसु छलक आये थे,
जब रवाना हुआ था शहर के लिए।
कुछ ने माँगी दुआएँ की मैं खुश रहूँ,
कुछ ने मंदिर में जाके जलाये दिये।
एक दिन मैं बनूँगा बड़ा आदमी,
पिता सब में उन्हें गुद गुदाता रहा॥

माँ ये दिखती है हर बार खत में मुझे,
लौट आ मेरे बेटे है तुझको कसम।
तू गया जब से परदेश बैचेन हूँ,
नींद आती नहीं भूख लगती नहीं।
कितना चाहा न रोऊ मगर क्या करूँ,
खत मेरी माँ का मुझको रूलाता रहा॥

राम रस ऐसो है

राम रस ऐसो है, मेरे भाई, जो कोई पीवे अमर हो जाई।

मीठा–मीठा सब कोई पीवे, कड़वा पीवे नहीं कोई।
एक बार जो कड़वा पीवे तो, सबसे मीठा होई॥

ऊँचा–ऊँचा सब कोई चले, नीच चले नहीं कोई।
एक बार जो नीचा चले, वो सबसे ऊँचा होई॥

अंका पीये बंका पीये, पीयें सदन कसाई।
हनुमान जी ने ऐसा पीया, लंका दी है जलाई॥

ध्रुव ने पीया प्रहलाद ने पीया, और पीया मीराबाई।
दास कबीर ने ऐसा पीया, फिर पीने की नहीं आस॥

राम नाम सबसे प्यारा

जय जय राम राम राम–२
राम नाम सबसे प्यारा, जो ध्यावे मुक्ति पावे।
मानव तो क्या राम नाम से, पत्थर भी तर जाये॥

पति अहिल्या जिसने तारी, दुखिया शबरी पार उतारी।
वाल्मीकि भी तर गये, लेके राम का उल्टा नाम॥

पत्थर में भी प्राण आ गये, वो भी जग में मान पा गये।
जल में पत्थर चले हैं देखो, हो गया सेतु बन्ध निर्माण॥

वो काला इक बाँसुरी वाला

वो काला इक बाँसुरी वाला, सुध बिसरा गया मोरी रे। २
माखन चोर जो नन्दकिशोर वो, कर गयो मन की चोरी रे॥ २

पनघट पे मोरी बहियाँ मरोड़ी, मैं बोली तो मेरी मटकी फोड़ी।
पइयाँ पड़ूँ करूँ विनती मैं पर, माने ना एक वो मोरी रे॥ सुध.॥

छुप गयो फिर एक तान सुना के, कहाँ गयो इक वाण चला के।
गोकूल ढूँढ़ा मैने मथुरा ढूँढी, कोई नगरिया न छोड़ी रे॥ सुध.॥

सुख के सब साथी

सुख के सब साथी, दुःख में न कोई।
मेरे राम २-तेरा नाम एक साँचा, दूजा न कोई॥

जीवन आनी-जानी छाया, झूठी माया झूठी काया।
फिर काहे को सारी उमरिया, पाप की गठरी ढोई॥

ना कुछ तेरा ना कुछ मेरा, ये जग जोगी वाला फेरा।
राजा हो या रंक सभी का, अंत एक सा होई॥

बाहर की तू माटी फाँके, मन के भीतर क्यों न झाँके।
उजले तन पर मान किया और, मन की मैल न धोई॥

सुमिरन कर ले

सुमिरन कर ले नाम सुमिरले, कौं जाने कल की।
जगत में खबर नहीं पल की, जगत में खबर नहीं पल की॥

झूठ कपट करि माया जोड़ी, बात करे छल की।
पाप की पोटली धरे सिर उपर, किस विध हो हलकी।

यह मन तो है खस्ती मस्ती, काया मिट्टी की।
स्वांस स्वांस में नाम सुमिरले, अवधि घटे तन की॥

काम, क्रोध, मद, लोभ निवारो, बात यह अमल की।
ज्ञान, वैराग्य, दया मन राखो, कहे कबीर दिल की॥

दोहा-नाम जपत कौड़ी भला, चुई-चुई परते चाम।
सुन्दर देह किस काम की, जा घट नहीं है नाम॥

प्रभु जी अब की बार

प्रभु जी अब की बार-३

धुप तुम्हीं हो छाया तुम हो, मोक्ष हो माया तुम हो।
एक ही तू है परम पिता प्रभु, सुनो सब संसार॥

नाव भँवर में दूर किनारा, प्रभु जी तेरा एक सहारा।
अब तो बचालो इस तूफां से, कर दो बेड़ा पार॥

भटक रहा हूँ इस दुनियाँ में, खोज न पाया तुझको मन में।
आश लगी है दर्शन की प्रभु, हो जाये साकार॥

सीने में कितने दर्द

सीने में कितने दर्द, छिपाये है आदमी।
दुश्वारियों का बोझ, उठाये है आदमी॥

हँसते हुए अधर है, निगाहों में नमी है।
चिथड़ों में बदन जख्मी, छुपाये है आदमी॥

मुमकिन है बच के आना, लुटेरों से सफर में।
क्या घर के लुटेरों से, बचाये है आदमी॥

उठने पे अगर आये तो, ये देवता बने।
गिरने पे जो आये तो, लजाये है आदमी॥

फितरत से फितरती है, विचारों से संत है।
दिखने में फरिश्ते सा, दिखाये है आदमी॥

हर ओर बियाबाँ है, दरिन्दे है रात है।
टूटी हुई कमान, चढ़ाये है आदमी॥

अंखियाँ हरि दर्शन

(राग–बागेश्वरी)

अंखियाँ हरि दर्शन की प्यासी, प्रभु दर्शन की प्यासी।
देख्यो चाहत कमल नयन को, निशिदिन रहत उदासी॥

केशर तिलक मोतिन की माला, वृंदावन के वासी।
नेह लगाये त्यागि गये तृणसम, डारी गये गल फांसी॥

काहू के मन की कौं नहिं जानत, लोगन के मन हाँसी।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिन, लिहौं करवट काशी॥

सुना है तारे हैं तुमने

सुना है तारे हैं तुमने लाखों, हमें जो तारो तो हम जानें॥
निशाचरों को संहारा तुमने, उतारा पृथ्वी का भार तुमने।

हमारे सिर भी है पाप भारी, हमे जो तारो तो हम भी जानें॥
हटा अहिल्या का शाप तुमने, मिटाया शबरी का ताप तुमने।
हमारे भी पाप ताप, भगवान, अगर निवारो तो हम भी जाने॥

फँसी भँवर में हमारी नैया, उतारो सागर से है कन्हैया।
सहारे हम है तुम्हारे मोहन, अगर उतारो तो हम भी जाने॥
श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारी, हे नाथ नारायण वासुदेवा॥

संसार के लोगों की

संसार के लोगों की, आशा न किया करना।
यहाँ कोई नहीं अपना, बस राम जपा करना॥

जीवन के समुद्र में, तूफान भी आते हैं।
जो प्रभु के सहारे हैं, उन्हें पार लगाते है।
भगवान तो आते हैं, उन्हें याद किया करना॥

अपना न समझ लेना, ये देश बेगाना है।
एक दिन तो तुझे प्राणी, वहाँ वापस जाना है।
हरि नाम के मस्ती में, सदा मस्त रहा करना॥

तू जीव दुःखी ना हो, प्रभु तुझसे दूर नहीं।
भक्तों का दुःखी होना, प्रभु को मंजुर नहीं।
भगवान तो आते हैं, उन्हें भान लिया करना॥

सुख चाहे और पाप करें

सुख चाहे और पाप करें हम, मन को कैसे हुआ भरम।
पैर तले तो कांटा बोयें, फिर क्यों भाग्य को कोशे हम॥

छुपकर पाप किया सुख देखा, सच्चे सुख का ज्ञान गया।
सच्चा सुख सुन्दर चिंतन में, मन चंचल जब मान गया।
औरों से छुप गया पाप पर अपना मन तो करें शरम॥

पाप वही जिससे दुःख बढ़ता, मर्यादा को तोड़ दिया।
वही पुण्य जिसे सुख आवे, त्याग किया कुछ छोड़ दिया।
तृष्णा के पीछे नहीं भागो, नारायण ही बड़ा धरम॥

सुख भी मुझे प्यारे हैं

सुख भी मुझे प्यारे हैं, दुःख भी मुझे प्यारे हैं।
छोड़ू मैं किसे भगवन, दोनो ही तुम्हारे हैं॥

सुख-दुःख ही जीवन की, गाड़ी को चलाते हैं।
सुख-दुःख ही हम सबको, इंसान बनाते हैं॥
संसार के नदियाँ के, दोनो ही किनारे है॥

मैं कैसे कहूँ भगवन, मुझे दोनो में रहने दो।
जो भी तेरी मर्जी है, मर्जी से मुझे दे दो॥
मैने तो तेरे आगे, दोनो हाथ पसारे है॥

जो तेरी रज़ा उसमें, मै दे दूं दखल कैसे।
मै कैसे कहूं मेरे कर्मों, के है फल कैसे॥
चख कर भी ना देखूं मै, मीठे है के खारे हैं॥

साचा तेरा नाम

साचा तेरा नाम, तेरा नाम, तूही बनाये बिगड़े काम॥
साचा तेरा नाम, साचा तेरा नाम, तूही बनाये बिगड़े काम॥

तेरा करम है एक समुंदर, जिसका नहीं किनारा॥
दूर हुई हर मुश्किल उसकी, जिसने तुझे पुकारा॥
तेरे नाम का जाप करूँ मैं, क्या सुबह क्या शाम॥

भटके हुए बन्दों को मालिक, सीधी राह दिखा दे॥
हर घर के सुने आँगन में, प्यार का फूल खिला दे॥
देता है तू राहत सबको, बिन माँगे बिनदान॥

सबके गुण अपनी हमेशा

सबके गुण अपनी हमेशा, गलतियाँ देखा करें।
जिन्दगी की हूबहू यूँ, झाकियाँ देखा करें॥

हसरतें महलों की जब, आके सतायें आपको।
कुछ गरीबों की भी, जाके बस्तियाँ देखा करें॥

खाने से पहले किसी का, हक ज़रा ऐ महरबां।
कितने भूखों की है उसमें, रोटियाँ देखा करें॥

आ दबोचे गए सिकन्दर, सा कहीं तुमको गुरुर।
हाथ खाली आती जाती, अर्थियाँ देखा करें॥

तोड़ने से पहले यारों, दिल किसी मजबूर का।
आहों में उसकी है कितनी, आँधियाँ देखा करें।

सीता पूछे राम से

सीता पूछे राम से, सीता पूछे राम से।
ऐसी घोर परीक्षा भगवन, ली मेरी किस काम से॥

एक धोबी के कहने पर, आश्रम में मुझे पठाया।
अग्नि परीक्षा ले ली फिर भी, क्यों विश्वास न आया॥
नारी अब क्या शिक्षा लेगी, मेरे इस अन्जाम से॥

मैने अपना धरम निभाया, पतिव्रता नारी का।
हृदय आपका हो गया भगवन, कैसे संसारी का॥
आप है अन्तर्यामी भगवन, रह गये क्यों अन्जान से॥

रामराज आ गया मगर, मेरा वनवास न टूटे।
लवकुश जैसा भाग्य किसी के, बालक पे न रूठे॥
काट लिया है मैने जीवन, राम तुम्हारे नाम पे॥

ये मेरी अन्तीय है परीक्षा, पूर्ण समर्पण मेरा।
गोद में ले ले धरती माता, है ये जीवन तेरा॥
राम ने रोका पर न रुकी, तो सीता जी भी राम से॥

संगीत, साहित्य और कला से रहित मनुष्य बिना पूँछ का साक्षात् पशु है। –वाड्मय १९ पृ.५.९

सब कैदी फरीन्दों ने

सब कैदी फरीन्दों ने, उड़ जाने की ठानी है।
सैयाद के पींजरे में है, दाना है ना पानी है।

उड़ जायेगा पंछी एक दिन, इस पींजरे को छोड़ के।
रह जायेगा धरा धराया, चल देगा तू छोड़ के॥

हाड़ मांस का कच्चा पींजरा, कब देखोगे भाई।
खत्म हो गई सोच सोचकर, पंछी की चतुराई॥
पंछी है भोला बेचारा, समझ न इसको आई॥

पींजरा जिस पल टूटेगा, होगा ये देश बेगाना।
पंछी है नादान ओ शायद, भेद न इसका जाना॥
पींजरे को घर समझ ओ बैठा, पर है दूर ठीकाना॥

काम, क्रोध, मोह, लोभ के, दाने चुनता है बेचारा।
भूल गया दुनियाँ में उसका, आना नहीं दुबारा॥
दुनिया छोड़ के चल देगा, जब मौत ने किया इशारा॥

मेरे श्याम तेरा नाम

मेरे श्याम तेरा नाम, बोले मन सुबह शाम॥

जब तक तेरा भजन न गाऊँ, मन पंछी अकुलाये।
उस दिन जग में धूप न निकले, जिस दिन रात न होवे॥
मेरा जीवन तेरी पूजा, और न दूजा कोई काम॥

तेरे रंग के आगे लगता, रंग जगत का फीका।
और नहीं कुछ सुनता जब तू, छेड़े सूर बंशी का॥
खोजता है मन वृन्दावन, तेरे चरणों में मेरा धाम॥

श्याम श्याम की रट

श्याम श्याम की रट अब लगी, कृष्ण कृष्ण ही बोलू।
वृन्दावन की गलियन में, मैं इक तारा ले डोलू॥

मीरा जैसी लगन मैं चाहूँ राधा जैसी भक्ति।
श्याम की भक्ति तन में समा, भक्ति योग की शक्ति।
नैनन में नित श्याम विराजत, हृदय पट को खोलू॥

कुंजनी कुंजन छवि का दर्शन, बाँके लाल बिहारी।
मैं दर्शन के प्रेम में भीगी, भक्ति में सब कुछ हारी।
दास नारायण जनम बने रे, रज कण माथे जो ले लूँ॥

शिवशंकर भोले

शिवशंकर भोले भण्डारी,
जय महाकाल प्रलयंकारी।

प्रभु महादेव, प्रभु महाकाल।
शशिशेखर सुन्दर चन्द्रभाल॥

है डमरू की डम-डम विशाल।
है कण्ठ ज़हर (गरल) अरु नागमाल॥

दुष्टों को प्रभु हैं भयकारी।
भक्तों को अतिशय सुखकारी

हो गये भवसागर पार

हो गये भवसागर पार, लेकर नाम तेरा।

बाल्मीकि अति दिन दुखी था, बुरे कर्म में सदा लीन था।
करी रामायण तैयार, लेकर नाम तेरा॥

थे नल-नील जाति के बानर, राम-राम लिख दिया शिला पर।
हो गयी सेना पार, लेकर नाम तेरा॥

भरी सभा में द्रुपद दुलारी, कृष्ण द्वारिका नाथ पुकारी।
बढ़ गया चीर अपार, लेकर नाम तेरा॥

गज ने आधा नाम पुकारा, बाण छोड़कर उसे उबारा।
किया ग्राह संहार, लेकर नाम तेरा॥

मीरा गिरधर नाम पुकारी, विष अमृत कर दिया मुरारी।
खुल गये प्रभु के द्वार, लेकर नाम तेरा॥

"जब कभी संगीत की स्वर लहरियाँ मेरे कानों में गुँजतीं मुझे ऐसा लगता है कि-मेरी आत्म-चेतना अदृश्य जीवनदायिनी सत्ता से सम्बन्ध हो गई है। मैं शरीर की पीड़ा भूल जाता, भूख प्यास और निद्रा टूट जाती, मन को विश्राम और शरीर को हलकापन मिलता। मैं तभी सोचा करता था कि सृष्टि में संगीत से बढ़कर मानव जाति के लिए और कोई दूसरा वरदान नहीं है।"

-विश्व के यशस्वी गायन -एनरिको कारूसो

शिव से काशी कृष्ण से

शिव से काशी कृष्ण से मथुरा सजे राम से धाम अवध।
काशी मथुरा अवध का फेरा, लग जाये तो तर जाऊँ।
-तीरथ सारे कर आऊँ॥

गर्मी शरदी बारिश आँधी, सारा जीवन भागा।
अब ये सोच क्या कुछ पाया, पहले क्यों ना जागा।
पाप कलश को अब तो, थोड़े पुण्यों से मैं भर लाऊँ॥

माया ने भरमाया मुझको, लालच ने उलझाया।
मंदिर की दहरी पर मैंने, दीपक नहीं जलाया।
अंत समय अब आने वाला, अब तो दीप जला आऊँ॥

आते-जाते रूकते चलते, सोचा अपना-अपना।
रातों रातों रंग में खोया, दिन में देखा सपना।
अब जब चारों ओर अंधेरा, रस्ता कैसे मैं पाऊँ॥

सुख शांति चाहने वालो

सुख शांति चाहने वालो को, भगवान भुलाना ठीक नहीं।
सतपथ के पुजारी प्रेमी को, उल्टे पथ चलना ठीक नहीं॥

पिछले शुभ कर्मों के फल से, इस मानव तन को पाया है।
पापों में फंसकर हे प्राणी, इसे व्यर्थ गंवाना ठीक नहीं॥

है तेरी इच्छा पर निर्भर, शुभ करें या पाप करे।
पर फल पाने में बंधा हुआ, वो न्याय भुलाना ठीक नहीं॥

हेरी मैं तो प्रेम दीवानी

हेरी मैं तो प्रेम दीवानी, मेरो दरद न जाने कोय।

घायल की गति घायल जाने, जो कोई घायल होय।
जौहर की गति जौहर जाने, जो कोई जौहर होय॥

दरद की मारी बन-बन डोलू, वैद्य मिला नहिं कोय।
मीरा के प्रभु पीर मिटे, जब वैद्य सांवलिया होय॥

सूली ऊपर सेज पिया की, किस विधि सोवन होय।
गगन मण्डल में रहनि पिया जी, किस विधि मिलना होय॥

हे पवनपुत्र हनुमान

हे पवनपुत्र हनुमान राम के भक्त निराले।
संकट मोचन हनुमान, विपति हरने वाले॥

उगते सूरज को फल समझा, उड़ गये और मुंह में रखा।
देवों की विनय सुन रवि को मुक्ति देने वाले॥

बजरंगी बल के सागर हो, गुणज्ञान बुद्धि के आगर हो।
लंका जाकर सीता जी की सुधि लाने वाले॥

जब शक्ति बाण लगा लक्ष्मण के, शेष थे कुछ पल जीवन के।
लाकर संजीवनी उनके प्राण बचाने वाले॥

सीताजी ने मणि माला दी, हर दाने को फोड़ कर बिखरा दी।
निज हृदय चीरकर, सीता राम दिखाने वाले॥

हे राम! सहारा बन जाओ

हे राम! सहारा बन जाओ, घनश्याम सहारा बन जाओ॥

संसार निराशा का घर है, परिवार दुराशा का सर है।
मुझे लोभ पिपासा का डर है, मेरे राम सहारा बन आओ॥

सर्वत्र अन्धेरा है छाया, चिन्तानल में जलती काया।
मुझे लूट न ले तेरी माया, मेरे राम सहारा बन जाओ॥

भवसागर के कर्णाधार तुम्हीं, जन जीवन के श्रृंगार तुम्हीं।
इस गिरधर के आधार तुम्हीं, मेरे राम सहारा बन जाओ॥

हे गोविन्द राखो शरण

हे! गोविन्द हे गोपाल, हे दया निधान।
हे! गोविन्द राखो शरण, अब तो जीवन हारे।।

नीर पीवन हेतु गयो, सिन्धु के किनारे।
सिन्धु बीच बसत ग्राह, चरण धरि पछारे॥

चार प्रहर युद्ध भयो, लै गयो मझधारे।
नाक-कान डूबन लागयो, कृष्ण को पुकारे॥

द्वारिका में शब्द गयो, शोर भयो भारे।
शंख, चक्र, गदा, पद्म, गरुड़ लै सिधारे॥

'सूर' कहें श्याम सुनो, शरण हैं तिहारे।
अब की बार पार करो, नन्द के दुलारे॥
हे! गोविन्द राखो शरण... ॥

ठुमक-चलत रामचन्द्र

ठुमक–चलत रामचन्द्र बाजत पैजनियाँ॥

किल किलात उठत धाय, गिरत भूमि लटपटाय।
धाय माय गोद लेत, दशरथ की रनियाँ॥

विद्रुम से अरूण अधर, बोलत मृदु वचन मधुर।
सुन्दर नासिका बीच, लटकत लटकनियाँ॥

मेवा मोदक रसाल बिन्द मन भावे सो लेहो लाल।
और लेहो रूचि पान, कंचन झुन–झुनियाँ॥

तुलसीदास अति आनन्द, निरखी के मुखार बिन्द।
रघुवर की छवि समान, रघुवर मुख बनियाँ॥

ठठरी छोड़ चले बन्जारा

ठठरी छोड़ चले बन्जारा, हो हो छोड़ि, चले बन्जारा॥

इस ठठरी बीच सात समुन्दर, कोई मीठा कोई खारा।
इस ठठरी बीच चाँद और सूरज, याहि में नव लख तारा॥
याहि के बीच पाँच रतन है, परखो परखन हारा।

सोच समझ पग बढ़ै बावरे, जामे चिकना गारा॥
या ठठरी बीच दस दरवाजा, एक गुप्त गंभीरा।
कहे कबीर सुनो भाई साधो, सद्‌गुरु शब्द उबारा॥

ऐसा प्यार बहादे मैया

ऐसा प्यार बहादे मैया, चरणों से लग जाऊँ मैं।
सब अंधकार मिटा दे मैया, दरश तेरे कर पाऊँ मैं॥

जग में आकर जग को मैया, अब तक न पहचान सका।
क्यूँ आया हूँ कहाँ है जाना, ये भी न मैं जान सका।
तू है अगम अगोचर मैया, कहो कैसे लख पाऊँ मैं॥

कर कृपा जगदम्ब भवानी, मैं बालक नादान हूँ।
नही आराधन जप तप जानू, मैं अवगुण की खान हूँ।
दे ऐसा वरदान हे मैया, सुमिरन तेरा गाऊँ मैं॥

मैं बालक तू मैया मेरी, निशदिन तेरे ओट है।
तेरी कृपा से ही निकलेगी, भीतर जो भी खोट है।
शरण लगाओ मुझको मैया, तूझपे बलि-बलि जाऊँ मैं॥

तू शब्दों का दास

तू शब्दों का दास जोगी, तेरा क्या विश्वास रे जोगी।
राम नहीं तू बन पायेगा, क्यों लेता वनवास रे जोगी॥

ये साँसों का बंदी जीवन, किसको आया राम रे जोगी।
भर आई थी मन की आँखें, वह गई हर एक आश रे जोगी॥
देख न इतना ऊपर जा तू, ऊँचा है आकाश रे जोगी।
एक दिन विष का प्याला पीजा, फिर न लगेगी प्यास रे जोगी॥

राम नाम रस बीनी

राम नाम रस बीनी, चदरिया झीनी रे झीनी॥

अष्टकमल का चरखा बनाया, पाँच तत्व की पूनी।
नौ–दस मास बुनन लागे, मूरख मैली कीनी॥

जब यह चादर बनि घर आई, रंगरेज को दीनी।
ऐसा रंग रंगा रंगरेजे, लालों–लाल करि दीनी॥

चादर ओढ़ि शंका मत करियो, ये दो दिन तुमको दीनी।
मूरख लोग भेद नहिं जानें, दिन–दिन मैली कीनी॥

ध्रुव, प्रह्लाद, सुदामा ने ओढ़ी, शुकदेव ने निर्मल कीनी।
दास 'कबीर' ने ऐसी ओढ़ी, ज्यों की त्यों धर दीनी॥

तुम चन्दन हम पानी

प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी।
जाकी अंग अंग वास समानी॥

प्रभु जी तुम घन वन हम मोरा।
जैसे चितवन चन्द्र चकोरा॥

प्रभु जी तुम मोती हम धागा।
जैसे सोनेहि मिलत सुहागा॥

प्रभु जी तुम दीपक हम बाती।
जाकी ज्योति बरै दिन राती॥

प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा।
ऐसी भगति करै रैदासा॥

छोड़कर सारे पागल पन

छोड़कर सारे पागल पन, राम गुण गाले मेरे मन।

हमारे सिर भी है पाप भारी, हमे जो तारो तो हम भी जानें॥
हटा अहिल्या का शाप तुमने, मिटाया शबरी का ताप तुमने

राम कथा शिव पुनि-पुनि गाई, जग जननी के मन अति भाई।
शंकर गणपति गण नायक ने, तन मय किया श्रवण॥

क्रूर कराल दास रत्ना कर, एक दिन पापों से उकसाकर।
राम-राम से मरा-मरा जप, बदला अपना मन॥

जिसको सबने ठोकर मारी, माना सदा अमंगल कारी।
अमर हो गया उस तुलसी का, राम चरित्र गायन॥

राम नाम का मिले सहारा, जनम-मरण का हो छुटकारा।
माया में मत उलझ नष्ट मत, कर अपना जीवन॥।

मत मत जा यमुना

मत जा मत जा यमुना किनारे।
श्याम की बंशी राधा पुकारे॥

गोकुल में और गैया चराये, कहाँ के तुमसे प्रीति रचाये।
प्यारी-प्यारी बतियां करके, भोली-भाली दिल को चुराये॥

यूँ न कभी अखियाँ मिलाना, अगु पड़ ग्वाला के राजा को कान्हा।
मधुर-मधुर बंशी सुनाके, मीठी-मीठी निदिंया चुराये॥

प्रेम की अगन हो

प्रेम की अगन हो, भक्ति सघन हो।
मन में लगन हो तो, प्रभु मिल जायेंगे॥

हृदय में भाव हो, अनुनय की छाव हो।
आराधन का काम हो तो, मन खिल जायेंगे॥

श्रद्धा की ज्योत हो, मन में न खोट हो।
करुणा का स्त्रोत हो तो, प्रभु श्री आयेंगे॥

चरणों की चाह हो, भक्ति प्रवाह हो।
पूजा की चाह हो तो, प्रभु हर्षायेंगे॥

भजनों की बोल हो, भाव अनमोल हो।
अर्चन की मोल हो तो, प्रभु मुस्कायेंगे॥

नारायण धन हो, छवि में मगन हो।
अर्चन वन्दन हो तो, प्रभु दर्शायेंगे॥

श्याम ने मुरली मधुर

श्याम ने मुरली मधुर बजाई, निर्मल जीवन जमुना जल में।
लहर-लहर लहराई, श्याम ने मुरली बधुर बजाई॥

निर्मल गगन पवन निर्मल है, निर्मल धरती का आँचल है।
निर्मल है तन निर्मल है मन, निर्मल रस की रास रचाई॥

निर्मल स्वर में बेनु पुकारे, बिसध सुनै बिस हान को मारे।
निर्मल लोचन निर्मल चितवन, मन में निर्मल लगन लगाई॥

अब लगाले लगन

अब लगाले लगन, करले प्रभु का भजन चेत प्राणी।
बीती जाए तेरी जिन्दगानी॥

जिसको कहता है पगले तू अपना,
वह तो संसार का झूठा सपना।
नहीं कोई सगा, आखिर देगा दगा, बहता पानी,
बीती जाए तेरी जिन्दगानी॥

यह तो संसार की ममता माया,
इस चक्कर में तुझको फसाया।
यह तो झूठा जहाँ कोई है ना यहाँ दुःखदानी।
बीती जाए तेरी जिन्दगानी॥

बड़ी मुश्किल से नर तन है पाया,
और पाकर के यूँ ही गँवाया।
कुछ ना कर पाएगा, अन्त पछताएगा सुन अज्ञान।
बीती जाए तेरी जिन्दगानी॥

बड़ी देर भई कब लोगे खबर

बड़ी देर भई, बड़ी देर भई, कब लोगे खबर मोरे राम।
चलते-चलते पग मेरे हारे, आई जीवन को शाम॥

कहते हैं तुम हो दया के सागर, फिर क्यों खाली मेरी गागर।
झूमे-झूमे कभी न बरसे कैसे हो घनश्याम॥

सुन के जो बहरे बन जावोगे, आप ही छलिया कहलाओगे।
मेरी बात बने न बने, हो जाओगे तुम बदनाम॥

वैष्णव जन तो तेणे

वैष्णव जन तो तेणे कहिये, जे पीर पराई जाणे रे।
पर दु:खे उपकार करे तो ये, मन अभिमान न आणे रे॥

सकल लोक मां सहु ने बन्दे, निन्दा न करे केनी रे।
वाछ काछ मन निश्छल राखे, धन धन जननी तेणी रे॥

समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, परस्त्री जेणे मात रे।
जिव्हा थकी असत्य न बोले, पर धन नव झाले हाथ रे॥

मोह माया व्यापे नहीं जेणे, दृढ़ वैराग्य जेना मन मां रे।
राम नाम शूं ताली लागी, सकल तीरथ तेणा तन मां रे॥

वण लोभी ने कपट रहित छे, काम क्रोध निवार्या रे।
भणे नरसयौ तेणु दरशन करतां, कुल एकोत्तेर तार्‌या रे॥

साधु संतो ये कहना है

साधु संतो ये कहना है, जपो प्रभु का नाम।
आओ हम भजन करें, आओ हम भजन करें॥

कोई शंकर का गुणगान करे, कोई कहे राम मेरा स्वामी।
कोई कृष्ण की लीला में खोया, कोई ब्रह्मा विष्णु महेश कहे।

कहीं ओमकार से मुक्ति मिले, कहीं दुर्गा माँ भक्ति फले।
कोई गाये गणपति की महिमा, कोई जय माँ जय माँ जाप करे॥

कोई गीता का संदेश पढ़े, उपनिषद का कोई ज्ञान पढ़े।
कोई उच्चारे ऋग्वेद मंत्र, कोई पुराण की महिमा गाये॥

ये जग है एक मेला

ये जग है एक मेला, यहाँ से, एक दिन सबको जाना॥

तेरा सारा कुटुम्ब कबींला साथ न तेरा देंगे।
मरते ही तेरी सारी कमाई झट से बांट ये लेंगे॥
जिसको तू कहता है अपना वे तुझको भूलेंगे।
इस दुनियाँ की रीत यही है, इसी को कहते जमाना॥

तेरे अच्छे कर्म ही भइया संग तेरे जायेंगे।
घर वाले और जग वाले तो मरघट तक जायेंगे॥
तेरी अस्थी तक भी भैया घर में न लायेंगे।
इतना ही इनका रिस्ता नाता, इतना ही साथ निभाना॥

कितने ही राजा महाराजा इस दुनियाँ में आये।
लेकिन मौत के आगे अपना जोर चला न पाये॥
मुट्‌ठी बाँध के आने वाले मुट्‌ठी खोल के जाये।
चाहे कोई रंक हो चाहे हो कोई महाराणा॥

आँख मूँद कर जान बूझकर क्यों करता नादानी।
बचपन तेरा बीत चुका और ढलती जाये जवानी॥
वक्त है अब भी जाग जा भैया मत कर ये मनमानी।
जपले प्रभु का नाम वो बन्दे, मत बन तू अनजान॥

श्री राम चले आना

श्री राम चले आना, मेरे राम चले आना।
नैया जो भँवर में है, उसे पार लगा देना॥

दुनियाँ एक उलझन है, उलझन में पड़ा हूँ मैं।
इस पाप की नगरी में, पापों से घिरा हूँ मैं॥
पापों से छुड़ा लेना, बेड़ा पार लगा देना॥

जीवन की राहों में, कांटे ही कांटे हैं।
कहीं फँस के तो न रह जाये, हम तेरे सहारे हैं॥
कांटो से बचा लेना, चरणों मे छिपा लेना॥

मेरा तन मन धन जो है, जो भी है वो तेरा है।
मेरी इन साँसों में, बस तेरा ही बसेरा है॥
साँसों में समा लेना, चरणों में जगह देना॥

जय राम कृष्ण जय

जय राम कृष्ण जय युगावतार, तेरी महिमा अपरम्पार।

जब-जब हुई धर्म की ग्लानी, तुमने आकर महिमा बखानी।
जिसने तेरी लीला जानी, हो गई नैया पार॥

सत्य मार्ग सबको दर्शाया, धर्म मतो का भेद मिटाया।
ऊँच नीच सबको अपनाया, तेरी महिमा अपरम्पार॥

पूरब कावे पश्चिम ध्यावे, सब जग तेरा ध्यान लगावे।
चारो दिशा तेरी महिमा पावे, मुक्त हुआ संसार॥

किस देवता ने आज

किस देवता ने आज मेरा दिल चुरा लिया।
दुनियाँ की खबर ना रही तन को भुला दिया॥

रहता था पास में सदा लेकिन छिपा हुआ।
करके दया दयाल ने पड़दा उठा लिया॥

सूरज वो था न चाँद था बिजली न थी वहाँ।
ये कदम वो अजब शान का जलवा दिखा दिया॥

फिर के जो आँख खोजकर ढूढ़न लगा उसे।
गायब था नजर से सोई फिर पास पा लिया॥

करके कसूर माफ मेरे जन्म जन्म के।
ब्रह्मानन्द अपने चरण में मुझको लगा लिया॥

जो बीत गए हैं

जो बीत गए हैं, वो जमाने नहीं आते।
आते हैं नए लोग, पुराने नहीं आते।।

लकड़ी के मकानों में, चिरागों को न राखो।
लगी आग पड़ोसी भी बुझाने नहीं आते।।

बहुत दिन हो गए, इन वृक्षों को सूखे।
पक्षी भी यहाँ रात बिताने नहीं आते।।

हर रोज कसम ली, ना भूलेंगे कभी।
मिलने की तो दूर सताने नहीं आते।।

रे मनवा अब तो समझ

रे मनवा अब तो समझ मेरे भाई।
तेरो अवसर बीतो जाई॥

लाख करोड़ी माया जोड़ी, कर-कर कपट कमाई।
ऊँचे ऊँचे महल बनाये, सोयो सेज बिछाई॥

सुन्दर सुन्दर वस्तर पहने, भूषण देह सजाई।
नये नये नित भोजन चाखे, षटरस स्वाद बनाई॥

जोबन भरिया सुन्दर नारी, भोगी कंठ लगाई।
गजरथ बाजी करी असवारी, सैल किये मन भाई।।

बालपनो यौवन पुनि बीतो, वृद्धा वस्था आई।
ब्रह्मानन्द छोड़कर तृष्णा, शांति पकड़ मन मांहि॥

दया की भीख दे

दया की भीख दे ये दीनबन्धु हम तुम्हारे हैं।
गुजारिश है हमारी हम, तुम्हारे ही सहारे हैं॥

सुना है बे सहारों के सहारे, बन के आते हो।
हमारे हाल पर खाओ तरस, हम बे सहारे हैं॥

सुना है ग़म के मारों की खबर, हर गम में रखते हो।
चले आओ चले आओ, कि हम भी गम के मारे हैं॥

तुम्हें मालुम है दाता कि मुझपे, क्या गुजरती है।
सुलगती रैन और घुट घुट के हमने दिन गुजारे हैं॥

कहाँ हो ऐ मेरे नाविक, कहाँ पतवार है मेरी।
उमड़ता ग़म का ये सागर, कहाँ उसके किनारे हैं॥

मेरे जीवन की नैय्या अब, तुम्हारे ही सहारे है।
'निरश' हूँ मैं सहारा दो, कहाँ तेरे इशारे हैं॥

धोना था मन भूल गया

धोना था मन भूल गया तू, धोता रहा तन मल मल के।
घर का ईश्वर भूल गया तू, तीरथ करता चल चल के॥
प्रात:काल उठी के रघुनाथा, मात पिता गुरु नाँवहि माथा।।

सब देवों के दर्शन कर लो, हाथ जोड़कर वन्दन कर लो।
मात-पिता, गुरु का पूजन ही, हर तीरथ से बढ़ चढ़ के॥
घर का ईश्वर भूल गया तू, तीरथ करता चल चल के।
धरम न दूसर सत्य समाना, आगम निगम पुराण बखाना।।

सत्य से बढ़कर धर्म न कोई, झूठ से बड़ा अधर्म न कोई।
मन वाणी से सत्य बोल नित,पाप मिटेंगे एक-एक करके॥
घर का ईश्वर भूल गया तू, तीरथ करता चल चल के।
अवध जहाँ-जहाँ राम निवासु, जहाँ दिवस तहँ भानु प्रकाशु।।

जिस मन में बसते श्रीराम, वो तन बने अयोध्या धाम।
जहाँ जले श्रीराम की ज्योति, मिटे अँधेरा तम मन के॥
प्रात:काल उठी के रघुनाथा, मात पिता गुरु नाँवहि माथा।।

जय-जय जननी श्रीगणेश

जय-जय जननी श्री गणेश की।
प्रतिभा परमेश्वर परेश की॥

जय महेश मुख चन्द्र-चन्द्रकी।
जय-जय-जय-जय जगत अम्बिका॥
वरदे माँ वरदान दायनि, बनूँ दायकि द्वारिकेश की॥

सविनय बिनती सुन हरि आवे।
आये अपनाये ले जाये॥
सुखद सुबध बेला आये माँ, सव सुमंगल गृह प्रवेश की॥

राम सुमिर के रहम करे

राम सुमिर के रहम करे ना, फिर कैसे सुख पायेगा।
कृष्ण सुमिर के करम करे ना, यों ही जग से जायेगा॥

ओ भगवान को भजने वाले, क्या भगवान को जाना है।
पास पड़ोस दुःखी दीनों में, क्या उसको पहचाना है॥
जब तक तेरी खुदी न टूटे, खुदा नजर न आयेगा॥

ये संसार करम की खेती, ज्यों बोये त्यों ही पाये।
प्रेम प्यार से सींच ले जीवन, ये अवसर फिर न आये॥
चार दिनों का जीवन है ये, कब तक ठोकर खायेगा॥

शरण गये बिन जाप है निश्फल, निश्फल है जीवन तेरा।
जनम मरण की फँास न छूटे, रहे दुःखों से नित घेरा॥
पाप गठरिया भरी हो गई, कैसे बोझ उठायेगा॥

मैली-मैली चदरिया कैसे

मैली मैली चदरिया कैसे धोऊँ-२
गंगा में धोऊँ, जमुना में धोऊँ।
दाग छुटे न कैसे धोऊँ, मैली-मैली...॥

घाट-घाट पर पटक-पटकर, तान-तान कर डाली।
फिर भी तक मोरी चदरिया, है काली की काली॥
एक यही है पूंजी बाकी, कैसे इसे न धोऊँ॥

देख तेरे संसार की हालत

देख तेरे संसार की हालत, क्या हो गई भगवान।
कितना बदल गया इन्सान॥
सूरज न बदला चाँद न बदला, न बदला रे आसमान॥
कितना बदल गया इन्सान॥

आया समय बढ़ा बेढंगा, आज आदमी बना लफंगा।
कहीं पे झगड़ा कहीं पे दंगा, नाच रहा नर होकर नंगा॥
छल और कपट के हाथों अपना, बेच रहा ईमान॥

राम के भक्त रहीम के बन्दे, रचते रोज फरेब के फन्दे।
कितने ये मक्कार ये अन्धे, देख लिए इनके भी धन्धे॥
उनकी काली करतूतों से, हुआ ये मुल्क मशान॥

जो आपस में नहीं झगड़ते, बने हुए क्यों खेल बिगड़ते।
काहे लाखों घर हैं उजड़ते, क्यों बच्चे माँओं से बिछ्ड़ते॥
बिलख-बिलख कर क्यों रोते, प्यारे बापू के प्राण॥

संगीत मनुष्य की आत्मा है। उसे अपने जीवन से अलग न करें तो आत्मोत्थान के स्वर्गीय सुख से भी हम कभी वंचित न हों। शास्त्रों में शब्द और नाद को 'ब्रह्म' कहा है। नि:संदेह स्वर साधना एक दिन 'अक्षरब्रह्म' तक पहुँचा देती है।

-वाङ्मय१९ पृ.५.४

दुनियाँ में आये हैं

दुनियाँ में आये हैं लेकिन, क्या हसरत है मालूम नहीं।
औरों की छोड़ो अपनी भी, क्या कीमत है मालूम नहीं॥

भूखे भी नहीं पैदल भी नहीं, घर बाहर ऐश का आलम है।
आराम से जीने वालों की, क्या गुरबत है मालूम नहीं॥

सामान जुटाते उम्र गई, पर छूट गई कितनी चीजें।
इन्सान की आदत लालच है, क्या हालत है मालूम नहीं॥

महफूज किया सय्यदों से, जो सींच गये खूँ से उनको।
वारिस से लुटते गुलशन की, क्या हालत है मालूम नहीं॥

अपने पैरों से चलते हैं, हाथों से वक्त बदलते हैं।
जिनको है भरोसा खुद पे उन्हें, क्या किस्मत है मालूम नहीं॥

प्रार्थना सुनिये श्री भगवान

आज भूमि जन होहि दुखारी, वाणी वीणा शरण तुम्हारी।
वाणी को झंकार कीजिए, वाणी को दो वरदान॥

हानि धर्म की बहुत हुई है, अंधकार मय ज्योति छुई है।
धरती पर अवतार लीजिए, कर लीजिए वचन प्रमाण॥

कोई लाख करे चतुराई

कोई लाख करे चतुराई, करम का लेख मिटे ना रे भाई।
जरा समझो इसकी सच्चाई रे, करम का लेख मिटे ना रे भाई॥

इस दुनियाँ में भाग्य के आगे, चले न किसी का उपाय।
कागज हो तो सब कोई बाँचे, करम न बाँचा जाय॥
एक दिन इस किस्मत के कारण-
वन को गये थे रघुराई रे, करम का लेख मिटे ना रे भाई॥

काहे मनुवा धीरज खोता, काहे तू नाहक रोय।
अपना सोचा कभी नहीं होता, भाग्य करे सो होय॥
चाहे हो राजा चाहे हो भिखारी-
ठोकर सभी ने यहाँ खाई रे, करम का लेख मिटे ना रे भाई॥

तू ही राम है तू ही रहीम

तू ही राम है तू ही रहीम है, तू ही करीम-कृष्ण कहा रहा।
तू ही वाहे गुरु, ईश तू ही, हर नाम में तू रमा रहा॥

तेरी खूबीयाँ है कुरान में, गुण वेद और पुराण में।
गुरु ग्रन्थ जी के बखान में, तेरा रूप सबको भा रहा॥

अरदास हो या नाम धुन, या हो शबद का कीर्तन।
कर पाप या करके भजन, हर भक्त तुझे भुला रहा॥

तेरा मार्ग जिसको जच गया, वो पाप पथ के बच गया।
परमार्थ जिसको रुच गया, बन्दा वही यश पा रहा॥

घर आये मेरे राम लखन

घर आये मेरे राम लखन, शबरी का झुमा तन मन॥

चुन–चुन कलियाँ लाई हूँ, फूलों से कुटिया सजाई हूँ।
खुशबू से महके घर–आँगन, शबरी का झूमा तन–मन॥

बरसों से अखियाँ प्यासी थी, दर्शन की अभिलाषी थी।
मिल गये आज राम–लखन, शबरी का झुमा तन–मन॥

खुशबु से सुध बिसराई है, झुठे बेर खिलाई है।
श्रद्धा के भूखे हैं भगवान, शबरी का झुमा तन–मन॥

श्रद्धा लखन ने ठुकराई है, संजीवनी बन आई।
प्राण बचा देने जीवन, धन्य है शबरी का जीवन॥

जय-जय मंगल मूर्ति

जय–जय मंगल मूर्ति गणेश।
जननी गिरजा जनक महेश॥

पूजा होती प्रथम तुम्हारी, दोष पाप अरु संकट हारी॥
जयति गजानन जय सर्वेश॥

लाभ और शुभ के तुम दाता, तुम हो विद्या बुद्धि विधाता।
निर्मल बुद्धि की अखिलेश॥

ऋद्धि–सिद्धि के तुम हो स्वामी, देव नमामि नमामि नमामि।
सबके विघ्न हरो विघनेश॥

पंछी मत रूक पागलपन

पंछी मत रूक पागलपन में, हो गई रैना बन में॥

सूरज डूबा संध्या आ गई, लाली छा गई नभ में।
फिर क्यों रूकता पागल पंछी, क्या सोचा है मन में॥

मान रहा हो तू बैठा है, प्यारे वह गुलशन में।
गुलशन नहीं वह दोजख ही है, चल उड़ रे वतन में॥

मंजिल तेरी दूर है पंछी, और भी तू है अकेले।
शाम को सब चल देते यहाँ से, होते सुबह में ही मेले॥

मतगिर मतगिर मोह लोभन में, काम क्रोध बन्धन में।
तोड़ के बन्धन राम बसा ले, पथिक अपने मन में॥

गिरना नहीं है सम्भलना

गिरना नहीं है सम्भलना है जिन्दगी।
गिरने का नाम मौत है, चलना है जिन्दगी॥

जुड़ा हुआ तेरे जीवन से, औरों का भी जीवन है।
खुद को मिटा दे क्या हक, तुझको तू सारे जग का धन है॥
बिगड़े हुए कर्मों को बदलना है जिन्दगी॥

हिम्मत की पतवार है तेरी, तूफानों से क्या डरना।
तेरे साथ भगवान हैं तेरे, फिर दानवों से क्या डरना॥
तूफान की मौंजों पे, मचलना है जिन्दगी॥

ये वक्त की आवाज

ये वक्त की आवाज है मिल के चलो।
ये जिन्दगी का राज है, मिल के चलो॥

आज दिल की रंजिशे मिटा के आओ।
आज भेद–भाव सब भुला के आओ॥
आजादी से है प्यार जिन्हें देश से है प्रेम।
कदम से कदम में और दिल से दिल मिला के चलो॥

जैसे सुर से सुर मिले हो राग के।
जैसे शोले मिल के बढ़े आग के॥
जिस तरह चिराग से जले चिराग।
वैसे चलो भेद तेरा मेरा त्याग के॥

माँ सुनाओ मुझे ओ कहानी

माँ सुनाओ मुझे ओ कहानी।
जिसमें राजा ना हो ना हो रानी॥

जो हमारी तुम्हारी कथा है, जो सभी वो हृदय की व्यथा हो।
गंध जिसमें भरी हो धरा की, बात जिसमें न हो अपयश की॥
होना परियाँ जहाँ आसमानी, जिसमें राजा ना हो ना हो रानी॥

ओ कहानी हो हंसना सिखादें, पेट की भूख को जो भूला दे।
जिसमें सच की भरी चाँदनी हो, जिसमें उम्मीदों की रोशनी हो॥
जिसमें ना हो कहानी पुरानी, जिसमें राजा ना हो ना हो रानी॥

ये धरती हिन्दुस्तान की

न तेरी है न मेरी है, ये बेटी किसी किसान की।
ये धरती हिन्दुस्तान की॥

खेत में इसके उगे सच्चाई, प्यार भरा खलिहानों में।
बाग में खुशबू उड़े अमन की, दिया जले तूफानों में॥
एक साथ ये कदम मिलायें, गीता और कुरान की॥

भाव भावना भरत नाट्यम, झूमर मणिपुरी की है।
शौखी कत्थक वाली है और, मुद्रा कथा कली की है॥
गले हार तुलसी की माला, बोली है रसखान की॥

आँखों में गंगा का पानी, वक्षस्थल विध्याँचल है।
बालों में बंगाल की बदली, केरल पग की पायल है॥
पंजाबी चुनरी में दमके, बिंदिया राजस्थान की॥

देता है आवाज हिमालय, जननी तुझे बुलाती है।
बदल रहा इतिहास वक्त की, चाल बदलती जाती है॥
पूजन करो वतन की मिट्टी, मूरत है भगवान की॥

लोक-नृत्यों से हमें उल्लास मिलता है और यह शिक्षा मिलती है कि जीवन का आनन्द केवल भौतिक पदार्थों की उपलब्धियों में ही नहीं है। -पं.जवाहरलाल नेहरू

भगवान तेरी महिमा

भगवान तेरी महिमा, क्या जग में निराली है।
एक घर में अंधेरा है, एक घर में दिवाली है॥

क्या अजब तमाशा है, क्या खेल रचाया है।
ये खेल तेरा भगवान, कोई जान न पाया है॥
कोई अरबों का मालिक है, पर गोद से खाली है॥

कोई इतना सुन्दर है, फूलों से सजाते हैं।
कवि भी कविता करके, गुण रूप का गाते हैं॥
बद शकल कोई इतना, जैसे रजनी काली है॥

ये तकदीर की हलचल है, या कर्म का पाशा है।
दर-दर भिखारी है, लिए हाथ में कासा है॥
दर-बदर विचरता है, दर-दर का सवाली है॥

जीवन एक संघर्ष है, उलझन ही उलझन है।
बेमोल ये रिश्तों का, यहाँ कैसा बन्धन है॥
कुछ दिन के लिए हमने, एक दुनियाँ बसा ली है॥

पक्षी, भ्रमर, पतंगे, मृग और जीवजन्तु तक गायन करते रहते हैं। गीत-ब्रह्माण्डव्यापी है। संगीत मनुष्यों की ही नहीं, सृष्टि के समस्त प्राणधारियों की सम्पदा है।

–नारद संहिता

वह खेत में मिलेगा

वह खेत में मिलेगा, खलिहान में मिलेगा।
भगवान तो है वन्दे, इन्सान में मिलेगा॥

धनवान जो है झूठा, शैतान के बराबर।
निर्धन अगर है सच्चा, भगवान के बराबर॥
वो ढोंग में नहीं है, ईमान में मिलेगा॥

गंगा से भी पावन, मजदूर का पसीना।
पानी न कोई समझे, अनमोल है नगीना॥
ऐसे ही पसीने के, निर्माण में मिलेगा॥

गीता सुना रही है, आवाज बे कलों की।
तकदीर लिख रहा है, नोकों से वो हलों की॥
मजदूर में मिलेगा, वो किसान में मिलेगा॥

दो घड़ी भगवान का

दो घड़ी भगवान का ले नाम तुम।
छोड़कर दुनियाँ के सारे काम तुम॥

दो घड़ी का नाम ही रंग लायेगा।
दे साथ थोड़ा सुबह और शाम तुम॥

अपने दिल को साफ कर आसन जम
मन की चंचलता को प्यारे थाम तुम॥

धर्म के पथ पर जो चलता ही रहा।
पायेगा दुनियाँ में सुख आराम तुम॥

देश तेरे काम की ये बात है।
कर सदा उपकार के ही काम तुम॥

गोविन्द गोकुल आयो

गोविन्द गोकुल आयो गोविन्द गोकुल आयो।
नन्द बाबा घर नौबत बाजे, चहुँ दिशि आनन्द छायो जी छायो॥

वासुदेव बन गयो नन्दलाला, गोप मुदित नाचे बृजबाला।
बाजत आनन्द बधायो जी आयो॥

दुष्ट कंस की नींद उड़ गयी, बृजवासिन की मौज हो गयी।
सबने मोद मनायो जी आयो॥

असुरों के तो होश उड़ गये, भक्तों के मन मस्त हो गये।
योगेश्वर जग आयो जी आयो॥

इत गोकुल उत मथुरा नगरी, बीच बहत है जमुना गहरी।
चक के गोकुल आयो जी आयो॥

वन्दे गणपति विघ्न विनाशक

वन्दे गणपति विघ्न विनाशक।
हे लम्बोदर गजानन॥

ऋद्धि सिद्धि के दाता तुम हो।
हे शशि शेखर नन्दना॥

जो ध्यावे वांछित फल पावे।
अग्रदेव तुम वन्दना॥

काम, क्रोध, मद, लोभ आदि हरो।
नीर विकार निर्मल मना॥

मेरे मालिक मेरे गुरुवर

मेरे मालिक मेरे गुरुवर मेरे दाता ने कहा।
मेरे मालिक, मेरे आका मेरे मौला ने कहा॥
अपने माँ बाप का तू दिल न दुखा दिल न दुखा॥

तेरे माँ बाप ने प्यार से पाला तुझको।
खुद रहे भूखे दिया मुँह का निवाला तुझको॥
तू मगर इनके खयालातों से बेगाना रहा॥

बोलना तुझको सिखाया ये करम है कि नहीं।
हर मुसीबत से बचाया ये करम है कि नहीं॥
काम आती है बुरे वक्त में इनकी ही दुआ॥

देखकर तेरी जवानी को ये मगरूर (खुश) हुए।
जो किये फैसले तूने इन्हें मंजूर हूए॥
तेरी हर बात पे माँ बाप ने लब्बैत (मंजूर) कहा॥

तेरी माँ बाप ने शादी भी रचाई तेरी।
किस कद्र धूम से बारात सजाई तेरी॥
तूने इस प्यार के बदले में उन्हें कुछ न दिया॥

बुढ़े माँ बाप को घर से जो निकाला तूने।
कर लिया अपने मुक्कदर को भी काला तूने॥
बाज आ वरना खुदा भी न तुझे बक्सेगा॥

बीबी के आते ही चलने लगी नफ़रत की हवा।
तुझे बरबाद न कर दे ये अदावन की हवा॥
तू गुनाहगार न बन खुद को गुनाहों से बचा।।

मैं नहीं मेरा नहीं यह

मैं नहीं मेरा नहीं यह तन किसी का है दिया।
जो भी अपने पास है, वह उस प्रभु का है दिया॥

देने वाले ने दिया तो, भी दिया किस शान से।
मेरा है यह कहने वाला, कह उठा अभिमान से॥
मैं मेरा यह कहने वाला, मन किसी का है दिया॥

जो मिला है वह हमेंशा, पास रह सकता नहीं।
कब बिछुड़ जाये यह कोई, राज कह सकता नहीं॥
जिन्दगानी का खिला, मधुबन किसी का है दिया॥

जग की सेवा खोज, अपनी प्रीत उनमें कीजिए।
जिन्दगी का राज है यह, जानकर जी लीजिए॥
साधना की राह पर, साधन किसी का है दिया॥

प्रथम सुमिर श्री गणेश

प्रथम सुमिर श्री गणेश, गौरी सुत प्रिय महेश॥

लम्बोदर भुज विशाल, कर त्रिशुल चन्द्र भाल।
शोभित गल पुष्प माल, रक्त वसन जाको वेश॥

पूरन गुनि जन निधान, सुर मुनि असि करत गान।
ब्रह्मानन्द चरण ध्यान, विघ्न हरो भज गणेश॥

जय जय नारायण नारायण

जय जय नारायण नारायण हरि हरि।
तेरी लीला सबसे न्यारी न्यारी, हरि हरि॥

अलख निरंजन भवभय भंजन, जन मन रंजन दाता।
हमें शरण दे अपने चरण में, कर निर्भय जग दाता॥
तूने लाखों की नैया तारी तारी॥ हरि हरि------॥

दो अक्षर का शब्द हरि है, लेकिन बड़ा सलोना।
प्रभु के नाम का पारस जो छू ले, वो हो जाये सोना॥
उसके संकट टाले भारी भारी॥ हरि हरि------॥

हमने देखा तो यही लगा,तेरे जग में ही भगवन दगा ही दगा।
मन में सोचा तो ये जाना, बिन तेरे यहाँ पर कोई न सगा॥
हम तुझपे जायें वारी वारी॥ हरि हरि------॥

भगवान के सच्चे भक्तों को

भगवान के सच्चे भक्तों को, पग-पग पे सहारा मिलता है।
जिस ओर चले जीवन नैया, उस ओर किनारा मिलता है॥

जीवन में अगर तूफान उठे, गर भँवर में नैया फँस जाये।
यदि राम नाम का सम्बल हो, उसे सहज किनारा मिलता है॥

यदि धन जन बल ना साथी हो, दुश्मन सारा संसार बने।
यदि सब द्वारे बंद हो जाये, तब प्रभु का द्वारा खुलता है॥

प्रहलाद सरिस यदि निश्चल हो,शबरी की तरह यदि व्याकुल हो।
हो तुमसा निश्चय वाला, तब कृष्ण पियारा मिलता है॥

मेरी लगी श्याम संग प्रीत

मेरी लगी श्याम संग प्रीत, दुनियाँ क्या जाने।
मुझे मिल गया मन का मीत, दुनियाँ क्या जाने॥

छवि लखि मैंने श्याम की जब से, भई बावरी मैं तो तब से।
बाँधी प्रेम की डोर मोहन से, नाता तोड़ा मैंने जग से॥
यह कैसी पागल प्रीत, दुनियाँ क्या जाने॥

मोहन की सुन्दर सुरतिया, मन में बस गई प्यारी मूरतिया।
लोग कहे मैं तो भई बावरिया, जब से ओढ़ी श्याम चुनरिया॥
मैंने छोड़ी जग की रीति, दुनियाँ क्या जाने॥

हरदम मैं तो रहूँ मस्तानी, लोक लाज दीन्ही बिसरानी।
रूप रास अंग-अंग समानी, तैरत हैरत रहूँ बिसरानी॥
मैं तो गाऊँ खुशी के गीत, दुनियाँ क्या जाने॥

मुरलीधर ने मुरली बजाई, सबने अपनी सुध बिसराई।
गोप गोपियाँ दौड़ी आई, कुल मर्यादा काम न न आई॥
प्रिय बाज उठा संगीत, दुनियाँ क्या जाने॥

भूल गई कहीं आना जाना, जग सारा लागे बेगाना।
अब तो केवल गोविन्द पाना, रूठ जाये जो उन्हें मनाना॥
फिर होगी, भगत की जीत, दुनियाँ क्या जाने॥

जरा इतना बता दे कान्हा

जरा इतना बता दे कान्हा, तेरा रंग काला क्यों?
तू काला होकर भी, सारे जग से निराला क्यों?

मैंने काली रात में जन्म लिया।
और काली गाय का दूध पिया॥
मेरी कमली भी काली है, इसीलिए काला हूँ॥

सखी रोज ही घर में बुलाती है।
और माखन मिश्री खिलाती है॥
मटके का रंग काला, इसीलिए काला हूँ॥

मैंने काली नाग पर नृत्य किया।
और काली नाग को नाथ लिया॥
नागो का रंग काला, इसीलिए काला हूँ॥

सावन में बिजली कड़कती है।
और बदली बहुत बरसती है॥
बादल का रंग काला, इसीलिए काला हूँ॥

सखी नैनों में कजरा लगाती है।
अपनी आँखों में हमको बसाती है॥
कजरे का रंग काला, इसीलिए काला हूँ॥

सपने में सखी देख्यो

सपने में सखी देख्यो नन्द गोपाल।
साँवरी सुरतिया हाथ में बाँसुरिया, अरु घुँघराला बाल।।

वृन्दावन की कुञ्ज गलियन में, भागतो दौड़तो देख्यो।
देख्यों री सखी भागतो दौड़तो देख्यो॥
जंगल बीच में गाय चरावतो, काँधे कालो शाल॥

लुकतो छुपतो पनघट ऊपर, सगरी मटक्या फोड़े।
सखी री वो तो सगरी मटक्या फोड़े॥
घर घर जावतो माखन चुरावतो, प्यारो यशोदा रो लाल॥

म्हारे काँधे नटखट कन्हैयो, लुकणी इकणी खेले।
सखी री वो तो लुकणी इकणी खेले॥
जद मन पकड़्यो कृष्ण कन्हाई, मैं तो होगी न्ह्याल॥

गिरिजा के लाल गणराज

गिरिजा के लाल गणराज हो, लाज रखलो हमारी।
शंकर सुवन भवानी जी के नन्दन॥
विनय करूँ तोरे आज दो लाज रखो हमारी॥

ऋद्धि सिद्धि के तुम हो दाता, दीनजनों के भाग्य विधाता।
बिगड़ी बना दो मोरे आज हो, लाज रखलो हमारी॥

एक दन्त गजवन्त विनायक, सूरमुनि पूजित गणपति नायक।
आके सभा में गणराज, हो लाज रखलो हमारी॥

जगत में स्वारथ का व्यवहार

जगत में स्वारथ का व्यवहार, बिना स्वार्थ कोई बात न पूछे।
देखा खुब विचार, जगत में स्वारथ का व्यवहार॥

पूत कमाकर धन को लावे, माता करे पियार।
पिता कहे ये पूत सपूता, अकल मंद हुशियार॥

पुत्र भये नारिन के वश में, नित्य करे तकरार।
आपो अपना भाग बटाकर, होवे न्यारो-न्यार।।

नारी सुन्दर वस्त्र अभूषण, माँगत बारम्बार।
जो लाकर घर में नहीं देवे, मुखड़ा लेत बिगाड़॥

जिनको जानत मीत पियारे, सब मतलब के यार।
ब्रह्मानंद छोड़ ममता, सुमरो सर्जन हार॥

शंकर तेरी जटा में

शंकर तेरी जटा में, भाती है गंग धारा।
काली घटा के अन्दर, जिम दामिनी उजारा॥

गल मुण्ड माल राजे, शशि भाल में विराजे।
डमरू नी नाँद बाजे, कर में त्रिशुल भाला॥

दृग तीन तेज राशि, कटीबन्ध नाग फाँसी।
गिरिजा है संग दासी, सब विश्व के अधारा॥

मृग चर्म वषन धारी, वृषराज पे सवारी।
निज भक्त दुःखहारी, कैलाश में बिहारा॥

शिव नाम जो उच्चारे, सब पाप दोष टारे।
ब्रह्मानन्द ना बिसारे, भव सिन्धु पार तारा॥

भोलेनाथ से निराला

भोलेनाथ से निराला, कोई और नहीं।
शिवशंकर से निराला, कोई और नहीं॥

जिनका डमरू डम डम बोले,
अगम निगम के भेदन खोले।
ऐसा बिगड़ी बनाने वाला, कोई और नहीं॥

जटा जूट सिर गंग विराजे,
कर दर्शन सब पाप हैं भागे।
सारी सृष्टि का रखवाला, कोई और नहीं॥

आया शरण कैलाश निवासी,
दर्शन का हूँ मैं अभिलाषी।
भक्तों की जाल बचाने वाला, कोई और नहीं॥

साईं तेरी याद महा

साईं (गुरु)तेरी याद महा सुखदाई॥

झूठा जग का झूठा नाता, तेरा गुरु एक, सच्चा नाता।
तूने कृपा बरसाई, गुरु तेरी याद महा सुखदाई॥

हृदय है गुरु, तेरा द्वारा, बैठे यही से तुझको पुकारा।
हूँ चरणन शरणाई, गुरु तेरी याद महा सुखदाई॥

जिसने तेरा नाम लिया गुरु, सारे जग से तार दिया गुरु।
तेरा नाम एक आधार गुरु, तेरा ही नाम आधार गुरु॥

मुझे मेरी मस्ती कहाँ

मुझे मेरी मस्ती कहाँ लेके आई।
जहाँ मेरे अपने सिवा कुछ नाहीं

पता जब मेरी हस्ती का मुझको।
सिवा मेरे अपना और कुछ नाहीं॥

सभी में सभी में सब ही मैं हूं।
सिवा में अपने कहां कुछ नाहीं॥

ना दुःख है ना सुख है ना शोक कुछ भी।
अजब है मस्ती और कुछ नाहीं॥

अरे मैं हूँ आनन्द आनन्द है मेरा।
मस्ती है मस्ती और कुछ नाहीं॥

भ्रम है द्वेष है जो मुझको हुआ है।
हटाया है जो उसको कहाँ कुछ नाहीं॥

ये परदा दूर का हटाकर जो देखा।
बस एक मैं हूँ जुदा कुछ नाहीं॥

शंकर सुमिरो निशिदिन

शंकर सुमिरो निशिदिन शम्भो, भोले का कर लो ध्यान॥

शीश गंग गले अरु मुण्ड माला, अंग विभूति तन मृग छाला।
सर्पन के गले हार॥

सुन्दर सुन्दर तव पुत्र कहावे, आक धतुर बाबा भोग लगावे।
पार्वती भंग छान-छान॥

भक्तन के प्रभु कारज सारो,देखि वचन प्रभु कबहुं न हारो।
आप रटे नित राम राम॥

मोहित पुकारत देर भई अब शंकर देर कहाँ करते हो।
मुक्ति के मारग आप लिए बाबा मेरा तो कारज साध॥

वृन्दावन की कुञ्ज गलिन

होऽऽ वृन्दावन की कुन्ज गलिन में।
मोहन की छवि लेकर मन में, भटके राधारानी॥
कोई रे दिवानी राधा, कोई रे दिवानी॥

पूछ रहे है सूने पनघट, छोड़ गया क्यों हमको नटखट।
श्याम तुम्हारी याद में रोये, जमुना का गिरधारी॥
कोई रे दिवानी राधा...॥

बाटें निहारें संगी साथी, आके सभी की नीर बहाती।
राते-रोते प्रित दशा में, शिशके भोर सुहानी॥
कोई रे दिवानी राधा...॥

पलभर में भर भण्डार

पलभर में भर भण्डार दिया, शिव शंकर भोले बाबा ने।
सब भक्तों को भव पार किया, शिव शंकर भोले बाबा ने॥
भक्तों को बुद्धि ज्ञान दिया, शिव शंकर भोले बाबा ने॥

हिरणकश्यप तप से अमर हुआ, देवों को भारी खतरा हुआ।
पृथ्वी का राज्य विस्तार दिया, शिव शंकर भोले बाबा ने॥

लंका गढ़ पाया रावण ने, कैलाश उठाया रावण ने।
भुज बल ताकत उन्हें डाल दिया, शिव शंकर भोले बाबा ने॥

बल परशुराम ने पाया था, वीरों का मान घटाया था।
शर शक्ति उनको अपार दिया, शिव शंकर भोले बाबा ने॥

अर्जुन को पशुपति बाण दिया, रणअजित उन्हें वरदान दिया।
रण में खल संहार किया, शिव शंकर भोले बाबा ने॥

मानुष अनेक कंगाल हुआ, सेवा से माला माल हुआ।
कहे निगम कष्ट कुल तार दिया, शिव शंकर भोले बाबा ने॥

सबसे प्रथम गान करते हुए परमेश्वर के मुख से जो गीत निकला वही 'गायत्री' है। –वाङमय१९ पृ.३.२५

शिव शंकर भोले-भाले

शिव शंकर भोले भाले, तुमको लाखों प्रणाम।
कैलाश बसाने वाले, तुमको लाखों प्रणाम॥

जटा जूट शिर ऊपर साजे, डमरू डम डम डमरू बाजे।
चन्द्रकला मस्तक पर राजे, बाम विभागे शिवा बिराजे॥
गल भुजंग हैं काले, तुमको लाखों प्रणाम॥

शीश पै सोहे गंग की धारा, महिमा तुम्हारी अगम अपारा।
जय महेश जय भव भयहारा, जय करुणा सागर करतारा॥
भस्म रमाने वाले, तुमको लाखों प्रणाम॥

रूद्र माल गले भुजंग माला, कर त्रिशूल सोहे करताला।
जय देव देव जयति कृपाला, नीलकण्ठे कटि के मृग छाला॥
कानन कुण्डल वाले, तुमको लाखों प्रणाम॥

वृषभ बाहन अंग विभूता, देवन के देव निर्गुण रूपा।
निगम अगम शांतिमय स्वरूपा, त्रय लोचन त्रिपुरारी अनूपा॥
कष्ट मिटाने वाले, तुमको लाखों प्रणाम॥

शिवनाथ जय जय शिवशंकर, केदार नाथ करुणा के सागर।
बम बम भोले जय हर हर, निराकार करुणा के सागर॥
भक्तों को अपनाने वाले, तुमको लाखों प्रणाम॥

संगीत के पीछे–पीछे खुदा चलता है। –शेखसादी
संगीत टूटे हुए हृदय की औषधि है। –ए. हन्ट

जय शंकर सुखराशी

जय शंकर सुखराशी, शम्भु हे अविनाशी।

तुमने वेष विचित्र बनाया, जन शिक्षण का साज सजाया।
शिव चिन्तन शिव कर्म सिखा दो, हे घट घट के वासी॥

ज्ञानाधार मस्तक के झरती, पाप ताप जन–जन के हरती।
चन्दा सी मुस्कान हमें दो, कर दो दूर उदासी॥

हे प्रभु त्रिपुर जलाने वाले, हे कामारि कहाने वाले।
हमें अशिव से मुक्ति दिला दो, हम भी हैं अभिलाषी॥

त्यागमूर्ति तुम भस्म रमाते, लक्ष्य बोध सबको करवाते।
निस्प्रह जीवन नीति सिखा दो, हे गृहस्थ सन्यासी॥

देव, दनुज, नर भक्त तुम्हारे, महादेव तुम सबके प्यारे।
समता भाव जगा दो हममें, हे कैलाश निवासी॥

जय-जय शंकर कृपालु

जय जय शंकर कृपालु, भक्तन भयहारी।
शोभित कर में त्रिशूल, नाशक मदमोह मूल॥
जागे जग रहा भूल, आपको बिसारी॥

उर मुण्डमाल, सुन्दर लोचन विशाल।
दीन्हें त्रिपुण्ड, भाल बाल चन्द्रधारी॥ जय जय.. ॥

जटा मध्य छटा रंग, पार्वती बाम अंग।
भूपति भूषण भुजंग, वृषभ की सवारी॥ जय जय.. ॥

डिम डिम डिम डमरू बाजे, नृतन भूतगण समाज।
नारायण रही भ्राज, शोभा अति न्यारो॥ जय जय.. ॥

जय-जय हे भगवती

जय जय हे भगवती सुर भारति–तव चरणों प्रणमामः।
नाद ब्रह्ममयि जय बागेश्वरि, शरणं ते गच्छामः॥

त्वमसि शरण्या त्रिभुवन धन्या, सुर मुनि वंदिता चरणा।
नव रस मधुरा कविता मुखता, स्मित रुचि रुचिरा भरणा॥

आसिन भाव मानस हंसे, कुंद तुहिन शशि धवले।
हर जड़ता कुरू बोधि विकासं, सितं पंकज, तनु विमले॥

ललित कलामयि ज्ञान विभामसि, वीणा पुस्तक धारिणी।
मदिरास्तम् नो तव पद कमले, अयि कुण्ठा विष हारिणी॥

गुरु चरण में जब

गुरु चरण में जब मेरा मन होगा।
तब ही सफल मेरा जीवन होगा॥

बचपन बीता खेल में, जवानी में तू फूला रे।
माया का गुलाम बना, राम को तू भूला रे॥
आयेगा बुढ़ापा नहीं, सुमिरन होगा॥

यह तन का नहीं कोई भी ठिकाना रे।
आज नहीं तो कल सबको है जाना रे॥
यह तन चिता का, जलावन होगा॥

प्रेम से पुकार करो हरि को अपना लो रे।
गुरुजी को अपने हृदय में बसालो रे॥
लगन बिना नहीं दर्शन होगा॥

सुमर ले नाम शंकर का

सुमिरले नाम शंकर का, तेरा उद्धार हो जाये।
पुरानी काठ की नैया, भंवर के पार हो जाये॥

ये माया मोह के फन्दो में, क्यों फंसता है वो प्राणी।
कोई न साथ दे तेरा, क्यों करता अपनी मनमानी॥
तू भजले नाम बम भोला, तेरा कल्याण हो जाये॥

महापापी व अधमों को तारा, उसे भोले शंकर ने।
महादीनों व अधीनों को तारा, उस भाले शंकर ने॥
तू भजले नाम कैलाशी, तो बेड़ा पार हो जाये॥

दुनियाँ में आया है, न कुछ साथ ले जायेगा।
मुट्ठी बाँधकर आया है, हाथ पसारे जायेगा॥
भजन कर श्याम का बन्दे, नेकी बदी साथ ले जायेगा॥

हे कन्हैया शरण में

हे कन्हैया शरण में, बिठा लो मुझे,
तुम अपना सुदामा बना लो मुझे॥

नैन दिये अन्धों को तूने, निर्धन को धन का भण्डार।
लगंड़े दौरे चले दरिया में, तेरी महिमा अद्भूत अपार॥
हे गिरधर छबि तुम दिखादो मुझे, तुम अपना.......... ॥

अबला के हित जन–जन कारण, दानव का संहार किया।
तुम सा हितैषी जन में न कोई, तूने सबका उद्धार किया॥
मोह माया से प्रभु जी, मिटा दो मुझे, तुम अपना.......... ॥

मेरा कोई न सहारा

मेरा कोई न सहारा बिन तेरे, गुरुदेव सांवरिया मेरे॥

तेरे बिन मेरा कौन यहाँ।
प्रभु तुम्हें छोड़ मैं जाऊँ कहाँ॥
मैं तो आन पड़ा हूँ दर तेरे, गुरुदेव सांवरिया मेरे॥

मैंने जनम लिया जग में आया।
तेरी कृपा से नर तन पाया॥
तूने किये उपकार घनेरे, गुरुदेव सांवरिया मेरे॥

मेरे नैना कब से तरस रहे।
सावन भादों है बरस रहे॥
अब छाये घोर अंधेरे, गुरुदेव सांवरिया मेरे॥

हरि आ जाओ, हरि आ जाओ।
अब और न मुझको तरसा जाओ॥
सातो जनम मरन के फेरे, गुरुदेव सांवरिया मेरे॥

जिस दिन से दुनियाँ में आया।
मैंने पलभर चैन नहीं पाया॥
सहे कष्ट पे कष्ट घनेरे, गुरुदेव सांवरिया मेरे॥

मेरा सच्चा मारग दूर गया।
मुझे पाँच लुटेरों ने लूट लिया॥
मैंने यतन किये बहुतेरे, गुरुदेव सांवरिया मेरे॥

मेरे सारे सहारे दूर गये, तुम भी हरि मुझसे रूठ गये॥
आओ करने दूर अंधेरे, गुरुदेव सांवरिया मेरे॥

आसमान पर उड़ने वाले

आसमान पर उड़ने वाले, धरती को पहचान।
किसी का रहा नहीं अभिमान, किसी का रहा नहीं अभिमान॥

ये संसार सभी नश्वर है फिर, कैसा अभिमान रे वन्दे।
छोड़ के ये जग वो भी चल दिये, जो थे धीर बलवान॥
किसी का रहा नहीं अभिमान॥

धन-दौलत का मान बुरा है, कहते वेद पुराण रे वन्दे।
अभिमानी रावण को देखो, मिट गया नाम निशान॥
किसी का रहा नहीं अभिमान॥

तीरथ मंदिर मंदिर ढूढ़ा, गया न इतना ध्यान रे वन्दे।
हर दिल में भगवान बसा है, हो सके तो पहचान॥
किसी का रहा नहीं अभिमान॥

सदा यहाँ नहीं रहना तुझको, रहना है दिन चार रे वन्दे।
इन्सां से नफरत क्यों करता, तू भी तो इन्सान रे वन्दे॥
किसी का रहा नहीं अभिमान॥

अब भी समय है शरण में आजा, तज दे सब अभिमान रे वन्दे।
ये संसार छोड़ ही जाना, तेरा हो शमशान॥
किसी का रहा नहीं अभिमान॥

वन्दे चल सोच समझ के

वन्दे चल सोच समझ के, क्यों ये जनम गँवाये।
बारम्बार ये नर तन चोला, तुझे न मिलने पाये॥

बचपन बीता आई जवानी, खूब चैन से सोया।
गुजर गई अनमोल घड़ी तो, देख बुढ़ापा रोया॥
जिस यौवन पे नाज़ तुझे वो, मिट्टी में मिल जाये॥

लूट-कपट से जोड़ा तुमने, अपना माल खजाना।
काम-क्रोध,मद,लोभ,फँसा रहा,भगवन को न पहचाना॥
मुट्ठी बाँध के आया जग में, हाथ पसारे जाये॥

ये दुनियाँ है सराय है मुसाफिर, छोड़ इसे है जाना।
कोई किसी का नहीं जगत में, ये तन है बेगाना॥
उड़ जाये पिजरे का पन्छी, पिंजरा साथ न जाये॥

मुक्तक-
श्वांस श्वांस में राम जप, वृथा श्वांस न खोय।
न जाने इस श्वांस का, आवन होय न होय॥

संसार मुझसे चित्रों में बात करता है-मेरी आत्मा उसका उत्तर संगीत में देती है। -रविन्द्रनाथ टैगोर

सोच जरा ईश्वर के वन्दे

सोच जरा ईश्वर के वन्दे, ये झूठा संसार॥
सच्चा नाम है एक ईश्वर का, सुमर होय उद्धार॥

माया का संसार सभी है, जो इसमें भरमाया।
विषय, वासना में फँस करके, चौरासी में जाता॥
माया पथ का ध्यान धरे से, हो जाता भवपार॥

बड़ा स्वार्थी ये जग देखा, जिसकी शान निराली।
छोटा बड़ा यहाँ पर कोई, न स्वार्थ से खाली॥
कुटुम्ब कबीला और मित्र का,स्वारथ का व्यवहार॥

इस श्वांस का नहीं भरोसा, आये या न आये।
जीवन अवसर अमोल ये, विरथा न बिता जाये॥
जो इसको बेकार खो रहा, राम नाम चित्तधार॥

कब का नाम पतित पावन, वेद पुराण बताते।
हुआ अपावन पावन मुख से, एक बार जो गाते॥
नाम विचित्र हरि का, हुए बहुत भवपार॥

मुक्तक–

जो कोई आया इस दुनियाँ में, एक दिन वो गया।
कोई कर गया काम बुरा तो, कोई अच्छा कर गया॥

बैठ अकेला दो घड़ी

बैठ अकेला दो घड़ी तो, कभी तो ईश्वर ध्याया कर।
कभी तो ईश्वर ध्याया कर-२
इस मन के मन्दिर में प्यारे, झाड़ू रोज लगाया कर॥

बचपन बिता आई जवानी, तूझे सदा अभिमान रहा।
सोने में तो रैन गँवाई, दिन भर करता काम रहा॥
बिस्तर से उठकर प्राणी, सत्संग में जाया कर॥

बारम्बार जनम का पाना, बच्चों वाला खेल नहीं।
पूर्व जन्म के सत्कर्मों का, होता जब तक मेल नहीं॥
मुक्ति पद पाने के लिए तू, उत्तम कार्य कमाया कर॥

पास तेरे हो दुनियाँ कोई, तूने उड़ाई मौज क्या।
भूखा प्यासा पड़ा पड़ोसी, तूने रोटी खाई क्या॥
पहले सबसे पूछ के प्राणी, पीछे रोटी खायाकर॥

मुक्तक-
सुमिरन करले नाम का, छोड़ जगत व्यवहार।
नेकी पथ अपनाय के, हो जा भव से पार॥

संगीत में क्रूर हृदय को भी कोमल बनाने वाला जादू भरा पड़ा है। **-जेम्स वाटसन**

आराम के साथी क्या

आराम के साथी क्या-क्या थे, जब वक्त पड़ा तब कोई नहीं।
सब दोस्त है अपने मतलब के, दुनियाँ में किसी का कोई नहीं॥

जब पैसा पास हमारे था, तब दोस्त हमारे लाखो थे।
जब वक्त पड़ा था मुश्किल में, तब पूछने वाला कोई नहीं॥

माँ-बाप दिया और पुत्रवधु, सब ही मतलब के नाते थे।
जब चाहने वाले लाखों थे, अब रोने वाला कोई नहीं॥

बल बाग जो था फूलों से भरा, इतलाती हुई चलती थी।
वन्दे ये बेकार है सब, मिट्टी का भरोसा कोई नहीं॥

मुक्तक-चार वेद छः शास्त्र में, बात मिली सब दोय।
सुख दीन्हे सुख होत है, दुःख दीने दुःख होय॥

घट-घट में जो रमा

घट-घट में जो रमा है ईश्वर, बनकर सूरज चन्दा।
नटवर नागर नन्दा, भजो रे मन गोविन्दा॥

जीवन दे या जीवन ले-ले, हम हैं उसके बनाये।
उसके हाथों के हम हैं खिलौने, चाहे जैसे नचाये॥
परब्रह्मा परमेश्वर है वो, अमिट अभेद अखण्डा॥

कण-कण में है उसकी माया, कण-कण में उसका संचार।
दुष्टों का वध कर देता वो, भक्तों को देता है प्यार॥
जीवन दाता पालन कर्त्ता, भक्तों को भगवन्ता॥

आयेगा जब रे बुलावा

आयेगा जब रे बुलावा हरि का–छोड़ के सब कुछ जाना पड़ेगा।
नाम हरि का साथ जायेगा, और न कुछ ले पायेगा॥

राग द्वेष में हरि बिसरायो–भूल के निज को जनम गँवायो।
आयेगा जब रे बुलावा हरि का, छोड़ के सब कुछ जाना पड़ेगा।।

सुमिरन हरि की साँची कमाई, झूठी जग की सब है सगाई।
आयेगा जब रे बुलावा हरि का, छोड़ के सब कुछ जाना पड़ेगा।।

अर्ज़ी कर तू हरि से ऐसी, भक्ति मिले मीरा की जैसी।
आयेगा जब रे बुलावा हरि का, छोड़ के सब कुछ जाना पड़ेगा।।

हाथ तेरे जीवन की बाजी, भक्ति से कर तू हरि को राजी।
आयेगा जब रे बुलावा हरि का, छोड़ के सब कुछ जाना पड़ेगा।।

जायेगा जब जहाँ से

जायेगा जब जहाँ से, कुछ भी न पास होगा।
दो गज क़फ़न का टुकड़ा, तेरा लिवास होगा॥

यह हाट बाट तेरी, यह आन बान तेरी।
रह जायेगी यहाँ पर, यह झूठी शान तेरी॥
जिसको समझता अपना,सब कुछ ही नाश होगा॥

कोई न साथ आये, कोई न साथ जाये।
आया है बन्द मुट्ठी, खाली यहाँ से जाये॥
मरते वक्त पे पगले, कोई न खास होगा॥

ये भाई–बन्धु जो भी, तुझे अपना है बताते।
मरने के बाद ये ही, तुझे अग्नि में जलाते॥
अब भी समझले बन्दे, वरना निराश होगा॥

दाता तेरे कई नाम

दाता तेरे कई नाम हो दाता, दाता तेरे कई नाम।
कोई पुकारे किसी नाम से,२ आये तु सबके काम॥

तू ही है बंशी के स्वरों में, तु ही है अजानों में।
तू ही पुजारी की पूजा में, तू भजनों में तरानों में॥
कई रूप सेऽऽऽ तुझे पुकारे, जग ये सुबह हो शाम॥

आपके हर कण में तू है, तू दिल की हर धड़कन में।
तू ही मन के मधुर मिलन में, तू सांसों के बन्धन में॥
तू सीता काऽऽऽ राम कहीं तू, राधा का घनश्याम॥

दीन धरम का भेद भुलाकर, हम सब एक समान बने।
हम बन्दौ का ज्ञान दो ऐसा, हम सच्चे इन्सान बनें।।
सच्चाई की राह न छोड़ें, कुछ भी हो अन्जाम।।

सैर–रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे तो फिर न जुड़े, जुड़े गाँठ पड़ जाय॥

नित-नित मोरी राह

नित–नित मोरी राह तकत है, नटखट मोसे जब भी मिलता है।
कंकर मारे फोरे गागरिया, ढीठ न माने झगड़ा करत है॥

छोड़ दे बैयाँ कृष्ण कन्हैया, ताना देंगी सारी सखियाँ।
चोरी–चोरी मैं आई हूँ, घर जाने दे वो सांवरिया॥
कहीं देखे न सास ननंदिया मोर,

हे माँ तु मेरी झोली

हे माँ तु मेरी झोली, भर दे तो मैं भी जानूँ।
आया शरण मैं तेरी, विनति सुनों तो जानूँ॥

धन माल की तमन्ना, हमको जरा नहीं है।
सुख शान्तिकारी मैया, वर दे तो मैं भी जानूँ॥

हे मातु ज्ञान की एक, ज्योति सी जलादे।
अज्ञान का अन्धेरा, हर ले तो मैं भी जानूँ॥

पतवार बनके जिसने, लाखों को है उतारा॥
वह हाथ मेरे सिर पे, रख दे तो मैं भी जानूँ॥

मकसद है जिन्दगी का, औरों के काम आना।
हमको माँ ज्ञान ऐसा, वर दे तो मैं भी जानूँ॥

राम नाम रस पीले

राम नाम रस पीले प्यारे, प्यास तेरी मिट जायेगी।
सीयाराम जय-जय राम, सीयाराम जय-जय राम॥

कितना भी गंगा जल पीले, तू प्यासा ही रह जायेगा।
प्यासे मन को कुछ भी दे दे, शान्ति कहाँ से दे पायेगा॥
राम नाम में लग जा प्यारे, शान्ति तुझे मिल जायेगी॥

जीवन आनी-जानी छाया, झुठी माया झुठी काया।
इस जीवन में हमने तुमने, क्या है खोया क्या है पाया॥
अब कुछ भजले प्यारे, मुक्ति तुझे मिल जायेगी॥

ना कुछ मेरा ना कुछ तेरा ये जग जोगी वाला फेरा।
राजा हो या रंग सभी का, मिट जायेगा एक दिन डेरा॥
अब तो कुछ करले प्यारे, भक्ति तुझे मिल जायेगी॥

कण कण में समाये हो

कण कण में समाये हो, तुम्हें हमने पहचाना है।
मिलने को प्रभु तुमसे, हुआ यह मन बेगाना है॥

कर्त्तव्यों के व्यस्त पलों पर, भूले थे हम याद।
आ न सका था मुख पर मन के, भावों का अनुवाद॥
जाना है वहीं जिसकी शरण में ठौर ठिकाना है॥

पूर्ण करेंगे शीघ्र रहे जो, शेष तुम्हारे काम।
हर प्यासे मन को भर देंगे, ममता से अविराम॥
व्याकुल मानवता का हमें, दुःख दर्द बँटाना है॥

करना है साकार तुम्हारा, नवयुग का अनुमान।
अपने कोष से देने हैं, इस जग को अनुदान॥
हर बंजर धरती पर हमने,सज सावन बरसाना है॥

पहले पीछे छुटे हुओं को, करना है आहवान।
हमें अभी संगवाना जो भी, बिखरा है सामान॥
दायित्व निभाना है सफर, पर तब ही जाना है॥

संगीत आत्मा के ताप को शान्त कर सकता है।
–महात्मा गाँधी

ऐसे हैं मेरे राम

ऐसे हैं मेरे राम, ऐसे हैं मेरे राम।
विनय भरा-हृदय करे, सदा इन्हें प्रणाम॥

हृदय-कमल, नयन कमल, सुमुख कमल, चरण कमल।
कमल के पुञ्ज तेज पुञ्ज, छबि ललित ललाम॥

राम सा पुत्र न, राम सा भ्राता।
राम सा पति नहीं, राम सा त्राता॥
राम सा मित्र न, राम सा दाता।
सबसे निभाये सबका नाता॥
स्वभावशील उदार शान्त, सद्‌गुणों के खान॥

सारी जग के त्राण है राम, ऋषि-मुनियों का ध्यान है राम।
गंधर्वों का गान है राम, मर्यादा का भान है राम॥
पतितों का उत्थान है राम, धनभारी धनवान है राम।
निश्चित ही निर्वाण है राम, कर पूरन भगवान है राम॥
जनम मरण से मुक्ति दो, जपो जो राम नाम॥

गहराई में उतरो तुम्हें हर पदार्थ के अन्तरंग में एक दिव्य संगीत उभरता दिखाई देगा। -कार्लाईल

जपिए नित राम नाम

जपिऐ नित राम नाम, राम काज करिए।
जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहिए॥

ध्यान सदा मन से हो, तन से परमार्थ हो।
भय का क्या काम उसे, प्रभु जिसके साथ हो॥
प्रभु के हित शीत ताप, हानि लाभ सहिए॥

कर्म, कामना, विचार, सब प्रभु से जोड़ दें।
दोष वासना विकार, इन सब को छोड़ दें॥
प्रभु के बन प्रभु की ही, बाँह गहे रहिए॥

अपना पुरूषार्थ जगा, प्रभु पर विश्वास कर।
प्रभु के संकेतों पर, चल कर अभ्यास कर॥
जीवन की बागडोर, सौंप उसे रहिए॥

मानव तन पाये तो, मानव की शान सब।
भक्त अगर कहलाया, भक्तों की आन रख॥
जीवन भर प्रभु की ही, राह गहे रहिए॥

तेरी भक्ति के पंखों ने

तेरी भक्ति के पंखो ने, माँ उड़ना सिखाया मुझको।
मैं भटका मुसाफिर था, माँ रस्ता दिखाया मुझको॥

तूने अपने पुजारी को, माँ बिन माँगे मोती है दिये।
तारे जितने गगन में नहीं, माँ उपकार उतने किये॥
मैं जनमों का प्यासा था, माँ जल है पिलाया मुझको॥

तेरी करूणा के पारस ने, लोहे को है सोना कर दिया।
मेरी छोटी सी झोली में, माँ जग का खजाना भर दिया॥
मैं तो रस्ते का कंकड़ था, माँ क्या से क्या बनाया मुझको॥

तेरे ज्योत के उजालों ने, अंधेरा मेरा दूर है किया।
दु:ख सारे ही सुख हो गये, माँ जब तेरा नाम है लिया॥
तेरी ममता के झूलों में, बड़ा ही झूलाया मुझको॥

अब इतनी दया करना, न सकरा मैं कभी न बनूँ।
तेरी निर्दोष करूणा को माँ, आठो प्रहर ध्यान मैं धरूँ॥
मैं तो सोया अज्ञान में था, माँ तूने है जगाया मुझको॥

संगीत मानव की विश्व भाषा है। –लांग फैलो

मुझे ऐसा वर दे दो

मुझे ऐसा वर दे दो, गुणगान करूँ तेरा।
इस बालक के सिर पे, गुरु हाथ रहे तेरा॥

सेवा नित तेरी करूँ, तेरे द्वार पे आऊँ मैं।
चरणों की धूली को, निज शीश लगाऊँ मैं॥
चरणामृत पा करके, नित कर्म करूँ मेरा॥

भक्ति और शक्ति दो, अज्ञान को दूर करो।
हर ताप करूँ गुरुवर, अभिमान को चूर करो॥
नहीं द्वेष रहे मन में, रहे वास गुरु तेरा॥

विश्वास होये मन में, तुम साथ ही हो मेरे।
तेरे ध्यान में सोऊँ मैं, सपनों में रहो मेरे॥
चरणों से लिपट जाऊँ, तुम ख्याल करो मेरा॥

मेरे यश कीर्ति को, गुरु मुझसे दूर रखो।
एक मन मंदिर को तुम, भक्ति भरपूर भरो॥
तेरे ज्योति जगे मन में, नित ध्यान धरूँ तेरा॥

संगीत से आत्मा की मलीनता धुलती है। –आवेर वेच

आके दरश दिखा दो

आके दरश दिखा दो गुरुदेव, तुझे तेरा लाल बुलाते है।
तुझे रो-रो पुकारे मेरे नैन, तुझे तेरा लाल बुलाते है॥

आँखों के आँसू सुख चुके हैं, अब तो दरश दिखा दो।
कब से खड़े हैं दर पर तेरे, मन की तू प्यास बुझा दो॥
तेरी लीला निराली गुरुदेव, तुझे तेरा लाल बुलाते है॥

बीच भँवर में नैया पड़ी है, आकर तू पार लगाले।
तेरे सिवा मेरा कोई नहीं है, आकर गले से लगाले॥
तू टेर लगा दे गुरुदेव, तुझे तेरा लाल बुलाते है॥

डूब रहा है दुःख का ये सूरज, भ्रम की बदरिया है छाई।
उजड़ गई बगियाँ जीवन की, मन की कली मुरझाई॥
करे बिनति ये बालक आज, तुझे तेरा लाल बुलाते है॥

वैसे तो तुम हो मन में हमारे, आँखें नहीं मानती है।
एक पल गुरु से अब बिछुड़ कर, रहना नहीं चाहती है॥
हर यश बरसायेगी, तुझे तेरा लाल बुलाते है॥

मुक्तक-

रहेंगे पास गुरुवर पूज्य, हम न देख पायेंगे।
टटोले जो हृदय अपना, तो उनको दिल में पायेंगे॥

जय माँऽऽऽऽ जैं माँ

(सरस्वती वन्दना)

जय माँऽऽऽऽ जै माँ ऽऽऽऽ जै जै माँऽऽऽऽ जै माँ।
वर दे, वर दे, वर दे, वीणा वादिनी वर दे॥

निर्मल मन कर देऽऽऽऽ प्रेम अतुल कर दे।
सबकी सबल मति होऽऽऽ, ऐसा हमको वर दे॥
वर दे, वर दे, वर दे, वीणा वादिनी वर दे॥

सत्यमयी तू हैऽऽऽ, ज्ञानमयी तू है।
प्रेममयी भी तू हैऽऽऽ, हम बच्चों को वर दे॥
वर दे, वर दे, वर दे, वीणा वादिनी वर दे॥

सरस्वती भी तू हैऽऽऽ, महालक्ष्मी तू है।
महाकाली भी तू हैऽऽऽ, हम भक्तों को वर दे॥
वर दे, वर दे, वर दे, वीणा वादिनी वर दे॥

मुक्तक-
माता अपने ही समझ करके, गलतियों को भूला देना।
भटक जाऊँ अंधेरे में तो, मुझको पथ दिखा देना॥

संगीत के विद्यमान सूक्ष्म ध्वनि तंरगों का मनुष्य की मनोदशा पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

कभी फुर्सत हो तो

कभी फुर्सत हो तो जगदम्बें, निर्धन के घर भी आ जाना।
जो रूखा सूखा दिया हमें, कभी उसका भोग लगा जाना॥

न छतर बना सका सोने का, न चुनरी घर मेरे तारो जड़ी।
न पेड़े बरफी मेवा है, माँ बस, श्रद्धा है नैन बिछाये खड़ी॥
इस श्रद्धा का रख लो लाज हे माँ,इस अर्जी को न ठुकरा जाना॥

जिस घर के दिये में तेल नहीं, वहाँ ज्योत जलाऊँ मैं कैसे।
मेरा सुबह बिछौना धरती पर, तेरी चौकी सजाऊँ मैं कैसे॥
जहाँ मैं बैठा वहाँ बैठ के माँ, बच्चों का दिल बहला जाना॥

तू भाग्य बनाने वाली है माँ, मैं तकदीर का मारा हूँ।
हे दात्री सम्भालो भिखारी को, आखिर तेरी आँख का तारा हूँ॥
मैं दोषी तू निर्दोष हे माँ, मेरे दोषों को तू भूला जाना॥

जय-जय-जय हे वीणा

जय-जय-जय हे वीणा पाणी,
शिव कल्याणी, मातु भवानी॥

सात सुरों के दीप जलादो,
रोम-रोम संगीत जगादो॥

सात सुरों की तू महारानी,
वेदों ने भी महिमा जानी॥

बोलत घुँघुरू बाजे पायलियाँ,
झुम रही है सारी नगरिया॥

मिटा दे अपनी हस्ती

मिटा दे अपनी हस्ती को, तभी मस्ती में आयेगा।
खुदी जब टूट जायेगी, खुदा बस्ती में आयेगा॥

ये तन उसने दिया है तुझको,ये मन उसका खजाना है।
उसी का उसी को ये अर्पण कर,तभी मस्ती में आयेगा॥

यहाँ तू भूल बैठा है, किया था उससे जो वादा।
निभा दे अपने वादे को, तभी मस्ती में आयेगा॥

हरि के रूप में सद्‌गुरु, तुम्हारे पास आये हैं।
गुरु के संग में रंग जा, तभी मस्ती में आयेगा॥

दिलों में पल रहे राग, नफरत को हटा दो तुम।
सभी से प्यार पराये के लिए बर्बाद होना तुम॥

नहीं अपने पराये के लिए, बर्बाद होना तुम।
शरण में तू गुरु के आ, तभी मस्ती में आयेगा॥

हम तो आये हैं माता

हम तो आये हैं माता, चरणों की छाँव में,
चरणों की छाँव में, बिठाये रखना।
मइयाऽऽऽऽऽऽऽऽऽ मइया ऽऽऽऽऽऽऽऽऽ॥

दुष्टों को माता तुमने पल में संहारा,भक्तों को माता तुमने पल में उभारा॥
लीला तेरी है न्यारी न्यारी, न्यारी न्यारी रे मैया तू सबसे न्यारी॥
हमको दुनियाँ में तू बनाये रखना॥

वेदों की दाता माता तू ही कहाए, अपनों के लिए तूने कष्ट उठाये॥
सारे जग की तू माई माई–माई माई तू सारे जग की है माई॥
दया के दीप जलाये रखना॥

अवगुण बहुत किया

अवगुण बहुत किया, दयालु मैने अवगुण बहुत किया।
कबहु न भजन किया, दयालु मैने कबहु न भजन किया॥

ज्ञान दिया तुने दाता बनकर–कभी नहीं अमल किया।
दयालु मैने कबहु न भजन किया॥

नाम दिया तुने दाता बनकर, कबहु न भजन किया।
प्रभु मैने अवगुण बहुत किया॥

शीश दिया तुने दाता बनकर, कबहु न नमन किया।
प्रभु मैने अवगुण बहुत किया॥

नयन दिये तुने दाता बनकर, कबहु न दरश किया।
दयालु मैने कबहु न भजन किया॥

हाथ दिये तुने दाता बनकर, कबहु न धरम किया।
प्रभु मैने अवगुण बहुत किया॥

पांव दिये तुने दाता बनकर, कबहु न तीर्थ किया।
प्रभु मैने अवगुण बहुत किया॥

गुरु मातु-पिता

गुरु मातु–पिता, गुरु बन्धु सखा,
तेरे चरणों में स्वामी मेरे कोटी प्रणाम॥
प्रिय काम तुम्हीं प्राणनाथ नाथ तुम्हीं।
तेरे चरणों में स्वामी मेरे कोटी प्रणाम॥

तुम्हीं भक्ति हो, तुम्हीं शक्ति हो।
तुम्हीं मुक्ति हो, मेरे श्याम शिव॥
गुरु मातु–पिता, गुरु बन्धु सखा॥

तुम्हीं प्रेरणा हो, तुम्ही साधना।
तुम्हीं आराधना, मेरे श्याम शिव॥
गुरु मातु–पिता, गुरु बन्धु सखा॥

तुम्हीं प्रेम हो, तुम्हीं करुणा हो।
तुम्हीं मोक्ष हो, मेरे श्याम शिव॥
गुरु मातु–पिता, गुरु बन्धु सखा॥

संदेशो देवकी सो कहियो

संदेशो देवकी सो कहियो,
हाथो धाये तिहारे सुत की, मय करत ही रहियो॥

जब पितीव तुम जानती उनकी,तब मुही कही आवै।
प्रातः उठ मेरी लाडले, माखन रोटी भावै॥

तेल उबटनो अरू दातों जल, ताही देखो भग जाते।
ज्योई–ज्योई मागत सोई–सोई देती,
क्रम–क्रम करी के रे चाहे, संदेशो... ॥

हमें गुरुदेव तेरा सहारा

हमें गुरुदेव तेरा, सहारा न मिलता।
ये जीवन हमारा, दुबारा न मिलता॥

सांसो की सरगम, मध्यम हुई थी।
जीने की आशा भी, धूमिल हुई थी॥
तेरे नाम का जो, सहारा न मिलता॥

रिश्तों की चौपथ से, ठोकर है खाई।
अपने परायों की, समझ ही न आई॥
सच्चा जो तेरा, रिश्ता न मिलता॥

किस्मत की मौजो ने, शक्ति डुबोई।
जब तक लुटा तो, तेरी याद आई॥
अगर मेरी कश्ति की, सहारा न मिलता॥

मुक्तक-

गुरुमूर्ति गति-चन्द्रमा, सेवक नयन चकोर।
अष्ट प्रहर निरखत रहूँ, गुरुमूर्ति की ओर॥

शारीरिक अवयवों को प्रभावित करने वाली संगीत से बढ़कर कोई दूसरा वस्तु नहीं है। - डॉ. लीक

बिन भजन के जगत में

बिन भजन के जगत में तु प्राणी, मोक्ष पाने के काबिल नहीं है।
क्या यही मुख, तु लेकर जाये, मुख दिखाने के काबिल नहीं है॥

जो-जो वादा प्रभु से किया था, भूलकर भी न नाम लिया था।
भूल बैठा है माया में प्रभु को, जो भुलाने के काबिल नहीं है॥

तूने की नहीं नेक कमाई, तेरी होगी न जग में भलाई।
फँस गई है भँवर बीच नैया, पार लगाने के काबिल नहीं है॥

दिन क्यों तू वृथा गँवाये, अंत में कोई काम न आये।
कैसा सुन्दर ये नरतन मिला है, ये गँवाने के काबिल नहीं है॥

तेरी साँसों की अनमोल मोती, बिखर जाय न यूँ ही जमीं पर।
बिन गुरु निगुरा बनके डोले, पास बिठाने के काबिल नहीं है॥

इस हिन्द के है वीर

इस हिन्द के है वीर जवां, वीर जवां हम वीर जवां।
भारत की है तकदीर जवां, तकदीर जवां तकदीर जवां॥

मुश्किल से न घबरायेंगे, आगे ही बढ़ते जायेंगे।
मेहनत ही किये जायेंगे, इस हिन्द के है हम जवां॥

जिस सिन्ध से निकलकर जायेंगे, तूफानों से टकरायेंगे।
झण्डें अपने लहरायेंगे, इस हिन्द के है हम जवां॥

हम क्या है ये बतलायेंगे, आंधी बनकर छा जायेंगे।
कुछ करके अब दिखलायेंगे, इस हिन्द के है हम जवां॥

थोड़ा ध्यान लगा गुरुवर

थोड़ा ध्यान लगा गुरुवर, दौड़े-दौड़े आयेंगे।
अखियाँ मन की खोल, तुझको दर्शन वो करायेंगे॥
-तूझे गले से लगायेंगे।।

है राम रमैया वो, है कृष्ण कन्हैया वो, वही मेरा ईश है।
सत्कर्म राहों पर, चलना सिखा दे जो, वही जगदीश है॥
प्रेम से पुकार-प्रेम से पुकार, तेरे पाप वो जलायेंगे॥
-तुझे हृदय से लगायेंगे

कृपा की छाया में बैठायेंगे तुझको, कहाँ तुम जाओगे।
उनकी दया दृष्टि जब-जब पड़ेगी तो, ये भवतर जाओगे॥
ऐसा है विश्वास-२ मन में, ज्योत वो जलायेंगे॥

मुनियों ने ऋषियों ने गुरु शिष्य महिमा का,किया गुणगान है।
गुरुवर के चरणों में झुकती, सकल सृष्टि तूही भगवान है॥
महिमा है अपार-२ सत की राह वो दिखायेंगे॥

हे रोम-रोम में बसने वाले

हे रोम-रोम में बसने वाले रामऽऽऽऽऽ।
जगत के स्वामी हे अन्तर्यामी, मैं तुझसे क्या माँगूँ।।

आश का बन्धन तोड़ चुकी हूँ, तुझ पर सब कुछ छोड़ चुकी हूँ।
नाथ मेरे मैं क्यों कुछ सोचूँऽऽ, तू जाने तेरा काम॥ जगत..

तेरे चरण की धुल जो पाये, वो कंकड़ हीरा बन जाये।
भाग मेरे जो मैने पायाऽऽ, इन चरणों में धाम॥ जगत..

भेद तेरा कोई क्या पहचाने, जो तुझसा हो वो तुझे जाने।
तेरे किये को हम क्या देवें, भले-बुरे का नाम॥ जगत..

तारों में चन्द्र समान हो

तारों में चन्द्र समान हो आप, गुरुदेव आपकी जय होवे।
इस नैया के पतवार हो आप, गुरुदेव आपकी जय होवे॥

मुदत्त से थी तलाश मुझे, गुरु आप से आप मुझे मिल गये।
करि कृपा मुझे तुम बुलालो पास, गुरुदेव आपकी जय होवे॥

एक आप ही का तो सहारा है, तन मन धन आप पे वारा है।
बिन आपके कोई न हमारा है, गुरुदेव आपकी जय होवे॥

एक अर्ज मेरी मंजूर करो, कुछ तो प्रभु अरज हुजूर करो।
मेरा मन का अंधेरा दूर करो, गुरुदेव आपकी जय होवे॥

मुक्तक-कोटि-कोटि के प्राण तुम, गुरु पितु मातु समान।
कोटि-कोटि सत नमन प्रभु, युगऋषि संत महान॥

ऐ मेरी लाडली (विदाई गीत)

ऐ मेरी लाडली एक कली की तरह, इस जहाँ में सदा मुस्काती रहो।
दूर तुमसे सदा ग़म के छाये रहे, नाम रोशन पिता की कराती रहो॥

सामने चाहे कठिनाइयाँ आ पड़े, हर कदम पर तुम्हें रौंदती ही रहे।
मुस्काती हुई तुम तरक्की करो, राह में फूल यश की बिछाती रहो॥

है दुआ हम सभी की तुम्हारे लिए, फूल की सी सदा तू महकती रहो।
हर तरक्की तुम्हारी कदम चूम ले, खाक़ भी कंचन बनाती रहो॥

गुरुदेव मेरे तुमको

गुरुदेव मेरे तुमको, भक्तों ने पुकारा है।
आ जाओ मेरे गुरुवर, एक तेरा सहारा है॥

है चारों तरफ छाया, मेरे घोर अंधेरा है।
अब जायें कहाँ बोलो, तूफानों ने घेरा है॥
हे नाथ! अनाथों को, तेरा ही सहारा है॥

मझधार पड़ी नैय्या, डगमग वो नाथ आये।
मिल जाओ हमें आकर, हम भव से तर जाये॥
बिन तेरे नहीं जग में, इक पल भी गुजारा है॥

तेरे इन चरणों की धुल ही जो मिल जाये।
भटके हुए राही को नित मंजिल मिल जाये॥
किस्मत जो चमक जाये, जो चमके सितारा है॥

मुक्तक-
मिला नहीं गुरु ज्ञान तभी तक, देखी रातें काली।
ज्योत से ज्योत जगा सद्गुरु ने, कर दी सदा दीवाली॥
विश्व भारत के भाल पर, फिर विजय तिलक लगायेगा।
दूर नहीं वह दिन जब भारत, पुनः जगद्गुरु कहलायेगा॥

यही विनति है पल-पल

यही विनति है पल–पल मेरी, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।
मिलता है सच्चा सुख केवल, भगवान तुम्हारे चरणों में॥

चाहे संकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारो ओर अंधेरा हो।
पर मन नहीं डगमग मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥

चाहे बैरी सब संसार बने, चाहे जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥

चाहे आग ये तुम्हारे जलना हो, चाहे कांटो पर भी चलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥

जीह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरी याद सुबह और शाम रहे।।
काम यह आठोयाम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥

तेरी मर्जी का मैं

तेरी मर्जी का मैं हूँ गुलाम, मेरे अलबेले राम।
मेरे अलबेले राम, मेरे अलबेले राम॥

थक भी गया हूँ, इस लम्बें सफर में।
मेरा जीवन हुआ है हराम, मेरे अलबेले राम॥

तेरी रजा में अब कटनी हैं राहें।
दे दो सजा या इनाम, मेरे अलबेले राम॥

फूल सी मुस्कराती जियें

फूल सी मुस्कराती जियें,
ऐसा मधुमास जीवन में भर दीजिए।
ज्ञान की ज्योति जगमग जलाते चलें,
करुणा ममतामयी ज्ञान वर दीजिए॥

जब तलक स्वर्ग सी न धरा बन सकें।
तब तलक चैन की नींद सोयें नहीं॥
समता-ममता भरी जिंदगी हम जियें।
लोभ में मोह में जीवन खोये नहीं॥
लोकहित के लिए श्रम नियोजित करें।
तीव्र उल्लास का ज्वार भर दीजिए॥

देख पीड़ा-पतन आँख मूँदें नहीं।
हम सृजन के लिए जिन्दगी दें लगा॥
आत्मा में भरें प्रज्ञा की ज्योति को।
आत्म-शोधन से हम गन्दगी दें भगा॥
उर मचलने लगे भरने देवत्व को।
श्रद्धा विश्वास का भाव भर दीजिए॥

संगठन, साधना में कमी न रहे।
इतना मजबूत कर दें समयदान से॥
साधनों की जरूरत पड़े तो उसे।
पूरा करते रहें हम सब अनुदान से॥
पर अहं की कहीं गंध आए नहीं।
माता इतनी कृपा आप कर दीजिए॥

सारा जीवन व्यर्थ बिताया

सारा जीवन व्यर्थ बिताया, तुमको ना पहचान सका।
प्यारे सद्गुरु देव तुम्हारी, लीला को ना जान सका॥

गीता जी का वादा गुरुवर, तुमने बहुत निभाया है।
जब-जब हुई धर्म की हानि, अवतारी बन आया है॥
नरतन धरकर आप जो आये! ये जग ना पहचान सका॥

गुरु शिष्य का नाता रचकर, तुमने जग को ज्ञान दिया।
अजब तुम्हारी महिमा गुरुजी, भव से बेड़ापार किया॥
दीन दयालु बड़े कृपालु, ये जग न पहचान सका॥

क्रोध न छोड़ा, मोह न छोड़ा, तेरा दामन छुट गया।
माया की नगरी में फँसकर, तुमसे रिश्ता छुट गया॥
अलख निरंजन भव दु:ख भंजन, तेरे चरणों में शिशु झुका॥

मुक्तक-

कभी दुनियाँ की हलचल में, मुझे अभिमान हो जाये।
तुम्हारे स्नेह वचनों का, कभी अपमान हो जाये॥

संगीत तीन भागों में विभक्त हैं-गायन, वादन और नृत्य। ये तीनों ही शरीर, मन और आत्मा को प्रभावित करते हैं।

तू अपने आप को

तू अपने आप को, इन्सान समझता क्या है ?
वक्त सबसे बड़ा, बलवान समझता क्या है ?

कंस रावण और सिकन्दर से, कलंदर न रहे।
इन्हें भी खा गया, अभिमान समझता क्या है ?

जिन्हें तू लखते जिगर, कहके प्यार करता है।
यही ले जायेंगे शमशान समझता क्या है ?

दीन–दुखियों की भलाई, से दुआयें ले लो।
कर्ज इन्सान का, एहसान समझता क्या है ?

कोई शक़्स उसकी नजरों, से बच सकता नहीं।
देखने वाला है, भगवान समझता क्या है ?

विनित होके तू, मालिक की बंदगी करले।
दीन इमान को, नादान समझता क्या है ?

मुक्तक–

भलाई नेक नामी से जहान में नाम होता है।
बुराई का आखिर बुरा अंजाम होता है॥

ये वक्त न ठहरा है

ये वक्त न ठहरा है, ये वक्त न ठहरेगा।
यूँ ही गुजर जायेगा घबराना कैसा॥
हिम्मत से काम लेंगे, घबराना कैसा॥

सुख–दुःख तो जीवन में, आते और जाते है।
दुःख पहले आ जाये तो, घबराना कैसा॥

जो आया दुनियाँ में, उसको जाना ही है।
अपने भी चले जायें तो, घबराना कैसा॥

जब कदम बढ़ाया है, मंजिल मिल जायेगी।
है कदम बढ़ाया मुश्किल तो, घबराना कैसा॥

हम युग सैनानी हैं, हिम्मत से काम लेंगे।
मंजिल पर नज़र होगी, गुरुवर का नाम लेंगे॥
विपरीत दिशाओं से फिर, घबराना कैसा॥

उमर का पंछी उड़ता

उमर का पंछी उड़ता जाता।
क्यों प्राणी प्रभु नाम न गाता रे॥

किसे पता है कल क्या होगा, पता नहीं किस पल होगा।
कालचक्र चलता मदमाता, क्यो प्राणी------ गाता रे॥

कच्ची साँसों की क्या आशा, कर जाए कब बन्द तमाशा।
तु मूरख मन क्यों भरमाता, क्यो प्राणी------ गाता रे॥

गुरुदेव अपने दास

गुरुदेव अपने दास पर, इतनी कृपा करो।
अपनी दया का हाथ, मेरे शीश पर धरो॥

जैसा भी हूँ बुरा भला, हूँ दास आपका।
रहता है मुझको सदा, विश्वास आपका॥
करूँ जब भी याद आपको, सम्मुख रहा करो॥

कल्याणकारी है सदा, गुरु नाम आपका।
सत् राह पर चलाना, गुरु काम आपका॥
जपता रहूँ मैं नाम को, ऐसी कृपा करो॥

जो कुछ भी मेरे पास है, है प्रसाद आपका।
मिलता रहे सदा हमें, आशीर्वाद आपका॥
करके दया ही भक्ति, या मुक्ति दिया करो॥

मुक्तक– निशदिन मैं याद करता हूँ, धर ध्यान आपका।
भुलूँ न एक पल करूँ, गुरु गान आपका॥

कोई कहिरी हरि

कोई कहिरी हरी आवन, मन भावन की॥

आप न आये विष लिख नहीं भेजे, बान परी ललचावन की॥

ये दो नैन कहा नहीं माने, नदियाँ जैसे बहे सावन की।

मीरा कहे प्रभु कब मिलोगे, छेड़ी मरे तोरे दावन की॥

ऐसा वरदान दे दो

ऐसा वरदान दे दो हमें माँ,
सुख में उछले न हम दुःख में डोलें।
अपने अन्दर ही खुद झाँककर हम,
गलतियाँ अपनी खुद ही टटोलें॥

हो सके तो करें हम भलाई,
हर बुराई से बच के रहें हम।
नेक राहों में आये जो मुसीबत,
हँसते-हँसते ही उसको सहे हम॥
हर बेगाने को करले जो अपना,
मधुर वाणी हमेशा ही बोलें॥

तेरी दृष्टि बिना कुछ न होता,
तेरे हाथों में सृष्टि की डोरी।
तुझसे क्या मैया रखें छुपाकर,
तुझसे किस बात की फिर है चोरी॥
किस पिटारी में क्या है तू जाने,
उसको खोले माया हम न खोलें॥

हमको कुन्दन बना दो भवानी,
लाख क्यों न पड़े चाहे तपना।
कुछ अगला निखर जाये अपना,
कुछ पिछला सँवर जाये अपना॥
तेरी करुणा की गंगा में मैया,
काले कर्मों की मैल हम धोलें॥

सागर से भी गहरा वन्दे

सागर से भी गहरा वन्दे, गुरुदेव का प्यार है।
देख लगाकर गोता इसमें, तेरा बेड़ा पार है॥

भवसागर में एक दिन तेरी, जीवन नैया डूबेगी।
खेते-खेते इक दिन तो, पतवार भी तेरी छूटेगी॥
जायेगा उस पार तू कैसे, चारो ओर अंधकार है॥

सौंप दो नैया गुरुदेव को, सबको पार लगा देंगे।
पैर पकड़ ले जाकर के तू, सोया भाग्य जगा देंगे॥
पापी से भी पापी जन को, करते न इन्कार है॥

संत समागम हरि कथा भी, गुरु कृपा से पाओगे।
खुद आयेंगे गोविन्द गिरधर, गुरु का आशीष पाओगे॥
वन्दे बिन गुरु कृपा से तेरी, जिन्दगी बेकार है॥

मुक्तक- जो नित नर सुमिरन करे, सुख अपार वह पाय।
लगन लगे गुरु नाम की, भवसागर तर जाय॥

मनवा रे हरि के भजन

(छत्तीसगढ़ी गीत)

मनवा रे हरि के भजन करले, भजन करले गा, भजन करले।

जैसे पेड़ ले उफान टूट जाही, तैसे तन ले प्राण छूट जाही।
कच्चलुहिया काया के जतन करले, मनवा रे--------॥

चलती गाड़ी कस चलत हे श्वांसा, तैहा झन करबे भैया रे आशा।
दुनियाँ दारी ला छोड़ तै प्रण करले, मनवा रे---------॥

सब मिल कलश उठायेंगे

सब मिल कलश उठायेंगे, हम बदलेंगे जमाना।
गाँवों की शोभा बढ़ायेंगे॥

आओ सीता सावित्री आओ, अपनी-अपनी तान सुनाओ।
सब मिल प्रभु को मनायेंगे॥

देखे युग अब बदल रहा है, प्रज्ञा का अवतरण हो रहा है।
स्वागत थाल सजायेंगे॥

आओ सरस्वती लक्ष्मी आओ, दुर्गा अपनी शौर्य दिखाओ।
दुष्टों को मार भगायेंगे॥

देखो बच्चा भटक रहा है, बिन संस्कार के अटक रहा है।
भरत जैसे प्राण जगायेंगे॥

आओ शकुन्तला मदालसा आओ, बच्चों में संस्कार जगाओ।
अपने बच्चों को लव-कुश बनायेंगे॥

मोह माया को त्याग

मोह माया को त्याग रे प्राणी,
जीवन है बस बहता पानी॥

जपले काहे चित्र बनाये अऽऽऽ।
ये छाया तो है आनी जानी॥ मोह...

रूप धुप तो ढल जायगी।
मोह ये सारी पिघल जायगी॥
सुख-दुःख है सब ये प्राणी॥

जगमग-जगमग हो राहें

(HAPPY BIARTH DAY TO YOU)

जगमग–जगमग हो राहें, हर वर्ष के दीप जलायें।
जीवो हजारो साल–साल हम, सबकी यही दुआयें॥
HAPPY BIARTH DAY TO YOU.

सागर से ओ मोती क्या, आसमान के तारे।
हर ऊँचाई कदम चूमेगी, प्रगति पंथ तुम्हारे॥
कभी नहीं आये पथ पर, कोई भी बाधायें॥
जीवो हजारो साल–साल हम, सबकी यही दुआयें॥
HAPPY BIARTH DAY TO YOU.

जीवन हो आदर्शों भरा और आदर्शों से जोड़ो।
करलो एक ग्रहण अच्छाई और बुराई छोड़ो॥
जो भी देखे पन्थ तुम्हारे, नई प्रेरणा पाये॥
जीवो हजारो साल–साल हम, सबकी यही दुआयें॥
HAPPY BIARTH DAY TO YOU.

गुरुवर का आशीष माता जी का आशीर्वाद।
युग शक्ति माँ गायत्री की, ले कृपा सदा बरसात॥
मन में भर उल्लास सभी हम, गीत खुशी के गायें॥
जीवो हजारो साल–साल हम, सबकी यही दुआयें॥
HAPPY BIARTH DAY TO YOU.

संगीत से कठोर मन भी द्रवित हो जाता है। –वाङ्मय–१९

वेद है कहते ज्ञान को

वेद है कहते ज्ञान को, वेद-वेद के चार हैं।
ऋग, यजु साम और अथर्व, इनके चार प्रकार है॥
हरि ओम हरि ओम, ॐ भूर्भुवः स्वः... ॥

ऋग में आती धरम भावना, जप-तप प्रेम दया उपकार।
इसमें सेवा समाविष्ट है, कर्त्तव्य पालन और विचार॥
दया भाव और दानशीलता, फिर इक कायादार है॥

पराक्रम है यजु में आता है, पुरूषार्थ भी सिखलाता।
नेतृत्व साहस और आक्रमण, विजय प्रतिष्ठा का है दाता॥
रक्षा करना ही सिखलाता, वीरता का संचार है॥

वेद तीसरा साऽऽऽम है, गीत संगीत है वरदान।
मनोविनोद, क्रीड़ा, मनोरंजन, साहित्य की है ये पहचान॥
रूचि तृप्त और गतिशीलता का करता प्रचार है॥

सम्मिलित जिसमें धन वैभव, है शास्त्र औषधि अन्नघाटू।
संगम है संग रस और ग्रय का, जिसमें वाहिणी और वस्तु॥
और सब वेद तो समपूरण और धरम का सार है॥

नाद के बिना ज्ञान नहीं होता। वादन के बिना शिव नहीं होता। परम ज्योति नादरूप ही है। स्वयं विष्णु नादरूप हैं।
वाड्मय-१९ पृ.६.८

क्षमा करो तुम मेरे प्रभु

क्षमा करो तुम मेरे प्रभु जी, अब तक के सारे अपराध।
धो डालो तन की चादर को, लगे है उसमें जो भी दाग॥

तुम तो प्रभु जी मान सरोवर, अमृत जल से भरे हो।
पारस तुम हो एक लोहा मैं कंचन होवे जो भी दाग।
तज के जग की सारी माया, तुमसे करलूँ मैं अनुराग॥

काम क्रोध में फँसा रहा मन, सच्ची डगर नहीं जानी।
लोभ मोह मद में रहकर प्रभु, कर डाली मन मानी।
मन–मानी में दिशा गलत ले, पहुँचा वहाँ जहाँ है आग।।

इस सुन्दर तन की रचना कर, तुमने जो उपकार किया।
हमने उस सुन्दर तन पर प्रभु, अपराधों का भार लिया॥
नारायण अब शरण तुम्हारे, तुमसे प्रीत होय निज राग॥

जीवन की शाम आई

जीवन की शाम आई, पर श्याम नहीं आये।
बैठा हूँ उनकी राहों में, मैं पलके बिछाये॥

तेरे बिन गयी बीत में सदियाँ, आज प्राण पियारे।
तड़पत ही दिन रैन गुजारे, नैनन बहे पनारे॥
कटे नहीं दिन रैन तेरे बिन, सारी रात जगाये॥

श्याम सलोनी साँवरी सूरत, ने जादू किया।
तुमसे मिलने को मन मोहन, तड़प के जिया॥
एक झलक दिखला जा अब तो, दिल मेरा घबराये॥

कबहुं कीन्हो न भजनवा

कबहुँ कीन्हो न भजनवा कैसे बीतेगी।
जाइयो यम के जब भवनवा कैसे बीतेगी॥

सह न सके जब कष्ट गर्भ में, किया ना माँ इकरार।
प्रभु तुम्हारा भजन करूँगा, करो नरक से पार॥
वादा भूला रे बेईमनवा, कैसे बीतेगी॥

बालपन हँस खेल गँवायो, आई मात जवानी।
मात-पिता ने करी सगाई, दुल्हा बने गुमानी॥
बंध गये हाथ में कगनवाँ, कैसे बीतेगी॥

धूम-धाम से व्याह हो गया, पहन केसरी जामा।
सोलह बरस की दुल्हन लाये, खत्म हुआ सब ड्रामा॥
बन गये सजनी के सजनवाँ, कैसे बीतेगी॥

विषयों का रस पी-पीकर के, दिन-दिन हुए सयाने।
बालपन से बाप कहाये, फिर दादा लगे कहाने॥
नियरों आये-चौथा पनवां, कैसे बीतेगी॥

कमर कमान दांत सब गिर गये, नजर गये नजराने।
द्वार डाल खाट जब पड़ गये, पहुँचे गोरे ताने॥
कबहुँ मेरे पे बुढ़नवां, कैसे बीतेगी॥

संगीत मनुष्यों की तरह पेड़-पौधों को भी पसन्द है।
वाङमय-१९ पृ. ६.१७

जय सरस्वती वर दे

जय सरस्वती वर देऽऽऽ महारानी-२
हम दीन हैं माँ तूऽऽऽ दयादानी-२

सारेसा, मरेसा-ऩिसारे, ऩिसारे-
निपम, पमरे-पमरे, मरेरेसा।

म्यूज़िक-

प्यार भी तू ही दीन दुःखों की, दुःख संकट भय निर्भयकरहि।
तब चरणों में हम कर जोड़े, करत प्रार्थना भवभय हरनी॥
विद्यादान हे माँ! ज्ञान दायिनी, जय सरस्वती वर दे....॥

शान की सुखमय वातावरण कर,भगवती विद्या ज्योति जगादे।
वीणा वादिनी स्वर बरसादे, ज्ञान सरिता जग में बहा दे॥
विनती करत है हम अज्ञानी, जय सरस्वती वर दे....॥

'सा' हि से संगीत कला की, हे माँ देवी तू ही विभूति।
भक्त तिहारे विघ्न विनाशनि, माँगे ज्ञान प्रकाश की ज्योति॥
दया करो हे जग के कल्याणी, जय सरस्वती वर दे....॥

कान्हा बंशी बजाये

कान्हा बंशी बजाये वृन्दावन में।
मीरा नाचे मगन होऽऽ आंगन में॥

नाचे राधा नाचे रे सखियां, झूमे गाये गोप गोपियाँ।
पनघट में पनहारी नाचे, नाऽऽ मयूर होऽऽ आंगन में॥
कान्हा बंशी बजाये, वृन्दावन में॥

संसारिका के जल में

संसारिका के जल में, मुस्काता शत दल है।
गृहस्थी एक तप-स्थल है॥

घर में ही तप किया भरत ने, मातृप्रेम व्रत आराधा।
और तपी थी मीराबाई, भक्तियोग उसने साधा॥
देता पावनता शीतलता, वह गंगा जल है॥

तप की ज्योति शारदामणि, और परमहंस ने चमकाई।
काबा और बापू ने इस जीवन को, जयमाला पहनाई॥
स्वाँति शीप में गिरती है, यह एक ऐसा फल है॥

घर में ही तप और साधना, की है अपने गुरुवर ने।
कब स्वर्ग आ रहा नयायुग, मानव की पीड़ा हरने॥
विश्वामित्र वशिष्ठ सरीखा, प्रबल आत्मबल है॥

हमको भी ऐसे ऊँचे दृढ़, आदर्शों को अपनाना।
औरों के सुख हेतु त्याग की, शीतल बून्दे बरसाना॥
आत्म नियंत्रण ही प्रत्येक, समस्या का हल है॥

दुनियाँ को मरने से बचाने के लिए संगीत ही सबसे बड़ा संरक्षण हो सकता है। मार्टिंगलूथर का यह कथन भी प्रख्यात है कि संगीत मनुष्य जाति को भगवान द्वारा दिये गये सबसे भव्य वरदानों में से एक संगीत भी है।

-विश्व विख्यात संगीत मर्मज्ञ -पाब्लोकासाल्स

इक राधा इक मीरा

इक राधा इक मीरा दोनों ने श्याम को चाहा।
अन्तर क्या दोनों की चाह में बोलो-२
इक प्रेम दिवानी, इक दरश दीवानी-२
राधा ने मधुबन में ढूँढा, मीरा ने मन में पाया।
राधा जिसे खो बैठी ओ, गोविन्द मीरा हाथ दिखाया॥
इक मुरली इक पायल, इक पगली इक घायल।
अन्तर क्या दोनों की, प्रीत में बोलो-२
इक सुरत लुभानी, इक मूरत लुभानी॥

मीरा के प्रभु के गिरधर नागर, राधा के मनमोहन।
स ग म प ध, प ध म प रे म ग, ग रे सा नि ध रे।
रेगम, गमप, मपध, पधसां, निसां रें, अऽऽ।
मीरा के प्रभु के गिरधर नागर, राधा के मनमोहन।
राधा नित श्रृंगार करे और मीरा बन गई जोगन॥
इक रानी एक दासी, दोनो हरि प्रेम की प्यासी॥
अन्तर क्या दोनों की तृप्ती में बोलो।
एक जीत मानी, एक हार न मानी॥

संगीतम् स्वागतम्

संगीतम् स्वागतम्, संगीतम् स्वागतम्-२
सात सुरो को तुमने पिलाकर, बना दिये सरगम॥
संगीतम्---सा रे ग म प ध नि सां॥

सुर को सुर से तुने पिलाया, सुर भरा रस रंग पिलाया।
पीके-पीके, पीके-२ हुये मस्तम, संगीतम स्वागतम्॥

हे! जन्मभूमि भारत

हे! जन्मभूमि भारत, हे कर्मभूमि भारत।
हे वन्दनीय भारत, अभिनन्दनीय भारत॥
जीवन सुमन चढ़ाकर आराध्य करेंगे।
हम वन्दना करेंगे, हम अर्चना करेंगे॥

जिसका मुकुट हिमालय, यूँ जगमगा रहा है।
सागर जिसे रतन की, अँजलि चढ़ा रहा है॥
यह देश है हमारा, ललकार कर कहेंगे।
इस देश के बिना हम, जीवित नहीं रहेंगे॥

महिमा महान तू है, गौरव निधाम तू है।
तू प्राण है हमारा, जननी समान तू है॥
इसके लिए जीयेंगे, इसके लिए मरेंगे।
इसके लिए जनम भर, हम साधना करेंगे॥

जग का रिश्ता कच्चा

जग का रिश्ता कच्चा धागा, साईं का रिश्ता पक्की डोर।
जग की ओर क्या देखते हो, देखता जा साईं की ओर॥

संगी साथी अपने पराये, कोई भी तेरे काम न आये।
मांगे फूल मिले अंगारे, तूने क्या क्या धोखे खाये॥
सुन ले अब साईं के जग में, बहुत सुना दुनियाँ का शोर॥

मिट्टी, पत्थर, सोना, चाँदी, जिसे समझा एक बराबर।
वो ही है केवल असली योगी, छोड़ दे ये माया का चक्कर॥
मांग ले जो साईं से शक्ति, समझें न खुद को कमजोर॥

भरत भाई कपि से

भरत भाई! कपि से उऋण हम नाहीं।
कपि से उऋण हम नाहीं॥

सौ योजन मर्यादा समुद्र की, ये कूदि गयो क्षण माही।
लंका जाई सिया सुधि लायो, पर गर्व नहीं मन माहीं॥

शक्तिबाण लग्यो लछिमन के, हाहाकार भयो दल माही।
धौलागिरि कर धर ले आयो, भोर न होने पाई॥

अहिरावण की भुजा उखाड़ी, पैठि गयो मठ माही।
जो भैया हनुमत नहीं होते तो, मोहे वो लालो जग माही॥

आज्ञा भंग कबहुँ नहिं कीनी, जहाँ पठायो तहां जाई।
तुलसीदास पवन सुत महिमा, प्रभु निज मुख करत बड़ाई॥

मेरे सच्ची दिल में

मेरे सच्ची दिल में लगन लगी,
भगवान मिलेंगे कभी न कभी।
चंदा में नहीं सूरज में नहीं,
तारों में मिलेंगे कभी न कभी।
मंदिर में नहीं मस्ज़िद में नहीं,
हृदय मेमं मिलेंगे कभी न कभी।
फलों में नहीं पत्तियों में नहीं,
कलियों में मिलेंगे कभी न कभी।
आकाश में नहीं पाताल में नहीं,
धरती में मिलेंगे कभी न कभी।

बोल पिंजरे के तोता राम

बोल पिंजरे के तोता रामऽऽऽ
बोल पिंजरे के तोता राम रे, हरेराम, राधेश्याम, सीयाराम रे॥

प्रभु की भक्ति सुबह के जैसी, माया है एक ढलती शाम।
दुविधा में ना दोऊ जाये, माया मिले न तुझको राम॥
तू चुनले भगति अभिराम, तू चुनले भगति अभिराम रे।
हरेराम, राधेश्याम, सीयाराम रे॥

चंचल मन को केन्द्रित करदे, श्रीहरि जी के चरणों में।
भोग-विलास में समय गँवा मत, कुछ भी नहीं है सपनों में॥
छोड़ आलस सकल विश्राम, छोड़ आलस सकल विश्राम रे॥
हरेराम, राधेश्याम, सीयाराम रे॥

भजन के रस का अमृत पीकर, भक्ति की शक्ति तू लेले।
अपने मानुष तन जीवन को, प्राणी यहाँ सफल करले॥
करले आवागमन को प्रणाम, करले आवागमन को प्रणाम रे।
हरे राम, राधेश्याम, सीयाराम रे॥

इस दुनियाँ में वन्दे तेरा, कहीं नहीं ठिकाना है।
एक दिन पिंजरा छोड़ के पंछी, दूर बहुत उड़ जाना है॥
उड़ के जाना है प्रभु के धाम, उड़ के जाना है प्रभु के धाम रे॥
हरेराम, राधेश्याम, सीयाराम रे॥

राम कहानी सुनो रे

राम कहानी सुनो रे राम कहानी।
कहत सुनत आवै, अखियों में पानी॥

दशरथ के राज दुलारे, कौशल्या के आँख के तारे।
हैं सूर्यवंश के सूरज, हैं रघुकुल के उजियारे॥
राजिव नयन बोले, मधु भरी बानी॥

शिव धनुष भंग प्रभु करके, ले आये सीता वरके।
घर त्याग गये वनवासी, पितु की आज्ञा सिर धर के॥
लखन सिया ले संग, छोड़ी राजधानी॥

खल भेष भिक्षु का धरके, भिक्षा का आग्रह करके।
उस जनक पिता सीता को, छल बल से ले गया हरके॥
बड़ा दुःख पावै राजा रामजी की रानी॥

श्रीराम ने मोहे पठायो, मैं रामदूत बन आयो।
सीता माँ के सेवा में, रघुवर को संदेशा लायो॥
और संग लायोऽऽऽऽऽऽऽप्रभु मुद्रिका निशानी॥

उधौ कर्मन की गति न्यारी

उधौ कर्मन की गति न्यारी।

मुरख-मुरख राज करत है, पण्डित फिरत भिखारी।
सुन्दर नैन दिए मिरगा को, बन-बन फिरत उधारी॥

सुन्दर पंख दिए बगुला को, कोयला किस विधि करी।
सूरदास यह प्रभु की लीला, विधि से टरत न टारी॥

जपो राम जपो श्याम

जपो राम जपो श्याम, जपो राम नाम मन से हरि का।
राम के नाम से सुबह शुरू हो, श्याम के नाम से शाम॥

राम नाम है सुख का सागर, भरले अपने मन की गागर।
बूंद-बूंद रसपान नित्यकर, कृपा करेंगे तुझसे रघुवर॥
हरि पूजन से सुबह शुरू हो, हरि किर्तन से शाम॥

कल्पवृक्ष है प्रभु जी हमारे, उनके नाम की छाया करले।
सुख-दुःख के दो फल है वृक्ष में, सींच-सींच के सुख फल ले ले॥
प्रभु दर्शन से सुबह शुरू हो, प्रभु के चरण में शाम॥

राधे गोविन्द गोपाला

राधे गोविन्द ------------३ बार।
राधे गोविन्द गोपाला, भज ले ये नाम, मन में सुबह शाम।
जीवन तेरा तर जायेगा, बन जायेंगे मनवा रे,तेरे बिगड़े काम॥

सुख के है साथी सारी, दुःख में न कोय।
खोल तू मन की आँखे, काहे रहा सोय॥
जीवन भी लम्बी राहें, गिरधारी के चरणों में,कर ले विश्राम॥

मोह-माया के सागर में, वो है पतवार।
कान्हा-३ जपले प्यारे, होगा बेड़ापार॥
झूठी दुनियां के माया, छूटे सारे रिश्ते नाते रे,सांचा एक शाम॥

मुक्तक-रोम-रोम में राम बसाऊँ, अंग-अंग में कृष्णा।
सभी भगत प्राणी के मन से, मिट जायेगी तृष्णा॥

जपो राम राधेश्याम

जपो राम राधेश्याम, जपो नाम राधे श्याम-४ बार।
हृदय बना लो भक्तों, गोकुल धाम रे।
आके बसेंगे उसमें, राधेश्याम रे॥
मंदिर में पूजन कर आठोयाम रे, आके बसेंगे---॥

भावना बनेगी तेरी, यशोमति मैया, कामना बनेगी नंदबाबा।
रोम-रोम तेरे गोपी रूप होंगे, रास रचायेंगे कान्हा,वो कान्हा-२

सांसो के झूले में राधा कृष्ण झूलेंगे, अंखियाँ दरश करेंगी।
आत्मा तुम्हारी फिर सुदामा से होगी, प्रभु के हृदय से लगेंगी
वो सुदामा-२॥

मुक्तक- मन की माया मन की ममता, मन का मोह बिसार।
ओ मति मंद अरे! मन मुरख, मन का मैल उतार॥

अब तुम कब सुमिरोगे

अब तुम कब सुमिरोगे राम॥

गर्भवास में जप-तप किन्हा, निकल गयो बेईमान।

नैन दिये दर्शन करने को, कान दिये सुन ज्ञान॥

पाँव दिये तीरथ करने को, हाथ दिये कर दान॥

दाँत दिये तेरे मुखड़े की शोभा, जीभ दई रट नाम॥

कहत कबीर सुनो भई साधो, ये मूरख नादान॥

तेरा रामजी करेंगे

तेरा रामजी करेंगे बेड़ा पार, उदासी मन काहे को डरे।
काहे को डरे रे, काहे को डरे, काहे को डरे ऽऽऽऽ॥

नैंया तेरी राम हवाले, लहर–लहर हरि आप सम्भाले।
हरि आप ही उठावे मेरा भार, उदासी मन काहे को डरे॥

सहज किनारा मिल जायेगा, परम सहारा मिल जायेगा।
डोरी सौंप के तो देख इक बार, उदासी मन काहे को डरे॥

काबू में मझधार उसी के, हाथों में पतवार उसी के।
तेरी हार भी नहीं तेरी हार, उदासी मन काहे को डरे॥

तू निर्दोष तुझे क्या डर है, पग–पग पर साथी ईश्वर है।
जरा भावना से कीजिए पुकार, उदासी मन काहे को डरे॥

यह प्रेम सदा भरपुर रहे

यह प्रेम सदा भरपुर रहे, भगवान तुम्हारे चरणों में।
यह अरज मेरी मंजूर रहे, भगवान तुम्हारे चरणों में॥

जीवन की मैने सौंप दी है, यह डोर तुम्हारे हाथों में।
उद्धार पतन अब मेरा है, भगवान तुम्हारे चरणों में॥

संसार असार है सार नहीं, बाकी न रही अब भूख कहीं।
मैं हूँ संसार के बन्धन में, संसार तुम्हारे हाथों में॥

आँखों में सदा ये ध्यान रहे, और मन चरणों में लगा रहे।
यह अन्त समय की अरजी है, भगवान तुम्हारे चरणों में॥

श्यामा आन बसो वृन्दावन

श्यामा आन बसो वृन्दावन में।
मेरी उमर बीत गई गोकुल में॥

श्यामा रस्ते में बाग लगा जाना,
फूल बीनूँगी तेरी माला के लिए।
तेरी वाट निहारूँ कुञ्जन में, मेरी उमर बीत गई गोकुल में॥

श्यामा रस्ते में कुआँ खुदवा जाना।
मैं तो नीर भरूँगी तेरे लिए॥
मैं तुझको नहलाऊँ मल-मल के, मेरी उमर बीत गई गोकुल में॥

श्यामा मुरली मधुर सुना जाना।
मोहे आके दरश दिखा जाना॥
तेरी सूरत बसी है अँखियन में, मेरी उमर बीत गई गोकुल में॥

श्यामा वृन्दावन में आ जाना।
आ करके रास रचा जाना॥
सुनी गोकुल की तेरी गलियन में, मेरी उमर बीत गई गोकुल में॥

श्यामा माखन चुराने आ जाना।
आ करके दहि बिखरा जाना॥
अब आप रहो मेरे मन में, मेरी उमर बीत गई गोकुल में॥

वृन्दावन का कृष्ण कन्हैया

वृन्दावन का कृष्ण कन्हैया, सबकी आँखों का तारा।
मन ही मन क्यों जले राधिका, मोहन तो है सबका प्यारा॥

जमुना तट पर नन्द का लाला, जब-जब रास रचाये रे।
तन-मन डोले कान्हा ऐसी, बंशी मधुर बजाये रे॥
सुध-बुध खोये खड़ी गोपियाँ, जाने कैसे जादू डारा॥

रंग सलोना ऐसा जैसे, छाई हो छटा सावन की।
हे री मैं तो हुई दिवानी, उस मोहन मन-भावन की॥
तेरे कारण देख सांवरे, छोड़ दिया मैंने जग सारा॥

जागो मोहन प्यारे

जागो मोहन प्यारे, जागो।
नवयुग चुमें नयन बिहारी जागो॥
भिगी-भिगी अँखियो से मुस्काये।
ये नई फूल तो है अंग लगाये॥
बाहें फैलाओ ओ दुखियारे॥
जिसने मन का दीप जलाया।
दुनियाँ ने उनसे ही उजाला पाया॥
मत रहना अँखियों के सहारे॥
गिर न पड़ी जब गगरी छलकाये।
त्योति-ज्याति का प्यासा प्यास बुझाये॥
फूल बनें मन के अंगारे॥

मुक्तक-जब उजियारा छायें मन का अन्धेरा आये।
मेरे नाव की रानी गाये, जागे हे मन-मोहन॥

श्याम तेरी बंशी

श्याम तेरी बंशी पुकारे राधा नाम।
लोग करे मीरा को यूँ ही बदनाम॥
सांवरे की बंशी को बजने से काम।
राधा का भी श्याम वो तो मीरा का भी श्याम॥

जमुना की लहरें बंशीवट की छईयाँ।
किसका नही है कहो कृष्ण कन्हैया॥
है श्याम का दिवाना, तो सारा बृजधाम॥
राधा का भी श्याम वो तो मीरा का भी श्याम॥

कौन जाने बाँसुरिया किसको बुलाये।
जिसके मन भाये वो उसी के गुण गाये॥
कौन नहीं बंशी की धुन का गुलाम॥
राधा का भी श्याम वो तो मीरा का भी श्याम॥

मेरे भोले बाबा को

मेरे भोले बाबा को अनाड़ी मत समझो।
अनाड़ी मत समझो,खिलाड़ी मत समझो॥
वो हैं त्रिपुरारी, अनाड़ी मत समझो।।
मेरे भोले बाबा के, गले सर्प माला-२।
सर्पो को देख के-२,सपेरा मत समझो॥
मेरे भोले बाबा के,हाथों में डमरू,
डमरू को देख के मदारी मत समझो॥
मेरे भोले बाबा के, तन पे मृगछाला,
मृगछाला को देख के,शिकारी मत समझो॥
मेरे भोले बाबा के, संग में है नन्दी,
नन्दी को देख के,व्यापारी मत समझो॥

बनवारी रे जीने का

बनवारी रे जीने का सहारा तेरा नाम रे।
मुझे दुनियां वालों से क्या काम रे॥
झूठी दुनियाँ झूठी वन्दन, झूठी है ये माया।
झुठा साथ का आना,जाना झूठी है ये काया॥
होऽऽ यहाँ साथ तीनों नाम रे बनवारी रे॥
रंग में तेरे रंग गई गिरधर, छोड़ दिया जग सारा।
बन गई तेरे प्रेम की जोगन, लेकर मन एक तारा॥
होऽऽ मुझे प्यारा तेरो धाम रे, बनवारी रे॥
दर्शन तेरा जिस दिन जाऊँ, हर चिन्ता मिट जाये।
जीवन मेरा इन चरणों में, आस की ज्योति जलाये॥
होऽऽ मेरी बांह पकड़ ओ श्याम, बनवारी रे॥

यशोमति मैया के

यशोमति मैया से , बोले नन्दलाला।
राधा क्यों गोरी मैं क्यों काला॥

बोली मुस्काती मैय्या ललन को बताया।
सारी अंधियारी आँधी रात में तू आया॥
लाडला कन्हैया मेरा होऽऽऽ,
काली मुरली वाला, इसीलिए काला॥

बोली मुस्काती मैय्या सुन मेरे प्यारे।
गोर–गोरी राधिका के नैन कजराले॥
काले नयनो वालीऽऽऽऽऽ
काली नयनों वाली ने ऐसा जादू डाल, इसीलिए काला॥

भगवान मेरी नैया

भगवान मेरी नैया, उस पार लगा लेना।
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना॥

दल-बल के साथ माया, घेरे जो मुझको आकर।
तो देखते न रहना, झट आके बचा लेना॥

सम्भव है झंझटों में, मैं तुमको भूल जाऊँ।
पर नाथ कहीं तुम भी, मुझको न भुला देना॥

तुम देव मैं पुजारी, तुम इष्ट मैं उपासक।
यह बात सच है यदि तो,सच करके दिखा देना॥

बतलाओ कैसे पार करें

बतलाओ कैसे पार करें, इस तरह धर्म की नैया को।
जब लगा पूजने सारा जग, ईश्वर की जगह रूपया को॥

बाबू साहब के कुत्ते भी जब, दूध सूँघ हट जाते है।
एक खल का टुकड़ा मिला नहीं, भारत की गैया मैया को॥

जहाँ कथा कीर्तन होते हैं, आयें तो आये चार जने।
जब सारी जनता टूट पड़ी, सुनने को ताता थइया॥

रण्डी बाजार की नारी को, रेशम की साड़ी मिलती है।
एक फटा सा कम्बल मिला नहीं, उस साधु भजन करैया को॥

हो एक बात तो बतलायें, ठाकुर इस पागल खाने की।
जब राष्ट्रपति के दस हजार, मिलता एक लाख सुरैया को॥

बोल-बोल कागा मेरे

बोल–बोल कागा मेरे राम कब आयेंगे।
भिलनी के झोपड़ी के भाग खुल जायेंगे॥

आये नहीं राम क्यों देर लगाई रे।
चुन–चुन बेर मैं तो सभी तोड़ लाई रे॥
बलिहारी जाऊँगी जब राम मेरे आयेंगे॥

उड़–उड़ कागा ला दे राम की खबरिया।
आयेंगे रघुवीर कब कौन सी उमरिया॥
आयु सुमन बिछा दूंगी जब राम मेरे आयेंगे॥

भोले–भाले भइया दोनों जग के रखवाले हैं।
डुबती ओ नइया के दोनों पतवारे हैं॥
डूबते गरिबों को पार लगायेंगे॥ भिलनी... ॥

भारत में फिर से आजा

भारत में फिर से आजा, गिरिवर उठाने वाले।
सोतो को फिर जगा जा, गीता के गाने वाले॥

गूँजा था जिससे मधुवन, नाचा था जिससे त्रिभुवन।
वह तान फिर सुना जा, बंशी बजाने वाले॥

दु:ख द्वन्द बढ़ रहे हैं, दुष्काल पड़ रहे हैं।
फिर कष्ट सब मिटा जा, गौवें चराने वाले॥

हैं 'राधेश्याम' निर्बल, जन तेरे भक्तवत्सल।
बिगड़ी को फिर बना जा, बिगड़ी बनाने वाले॥

मन में राम तन में

मन में राम, तन में राम, रोम-रोम में राम रे।
राम सुमिर ले ध्यान लगाले, छोड़ जगत के काम॥

माया में तू रहा है उलझा, दर-दर धूल उड़ाये।
अब करता क्यों मन भारी जब, माया साथ छुड़ाये॥
दिन तो बीता दौड़ धूप में, ढल जाये न शाम रे॥

तन के भीतर पाँच लुटेरे, डाल रहे हैं डेरा।
काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह ने, तुझको ऐसा घेरा॥
भूल गया तू राम रटन, भूला पूजा का काम रे॥

बचपन बीता खेल-खेल में, भरी जवानी सोया।
देख बुढ़ापा सोचे अब तु, क्या पाया क्या खोया॥
देर नहीं है अब भी बन्दे, ले-ले उसका नाम रे॥

मिट्टी का दीया है

मिट्टी का दीया है ये काया, पर इतनी आस लगाये है॥
जीवन की जरा सी ज्योति मिली, सूरज से मिलना चाहे है॥

अधकलि खिली हूँ डाली से, गिरूँ किसी की पूजा थाली में।
चरणों में पड़ू वनमाली के, ये निस दिन मीरा गाये है॥

अम्बर का तारा हो जाँऊ, मैं चाँद की नाव में सो जाऊँ।
प्रीतम के दरशन को पाऊँ, जिन के बिना न जीवन भाये है॥

हे शारदे माँ!

हे शारदे माँ! हे शारदे माँ
अज्ञानता से हमें तार दे॥

तू स्वर की देवी ये संगीत तुझसे।
हर शब्द तेरा है हर गीत तुझसे॥
हम हैं अकेले हम हैं अधुरे।
तेरी शरण का हमें प्यार दे माँ!

मुनियों ने समझी गुणियों ने जानी।
वेदों की भाषा पुराणों की वाणी॥
हम भी तो समझें हम भी तो जानें।
विद्या का हमको अधिकार दे माँ!

तु श्रोत वरणी कमल पे विराजे,
हाथों में वीणा मुकुट सर पे साजे॥
मन से हमारे मिटा के अंधेरे,
हमको उजालों का संसार दे माँ!

जीवन सुना होता है

जीवन सुना होता है, जिसमें न भजन कभी होता है॥

शोभा नहीं कान की कुण्डल से, शोभा नहीं आँख की काज से।
आँख तो सुन्दर होता है, जिसमें हरि दर्शन होता है॥

शोभा नहीं पाँव की पयजन से, शोभा नहीं हाथ की कंगन से।
हाथ तो सुन्दर होता है, जिसमें हरि दर्शन होता है॥

प्रभु के भरोसे हाँको

प्रभु के भरोसे हाँको गाड़ी, हरि के भरोसे हाँको गाड़ी।
न जाने कब टूट पड़ी, माथे पे काल कुल्हाड़ी॥

पंचतत्व की बनी कुटईया, जिसका नाम है काया।
जिसका नाम है काया।
हो हरेक जीव रहे ऽऽऽ, देकर श्वांस किराया॥
जब मिट जायेगी श्वांस की पोथी, पछताओगे ओ अनाड़ी॥

जिस पर हम कहते हैं दुनियाँ एक दर्शन मेला।
ओ एक दिन ऐसा आता यहाँ ऽऽऽ भक्ति की रंग मेंऽऽऽऽ॥
भक्ति की रंग में यही है मुक्ति की नाड़ी॥

पूछो ने कैसे मैने रैन

पूछो ने कैसे मैने रैन बिताई,
एक पल जैसे एक युग बिता।
युग बीता मोहे नींद न आई॥

उत जले दीपक अंधेरा रात मन में।
फिर भी न जाये घर का अंधेरा॥
तरफ तरफत उमर गँवाई॥

ना कहीं चन्दा ना कहीं तारे।
ज्योति के प्यासे मेरो नयन बिचारे॥
मोर भी आस की किरण लगाई॥

घर में पधारो गजानन जी

घर में पधारो गजानन जी, मेरे घर में पधारो।
ऋद्धि-सिद्धि लेके आओ गणराजा, मेरे घर में पधारो॥

राम जी आना, लक्ष्मण जी आना।
संग में लाना सीता मैया, मेरे घर में पधारो॥

ब्रह्माजी आना, विष्णु जी आना।
भोले शंकरजी को ले आना, मेरे घर में पधारो॥

लक्ष्मी जी आना, गौरी जी आना।
सरस्वती मैया को ले आना, मेरे घर में पधारो॥

विघ्न को हरना, मंगल करना।
कारिणी शुभ कर जाना, मेरे घर में पधारो॥

पानी में मीन पियासी

पानी में मीन पियासी, मोहि सुनि-सुनि आवत हाँसी।

आतम ज्ञान बिना नर भटके, कोई मथुरा कोई काशी॥
जैसे मृगा नाभि कस्तुरी, वन-वन फिरत उदासी।

जल बीच कमल-कमल बीच कलियाँ, तापर भँवर निवासी॥
जो मन वश त्रिलोक भयो सब, यति-यति सन्यासी।।

जाको ध्यान धरें विधि हरिहर, मुनिजन सहज अठासी॥
सो तेरे घर माहि विराजे, परम पुरूष अविनाशी।।

है हाजिर तोहि दुर दिखावे, दूर की बात निराशी।
कहे कबीर सुनो भई साधो, गुरु बिन भरम ना जासि॥

प्रभु मेरे अवगुण चित्त

प्रभु मेरे अवगुण चित्त ना धरो।
समदर्शी प्रभु नाम तिहारो, चाहे सो पार करो॥

एक नदिया एक नार कहावत, मैलो नीर भरो।
दोनो मिलकर एक बरन भई, सुरसरि नाम परो॥

एक लोहा पूजा में राखत, एक घर बधिक परो।
गुण-अवगुण पारस नहिं, चित्तवत कंचन करत खरो॥

राह माया भ्रम जाल कहावत, सूरदास अगरो।
अब की बार मोह पार उतारो, नहीं पण जात ढरो॥

चम्पा फूले आधीरात

चम्पा फूले आधीरात, गजरा मैं किसके गले डालूँ।
राम गाले डालूँ या सीता गले डालूँ॥
सीता जी के लम्हे...२ गजरा मैं किसके॥

कृष्ण गले डालूँ या राधा गले डालूँ,
राधा जी के लम्बे-लम्बे बाल है।

शंकर गले डालूँ या पार्वती गले डालूँ।
पार्वती जी के लम्बे-लम्बे बाल है॥

विष्णु गले डालूँ या लक्ष्मी गले डालूँ।
लक्ष्मी जी के लम्बे-लम्बे बाल है॥

राधा ऐसी भई श्याम

राधा ऐसी भई श्याम की दिवानी, कि ब्रज की कहानी हो गई।
एक भोली-भाली गाँव की गँवारन, कि पंडितो की वाणी हो गई॥

राधा न होती तो वृन्दावन भी, वृन्दावन न होता।
कान्हा तो होते, बंशी भी होती, बंशी में प्राण न होता॥
प्रेम परिभाषा जानता न कोई, कन्हैया के योगी मानता न कोई।
बिना परिणय की वो प्रेम के पुजारण, कान्हा की पटरानी हो गई॥

राधा के पायल न बजती तो मोहन, ऐसी न रास रचाते।
निंदिया चुराकर मधुवन बुलाकर, उंगल पे किसको नचाते॥
क्या ऐसी खुशबु चन्दन में होती, क्या ऐसी मिश्री माखन में होती॥
थोड़ा सा माखन खिलाके वो ग्वालन, अन्नपूर्णा की रानी हो गई॥

राधा न होती हो कुञ्जगली भी, ऐसी निराली न होती।
राधा के नैन न रोते तो जमुना, ऐसी काली न होती॥
सावन तो होता झूले न होते, राधा के संग नटवर झूले न होते।
सारा जीवन लुटाते वो भिखारन, धन्य गोपी राजधानी हो गई॥

मुक्तक-

तेरी बंशी की धुन बाजी, सबकी सुध-बुध खोने लगती।
बंशीवट की छइयाँ में, तेरी मुरली हर पल गाती॥

ऐ मालिक तेरे बन्दे हम

ऐ मालिक तेरे बन्दे हम, ऐसे ही हो हमारे करम।
नेकि पर चलें और बदी से डरें, ताकि हस्ते हुए निकले दम॥

बड़ा कमजोर है आदमी, अभी लाखों है इसमें कमी।
पर तू है जो खड़ा है दयालू बड़ा, तेरी कृपा से धरती थमी।।
दिया तुने हमें जब जनम, तू ही ले लेगा हम सबके गम।।

ये अन्धेरा घना छा रहा, तेरा इन्सान घबरा रहा।
हो रहा बेखबर, कुछ न आता नज़र, सुख का सूरज छुपा जा रहा॥
है तेरी रोशनी में जो दम, तू अमावस को कर दे पूनम॥

जब जुल्मों का हो सामना, तब तू ही हमें थामना।
वो बुराई करें हम भलाई करें, नहीं बदले की हो कामना॥
बज उठे प्यार का हर कदम, और मिटे प्यार का ये भरम॥

दुनियाँ ये तुम्हारी है

दुनियाँ ये तुम्हारी है, संसार तुम्हारा है।
तुने ही हमें भगवन, धरती पे उतारा है॥
बहादे दया के सागर, सब पर है दया तेरी।
बिगड़ी बनादे उसकी, जिसने भी पुकारा है॥
सज्जन को तु हंसा दे, दुर्जन को तु रूला दे।
वो मिट गया जहाँ से, जिसने भी बिसारा है॥
तुझको बिसार कर हम, जाये तो कहाँ जायें।
मालिक तु हमारा है, रहबर हमारा है॥
मझधार में है नैया, बल्ली ना कोई खिवैया।
'बेमोल' का जहाँ में, तु ही तो सहारा है॥

सियाराम तुम्हारे चरणों में

सियाराम तुम्हारे चरणों में, यदि प्यार किसी को हो जाये।
दो चार की तो बात ही क्या, संसार उसी को हो जाये॥

शबरी ने कहाँ वेद पढ़े, गणिका कब यज्ञ कराती थी।
जिसमें छल, द्वेष का लेश नहीं, भगवान उसी का हो जाये॥

प्रहलाद तो छोटा बालक था, पर प्यार किया परमेश्वर से।
संसार का होकर क्या लेना, एक बार प्रभु का हो जायें॥

रावण ने प्रभु से बैर किया, अब तक भी जलाया जाता है।
बन भक्त विभीषण शरण पड़ा, घर बार उसी का हो जाये॥

मुक्तक-कुम्भकरण, रावण योद्धा, कहते थे हम शूर।
वक्त आया जब काल का, हो गये चकना चूर॥

हे प्रभो आनन्द दाता

हे प्रभो आनन्द दाता, ज्ञान हमको दीजिए।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को, दूर हमसे कीजिए॥
लीजिए हमको शरण में, हम सदाचारी बनें।
ब्रह्मचारी धर्म रक्षक, वीर व्रतधारी बनें॥
शत हमारी आयु हो प्रभु, भूलकर उपकार में।
हाथ डालें हम सभी क्यों, भूलकर उपकार में॥
मातृभूमि, मातृसेवा, हो अधिक प्यारी हमें।
देश में पद्वी मिलें, निज देश हितकारी बनें॥
कीजिए हम पर कृपा, ऐसी अहो परमात्मा।
मोह मद मत्सर रहित, होवे हमारी आत्मा॥

तेरी करूँ मैं वन्दना

आलाप–म प ध॒ऽऽ , निऽऽ प, म प ग॒ रे, ध़ ऩि रे सा।

तेरी करूँ मैं वन्दना, तेरी करूँ मैं आराधना॥

जीवन सुरीला गीत हो, हर सांस में संगीत हो।
ऐसी करूँ मैं प्रार्थना, तेरी करूँ मैं आराधना॥

तेरी वीणा के तार माँ, दे दो हमें सुर ज्ञान माँ।
लय ताल की अभ्यर्थना, तेरी करूँ मैं आराधना॥

निष्काम हो मनो कामना, मेरी सफल हो साधना।
जीवन हमें है संवारना, तेरी करूँ मैं आराधना॥

सुरताल की भण्डार माँ, दे दो हमें सुरज्ञान माँ।
लयताल की अभ्यर्थना, तेरी करूँ मैं आराधना॥

रघुपति राघव राजाराम

रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम।
रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम॥

जय रघुनन्दन, जय घनश्याम, पतित पावन सीताराम।
राजाराम जय राजाराम, सब मिलकर बोलो राजाराम॥
रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम॥

ईश्वर अल्लाह तेरो नाम, सबको सन्मति दे भगवान।
ईश्वर अल्लाह तेरो नाम, सबको सन्मति दे भगवान॥
रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम॥

हर करम अपना करेंगे

मेरा कर्मा तू मेरा धर्मा, तू मेरा सब कुछ,
मैं तेरा सब कुछ॥

स्थाई-

हर करम अपना करेंगे, ऐ वतन तेरे लिए।
दिल दिया है जान भी देंगे, ऐ वतन तेरे लिए॥
(समूह में)
तू मेरा कर्मा, तू मेरा धर्मा, तू मेरा अभिमान है।
ऐ वतन महबूब मेरे, तुझपे दिल कुर्बान है॥
हम जियेंगे और मरेंगे, ऐ वतन तेरे लिए॥

हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई, हम वतन हम नाम है।
जो करे इनको जुदा, मज़हब नहीं इल्ज़ाम है॥
हम जियेंगे और मरेंगे, ये वतन तेरे लिए॥

तेरे गलियों में चलाकर, नफ़रतों की गोलियाँ।
लुटते है कुछ लुटेरे, दुल्हनों की डोलियाँ॥
लुट रहे है अब तो अपने घरो को लुटकर।
खेलते हैं वे सब अपने लहु से होलियाँ॥
हम जियेंगे और मरेंगे, ऐ वतन तेरे लिए॥

हर व्यक्ति को संगीत का अभ्यास होना चाहिए भले ही उसका कण्ठ कितना ही कठोर या रूखा क्यों न हो।
वाङ्मय-१९ पृ. ६. २७

बाइबिल वेद कुरान बताते

बाइबिल वेद कुरान बताते, यह अनुपम सद्ज्ञान रे।
मातु–पिता गुरु से बढ़कर कोई, तीरथ न भगवान रे॥

माता को ब्रह्म माने जिसने, काया का सृजन किया।
बड़े प्यार से पाल–पोषकर, जिसने हमको बड़ा किया॥
माँ के ऋण से ऋणी सदा हम, रहते सब इन्सान रे॥

पिता विष्णु भगवान हमारे, साधन सभी जुटाते हैं।
बच्चो को सुख देने हेतु, कष्ट अनेक उठाते हैं॥
पिता है इतना ऊँचा जितना, ऊँचा न आसमान रे॥

गुरुवर ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, परमब्रह्म साकार है।
जीवन कला सिखाने वाले, गुरु मोक्ष दातार है॥
इसीलिए अवतारों ने भी, दिया इन्हें सम्मान रे॥

मुक्तक–

हंस चला आकाश को, काया रह गई पास।
यश ही बाकी रह गया, क्यों मन होय उदास॥
यह नश्वर संसार है, कर्म सभी के साथ।
असल सत्य समझे बिना, मनवा होत अनाथ॥

संगीत न केवल विद्या है वरन् एक महाशक्ति भी है।
वाङ्मय १९ पृ. ६.३९

गोद में बसे गंगा मइया

गोद में बसे गंगा मइया के, हिमगिरि राज के छाँव गा।
चल तो संगी दर्शन करबो, शान्तिकुञ्ज के धाम गा॥

गुरु श्रीराम माता भगवती, प्यार भरे कण-कण में।
तिरथ-बरथ ले मन नई जुड़ाये, गति हे ओकर शरण में॥
हारे-थके लोगन मन भइया, जुड़े बनें सुरताय गा॥

जगतगुरु के छबि ला बनाये, तपे गुरुजी जीवन भर।
सब साधक के अंतस जगाये, सुघ्घर बनायें शक्ति भर॥
नवा सूरज के नवयुग लइया, महाकाल श्रीराम गा॥

कर्म शान्ति के अंवा तपत हे, जीवन ला स्वर्ग बना लौ।
गायत्री के महामंत्र ला, घर-घर में पहुँचा लौ॥
जाति-पाँति के भेद मिटाबो, सब ला एक कराय गा॥

एक तराजु तौल जिहाँ के, धरम और विज्ञान के।
तर्क तथ्य प्रमाणिक जन हे, जन-जागृति अभियान के॥
भक्ति के भट्ठी में तपत हे भइया, साधक जन समुदाय गा॥

''गीतं वाद्यं नर्तनं च त्रयं संगीत मुच्यते।''
अर्थात्- गाना, बजाना और नाचना तीनों को संगीत कहते हैं।
वाङ्मय १९ पृ. ६.४५

जिनगी के आँसू ला

(साधुपथ पर सदा)

जिनगी के आँसू ला पोंछ ले ज्ञानी।
तोर करम ह मरम बन जाही॥

कांटा खुटी ला तै बटोर के, रस्ता के करे सफाई।
चारो कोति ला दिया जलाके, जग ले करे ते मिताई॥
रोवत मन के आँसू ला पोंछ के ज्ञानी, तोर करम...... ॥

चारो तरफ ले घट छाये हे, ऊँच-नीच के परदा।
अपन दरी बर सहयोग माँगे, फल माँगे ले हरजा॥
सेवा के धरम ला बचा के ध्यानी, तोर करम...... ॥

मेहनत कस मजदूर रोवत हे, गाँव में रोवत हे किसान।
शहरिया के चाल बिगड़ गे, दिखावत हे अपन शान॥
गाले प्रभु के करम के जुबानी, तोर करम...... ॥

मन्दिर बन गेहे पूजा चढ़ावा, धन्धा के आवा जाही।
पुजारी धरे हे बनिया तराजू, ऊपर ले पुजाही॥
नवा जग ला बना ले निर्माणी, तोर करम...... ॥

''बसन्तः प्राणायनो गायत्री बासन्ती।''

गायत्री वह है जो बसन्त में गायी जाती है। और गाने वाले की रक्षा करती है। वाङमय १९ पृ. ३.२५

झन पियो दारू गांजा

(छत्तीसगढ़ी-गीत)

झन पियो दारू गांजा जी, हाँसी आहि न रोवासी।
खेती डोली घर द्वार जाही, मिलही नहीं नून बासी॥

दारू पिये बिन चैन न आवे, सूते नहीं दिन रात।
गाढ़ी कमाई ढाई ददा के, बेटा शराबी के हाँथ॥
दाई ददा रोथे अबड़, बेटा होगे हे शराबी॥

ओलकी कोलकी कोना-कोना, दारू पिये ला जाये।
घर में आके लोग लईका अऊ, घरवाली ल खिसयाथे॥
घर में होथे लड़ाई झगड़ा, गाँव में होवथे हाँसी॥

लोग लईका ल पढ़ाते लिखाते, अरू बनाते ज्ञानी।
तोर में खुदे अकल इये, करत सतै सियानी॥
नशा के कारण तन बिगड़गें, होगे टी.बी.खासी॥

ये दारू के कारण भैया, घर परिवार उजड़गे।
जेमन गाँजा, दारू छोड़िस, ओकर घर सुधरगे॥
नशा के कारण कतको मरगे, घेर के डार के फँासी॥

संगीत भारत का उत्पति केन्द्र है। यहाँ के अधिकांश देवी देवता संगीत उपकरणों से सुसज्जित हैं। (वाङ १९ पृ. ६.२३)

गुरुदेव चरण माँ तोर

(छत्तीसगढ़ी-गीत)

गुरुदेव चरण मां तोर, बेरी-बेरी हमन माथ नवाँथन।
ये जिन्दगी हे निछावर तोर बर, इन्हीं वरदान ल माँगथन॥

बिलखत रहेन हमन दुलराये पीठ थपथपाये।
अज्ञानी रहेन अधियाँर मां, ज्ञान के रस्ता बताये॥
ये उपकार भुलाये नई भुलन, चरण मां बलि-बलि जावथन॥

गिरे बिछड़े मनके, बने मैं जीवन के नैया।
अटके मझधार माँ नैया, बने ओकर तै खैवैया॥
पाके चरण तोर ये कल्युग माँ, भागे घन सहारावथन॥

लेबो संकल्प जुर मिल के, धरती ल सरग बनाबो।
मन ला देवता बनाये बर, जम्मो ताकत ल लगाबो॥
देबे सहारा गिर झन पावन, रस्ता मां पाँवल बढ़ावथन॥

धनुष धारी राम जी

धनुष धारी राम जी, मैं घड़ी-घड़ी तोला मनावौ-२
संग म मनावौं माता जानकी, अऊ रे मनावौं हनुमान॥
मैं घड़ी-घड़ी तोला मनावौ---------------॥

पहली तोला मैं फूल चढ़ावौं, पंवरी पांव पखारौं
दूजे लक्ष्मण भाई मनावौं, अवध पुरी ल मनावौं॥
तीनो भइया दशरथ जी ल, भरत भाई ल मनावौं॥
मैं घड़ी-घड़ी तोला मनावौं---------------॥

बिहना होगे अंजोर होगे

(छत्तीसगढ़ी-गीत)

बिहना होगे अंजोर होगे, बिहना होगे रे।
देखा ज्ञान के मशाल, अंजोर होगे रे॥

सत के सूरज हाँसत हावै, झूठ के रात परागे।
अंधेरा के भूत भरम, अंध विश्वास भगागे।
रूढ़िवाद हर डेरा समेटे, रोवत हावे रे॥

दुर्बुद्धि दुर्योधन भागे, भागे दुष्ट दुशासन।
कंस जरासंध चिन्ता फिकर, भागे रे खरदुषण।
काम विषय हर थर-थर काँपे डर समागे रे॥

ए जग जुन्ना होगे पुराना, अंत घड़ी के काल।
नया बिहान हर ओढ़े चादर, झींझुरा पींवरा लाल।
जीवन ज्योति जगर मगर, सूरज होगे रे॥

विष के बादल झन झन बरसे, ये धरती के उपर।
अमृत प्रेम प्यास बुझा ही, फूल हंसाही बंजर।
मन के भौंरा गुन गुनाही, मगन होगे रे॥

माँ गायत्री यज्ञ पिता के, सरवन बेटा आवा।
फाँसे कांवर ज्ञान करम के, तीरथ गाँव करावा।
सेवा के फल मेवा पाहा, आवा आगे रे॥

जय गायत्री मईया

(छत्तीसगढ़ी-गीत)

जय गायत्री मईया, तोरे पईयाँ पखारौं।
हे हंस वाहिनी मईया, तोरे पईयाँ पखारौं॥

आदि शक्ति कहाथस मईया,देवता मन गुण गाथे।
मंत्र जाप करे ले मईया, रिद्धि सिद्धि सब माथे।
मईया सद्‌बुद्धि के जगईया, तोरे पईयाँ पखारौं॥

एक हाथ म पुस्तक तोरे, एक हाथ म माला।
एक हाथ म धरे कमण्डल, एक हाथ म भाला।
लोभ-मोह कटईया, तोरे पईयाँ पखारौं॥

तोर ज्ञान म मईया सबके, घर अंगना हे अंजोर।
तोर ध्यान म सुख शांतिह, बरसथे चारों ओर।
अंधकार मिटईया, तोरे पईयाँ पखारौं॥

श्रद्धा के मैं फूल चढ़ावौ, नरियल पान सुपारी।
महिमा कैसे गावों मैं, नई जानौं महतारी।
मोरि नईया पार करईया, तोरे पईयाँ पखारौं॥

पण्डित श्रीराम शर्मा जी, तोरे महिमा गाये।
भगवति माँ के रूप लेके, तैं धरती म आये।
हे शान्तिकुञ्ज के मईया, तोरे पईयाँ पखारौं॥

मैं वन्दत हँव दिन रात

(छत्तीसगढ़ी-गीत)

मैं वन्दत हँव दिन-रात ओ गायत्री माता।
जय होवे तोर

सुत उठ के बड़े बिहनिया, तोरेच पैंया लागँव।
सुरूज जोत मां करों आरती, गंगा पाँव पखारँव॥
तोर काया में फूल चढ़ाँवो, ओ गायत्री माता॥

तोर कोरा म जीव जन्तु के, घर-दुवार अऊँ डेरा।
ते हमन के सुख-दुःख के, अऊ जिनकी के डेरा॥
तोर महिमा कतेक बखानौं, ओ गायत्री माता॥

राजा-परजा, देवी-देवता, तोरा कोरा म आइन।
जैसन सेवा करीन तोर वो, तैसन फल ला पाइन॥
तोर माया में जग दुलरावो, ओ गायत्री माता॥

जय-जननी दुर्गा माई

जय-जननी दुर्गा माई, तोर महिमा ला कतको गाईन-२
बिगड़ी के बनईया मईया, पार लगा दे नैया॥
हो मईया..मईया.. मईया.. पार लगादे नैया॥

कोनो तोला दुर्गा कईथे, कोनो कईथे काली मइया।
शेर सवारी वाली मइया, जग के करे रखवाली मइया॥
बिगड़ी के बनईया मईया, पार लगा दे नैया॥
हो मईया..मईया.. मईया.. पार लगादे नैया॥

छत्तीगसढ़ी दाई तोर

(छत्तीसगढ़ी-गीत)

छत्तीसगढ़ी दाई तोर, अचरा के छाव मां।
सबो सुख भरे हावै, तोर गँवई गाँव मां॥

अमृत हे तोर नदिया, नर्वा के पानी।
धान के कटोरा, दाई अमर हे कहानी॥
चारो धाम के पुण्य हावँव, दाई तोर नाँव मां॥

धरमीन कौशिल्या ला दे हावस जनम।
ऋषि विश्वामित्र के तही हर डंडकवन॥
देवी देवता खुँट-खुँट मां-तीरथ पाँव-पाँव मां॥

खोखले निकले तोर हीरा लोहा तांबा।
तभोच ले तोर बेटा मन, बनै हावे सुदामा॥
पसीना बेचत हावै पानी के भाव मां॥

चल संगी भोला ल

चल संगी भोला ल मनाबो, मया के फूल ल चढ़ाबो॥

माद्य महिना राजिम के मेला, संगम म डुबकी लगाबो।
राजिव लोचन तट म बसे हे, जेकर दर्शन ल पाबो॥
देवी देवता के दर्शन करके, मन मनौती पाबो रे पाबो॥

महानदी पैरी सोढ़हुर के धारा, जेमां कुलेश्वर विराजे।
नदी के तट म लोमश आश्रम, जाथे संत समाजे॥
ये जिन्दगी के नैइये ठिकाना, इही म मुक्ति ला पाबो॥

कोन जनी कोन बेरा

(छत्तीसगढ़ी-गीत)

कोन जनी कोन बेरा, छोड़ दीही पंछी डेरा।
गाले हरिनाम-------------------- ॥
जपो सियराम राम, राधेश्याम सीताराम॥

लख चौरासी भटक मानुष, तन ल पाए हस।
करके वादा प्रभु से माया म, भुलाए हस॥
तोर-मोर कहिते रबे, तैं काली सब छुट जाही॥

आज तैह करले काया के जतन ल।
राम-नाम में लगा ले तैं तोर मन ल।
काली के नईए कोई के ठिकाना।
आज इंहा ऐ काली और कही जाना॥
हाथ धरे तोर संगी साथी काली सब, छुट जाही॥

जय हो जय हो

जय हो जय हो गणराजा, तोर महिमा हावे बड़े भारी।
मुसवा के तोर सवारी गजानंद-२ चार भुजा के धारी॥

माता तोर पार्वती पिता महादेवा, पिता महादेवा जी,पिता महादेवा।
लडवन के भोग लगे संत करे सेवा,संत करे सेवा जी,संत करे सेवा॥
तोर महिमा अपार हे गजानन्द-२ कतैक करौ मैं चारी॥

सुन संगी रे सुन

सुन संगी रे सुन भैया गा, रामायण अमरईया ये।
परे हरे अऊ गिरे थके के, दुःख पीरा बिसरईया ये॥

अमरईया के शीतल छईया, पवन चले पुरवईया।
राम–नाम के हीरा मोती में, भरे हावे ये पतलईया॥
पड़े डरे अऊ गिरे थके के, दुःख पीरा.........॥

रेंगत–रेंगत थकगे हवस, अमरईया ये सुरताले।
पानी पीले लहरा ले ले, तन–मन ला तै जुड़ाले॥
परे डरे अऊ गिरे थके के, दुःख पीरा.........॥

आजे आही काली आही

आजे आही काली आही, सांझे आही बिहानी आही।
फूटहा करम ल मोर जगाही, मोर घर राम जरूर आही॥

कांदा ल मैं राखे हावौ तोड़के।
मीठ–मीठ बोइर ल मैं राखे हावौं तोड़के॥
कांदा कुसा ल वोहर खाही, मेवा मिठाई कहां ले पाई।
बोइर के भोग वो लगाही, मोर घर..................॥

सुरतिया ला नैना मा निहारे हौ।
आंसू के धारे म चरण ल पखारे हौ॥
मया के मारे मैं हा रोहूं, आंसू ममें ओकर पावे ल धोहूं।
तब मोर छाती हा जुड़ाही, मोर घर..................॥

मन के मदिरवा म

मन के मदिरवा म लगे हावे ताला।
पथरा के मंदिर म खोजे तैं ह काला॥

कहाँ हावे दुर्गा दाई, कहाँ हावे लक्ष्मी।
कहाँ हावे देवी देवता, कहाँ हावे धर्मी॥
कहाँ हावे सरस्वती माँ, होऽऽऽ संतोषी माता॥

घर में हावे दुर्गा दाई, घर में हावे लक्ष्मी।
हिरदे में तोर बसे है हे देवी देवता धर्मी॥
हिरदे में सरस्वती माँ हो,ऽऽऽ संतोषी माता॥

ये तुलसी के बानी

ये तुलसी के बानी ये, राम के अमर कहानी ये।
तोर काया हा तर जाही, तोर चोला हा तर जाही॥
तै राम के नाम जपेजा रे....संदेशा लेजा रे-२ बार

नाम जपे नददानायेहरि नाम ला आज भुलागे।
पाव दवाये बर दुर्योधन,जेकर घरइया आगे रे॥
ये तुलसी के बानी ये, राम के अमर कहानी ये॥

जेकर कोनो नइये ओकर, जियत मरत के साथी ये।
हारे ला हरि नाम सहारा, ये अंधरा के लाठी ये॥
दु:ख पीरा ह हर जाही, जिनगी तोर सँवर जाही॥

छम -छम नाचे रे

छम-छम नाचे रे मीरा, झूम-झूम गाये कबीरा।
करताल बाजेगा,बही सही नाचेगा पीके हरि नाम के मदीरा॥

साधु मन के संग मां, रंग के राम के रंग म।
मीरा बाई नाचे हे, पीके भक्ति के भंग म॥
करताल बाचेगा, बही सही नाचेगा........॥

सुरूज के बाजे तमुरा, तोर बिना जिनगी अधूरा।
टूट गेहे तुलसी के माया, आशा होगे हे पूरा॥-२
मन म मगन होके, साचा लगन पागे,हरि नाम के मनी ला॥

जैसी करनी वैसी भरनी

जैसी करनी वैसी भरनी, ये दुनियाँ में होयत हे।
कोनो हाँसत हे, कोनो रोवत हे॥

पेड़ लगाये तै बबुल के'ओमा'केरा ह नई फरे फूल के।
करम ला करले तैह ईमान से, गलती झन कर जान के॥
करथे भलाई जग मां भाई-२ सुख मां ओइ जियत हे॥

परके कांवरा ला नगाबे 'ता' तोरो पेट कैसे भरही।
परके दीया ला बुझाबे ता, तोर घर दीया कैसे जलही॥
कौन हे मैला कोन हे उजला-२ मन म यही घुमत हे॥

मोर संग चलव जी

मोर संग चलव जी, मोर संग चलौ गा।
मोर गिरे परे हपटे मन, अऊ परे डरे मनसे मन॥

अमरैया कस जुड़ छाव मां, मोर संग बैठ जुड़ा लव।
पानी पिलौ मैं सागर अऊ, दुःख पीड़ा बिसरालव।
नवा जोत ला नवाँ गाँव बर, रस्ता नव गढ़ौ रे॥

मैं लहरी औव मोर लहरा मां, फलौ–फुलौ हरियालौ।
महानदी मैं अरपा पैरी, तन मन धो परिया लौ।
कहाँ जाहूँ बड़ा दूर हे गंगा, पापी इहा तरौ रे॥

विपत संग जुझे बर भाई, मैं बाना बाँधे हाँव।
सरग ला पिरथी में लाये बर, मैं एइसन ठानें हाव।
मोर सुमत के सरग निसैनी, जुड़ मिल सबो चलौ रे॥

हवा कहें संग मोर चलव अऊ, पानी कहे मोर संग बहौव।
रूख राई कहे संग फूलो फलो अरू मया कहे मोर संग बहौ।
छोड़ के चिन्ता ये दुनियाँ के, तूमन एकल बने रहौ रे॥

जिन्दगानी घर साथ जवइया, वहाँ कहाँ से साथ जवइया।
सपना सब साकार करईया, छुटेंगे पार लगैया।
संग साथी थोरे दिन के, दुःख ऊपर घान धरईया॥

पर उपकार के नाम जिन्दगी, सेवा सुख संसार।
धीरज धरम करम गति बाढ़े, ज्ञान करे विस्तार।
नवा जोत लाव नवाँ गाँव घर, रस्ता नवा गढ़ौ रे॥

चुटकी भर सिंदुरवा जाने

(भोजपुरी गीत)

चुटकी भर सिदुंरवा जाने, कबले भेंट इन्हें,
लगता की बबुनी कुमारी रहे जइहें ॥

बबुनी समान बरि तिलक के मोलाई,
लड़का वाला भइले काटे जइसे कसाई।
अइसन बुझात कौनो बैल विकइहे, लगता की---- ॥

अंधा कानुनई दिखई कहाँ देता,
जेही रखवारे उहें बाल तुड़ लेता।
कइसे हम मानी की, सघार हो जइहें, लगता की---- ॥

आदमी के आदमी से ना रहल नाता,
पैसा पर एहिजा ईमान बेचल जाता।
आदमी के घई आदमी ईहा खइहें, लगता की---- ॥

भारत के नारी जाग घुँघुटा उठाके,
काली विकराल रूप धारण करके।
तोहरो से असुरन के नाश होई जइहें, लगता की---- ॥

संगीत चिकित्सा अपने आप में एक श्रेष्ठ उपचार पद्धति है।
वाङमय १९ पृ. ६.२२

आज थामल तु ज्ञान के

(भोजपुरी गीत)

आज थामल तु ज्ञान के मशाल
भईया हो मशाल भईया।

गायत्री महामंत्र में बसात,
गुरु ज्ञान दीपक की ज्योति जलाल।
सद्‌गुण की सुगन्धी बेमिशाल भईया हो॥

जनहित की वेदी पर ज्ञानयज्ञ करके,
सद्ज्ञान सत्कर्म सद्‌भाव भरके।
सारा जग होई जइहे निहाल भईया हो॥

सबको होय सद्‌बुद्धि जन-जन महान हो,
उज्ज्वल भविष्य का स्वर्णिम विहान हो।
नवयुग का उजाला कमाल भईया हो॥

चल घर घर घुमे अलख जगावा,
अज्ञानी राक्षस के देश से भगावा।
मतकर देश के कंगाल भईया॥

देवता के पैसा से खरीद मत भईया,
देवता के आर लेकर कर मत कमाई,
आज कुछ भईल महाकाल भईया हो॥

अईला कुछन कईला

अईला कुछ न कईला जिन्दगी बेकार हो जाई।
इहो दहिया तोर धरती के भार होई जाई॥
योनि आदमी के पावल खाये सुते में गंवाबल।
काम पशु जईसन कईले, खाली आपन पेट भईल।
जियल दुनियाँ में तोहरो, बेकार होई जाई॥
एक एक बितल जाता दिन, करजा लेके आईल तिन।
लुट हो गइल शौकीन बात सोंच तनी कीन।
नाम तोहरो करजा खोर में, प्रचार होई जाई॥
खुब घुस रिश्वत खइल, घर घर झगड़ा लगाईल।
जवन कहिके यहाँ अईल, रगहि दुनियाँ में भर मईल।
लोगवा गाली दीही जहिया, ई उधार हो जाई॥

महिमा बा तोहरो अपार हो

महिमा बा तोहरो अपार हो, जय गायत्री मईया।
गायत्री मईया जय जय गायत्री मईया॥
माला किताब फुल हथवा में सोहे,
चम चम रुप मईया मनवा के मोहे।
बरसे सनेहिया के धार हो, जय जय गायत्री मईया॥
तोहरा शरणियाँ में जे मईया आवे,
पाप दुःख कटी जाये सुखवा ऊपावे।
मईया न परे मझधार हो, जय जय गायत्री मईया॥
मन तन पर हरदम तु, रखिहा नजरिया,
बुटेन असरा के कबहुँ दियरिया।
अवगुण तु दिया बिसार हो, जय-जय गायत्री मईया॥

मेरे मन के मंदिर में

(धुन-देखें अपनी किस्मत में)

मेरे मन के मंदिर में, मूरत है घनश्याम की।
मेरे साँस के इक तारे में, धुन है उसी के नाम की॥

कितना दयालू तू है, बंशीवाला, बिन माँगे दिया मुझको उजाला।
पूछे मेरे साँझ सतारे, जब से मैं आई श्याम के द्वारे॥
जब से मैं आई श्याम के द्वारे॥

चरणों की मैं धुल उठाऊँ, धुल को माथे तिलक लगाऊँ।
श्याम की भक्ति, श्याम की पूजा, और नहीं मुझे काम न दूजा॥
और नहीं मुझे काम न दूजा॥
न सुद है जलपान की, न सुद है विश्राम की॥

बदलाये जो दृष्टिकोण

बदलाये जो दृष्टिकोण तो, हर मानव बदलाई शके छे।
दृष्टिकोण ना परिवर्तन थी, अखिल विश्व बदलाई शके छे॥
कोई असंभव नथी विश्व मां, निश्चय करवा मां आवे।
संकल्पो ना नवा जोमथी, मक्कम डग भरवा मां आवे।
शुं मजाल छे तूफानी नी, तेनी दिशा बदलाई शके छे॥
युग परिवर्तन नी आ वेलाओ, आवो दृष्टिकोण बदलावे।
गंगा नी धारा सम वहीने, जीवन धारा ने बदलावे।
जन मानस छे शापित तेनुं, ओ विधान बदलाई शके छे॥
मानव ना विचार बदले तो, धरती स्वर्ग सभी थई जाये।
विचार क्रांति नी उन्मत धारे, राग, द्वेष दुषण धावाये।
सूर्योदय जो थाय ज्ञान नो, घोर निशा बदलाई शके छे॥

हर प्राणी मां रुप तमारा

(गुजराती-गीत)

हर प्राणी मां रुप तमारा, कमल समा मुस्काता।
रवि मंडल नी ल्योति तमे छो, हे गायत्री माता॥

जड़ माटी ना आ पुतन्न मां, आपे भर्यु छे चेतन।
बुद्धि विवेक मेलवी ते मां, सार्थक कर्यु मनुज तन।
तमने समर्पित थई ने मानव, परम हंस बनी जातां॥

नारी मात्र मां निरखी जेणे, प्रकट तमारी छाया।
बस तेओज हे जग जननी, उत्तम दर्शन पाम्या।
तमने पामी बँधाये छे, सौथी निर्मल नाता॥

रम्या करे छे अंश तमारो, बाल नी सुन्दर छवि मां।
तमे साधना छो साधक मां, दिव्य कल्पना कवि मां।
अखिल ज्ञान नुं सत्य तमारा, गौरव निशदिन गातां॥

अेवी शक्ति दो अमने मैया, युग परिवर्तन थाये।
दुःख दर्द ना रहे धरती पर, नवो समाज बनावे।
तमने गमता जे साधक ते, सौना प्यारा थई जातां॥

नाचता गाना और बजाना मनुष्य समाज की सुखद कलायें हैं, यदि यह न हो तो मनुष्य जीवन जैसा नीरस और कुछ न रह जायेगा। -(वाङ १९ पृ. ६.१९)

गुरुजी ना नाम नी हो

(गुजराती-गीत)

गुरुजी ना नाम नी हो, माला छे डोक मां।
गायत्री ना नाम नी हो, माला छे डोक मां॥

माला छे डोक मां ने, मंत्र छे होठ मां-२
स्हेजे विसराय नहीं हो, माला छे डोक मां॥

झुठुं बोलाय नहि, खोटूं लेवाय नहीं-२
अवलु चलाय नहीं हो, माला छे डोक मां॥

क्रोध कदी थाय नहीं, पर ने निंदाय नहिं-२
कोई ने दुभाए नहीं हो, माला छे डोक मां॥

पर ने पीड़ाय नहीं, हुं पद धराय नहीं-२
कोई ने दुभाऐ नहीं हो, माला छे डोक मां॥

सुख मां हँसाय नहिं, दुःख मां तजाय नहीं-२
भक्ति भुलाय नहीं हो, माला छे डोक मां॥

धन ने संघराय नहीं, एकला खवाय नहीं-२
भेद रखाय नहीं हो, माला छे डोक मां॥

बोल्युबदलाव नहिं, टेकने तजाय नहीं-२
कंठी लजवाय नहिं हो, माला छे डोक मां॥

गायत्री बाल कहे, सत्य चूकाय नहिं-२
मावड़ी भूलाय नहिं हो, माला छे डोक मां॥

तू रंगाई जा ने रंग मां

तू रंगाई जा ने रंग मां, तू जोड़ाई जा ने संग मां।
गुरुदेव तणा सत्संग मां, भगवती मां ना रंग मां॥
युग संधि नी आ वेला, छे गुरु नू कार्य करी ले।
तेड़ू आवसे जम नूँ ज्यारे, जावू पड़से संग मां॥
आजे करशूं काले करशूं, क्या रे करशूं काम गुरुनूं।
श्वास घूटाशे नाड़ी तूटशे, प्राण ना रहे तारा अंग मां॥
मारूं मारूं करतो जाये छे, कोई नथी अहिंया तारूं।
दान पूण्य थी दूर रह्यो तू, फोकट फरे छे घमण्ड मां॥
नल नील सुग्रीव जामवंते, प्रभु नुं कार्य कर्युं तू।
हनुमान जी ये निज नू जीवन, प्रभु ने शरणे धर्युं तू
नानी सी खीसकोली ने पण, प्रभु ऐ लीधी संग मां

अमारी नाव ने गुरुवर

अमारी नाव ने गुरुवर, किनारे लावशो क्यारे।
दया सागर गणावो छो, दया वरसावशो क्यारे॥
मुँझायो जीवन मारा मा, कशी समजण नथी पड़ती।
बुझावे आग आ दि नी, जगा एेवी नथी जड़ती॥
अमारो हाथ झाली ने, तमे उगारशो क्यारे॥
अमे तो रात ने दिवस, तमारा गूणता गाता।
छता शाने आ दुनियाँ मा, दुःखों ना चहुँ ओर वाता॥
अमारी आँख ना आँसू, गुरुजी लुछशो क्यारे॥
अमारी आशा ने व्हाला, तमे निराश ना करशो।
तमे सिन्धु अमे बिन्दु, जुदाई ना हवे गणशो॥
अमारी उर नी अरजी, प्रभु स्वीकारशो क्यारे॥

शान्तिकुञ्ज तपस्थली नाम है

शान्तिकुञ्ज तपस्थली नाम है, तपोभूमि मथुरा ललाम है।
आँवलखेड़ा जन्मभूमि ग्राम है, जहाँ जन्में युग पुरुष श्रीराम है॥
जय श्री गुरुवर, गुरु चरणन वन्दन॥

वेदमूर्ति रहे वेदों के ज्ञान में,
ज्योति दिव्य जलाई जहान में,
तपे जीवन भर मानव कल्याण में,
उज्ज्वल भविष्य के आयाम में,
शान्तिकुञ्ज तपस्थली नाम है, तपोभूमि मथुरा ललाम है।

दुःख कष्टों का रहा अम्बार ये,
रूका नहीं कारवाँ उनके प्यार में,
आया जो भी उनके कोई द्वार है,
पाया माता पिता सा प्यार है,
शान्तिकुञ्ज तपस्थली नाम है, तपोभूमि मथुरा ललाम है॥

उनके जीवन सूत्रों को पचायें,
हर मन में देवत्व जगायें,
उनके गौरव यशगाथा गायें,
उनके कर्मों के दीपक सजायें,
शान्तिकुञ्ज तपस्थली नाम है, तपोभूमि मथुरा ललाम है॥

देव संस्कृति पताका फहराये,
सृजन शिल्पों की टोलियाँ बनायें,
देश हित जीना सबको सिखाये,
साधना स्वावलम्बन दिखाये,
शान्तिकुञ्ज तपस्थली नाम है, तपोभूमि मथुरा ललाम है॥

हे महाकाल भगवान

हे महाकाल भगवान, करो अब त्राण।
कि डमरू वाले, दुष्टों से हमें बचालें॥

दुष्टों ने शीश उठाया है, दानव दल अब बौराया है।
इनके चुंगल से हमको, कौन बचाले॥

तुम कालचक्र के स्वामी हो, हे महाकाल द्रुतगामी हो।
तुम हो युग परिवर्तन करने वाले॥

ताण्डव जब आप रचाते हो, दुष्टों को कुचलते जाते हो।
हो कुपित दृष्टि फिर तो कमाल कर डाले॥

त्रयताप ग्रसित संसार हुआ, जीवन भी अब तो भार हुआ।
त्रयताप मिटे पड़कर त्रिशुल के पाले॥

युग परिवर्तन बेला है, देखो शिवगण का मेला है।
हे महाप्राण! तुम ही प्राण उछाले॥

अब तो परिवर्तन होना है, रिपुदल का मर्दन होना है।
शिव रिझे तो भक्तों को अरे बचाले॥

श्री मन नारायण

श्री मन नारायण, नारायण हरि, हरि।
तेरी लीला है जग से न्यारी न्यारी॥ हरि हरि॥

दो अक्षर का नाम हरि का, लेकिन बड़ा सलोना।
तेरी लीला है जग से न्यारी न्यारी॥ हरि हरि॥

बद्री नारायण, नारायण हरि हरि॥
श्री मन नारायण, नारायण हरि हरि॥

लक्ष्मी नारायण, नारायण हरि हरि।
श्री मन नारायण, नारायण हरि हरि॥

हरि नाम का पारस जो छुले, वो हो जाये सोना।
तूने लाखो की विपदा टारी टारी॥ हरि हरि॥

श्रीराम आया है

श्रीराम आया है, युग की व्यथा मिटाने को।
जलाई ज्ञान की ज्योति, हमें जगाने को॥

भटक गई है मनुजता, अंधेरी राहों में।
चला है काल निगलने, दुषित विचारों को, श्रीराम आया है.... ॥

तपा लिया है निज को, बिखर रही किरणें।
निकल पड़े हैं जो घर-घर अलख जगाने को,श्रीराम आया है..... ॥

लुटा रहा वो ज्ञानमृत, बढ़ालो हाथ को बस।
पिया जहर भी वो, शिव तो हमें बचाने को, श्रीराम आया है...... ॥

आओ बसाये मन मंदिर में

आओ बसायें मन मंदिर में, झाँकी सीताराम की।
जिसके मन में राम नहीं, वो काया है किस काम की।।

गौत्तम नारी अहिल्यातारी, श्राप मिला अति भारी था।
शिलारूप से मुक्ति पाई, चरण राम ने डाला था।।
मुक्ति मिली तभी वो बोली, जय-जय सीताराम की।।

जात-पात का तोड़ बन्धन, शबरी माँ ने पढ़ाया था।
हँस-हँस खाते बेर प्रेम से, राम ने ये फरमाया था।।
प्रेमभाव का भूखा हूँ मैं, चाह नहीं किस काम की।।

सागर में लिख राम नाम, नल-नील ने पत्थर तैराये।
इसी नाम से हनुमान जी, सीताजी की सुध लाये।।
भक्त विभीषण के मन में, अब ज्योति जगी श्रीराम की।।

भोले बनकर मेरे प्रभु ने, भक्तों का दुःख तारा था।
भोले बनकर श्रीराम ने, दुष्टों को संहारा था।।
प्यार से प्रभु की महिमा गाओ, जय हो सीताराम की।।

सुख सरिता बहे गुरु

सुख सरिता बहे गुरु चरणन में, गुरु चरणन में।
गुरु पद रज धारन माथन पर, ज्योति जली तन जीवन में॥

गुरु ज्ञान का काजल लाग्यो, जबसे कामी नयनन में।
गुरु की अनुपम मूरत देख्यो, नभ वसुधा के कण-कण में॥

श्रद्धा औ विश्वास का दीपक, जलाले उर के आंगन में।
राम मिलेंगे गुरु कृपा से, क्यों भटके तू बन-बन में॥

महल अटारी धन, वैभव में, नाहि कामिनी कंचन में।
आठों याम निशि वासन बीते, हर पल गुरु के सुमिरन में॥

दुर्लभ जन्म वृथा मत करियो, झूठे जग के सपनन में।
अपने को पहचान रे मूरख, गुरु पद नख के, दर्पण में॥

गुरु त्रिदेव गुरु परम ब्रह्म गुरु, न्यारा जग के त्रिभुवन में।
मन पंछी तू करले बसेरा, गुरु भक्ति के मधुबन में॥

मुक्तक-यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान।
शीश दिये जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान॥

रेल चली रे भैया रेल चली

रेल चली रे भैया रेल चली, इस जीवन की रेल चली।
कभी ये आगे कभी पीछे, घुम रही है गली-गली।।
पहले स्टेशन बचपन का, लगता सबको प्यारा है।
खेल-खिलौने खेल रहा है, देखो एक नज़ारा है।।
खेल-खेल में रमा रहा तु, गाड़ी आगे निकल गई।।
दूसरा स्टेशन जो आया, कहते उसको जवानी है।
रंग-रेलियों में मस्त रहा तु, भूल गया वो कहानी है।।
छल औ कपट में फँसता रहा, गाड़ी आगे निकल गई।।
तीसरा स्टेशन जो आया, कहते उसे बुढ़ापा है।
उल्टी-सीधी वाणी बोले, भूल गया सब आया है।।
राम नाम नहीं निकले मुँह से, गाड़ी आगे निकल गई।।
चौथा स्टेशन जो आया, कहते उसे शमशान है।
इंजिन सारा बिगड़ गया है, रेल पड़ी बेकार है।।
कहत कबीर सुनो भई साधो, पड़ी-पड़ी यह रेल जली।।

वह धन्य सुहागिन है

वह धन्य सुहागिन है जिसने, भारत को तुलसी दास दिया॥

संसार प्रेम में बँधकर जब, पगलाया प्रियतम का योवन।
हो! रत्ना गुरु सम प्रेरक बन, खोले तुमने थे दिव्य नयन॥
मिलने आये तुमसे प्रियतम, तो भेज राम के पास दिया॥

यदि मानो तुलसी न होते, तो हिन्दी कहीं पड़ी होती।
उनके माथे पर रामायण की, बिन्दी नहीं जड़ी होती॥
ऋतु बसन्त देकर बदले में, जिसने था वह चौमास लिया॥

प्रभु आपकी कृपा से

प्रभु आपकी कृपा से, सब काम हो रहा है।
देते हैं शक्ति गुरुवर, मेरा नाम हो रहा है॥

पतवार के बिना ही, मेरी नाव चल रही है।
हैरान है जमाना, मंजिल भी मिल रही है॥
यह चमत्कार अनुपम, अविराम हो रहा है॥

मुझे हर कदम डगर पर, तूने दिया सहारा।
मेरी जिन्दगी बदल दी, तूने करके इक इशारा॥
एहसान पे तेरा ये, एहसान हो रहा है॥

मैं तो नहीं हूँ काबिल, तेरा पार कैसे पाऊँ।
टूटी हुई वाणी से, गुणगान कैसे गाऊँ॥
तेरी कृपा से सुन्दर, परिणाम हो रहा है॥

तुफान आँधियों में, तूने ही मुझको थामा।
तुम कृष्ण बनके आये, मैं जब बना सुदामा॥
तेरा करम ये मुझ पर, सरेआम हो रहा है॥

मुक्तक-
नीति यही है योग्य व्यक्ति ही, कुछ अद्भूत अनुदान पा रहे।
हम जैसे नर चीजों को क्यों, आप अमित वरदान दे रहे॥
मुक्तक-
आपका पाकर अनुग्रह, धन्य जीवन हो गया।
युगों युगों से खोज थी वह, लक्ष्य पावन मिल गया॥

मुझसे अधम अधीन

मुझसे अधम अधीन, उबारे न जायेंगे।
तो आप दीनबन्धु, पुकारे न जायेंगे॥
पृथ्वी के भार आपने, सौ बार उतारे प्रभु।
क्या मेरे पाप आज, उतारे न जायेंगे॥
हम बिक चुके हैं और, खरीदा है आपने प्रभु।
बस अब गुलाम गैर के, द्वारे न जायेंगे॥
तब तक चरण आपके, संतोष पायेंगे।
दृग बिन्दु से जब तक, ये पखारे न जायेंगे॥

मुक्तक-दीनानाथ अनाथ का, भला मिला संयोग।
अब की बेर तारो नहीं, तो हँसी करेंगे लोग॥
पशु, निषाद, खग,भीलनी, हीन, जाति, कुल नाम।
बिना योग, जप, तप किये, गये तुम्हारे धाम॥

मंगल मंदिर खोलो (शोक-सभा)

मंगल मंदिर खोलो दयामय, मंगल मंदिर खोलो।
मंगल मंदिर खोलो दयामय, मंगल मंदिर खोलो॥
जीवन बीता बड़े वेग से-२ बार
द्वार खड़ा शिशु भोलो, दयामय।
मिटा अँधेरा ज्योति प्रकाशित-२ बार
शिशु को गोद में ले लो, दयामय
नाम तुम्हारा रटा निरन्तर-२ बार
बालक से प्रिय बोलो, दयामय
दिव्य आश से आया बालक-२ बार
प्रेम अमिय रस घोलो, दयामय

मेरा रंग दे बसन्ती चोला

मेरा रंग दे बसन्ती चोला, मेरा रंग दे बसन्ती चोला।
मेरा रंग दे बसन्ती चोला, मेरा रंग दे,२मेरा रंग दे बसन्ती चोला॥
माई रंग दे बसन्ती चोला, माई रंग दे बसन्ती चोला॥

दम निकले इस देश के खातिर, बस इतना अरमान है।
एक बार इस राह में मरना, सौ जन्मों के समान है॥
देख के वीरों की कुर्बानी,२ अपना दिल भी बोला॥
मेरा रंग दे बसन्ती चोला 2

जिस चोले को पहन शिवाजी, खेले अपनी जान पे।
जिसे पहन झाँसी की रानी, मिट गयी अपनी आन पे॥
आज उसी को, पहन के निकलाऽऽ, हम मस्तों का टोला॥
मेरा रंग दे बसन्ती चोला 2

इस चोले को पहन भगतसिंह, हँस-हँस शीश नवाया था।
पद्मावती और दुर्गावती को, यह चोला ही भाया था॥
बन्दा बैरागी ने पहना, यही बासन्ती चोला॥
मेरा रंग दे बसन्ती चोला 2

अधरम् मधुरम् वदनम्

अधरं मधुरं वदनं मधुरं, नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ १॥

वचनं मधुरं चरितं मधुरं, वसनं मधुरं वलितं मधुरम।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं,मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ २॥

वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः, पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ ३॥

गीतं मधुरं पीतं मधुरं, भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ ४॥

करणं मधुरं तरणं मधुरं, हरणं मधुरं स्मरणं मधुरम्।
वनितं मधुरं शमितं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ ५॥

गुञ्जा मधुरा माला मधुरा, यमुना मधुरा वीची मधुरम्।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं, मधुराधितेरखिलं मधुरम्॥ ६॥

गोपी मधुरा लीला मधुरा, युक्तं मधुरं भुक्तं मधुरम्।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ ७॥

गोपा मधुरा गावो मधुरा, यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
पलितं मधुरं फलितं मधुरं,मधुराधिपतेरलिखलं मधुरम्॥ ८॥

अधमों को नाथ उबारना

अधमों को नाथ उबारना, तुम्हें याद हो कि न याद हो।
मद खलजनों को उबारना, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥

प्रहलाद जब मरने लगा, खंजर पे सिर धरने लगा।
उस दिन का खम्ब उखाड़ना, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥

धृतराष्ट्र के दरबार में, दुःखी द्रोपदी की पुकार में।
साड़ी के थान में संवारना, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥

सुरराज ने जो किया प्रलय, ब्रजधाम बसने के समय।
गिरवर नखों पर धारना, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥

हिगवन्ध जिसके निराश हो, केवल तुम्हारी आश हो।
उनकी दशायें सुधारना, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥

रघुवर तुमको मेरी लाज

रघुवर तुमको मेरी लाज।
सदा-सदा मैं शरण तिहारी, तुमहि गरीब निवाज।।

पतित उधारन बिरध तुम्हारो।
सबनन सुनी आवाज।। रघुवर तुमको मेरी लाज।।

हो तो पतित पुरातन कहिये।
पार उतारो जहाज।। रघुवर तुमको मेरी लाज।।

अध खण्डन दुःख भंज के जन के।
यही तिहारो काज।। रघुवर तुमको मेरी लाज।।

तुलसी दास कृपा कीजै।
आरती दान देहु आज।। रघुवर तुमको मेरी लाज।।

अगर है ज्ञान को पाना

अगर है ज्ञान को पाना, गुरु की शरण में जा भाई।

जटा सिर पर रखाने से, भस्म तन पर रमाने से।
सदा फल-फूल खाने से, कभी नहीं मुक्ति को पाई॥

बने सूरत पुजारी है, तीर्थ यात्रा प्यारी है।
करे व्रत नेम भारी है, भरम मन का मिटे नाई॥

कोटि सूरज शशि तारा, करे प्रकाश मिल सारा।
बिना गुरु घोर अंधियारा, न प्रभु का रूप दरसाई॥

ईश सम जान गुरु देवा, लगा तन-मन करो सेवा।
ब्रह्मानंद मोक्ष पद मेवा, मिले भव बंध कट जाई॥

ईश्वर अल्लाह वाहे गुरु

ईश्वर अल्लाह वाहे गुरु, चाहे कहो श्रीराम।
मालिक सबका एक है, अलग-अलग है नाम॥

सबसे प्रभु का प्यारा नाता, वो ही पिता है वो ही माता।
मन्दिर मस्जिद या गिरिजा घर, सभी प्रभु के धाम॥

गीता,बाइबिल या कुरान है, मालिक का सब ही निधान है।
सबका प्यारा सदा बनाता, सबके बिगड़े काम॥

सब धर्मों को प्रेम सिखाता, सबको सच्ची राह दिखाता।
दूर किया करता है दाता, सबके कष्ट तमाम॥

अमर आत्मा सच्चिदानन्द

अमर आत्मा, सच्चिदानन्द मैं हूँ।
शिवोऽहम् शिवोऽहम शिवोऽहम् शिवोऽहम्॥
जपाकर जपाकर, शिवोऽहम् शिवोऽहम्॥

अखिल विश्व का जो, परमात्मा है।
सभी प्राणियों में, वही आत्मा है॥
जिसे शस्त्र काटे न अग्नि जलाये।
गलाये न पानी न मृत्यु मिटाये॥

सभी प्राणियों के जो भीतर समाया।
अमर आत्मा है, मरणशील काया॥
है चाँद और सूरज में प्रकाश जिसका।
है तारों सितारों में आभास जिसका॥

अजर और अमर जिसको, वेदों ने गाया।
वही ज्ञान अर्जुन को, हरि ने सुनाया॥
है व्यापक जो कण-कण में है वास जिसका।
नहीं तीन कालों में हो नाश जिसका॥
जपाकर-जपाकर, शिवोऽहम् शिवोऽहम्॥

आसरा इस जहाँ का

आसरा इस जहाँ का मिले न मिले।
मुझको तेरा सहारा सदा चाहिए॥
चाँद-तारे फलक पर दिखे न दिखे।
मुझको तेरा नज़ारा सदा चाहिए॥

यहाँ खुशियाँ हैं कम और ज्यादा है ग़म।
जहाँ देखो वही है भरम ही भरम॥
मेरी महफिल में शमाँ जले न जले।
मेरे दिल में उजाला सदा चाहिए॥

कभी वैराग है कभी अनुराग है।
यहाँ बदलते है माली वही बाग है॥
मेरी चाहत की दुनियाँ बसे न बसे।
मेरे दिल में बसेरा तेरा चाहिए॥

मेरी धीमी है चाल और पथ है विशाल।
हर कदम पर मुसीबत हैअब तो सम्हाल॥
पैर मेरे थके ये चले न चले।
मुझको तेरा इशारा सदा चाहिए॥

मुक्तक-

ए रसुले खुदा भीख दे दो मुझे,
मुझको गैरों की दौलत नहीं चाहिए।
मुझको जन्नत न दे मुझको-दीदार दे,
मुझको सज़दों की कीमत नहीं चाहिए।
जिन्दगी तेरे टुकड़ों पे पलती रहे,
मुझको ताजे हुकूमत नहीं चाहिए॥

आया शरण ठोकरे

आया शरण ठोकरें जग खाके,
रहुँगा प्रभु तेरी, दया दृष्टि पाके।

पहले मगन हो सुखी नींद सोया,
सब कुछ पाने का सपना सँजोया,
मिला तो वही जो लाया लिखाके॥

मान ये काया का है बस छलावा,
लंका का मालिक भी बचने न पाया,
रखुँगा कहाँ तक मैं खुद को बचाके॥

कर्मों की लीला बड़ी है निराली,
हरिश्चन्द्र मरघट की करे रखवाली,
समझ में ये आया सब कुछ लुटाके॥

न है चाह कोई न है कोई इच्छा,
अपनी दया की मुझे दे दो भिक्षा,
जिसने सब छोड़ा उसे तूने राखे॥

आओ हंस की सवारी

आओ हंस की सवारी, तू ही दुर्गा है तू ही काली।
माता गायत्री दीजै ज्ञान रे, मैया सबका मिटे दे अज्ञान रे॥

बिलख रहे हैं बच्चे तेरे, थोड़ी राह दिखाओ। मैया
डूब रही जीवन की नैया, जल्दी पार लगाओ॥
आओ लम्बी भुजाओं वाली, पुस्तक कमण्डल वाली।
बालक हैं तेरे नादान री, मैया सबका मिटादे अज्ञान रे॥

मातु सरस्वती और शारदा, सदा आरती गावे।
अष्टसिद्ध नवसिद्ध आपके, ठाढ़े चवर डूलावे॥
आओ अमृत बरसाने वाली, जीवन जगाने वाली।
छाई अनोखी तेरी शान रे, मैया सबका मिटादे अज्ञान रे॥

नर किन्नर गंधर्व देवता, हरदम शीश झुकावे।
मंगल में मंगल के दाता, सुमिर आरती गावे॥
आओ विघ्न हटाने वाली, मुक्ति दिलाने वाली॥
ब्रह्मा के बाजे मेहान रे, मैया सबका मिटादे अज्ञान रे॥

श्री रामजी पिता हमारे, धन दौलत न होना।
एक बार फिर से भारत को, बना दे जैसा सोना॥
आओ बिगड़ी बनाने वाली, सबको हर्षाने वाली॥
बुद्धि पे बैठा शैतान, मैया सबका मिटादे अज्ञान रे॥

आदमी हर पल धरा पर

(जनसंख्या वृद्धि)

आदमी हर पल धरा पर बढ़ रहे हैं।
मन मगर सुनसान बनते जा रहे हैं॥

भागते रहना नियति अब बन गई है।
हम यहाँ ऐसे हुए लाचार है अब॥
घोर जंगल में उगे बौने विटप से।
देह मन से आदमी बीमार है अब॥
नाश को देते निमन्त्रण आज जीवन।
डूबते जलयान बनते जा रहे हैं॥

हर निमिष उगते असंख्यों तरू–तलाएँ।
यदि न इनके जन्म पर अंकुश लगेगा॥
तो विषैला बन बनेगा विश्व सारा।
सांस लेना भी न सम्भव हो सकेगा॥
फिर नहीं जीवन सुरक्षित रह सकेंगे।
जो स्वयं शमशान बनते जा रहे हैं॥

भूमि का यदि भार बढ़ता ही रहा तो।
भूल जायेगा मनुज अस्तित्व अपना॥
लक्ष्य सब उसके अधूरे ही रहेंगे।
एक भी होगा न फिर साकार सपना॥
इसलिए गुरुदेव के सुनलो बचन जो।
जागरण के गान बनते जा रहे है॥

गृहस्थाश्रम के तपोवन का यहाँ पर।
आत्मसंयम यदि सुदृढ़ आधार होगा॥
संस्कारित स्वस्थ शिशुओं से सुसज्जित।
स्वर्ग सा उत्कृष्ट कर परिवार होगा॥
शान्त प्रबल होंगे प्रबल झोंके हवा के।
आज जो तूफान बनते जा रहे है॥

आगे है जो देख उसे

आगे है जो देख उसे, पीछे की सोच बेकार।
होनी तो होके रहे, बस यही जगत का सार॥

दुर्लभ हैं जो, कर ले अपने कर्म से तू साकार।
कर्म तपस्या कर्म ही पूजा कर्म में है दीदार॥

कर्म करेगा फल का बन्दे होगा तू हकदार।
राह न रुक पायेगी, चाहे ऊँची हो दीवार॥

जीवन की नैया फंस जाती, कभी-कभी मझधार।
जगत पिता से प्रीत लगा ले, हो जायेगा पार॥

दिल ही मन्दिर दिल ही मस्ज़िद, गिरजाघर का द्वार।
दिल से दिल की लगन लगे, तो मिल जाये दिलदार॥

ना काबे कैलाश में रहता, मक्के का सरकार।
ऐ 'निराश' पंछी उसका है, खुला सदा दरबार॥

एक हड्डी मुझसे करने

एक हड्डी मुझसे करने लगी, ब्यान रे सांवरिया।
वो पड़ी थी सुरसरी बीच तीर मजधार रे, सावरियां॥

हड्डी बोली यार सुनो, क्यो मुझको देख घिनाते हो।
पास नही तुम आते हो, थूँ-थूँ कर नाक दबाते हो॥
बचा-बचा पग धरते हो, छूने से बहुत डराते हो।
अगर धोखे से छू जाती तो, आप तुरन्त नहाते हो॥
अरे किसी दिन हम भी थे, इंसान रे सांवरिया॥

रोज इसी तन पर मल-मलकर, साबुन तेल लगाते थे।
और पहनने की खातिर, कपड़े जेवर मंगवाते थे॥
आते थे लोग हमसे मिलने, हम उनसे मिलने जाते थे।
बड़ी-बड़ी महफिल में जाकर, मान बड़ाई पाते थे॥
अब खाता मरघट पर कागा, स्वान रे सांवरिया॥

हुए अंग बेकार सभी, जब निकल गई वह ज्योति।
कहां गये वो संगी साथी, कहां वो हीरा मोती॥
अपने ही स्वार्थ के कारण, सारी दुनियां रोती।
अन्त समय में इस शरीर की, यहां तीन गति होती॥
फेंको गाड़ो या जला दो, शमशान रे सांवरिया॥

मुक्तकः-
एक दिन शाम शहर हम निकले, दिल मे कुछ अरमान थे।
एक तरफ थी झाड़ियां, एक तरफ शमसान रे॥
पैर तले एक हड्डी आई, उसके यही ब्यान रे।
चलने वाले संभल के चलना, हम भी इंसान थे॥

ऐसी शक्ति हमें दो दाता

ऐसी शक्ति हमें दो गुरुवर, प्यार तुम्हारा पायें हम।
घर-घर जाकर अलख जगाकर, दुनियाँ को समझाएँ हम॥

विकट समय है आने वाला, महाकाल को याद करो।
थोड़ा समय निकालो भाई, प्रभु का जिसमें काम करो॥
होगा जल्दी युग परिवर्तन, यह विश्वास दिलायें हम॥

आज साधलो अपने मन को, लोभ मोह का त्याग करो।
अपने मन-मन और रग-रग में,नयी शक्ति का संचार करो॥
पहले त्यागें लोभ-मोह को, फिर से कहने जायें हम॥

दुर्व्यसनों का त्याग करो तुम, बुद्धि अपनी ठीक करो।
धन और सेहत सभी गँवाकर, जीवन न बर्बाद करो॥
भले-बुरे का ज्ञान कराके, सही मार्ग दिखलायें हम॥

प्रभु तेरी करें मन प्रार्थना

प्रभु तेरी करें मन प्रार्थना, जीवन बनें आराधना।।

मालिक है सबका एक तो, अनेक बनके क्यों रहें।
आपस में सुख मिलबाँट कर, दुःख दर्द मिलजुल कर सहें।।
समझें अगर सारे इसे, जन्नत बने सारा जहाँ।।

अल्हा का तुम नूर हो, शिव शक्ति से भरपूर हो।
तुम हो मसीहा प्यार के, तुम नफ़रतों से दूर हो।।
तुम शक्ति का संदेश हो, तुम एकता की भावना।।

किसी गिरते को उठाओ

किसी गिरते को उठाओ, तो कोई बात बने।
किसी रोते को हंसाओ, तो कोई बात बने॥

प्यार अपनो से तो कोई भी निभा लेता है।
प्यार गैरों से निभाये, तो कोई बात बने॥

काँटे राहों में बिछाना तो बड़ी बात नहीं।
फूल राहों में बिछाओ, तो कोई बात बने॥

हँसके खुशियों में हो जाती है दुनियाँ शामिल।
काम दुःख–दर्द में आये, तो कोई बात बने॥

हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, तो बने हैं इन्साँ।
आदमी बन के दिखाये, तो कोई बात बने॥

मुक्तक–
किनारा ढूँढ़ता है तू, किसी का खुद किनारा बन।
किसी को राह दिखलाये, गगन का वो सितारा बन॥

करम खोटे तो ईश्वर के

करम खोटे तो ईश्वर के, गुण गाने से क्या होगा॥
किया परहेज ना बिल्कुल, दवा खाने से क्या होगा॥

समय की एक ठोकर ही, बदल देती है जीवन को।
जो ठोकर से भी ना माने, उसे समझाने से क्या होगा॥

समय जब बीत जाता है, नहीं फिर हाथ आता है।
लिया चर खेत चिड़ियों ने, तो फिर पछताने से क्या होगा॥

यहीं मरना यहीं जीना, ये जीवन चार दिन का है।
ना जिसने कार्य किया प्रभु का, उसके जीने से क्या होगा॥

क्या लेकर तू आया

क्या लेकर तू आया जगत में, क्या लेकर तू जायेगा।
अब तो सोच समझ मन मूरख, आखिर में पछतायेगा॥

भाई बन्धु मित्र तुम्हारे, मरघट तक संग जायेंगे।
स्वार्थ के दो आंसू देकर, लौट-लौट घर आयेंगे॥
कोई न तेरे संग चलेगा, काल तुझे ही खायेगा॥

कंचन जैसी कोमल काया, तुरंत जलाई जायेगी।
जिस नारी से प्रेम घनेरा, वो भी पास न आयेगी॥
एक माह तक याद करेगी, फिर तू याद न आयेगा॥

राजा रंक पुजारी पंडित, सबको एक दिन जाना है।
आँखें खोलकर देख बावरे, जगत मुसाफिर खाना है॥
दिव्य कहे ये पाप पुण्य है, अंतिम सांस निभायेगा॥

कमाले धर्म धन प्यारे

कमाले धर्म धन प्यारे, सफर में काम आयेगा।
सकल सुख सम्पदा होगी, बड़ा आनन्द पायेगा॥
बनेगी मृत्यु भी माता, प्रभु आदेश पर चलकर।
तू खिलते पुष्प की भांति, बदल चोले को जायेगा॥
मिले परलोक का सुन्दर, सजा वातावरण सारा।
है केवल धर्म जो दोंनो, लोगों को बनाएगा॥
ले सुन भोगकर आनन्द, मुक्ति का जो लौटेगा।
विभूति तू बड़े धर्मात्मा, घर की कहायेगा॥
बनेगा देश का नेता, अगामी अपने जीवन में।
चलेगी उस तरफ दुनियाँ, जिधर को तू चलायेगा॥

कौन बड़ा परिवारी हमसा

कौन बड़ा परिवारी हमसा, कौन बड़ा परिवारी।

सत्य पिता है, धर्म है भाई, लज्जा है महतारी-२।
शील बहन,संतोष पुत्र है, क्षमा हमारी नारी॥
हमसा कौन बड़ा परिवारी..................॥

आशा सासु, तृष्णा है साली, लोभ-मोह ससुरारी।
अंहकार है, ससुर हमारा, ये सबके अधिकारी॥

ज्ञान गुरु बैराग्य है चेला, सदा करत हितकारी।
काम,क्रोध,दोऊ चोर बसत है, इन कर दबदबा भारी॥

दिल है सुरता है राजा, बुद्धि मंत्री भारी।
राम-नाम एक नगर है अंदर, कहे कबीर विचारी॥

किया था तुमसे जो वादा

किया था तुमसे जो वादा, उसे भरसक निभाते हैं।
तुम्हारी चाह के माफ़िक, नयी महफ़िल सजाते हैं॥

तुम्हारे घर में है रोशन, सितारे चाँद सूरज सब।
जरूरत के मुताबिक हम, यहाँ दीपक जलाते हैं॥

बनाया तुमने इन्साँ को, फरिश्तों से भी बहतर ही।
जो खुद को भूल बैठे हैं, उन्हें शीशा दिखाते हैं॥

बनाई तुमने यह दुनियाँ, बहुत ही खुशनुमा–सुन्दर।
कि जो ग़मगीन दिखते हैं, उन्हें हँसना सिखाते हैं॥

तुम्हारे प्यार ने यूँ तो, सभी को थाम रक्खा है।
मिले जो प्यार के भूखे, उन्हें दिल से लगाते हैं॥

नहीं दुश्वार है कुछ भी, अगर इन्सान चाहे तो।
जो हिम्मत हार बैठे हैं, उन्हें जीना सिखाते हैं॥

गुरुदेव दया करके

गुरुदेव दया करके मुझको अपना लेना।
मैं शरण पड़ा तेरी, चरणों में जगह देना॥

करूणा निधि नाम तेरा, करूणा दिखलाओ तुम।
सोये हुए भक्तों को, हे नाथ जगाओ तुम॥
मेरी नाव भँवर डोले, उस पार लगा देना॥

तुम सुख सागर हो, निर्धन के सहारे हो।
इस जग में समाये हो, मुझे प्राणों से प्यारे हो॥
नित माला जपूँ तेरी, नहीं दिल से भुला देना॥

पापी हूँ या कपटी हूँ, जैसा भी हूँ तेरा हूँ।
नहीं नाथ भुलाना मुझे, इस जग में अकेला हूँ॥
मैं दुःख का मारा हूँ, मेरा दुःख मिटा देना॥

मैं सबका सेवक हूँ, तेरे चरण का चेरा हूँ।
घर द्वार छोड़कर माँ, जीवन से खेला हूँ॥
तेरे दर का भिखारी हूँ, मेरा भूख मिटा देना॥

गंगे नमामि, नमामि

गंगे नमामि, नमामि, नमामि।

गंगे तेरे स्मरण मात्र से, शीतल मन हो जाता है।
एक बार भी नाम लिए से, जनम-मरण मिट जाता है॥
कानों में सुख देने वाला, गंगा नाम तुम्हारा है।
अंत समय मेरे मुख में, नामामृत का प्याला हो॥
गंगे नमामि, नमामि, नमामि॥

तेरे तट के काग और खग भी, पूर्ण सुखी संतोषी है।
इन्द्रपुरी की चाह नहीं तेरे तट के अभिलाषी है॥
ऐसा तेरा द्वार देश जो, जनम-मरण का नाश करे।
मेरी इच्छा एक यही है, मुझको उसका वास मिले॥
गंगे नमामि, नमामि, नमामि॥

जिसके भेद को वेद न जाने, नेति-नेति ही कहता है।
जहाँ जीव की वाणी तो क्या, मन भी गति नहिं पाता है॥
अपनी महिमा से तमनाशी, ऐसा नित्य निराकारी।
ब्रह्मरूप है निर्मल जिसका, वो ही गंगा है न्यारी॥
गंगे नमामि, नमामि, नमामि॥

जिन लोगों पर तेरी दृष्टि, पड़ जाती है मंगलकारी।
कौन तुम्हारी महिमा गावे, छूटती उसकी दुनियादारी॥
ईर्ष्या वाली पार्वती का, मान नहीं शिव गिनते हैं।
प्रेम सहित शिव गंगाजी को, नित प्रति सिर पर धरते हैं॥
गंगे नमामि, नमामि, नमामि॥

चलो साथियों एक आँगन

चलो साथियों एक आँगन बनायें।
दीवारों में ये मन, घुटा जा रहा है॥

दीवारें हैं ये धर्म और जातियों की,
नहीं जात है दीप और बातियों की।
जिन्हें रास आते नहीं है अंधेरे,
उन्हीं का हृदय आज अकुला रहा है॥

दीवारें हैं ये स्वार्थ या कामना की,
करो कामना पर विजय भावना की।
बहे लोक कल्याण की नित्य गंगा,
लिपट स्वार्थ में युग ही पछता रहा है॥

बनाया था प्रभु ने जगत सज्जनों का,
जनक है जो नदियों पहाड़ों वनों का।
बने हैं प्रकृति के नियम और सीमा,
मनुज ही गलत राह पर जा रहा है॥

पिता एक हैं पुत्र भी एक होंगे,
मिटेगा गलत भेद सब एक होंगे।
बड़ा है न कोई, न छोटा यहाँ पर,
लहू एक ही सब में लहरा रहा है॥

चार दिना रो चमक

चार दिना रो चमक चॉदणो, आखिर में ढल जावेला।
पुण्य कमाई कर ले भाया, जीवन में सुख पावेला॥

लख चौरासी कर ले फिरतो, मनुष्य जमारो पायो है।
ज्ञानी पूछे आ बतलावे कहाँ कहाँ से आयो है॥
चेत सके तो चेत दीवाना, अँधियारो फिर छावेला॥

गफलत की निद्रा में भाई, ऐसा मत ना सोइजे रे।
जीवन री पावन धरती में, चोखो बिजड़ो बोइजे रे॥
बुरा काम सुदूर हटेला, फिर तो आनन्द पावेला॥

धर्म रे निर्मल झरना में, पावन कर ले आत्मा।
तू है थारो कर्ता धर्ता, बण जावे परमात्मा॥
विजय तुम्हारी जद होवेला, दुनियाँ में गुण गावेला॥

प्रभु नाम की पूँजी ले ले, आगे रेवे नहीं टोटो।
हरख हिया में जगा दिवलो, झूठो जीवन है खोटो॥
नशा पता ने छोड़ मानवी, जन्म सफल हो जावेला॥

गायत्री मंत्र की दीक्षा लेकर, बदलो अपनी भावना।
हम बदलेंगे–युग बदलेगा, यही करके दिखलाना॥
चालो रे सद्‌गुरु के द्वारे, पाप कर्म कट जावेला॥

जिन्दगी एक किराये का

जिन्दगी एक किराये का घर है,
एक न एक दिन बदलना पड़ेगा।
मौत जब तुझको आवाज देगी,
घर से बाहर निकलना पड़ेगा॥

ढेर मिट्टी का हर आदमी है,
बाद मरने के होना यही है।
या जमीनों में ताबुत बनेगी,
या चिताओं पे जलना पड़ेगा॥

ये जवानी है पल भर का सपना,
ढूँढ़ले अब तू मेहबूब अपना।
ये जवानी अगर ठहर गई तो,
उम्र भर हाथ मलना पड़ेगा॥

ये घमण्ड और ये जोशे जवानी,
चन्द्र लम्हो की है ये कहानी।
दोस्तों शाम तक देख लेना,
चढ़ते सूरज को ढलना पड़ेगा॥

रात के बाद होगा सबेरा,
देखना है अगर दिन सुनहरा।
पाँव फूलों पे रखने से पहले,
तुझको काँटो पे चलना पड़ेगा॥

ये पशव्वर ये जोशे जवानी,
चंद लम्हौ की है जिन्दगी।
ये 'बशर' शाम तक देख लेना,
चढ़ते सूरज को ढलना पड़ेगा॥

जीवन में कुछ करना है

जीवन में कुछ करना है, मन को मारे मत बैठो।
आगे आगे बढ़ना है तो, हिम्मत हारे मत बैठो॥

चलने वाला मंजिल पाता, बैठा पीछे रहता है।
ठहरा पानी सड़ने लगता, बहता निर्मल होता है।
पाँव मिले चलने की खातिर, पाँव पसारे मत बैठो॥

तेज दौड़ने वाला खरहा, दो पल चलकर हार गया।
धीरे धीरे चलकर कुछआ, देखो बाजी मार गया।
चलो कदम से कदम मिलाकर, दूर किनारे मत बैठो॥

धरती चलती तारे चलते, चाँद रात भर चलता है।
किरणों का उपहार बाँटने, सूरज रोज निकलता है।
हवा चले तो महक बिखरे, तुम भी प्यारे मत बैठो॥

जब कोई नहीं आता

जब कोई नहीं आता, गुरुदेव आते हैं।
मेरे दुःख के दिनों में, बड़ा काम आते हैं॥
नैया मेरी चलती है, पतवार नहीं मिलती।
किसी और की अब मुझको, दरकार नहीं होती॥
मैं डरता नहीं रस्ते, सुनसान आते हैं॥
कोई याद करे जब भी, वो जान लेते हैं।
कोई प्यार करे उनसे, वो उनके होते हैं॥
वो बिन बोले दुःख को पहचान लेते हैं॥
वो इतना बड़ा होकर, दुखियों से प्यार करें।
चाहे छोटा हो या बड़ा, सबको स्वीकार करें॥
हम भक्तों का कहना, वो मान लेते हैं॥

जय जय हे जगदम्बे माता

जय जय हे जगदम्बे माता।
द्वार तिहारे जो भी आता, बिन माँगे सब कुछ पा जाता॥

जब जब जिसने तुझको पुकारा,तूने दिया माँ बढ़के सहारा।
हर भूले राही को तेरा, प्यार की राह दिखाता॥

राजा हो या कोई भिखारी, पापी हो या कोई पुजारी।
लेकिन तूने जोड़ा सबसे, माँ बेटे का नाता॥

तू चाहे तो जीवन दे दे, चाहे तो पल में जीवन ले ले।
जन्म मरण सब हाथ में तेरे, हे शक्ति हे माता॥

आया हूँ शरण में तेरी

आया हूँ शरण में तेरी, उपकार करो माँ।
करुणा की सागर हो, मेरा उद्धार करो माँ॥
हे माँ! गायत्री, हे माँ! गायत्री॥

तूने न जाने कितनों की, बिगड़ी सँवार दी।
विनति सुनी है उसकी माँ, जिसने पुकार की॥
हम भी तेरे बालक, हमें प्यार करो माँ॥

तेरे जैसा दानी नहीं, कोई संसार में।
है क्या कमी माँ तेरे, इस सच्चे दरबार में॥
अपनी ममता से मेरा, भण्डार भरो माँ॥

तेरे सूरज ने दी है माँ, सूरज की लाली।
चन्दा ने चाँदनी माँ तेरी, बिदियाँ हो पाली॥
तारों की चूड़ियाँ हाथों में, चमत्कार करो माँ॥

जिसने पकड़ी प्रेम की डोरी

जिसने पकड़ी प्रेम की डोरी, उसे मिले श्रीराम।
प्रेम के निर्मल झरने से, धुल जाते पाप तमाम॥
बोलो राम राम राम श्रीराम राम राम॥

प्रेम आत्मा के प्रकाश का, सूत्र रूप है मानकर।
प्रेम जीव का ज्ञान बीज है, सुख पावो पहचान कर॥
प्रेम पंथ पर ऽऽऽ चलने वाला, पाये मंगल धाम॥

प्रेम विहीन रहा जो मानव, पशु की संज्ञा पाता है।
दो अक्षर का प्रेम सदा जो, स्वतः प्रेम बन जाता है॥
यह मानवता ऽऽऽ का साधक करता है ललित ललाम॥

प्रेम समर्पण का आकर्षण, बनकर एकाकार करें।
प्रेम जीव भव बन्धन के, बन्धन से उद्धार करें॥
प्रेम खजाना ऽऽऽ पाता है नर, बिना खर्च किये दाम॥

जग-जननी जय माँ अम्बे

जग जननी जय माँ अम्बे, जग जननी जय दुर्गे माँ।
भय हारिणी भव तारिणी, भव भामिनी तू माँ॥

तू ही सत् चित् सुखमय तू ही, शुद्ध ब्रह्मरूपिणी तू है।
सत्य सनातन सुन्दर तू माँ, अमृत रूपिणी माँ॥

राम, कृष्ण तू सीता तू ही, बृजरानी राधा तू है।
तू वांछा कल्पद्रुम हे माँ, कामधेनु तू माँ।

दस विद्या नवदुर्गा तू है, अष्ट मातृका योगिनी तू है।
तू पर धाम निवाशिनी हे माँ, भवभय हारिणी माँ॥

हम अति दीन दुःखी हैं माता, विषम जाल हैं घेरे माता।
करुणाकर करुणामयि माता, जग सुखदायिनी माँ॥

मुक्तक–
विश्व रूपिणी हे! जगदम्बे, तू ही भाग्य त्रिधात्री है।
ऋद्धि, सिद्धि सौभाग्य प्रदायिनी, शान्ति और सुखदात्री है॥

जिन्हें है मोक्ष की इच्छा

जिन्हें है मोक्ष की इच्छा, जपे वो नित्य गायत्री।
ब्रह्म का तेज है साक्षात, लोक हित श्रेष्ठ गायत्री॥

अन्य भी मंत्र बहुतेरे बताये शास्त्रकारों ने।
शिरोमणी मंत्र राजों में, परम सम्राट गायत्री॥

मंत्र सब आप उद्धारक, किन्तु केवल यही तारक।
स्वयं भू विष्णु शिवजी भी, सदा जपते है गायत्री॥

जिसे जप वेद मंत्रों के, बने द्रष्टा अमर ऋषिगण।
त्रिकाल ज्ञान की दाता, यही है एक गायत्री॥

शाप वरदान देने की, शक्ति दात्री महेशानी।
यही है एक गायत्री, यही है ब्रह्म गायत्री॥

धन्य देश की धरती, जहाँ पर मुक्ति निःसरणी।
तथा भवसिन्धु की तरणी, जाप्य है ब्रह्म गायत्री॥

जिसको नहीं है बोध

जिसको नहीं है बोध, तो गुरु ज्ञान क्या करे।
निज रूप को जाना नहीं, पुराण क्या करे॥

घट-घट में ब्रह्म जोत का, प्रकाश हो रहा।
मिटा न द्वैतभाव तो, फिर ध्यान क्या करे॥

रचना प्रभु की देख के, ज्ञानी बड़े-बड़े।
पावे न कोई पार, तो नादान क्या करे॥

करके दया दयाल ने, मानुष जनम दिया।
बंदा न करे भजन तो, भगवान क्या-क्या करे॥

सब जीव जन्तुओं में, जिसे है नहीं दया।
ब्रह्मानंद व्रत नेम पुण्य दान क्या करे॥

तेरी याद दिल में

तेरी याद दिल में बसाये हुए हैं।
सताओ न इतना सताये हुए हैं॥

जमाने की राहों में चल करके देखा।
अपनो ने काँटे बिछाये हुए हैं॥

बाँके बिहारी तेरी तिरछी नजरिया।
हमको निशाना बनाये हुए हैं॥

दीनों के दुःख का वही दर्द जाने।
मुकुट मोर का जो लगाये हुए हैं॥

तेरी हीरा जैसी स्वाँसा

तेरी हीरा जैसी स्वाँसा, बातों में बीती जाये रे।
मन राम कृष्ण बोल॥

किया न पौरूष आकर जग में, दिया न कुछ भी दान।
मेरी तेरी करता करता, निकल गया ये प्राण॥
प्रभु से मिलने की अभिलाषा, बातों में बीती जाये रे॥

गंगा जमुना खूब नहाया, गया न मन का मैल।
घर धंधे में लगा हुआ है, कोल्हू का ये बैल॥
तेरी जीवन की ये आशा, बातों में बीती जाये रे॥

नस-नस में प्रति रोम-रोम में, राम रमा है जान।
प्रकृति बिन्दु के कण-कण में, तू उसको पहचान॥
उससे मिलने की अभिलाषा, बातों में बीती जाये रे॥

तू केवल रखवाला

तू केवल रखवाला, तेरे साथ नहीं कुछ जाना रे।
साथ नहीं कुछ जाना॥

खाली हाथ गये सब जैसे खाली हाथों आये।
गया सिकन्दर भी धरती से सिर्फ हाथ फैलाये॥
दल-दल में फँस गया अगर तो मुक्ति नहीं पायेगा।
लगा रहेगा इसी तरह से तेरा आना जाना रे॥

तुझे मिली जो फसल क्यारियाँ वे है तुझे रखानी।
उन्हें निराना है देना बस उन्हें खाद और पानी॥
मगर समझ बैठा तू उनका, अरे स्वयं को स्वामी।
मत कर इनमें मोह बावले, तेरा नहीं खजाना रे॥

जो सारी सम्पदा और सुख-साधन तूने पाया।
ज्ञान-कोष जो बड़े जतन से तूने यहाँ जुटाया॥
सदुपयोग उन सबका कितना किया प्रभु देखेंगे।
वहाँ नहीं चल पायेगा फिर झूठा कोई बहाना रे॥

सबको अपना समझ, सभी का है दुःख दर्द बँटाना।
सुख औरों को बाँट, स्वयं भी सुख-उमंग पा जाना॥
यही स्नेह-सद्भाव मधुरता हृदयों में भरनी है।
तभी तुम्हारे जीवन का फिर, रहेगा सफर सुहाना रे॥

किये अगर सत्कर्म लोकहित, साथ वही जायेंगे।
युग उनका सम्मान करेगा, आत्मतोष पायेंगे॥
वे जायेंगे जहाँ, वहाँ पर सगे स्वजन सब होंगे।
ना अंजाना होगा कोई, ना कोई बेगाना रे॥

तुम्हें तज मैं कहाँ जाऊँ

तुम्हें तज मैं कहाँ जाऊँ, किसे अपना बनाऊँगा।
करो माता कृपा मुझ पर, तुम्हारी जय मनाऊँगा॥

जगत यह हाट है सुन्दर, विलक्षण और मन भावन।
न भेजो तुम मुझे इसमें, भटककर भूल जाऊँगा॥
न मुझमें शक्ति इतनी है, न मुझमें भक्ति इतनी है।
विकारों से भरा पूरा, हृदय किसको बताऊँगा॥

हरो अज्ञान तम मेरा, करो कल्याण अब मेरा।
दया करुणामयी तुम सी, कहाँ मैं और पाऊँगा॥
व्यथा जो हर सके मन की, कथा जो सुन सके मन की।
कहाँ है वह! मनाये जो, अगर मैं रूठ जाऊँगा॥

वरद कर दो उठा अपना, विषम भव का मिटे सपना।
तुम्हारा नाम ले लेकर, सितारे तोड़ लाऊँगा॥
न पाऊँ लक्ष्य मैं जब तक, न लूँ विश्राम मैं तब तक।
सतत् निष्काम जल जलकर, धरा का तम मिटाऊँगा॥

दुनियाँ के झमेलो में फँसकर

दुनियाँ के झमेलों मे फँसकर, हम असली ठिकाना भूल गये।
जो वादा करके आये थे, वो कौल निभाना भूल गये॥

माया की अंधेरी रातों में, हम भटक गये कुछ इसी तरह।
मंदिर भी मिले थे मारग में, हम शीश झुकाना भूल गये॥

दुनियाँ में हमने जनम लिया, भगवान के दर्शन पाने को।
दुनियाँ के तमाशे क्या देखे, घर लौट के आना भूल गये॥

दुनियाँ को हमने प्यार किया, और खुद की हकीकत न जानी।
मोह ममता की जो आग लगी, वो आग बुझाना भूल गये॥

हम देख रहे हैं रोज-रोज, मरघट में लाशें जलती है।
दुनियाँ के जिश्म जलते देखे, खुद का जल जाना भूल गये॥

जो सुख और दुःख का साथी है, वो सच्चा अपना साथी है।
झूठी दुनियाँ में फँसकर हम, उस परमेश्वर को भूल गये॥

दुनियाँ किराये का घर

दुनियाँ किराये का घर, इसको है छोड़ जाना।
बस कब्र तेरी मंजिल, और कब्र ही ठिकाना॥

तू लाख चाहे रहना, लेकिन न रह सकेगा।
एक दिन तुझे यहाँ से, जाना ही बस पड़ेगा॥
बेकार है समझ ले, दुनियाँ से दिल लगाना॥

जब मौत का फरिश्ता, तुझको बुलाने आये।
दुनियाँ की कोई ताकत, तुझको न रोक पाये॥
बस हाथ मलता तेरा, रह जायेगा घराना॥

जो आज दिल से ज्यादा, करते हैं प्यार तुझसे।
मरने के बाद ये ही, डालेंगे खाक तुझपे॥
ये रिश्ते नाते सब कुछ, दुनियाँ में है बहाना॥

इस मालो ज़र पे नाँजा, इतना भी न हो नादाँ।
ना खाक में ये तेरे, आयेगा तेरे कामाँ॥
सारा यहीं पे तेरा, रह जायेगा खज़ाना॥

मुक्तक–ये हमारा ओ तुम्हारा, ये झगड़ा क्या है?
जिन्दगानी का जरा सोच, भरोसा क्या है?
था कल जो पास अपने, आज नहीं है यारों।
कौन कब छोड़ दे दुनिया को, भरोसा क्या है?

दुनियाँ में ऐसा कहाँ

दुनियाँ में ऐसा कहाँ सबका नसीब है।
भाग्य से ही कोई गुरुदेव के करीब है॥

चाहे कोई गरजे, चाहे कोई बरसे।
चाहे कोई दर्शन को, लाख लाख तरसे॥
मिलेगा उन्हीं को जिनकी, भावना सजीव है॥

करेंगे उपासना हम, अपने आत्मदेव की।
चिन्तन करेंगे हम अपने, आत्म देव की॥
मिटायेंगे भ्रान्तियाँ हम, चैतन्य जीव है॥

नारा दिया है जिसने युग निर्माण का।
पूजा करेंगे उनकी, बाजी प्राण का॥
बदलेंगे जग को अब तो, नवयुग समीप है॥

प्रभु के नाम पे

प्रभु के नाम पे, मन को लगाये बैठे हैं।
कभी होगी दया,आशा लगाये बैठे हैं॥

बहुत कुछ सोचने पर भी,नहीं कुछ कर पाते।
हमारे पाप ही हमको, दबाये बैठे हैं॥

देखना है वो किस तरह अपनाते हैं।
धर्म से हीन हैं, दुर्गुण छिपाये बैठे हैं॥

द्वार खोलेंगे कभी, देख करके दीन दशा।
पथिक अब उनके ही सत्पथ में आये बैठे हैं॥

दया की है कमी दाता

दया की है कमी दाता, तेरे दिल के खजाने में।
परेशां हो रहे हैं हम, तू खुश है आजमाने में॥

हमारे हाल पर तुमको तरस आती नहीं है क्या?
तुम्हें मिलता है क्या दाता हमें हरदम रूलाने में॥

तुम्हारा ही सहारा है हमें, तुम हो कहाँ छिपकर।
खुशी मिलती है क्या तुमको, हमारा दिल जलाने में॥

करूँ किस पर भरोसा ऐ, दया के सिन्धु बोलो तुम।
यकीं कैसे करूँ, किस पर करूँ सारे जमाने में॥

तेरे होते हुए बन्दा तेरा मजबूर हो कोई।
वो रोता है, खुशी मिलती है, तुमको दिल दुखाने में॥

'निराश' इस बेरूखी की क्या वजह मुझको बता जाना।
लगी है आग दाता आज मेरे आशियाने में॥

मत कर तू अभिमान रे

मत कर तू अभिमान रे बन्दे, झूठी तेरी शान रे।

तेरे जैसे लाखों आये, लाखों इस माटी ने खाये।
रहा न नाम निशान रे बन्दे, झूठी तेरी शान रे॥

तेरे पास है हीरे मोती, मेरे मन मंदिर में ज्योति।
कौन हुआ धनवान रे बन्दे, झूठी तेरी शान रे॥

माया का अंधकार निराला, बाहर उजला भीतर काला।
उसको तू पहचान रे बन्दे, झूठी तेरी शान रे॥
मुक्तकः-इकट्ठे गर जहाँ के ज़र, सभी मुल्कों के माली।
सिकंदर जब गया दुनियाँ से, दोनो हाथ खाली थे॥

मै हूँ माटी का दिया

मैं हूँ माटी का दिया, काली रात का दिया।
जल दिया तो अंधेरा, बोला जल दिया-३

मेरा अग्नि जैसा रंग मैं हूँ हर प्रकाश के संग।
मुझे जलने का है ढंग मैं हूं हर मानव के संग।।
मुझे मंदिर में जलाया, मैं वहीं जल दिया।।

सूनी झोपड़ी पुकारे महल आरती उतारे।
कोई थाल पर सजाये, कोई कब्र पर जलाये।।
मुझे जहाँ भी जलाया, मैं वहीं जल दिया।।

सूरज बोला मेरे बाद उजाला कौन करे आबाद।
चन्दा बोला मेरे बाद उजाला कौन करे आबाद।।
मैंने सीने को फुलाकर जिम्मा ले लिया।।

पायो जी मैने

पायो जी मैने राम रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक दी मेरे सद्गुरु, कृपा कर अपनायो॥

जनम–जनम की पूँजी पाई।
जग में सभी खोवायो, पायो जी मैने... ॥

खरचे ना खूटे कोई चोर न लूटे।
दिन दिन बढ़त सवायो। पायो जी मैने... ॥

सत की नाव खेवटिया सद्गुरु।
भवसागर तर आयो। पायो जी मैने... ॥

मीरा के प्रभु गिरधर नागर।
हरश–हरश जस गायो। पायो जी मैने... ॥

दया के सिन्धुदाता

दया के सिन्धुदाता इस तरह, तुम क्यों रुलाते हो।
इधर मजबूर करते हो, उधर तुम सिर झुकाते हो॥
तुम्हें कहती है दुनियाँ, तुम दया के सिन्धु हो लेकिन।
दया के नाम पर खामोश होकर, मुँह छिपाते हो॥
हमारे हाल पर अब भी तरस आती नहीं तुमको।
इधर आँसू बरसते हैं उधर तुम मुस्कुराते हो॥
लहू दिल से निकलता है, समझते हो उसे शबनम।
इधर काँटो की शैय्या है, उधर कलियाँ बिछाते हो॥
दुखाकर इस तरह दिल को, तमाशा देखते हो क्या?
इधर दुनियाँ उजड़ती है, उधर मौसम सजाते हो॥
भला क्या चैन पाओगे, कभी तुम क्षीर सागर में।
'निराश' हूँ मैं,उधर तू किस तरह खुशियाँ मनाते हो॥

पुरी द्वारिका मथुरा देखी

पुरी द्वारिका मथुरा देखी, देखा तीरथ काशी।
मेरे मन के मंदिर में भी, आ बैठो अविनाशी॥
मैं तेरा अभिलाषी, मैं तेरा अभिलाषी॥

जाने कितने जन्म गँवाये, आने और जाने में।
सब कुछ पाया लेकिन चूका, मैं तुझको पाने में॥
दरश मैं तेरा कैसे पाँऊ, ओ घट-घट के वासी॥

जग की माया में भरमाया, हीरा उमर गँवाई।
पग-पग ठोकर खाई लेकिन, हमको अकल न आई॥
मेरी ही करनी बन बैठी, आज गले की फाँसी॥

तेरा एक इशारा हो तो, क्या से क्या हो जाये।
अन्धा देखे लंगड़ा नाचे, गूँगा गाना गाये॥
तेरी कृपा से विष का प्याला, पीवत मीरा नाची॥

श्रेष्ठ पथ पर सदा चलने वालों

श्रेष्ठ पथ पर सदा चलने वालों, साधलो मंत्र कल्याण होगा।
आत्म सुख-शांति मन में रहेगी, श्री से श्रीमान का ज्ञान होगा।।

चेतना संतुलित करके देखो, दुःख नज़दीक आये तो कहना।
आगमन-आगमन से अलग हो, मोक्ष का द्वार आसान होगा।।

शक्ति पहचानों गायत्री माँ की, खुद को करलो चरण में समर्पित।
नर्क की यातना से बचोगे, और जीवन में सम्मान होगा।।

सत्कमल दल पे बैठी जो शक्ति, तेज से अपने कल्याण करती।
मंत्र का तत्त्व जिसने न समझा, न समझ और नादान होगा।।

पवित्र मन रखो पवित्र तन

पवित्र मन रखो पवित्र तन रखो-
पवित्रता मनुष्यता की शान है।
जो मन वचन कर्म से पवित्र है-
वो चरित्रवान ही यहाँ महान है॥

बड़ा ही मूल्यवान है, तुम्हारा ये जनम।
जगत की भूमि में करो, भले तुम करम॥
अच्छे रखो विचार, उत्तम करो व्यवहार।
आदर्श व्यक्ति की ये पहचान है॥

तुम्हारी आँखों में, अमृत रखो विमल।
तुम्हारी वाणी में, माधुर्य हो सरल॥
तुम होके निर्विकार, सबका करो सत्कार।
ये जन्म तुम्हारा इम्तिहान है॥

प्रभो अपनी शरण में

प्रभो अपनी शरण में ले लो नाथ।
आस लगाये मैं बैठा हूँ, चरण शरण में ले लो नाथ॥

करुणामय था रूप तुम्हारा, करुणा देकर स्नेह लुटाया।
करुणा मेरी तभी जगेगी, जब सुमिरन में ले लो नाथ॥

साध्य बनो तुम इस साधन में, प्राण बनो तुम इस तन मन में।
बंशी है यह जीवन मेरा, स्वर गूँजन में ले लो नाथ॥

यह तन मन है तुम्हें समर्पित, करूँ प्राण मैं किसको अर्पित।
यज्ञरूप है पावन ईश्वर, पूर्णाहुति में ले लो नाथ॥

बदनाम रहे बटमार मगर

बदनाम रहे बटमार मगर, घर तो रखवालों ने लूटा।
मेरी दुल्हन सी रातों को, नव लाख सितारों ने लूटा॥

दो दिन के रैन बसेरे की, हर चीज चुराई जाती है।
दीपक तो अपना जलता है, और रात पराई होती है॥
गलियों से नैन चुरा लाये, तस्वीर किसी के मुखड़े की।
रह गये खुले हर रात नयन, दिन को दिलदारों ने लूटा॥

हर शाम गगन में चिपका दी, तारों के अक्षर की पाती।
किसने लिखी किसको लिखी, देखी तो पढ़ी नहीं जाती॥
कहते तो हैं यह किस्मत है, दुनियाँ में रहने वालों की।
पर मेरी किस्मत को तो इन, ठण्डे अंगारों ने लूटा॥

वन में उड़ने वाला पंछी, घर शाम लौट के आता है।
जग से जाने वाला पंछी तो, घर भी पहुँच न पाता है॥
ससुराल चली जो डोली तो, बाराती द्वारे ले आये।
नैहर को लौटी डोली तो, बेदर्द कहारों ने लूटा॥

जग में भी जो दो जने मिले, उनमें रूपयों का नाता है।
है बैठ वहाँ जाती किस्मत, पतला कागज चल जाता है॥
संगीत छिड़ा है सिक्कों का, है मीठी नींद नसीब कहाँ।
नीदें तो लूटी रूपयों ने, सपने झनकारों ने लूटा॥

ब्रह्म की बेला बैठ अकेला

ब्रह्म की बेला बैठ अकेला, चिन्तन कर हरिनाम का।
लख चौरासी से वो बचेगा, भक्त जो होगा राम का॥

हीरा मोती बँगला गाड़ी, कुछ भी साथ न जायेगा।
अंत समय तो भजन हरि का, तेरा साथ निभायेगा॥
सारी उमर तू सोता रहा, अब वक्त नहीं आराम का॥

जब आयेगी तेरी बारी, श्वाँस भी न ले पायेगा।
पल भर की मोहलत नहीं देगा, प्राण वो लेने आयेगा॥
पगले तन से मोह करे क्या, खेला है ये क्षण भर का॥

भाव के भूखे हैं भगवान

भाव के भूखे हैं भगवान, भाव न हो सच्चा जो हिय में।
तो सब व्यर्थ ही जान॥

भाव नहीं तो मनुज देह यह, जीवत मृतक समान।
भावशून्य सब आदर छूँछा, सूखा है सम्मान॥

सत्य हृदय का शुद्ध भाव ही, जग में परम प्रधान।
भाव होय तो ईश्वर दीखे, भाव बिना पाषाण॥
भाव के भूखे हैं भगवान------------------॥

मेरे कण्ठ बसो महारानी

मेरे कण्ठ बसो महारानी-२
मेरे स्वरों को अपना स्वर दो-२
गाऊँ मैं तेरी वाणी-मेरे कण्ठ----॥

जीवन का संगीत तुम्हीं हो।
आशाओं का दीप तुम्हीं हो॥
शब्द सुधा से दामन भर दो-२
मैं याचक तू दानी-मेरे कण्ठ----॥

लय और ताल का ज्ञान भी दे दो।
स्वर सरगम माँ तान भी दे दो॥
मेरे शीश पे हाथ धरो माँ।
सरस्वती कल्याणी-मेरे कण्ठ----॥

नीरस शब्दों को रस दे दो।
मेरी कला को आशीष दे दो॥
तुम सागर मैं बूँद हूँ मैया।
तुम चन्दन मैं पानी-मेरे कण्ठ----॥

मेरे मालिक की दुकान पर

मेरे मालिक की दुकान पर, सबका जीवन खाता।
जैसा जिसने कर्म किया वो, वैसा ही फल पाता॥

क्या साधू क्या संत गृहस्थी, क्या राजा क्या रानी।
उसकी पुस्तक में लिखी है, सबकी कर्म कहानी।
लेन देन और जमा खर्च का, सही हिसाब लगाता॥

नहीं चले उसके घर रिश्वत, नहीं चले चालाकी।
उसकी अपनी लेन देन की, रीत बड़ी है बाकी।
पुण्य का बेड़ा पार करके वो, पाप की नाव डुबोता॥

बड़े-बड़े कानून प्रभु के, बड़ी-बड़ी मर्यादा।
किसी के कौड़ी कम न देता, और न दमड़ी ज्यादा।
समझदार चुपचाप सम्हाले, मूरख शोर मचाता॥

अच्छी करनी करना रे भैया, करम न करना काला।
लाख आँख से देख रहा है, तुमको देखने वाला।
पुण्य करनी पार लगाता, पाप नाव डुबोता॥

मुक्तक-
रूप ने इन्सान को धोखा दिया है,
भूख ने इमान को धोखा दिया है।
पूर्ण वर की आश में सर को झुका,
भक्त ने भगवान को धोखा दिया है॥

माँ-बाप को जो ठुकराएगा

माँ बाप को जो ठुकराएगा, दर दर की ठोकरें खाएगा।
माँ बाप को दुःख देने वाला, सुख चैन भला कब पायेगा॥

नाजों से पालने वालों पर, मूरख तू अत्याचार न कर।
जो तेरी भलाई चाहते हैं, तू उनसे बुरा बर्ताव न कर॥
जिस रोज ये बिछड़ेंगें तुझसे, उस रोज बड़ा पछतायेगा॥

उनसे पूछो माँ बाप है क्या, जिन लोगों के माँ–बाप नहीं।
माँ–बाप को पीड़ा पहुँचाना, कोई इससे बड़ा तो पाप नहीं॥
सौ जतन करो ना उतरेगा, एहसान पिता और माता का॥
तन–मन से करो इनकी सेवा, ये दूजा रूप है ईश्वर का।

जब तुम बूढ़े हो जाओगे, क्या सुख संतान से पाओगे॥
ऐसे ही तो फल आऐंगे, तुम जैसे पेड़ लगाओगे॥

माँ बाप बड़ी दौलत अपनी, ये बात याद हमको रखनी।
जैसी करनी वैसी भरनी जैसी करनी वैसी भरनी॥
माँ–बाप का दिल जो दुखाओगे, संतान से क्या सुख पाओगे॥
माँ–बाप की पहले सेवा कर, संतान से जब सुख पायेगा॥

माँ बाप की कलियुग में

माँ बाप की कलियुग में, किस तरह करें जिन्दगानी।
वो बेटा क्या बेटा है, जिसने माँ की कदर न मानी॥

नौ मास गर्भ में बन्दे, माँ ने कितना कष्ट उठाया।
गीले में सोई जननी, सुखे में तुझे सुलाया॥
बदले में कुछ नहीं चाहा, देखो माँ की कुर्बानी॥

आज ऊँगली पकड़कर तेरी, तुझे मैं चलना सिखलाऊँ।
कल हाथ पकड़ना मेरा जब मैं बूढ़ी हो जाऊँ॥
तु सबकी सेवा करना, तुझे दिल से दुआ दे जाऊँ॥

माँ बाप से बढ़कर जग में, कोई देव नहीं है दूजा।
भगवान ने नरतन धर, इन दोनो की, की है पूजा॥
कोई धर्म नहीं है दूजा, ये वेदो ने भी मानी॥

जिसने तुझे बड़ा किया है, तु उनको आँख दिखाए।
इन बुढ़े माँ बाप को रोटी के लिए तरसाए॥
तू सारी ऐश उड़ाऐ, इनकी आँखो में पानी॥

सुन लो कलियुग के बेटो, जहाँ इनका मान न होगा।
ऐसे अधमी बेटों का, हरगिज कल्याण न होगा॥
कभी गुरु बिन ज्ञान न होगा, कहे गीता ये अज्ञानी॥

मुसाफिर कर तैयारी

मुसाफिर कर तैयारी गर, तुझे कुछ दूर जाना है।
भला इस प्लेट फारम पर, कहाँ किसका ठिकाना है॥

जगत यह रेलगाड़ी है, महल डिब्बे के सम जानों।
कुटुम्ब डिब्बे के साथी हैं, टिकिट आयु ही माना है॥

मुसाफिर बारी बारी से, सभी चढ़ते उतरते हैं।
जनम लेना ही चढ़ना है, मृत्यु का क्या ठिकाना है॥

गायत्री मंत्र नामक पास लो, जाकर गुरुजी से।
अगर यमदूत टीटी से नहीं, भय कुछ भी खाना है॥

सत्य की सीट पर बैठो, सुखी हो आत्मानन्द से।
लो गायत्री मंत्र का अनुभव, न रोना है न गाना है॥

कैसे चुकाऊँ इन साँसों का

कैसे चुकाऊँ इन साँसो का मोल रे।
जनम देने वाले इतना तो बोल रे।।

मैंने किया ना कोई पुण्य धरम, छल से भरे हैं मेरे सारे करम।।
किसी से बोले मैंने दो मीठे बोल रे।। जनम देने...।।

मद में हमेशा रहा मैं चूर-चूर, मंदिरो से भगवन मैं रहा दूर-दूर।।
नाम भूलाया मैंने तेरा अनमोल रे, जनम देने...।।

तेरी कृपा से मिला मुझको यह तन, जिसमें बसाऊँ तूझे मिला है वो मन।
तन की तो खोली आँखे, मन की भी खोल रे।। जनम देने...।।

मनुज जन्म अनमोल रे

मनुज जन्म अनमोल रे, माटी में ना रोल रे।
अब के मिला है फिर न मिलेगा, कभी नहीं..३ ॥

तु सत्संग में जाया कर, गीत प्रभु के गाया कर।
साँझ सबेरे बैठ के बंदे, प्रभु का ध्यान लगाया कर।
नहीं लगता कोई मोल रे, माटी में ना रोल रे॥

तू बुलबुला है पानी का, मत कर जोर जवानी का।
नेक कमाई कर ले रे भाई, पता नहीं जिन्दगानी का।
मीठा सबसे बोल रे, माटी में ना रोल रे॥

मतलब का संसार है, इसका नहीं एतबार है।
सम्भल-सम्भल के कदम रखो, फूल नहीं अंगार है।
मन की अंखिया खोल रे, माटी में ना रोल रे॥

मोको कहाँ ढूँढ़े रे बन्दे

मोको कहाँ ढूँढ़े रे बन्दे, मैं तो तेरे पास में॥

नहीं रहूँ मैं झगड़ि बिगड़ि में, ना छूरी न गँड़ास में।
नहीं रहूँ मैं खाल रोम में, न हड्डी न माँस में॥

ना मन्दिर में ना मस्ज़िद में, ना काशी कैलाश में।
नहीं रहूँ मैं अवध द्वारिका, मेरी भेंट विश्वास में॥

ना मैं जप में, ना मैं तप में, ना विराग सन्यास में।
खोजोगे तो अभी मिलूँगा, पल भर की तलाश में॥

शहर से बाहर डेरा म्हारा, कुटिया मेरी स्वाँस में।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सब सन्तन के पास में॥

मैं गरीब हूँ बेशक माना

मैं गरीब हूँ बेशक माना, पैसे का अभिमान नहीं है।
तो क्या मानव होने का भी, मुझको थोड़ा ज्ञान नहीं है॥

मिट्टी की काया पर मेरी, चढ़ा नहीं सोने का पानी।
तो क्या मिट्टी और कनक की, मुझको कुछ पहचान नहीं है॥
दौलत की आँखों में हँसती, है यदि उन्मादों की दुनियाँ।
निर्धनता के प्राणों में क्या, मुस्काता भगवान नहीं है॥

धनिकों की महफिल में जुटते, गायन, वादन के सब साधन।
सड़कों पर गाने को मेरी, साँसों में क्या गान नहीं है॥
बँगलों की आँखों के आगे, हँसती हैं सतरंगी कलियाँ।
आँगन में मेरे सरसों की, क्या पीली मुस्कान नहीं है॥

यह माना विद्युत ने जग को, अनहोना आलोक दिया है।
तो क्या दीप शिखा में बाकी, जलने का अरमान नहीं है॥
अमरों ने पीयूष पिया पर, अमर कहाँ वे हो पाये हैं।
विष पायी के यश का कारण, क्या उसका विषपान नहीं है॥

मैं तो हूँ माँ शरण

मैं तो हूँ माँ शरण, मैं पड़ा आपका।
साथ छूटेगा कैसे मेरा आपका॥

करके भावों से पूजन करूँ ध्यान माँ।
मन में दर्शन किया है सदा आपका॥

भवसिन्धु से हमको बचाया है माँ।
अब किनारा मिला है हमें आपका॥

देना भक्ति का वरदान तू हमको माँ।
अब ना छूटेगा कैसे चरण आपका॥

तुम ना भूली हो माँ मैं तो भूला हुआ।
जन्मों-जन्मों से नाता मेरा आपका॥

हमने महिमा सुनी है बहुत आपकी।
मन में हो जाप अब अवतरण आपका॥

दिल ना टूटे कभी तेरे नाम से।
मन में श्रद्धा रहे सदा आपका॥

मेरा है बैल बिकने वाला

मेरा है बैल बिकने वाला॥
सुन लो समाज वालों, बेटे का बाप हूँ मैं।
जलवा सभी से है निराला॥

जिसको हो ख्वाहिश वर की, सौदा तय करने आये।
लाखों में एक मेरे, हीरे की कीमत लाये॥
हिम्मत हो जिसमें असली, है कोई ग्राहक दिलवाला॥ २

मेरा दुलारा है यह प्राणों से प्यारा है यह।
कितनी तारीफ करूँ मैं, गुण का भण्डारा है यह॥
फैलाया इसने अपना, सारे जिले में उजाला॥ २

छोड़ी पढ़ाई इसने, अब है यह दादा पक्का।
बच्चे नेताओं के सब, कहते हैं इसके कक्का॥
दीप यह मेरे कुल का, मैंने जतन से पाला॥ २

अफसर सब दोस्त इसके, करता दलाली तगड़ी।
बैठाते सेठ इसको, अपनी बिछाकर पगड़ी॥
जो भी पुस्तैनी इज्जत, उसको इसी ने है सम्भाला॥ २

जुआ खिलवाता घर में, रखता हैरोइन गाँजा।
जाता है रोज क्लब में, फैशन का है ये राजा॥
धन्धे इसके हैं शाही, ट्रेनिंग दे पक्का कर डाला॥ २

हाँ हाँ करता स्मगलिंग ऊँची जेबें भी काटे।
चाय के बदले सुबह, दारू ही डाटे॥
खाता है मुरगा लेकिन, पहने गले में देखो माला॥

हाँ हाँ वैसे तो रोज ग्राहक, चक्कर लगाते हैं जी।
कीमत न इसकी लेकिन, पूरी दे पाते हैं जी॥
आये सिफारिश वाले, मैंने उन सबको घर से टाला॥ २

सोना पचास तोले, पहले दे जाओ जी।
बेटी का ब्याह अपनी, फिर तुम रचाओ जी॥
देना सब नेग इसके, करना न कोई गड़बड़ झाला॥ २

कन्या गुणवान मेरी, कीमत न धेला।
उलटा समाज देखो, अंधो का मेला॥
ये तो करते हैं धन्धा काला, मेरी बेटी का किस्मत काला॥

हमें निज धर्म पर चलना

हमें निज धर्म पर चलना सिखाती रोज रामायण।
सदा शुभ आचरण करना सिखाती रोज रामायण॥

जिन्हें संसार सागर से उतर कर पार जाना है।
उन्हें रुकते किनारे पर लगाती रोज रामायण॥

कहीं छवि विष्णु की बाकी,कहीं शंकर की है झाँकी।
हृदय आनन्द झूले पर झूलाती रोज रामायण॥

सरल कविता की कुंजों में बना मंदिर है हिन्दी का।
जहाँ प्रभु प्रेम के दर्शन कराती रोज रामायण॥

कहीं वेदों के सागर में कहीं गीता की गंगा में।
कहीं रस बिन्दु में मन को डुबोती रोज रामायण॥

रे मन मुसाफिर!

रे मन मुसाफिर! निकलना पड़ेगा।
काया कुटी खाली करना पड़ेगा॥

भाड़े के क्वाटर को क्या तू सँवारे।
जिस दिन तुझे घर का मालिक निकाले॥
इसका किराया भी भरना पड़ेगा।
काया कुटी खाली करना पड़ेगा॥

आएगा नोटिस जमानत न होगी।
पल्ले में गर कुछ अमानत न होगी॥
होकर कैछ तुझको चलना पड़ेगा।
काया कुटी खाली करना पड़ेगा॥

यमराज की जब अदालत चढ़ोगे।
पूछेगा हाकिम तो क्या तुम कहोगे॥
पापों की अग्नि में जलना पड़ेगा।
काया कुटी खाली करना पड़ेगा॥

'भिक्षु' कहे मन फिरेगा तू रोता।
लख चौरासी में खावेगा गोता॥
फिर-फिर जनमना और मरना पड़ेगा।
काया कुटी खाली करना पड़ेगा॥

रानी बेटी मेरी फूटी किस्मत

रानी बेटी मेरी फूटी किस्मत तेरी, क्या बताऊँ।
दर्द दिल में है कैसे सुनाऊँ॥

मेरी आँखों की प्यारी दुलारी, देखूँ कब तक मैं तुझको क्वाँरी।
धन की मजबुरियाँ, कैसे हो पूरियाँ, क्या बताऊँ॥

प्यार से बेटी तुझको है पाला, आज मेरी जुबाँ पर है ताला।
दिल ये हैरान है, कितना अन्जान है, क्या बताऊँ॥

याद है बेटी गुजरा जमाना, लुटा था मैंने उसका खजाना।
उसको बरबाद कर, लाया था अपने घर, क्या बताऊँ॥

जागो भारत की बहनों परदा छोड़ो,
होता अन्याय तुम पर मुखड़ा न मोड़ो।
अब तो तुम खोलो मुँह का ताला, माफी माँगेगा बेटे वाला॥

बड़ी देर भई नन्दलाला

बड़ी देर भई नन्दालाला, तेरी राह तके ब्रजबाला।
ग्वाल-बाल इक-इक से पूछे, कहाँ है मुरलीवाला।।

कोई ना जाये कुञ्जगलिन में, तुझ बिन कलियाँ चुनने को।
तरस रहे हैं जमुना के तट, धुन मुरली की सुनने को।।
अब तो दरश दिखा दे नटखट, क्यों दुविधा में डाला।।

संकट में है आज वो धरती, जिस पर तूने जनम लिया।
पूरा कर दे आज वचन वो, गीता में जो तूने दिया।।
तुझ बिन कोई नहीं है मोहन, भारत का रखवाला।।

रोशनी आवाज देती ही रहती

रोशनी आवाज देती ही रहती।
हम अँधेरे में भटकते रह गए॥
हम न समझे रोशनी के दर्द को।
किरकिरी बनकर खटकते रह गए॥

युग पुरूष सहते रहे युग की व्यथा।
और हम सुनते रहे पोथी कथा॥
सुप्त कर्मठता हमारी हो गई।
कल्पनाओं में अटकते रह गए॥

जब हुआ संधि का वातावरण।
दिव्य सत्ता का हुआ है अतवरण॥
युग पुरूष आए दिशा देने हमें।
किन्तु हम उनसे छिटकते रह गए॥

युग समस्या सिन्धु का मंथन हुआ।
और युग अनुकूल सद्चिन्तन दिया॥
ज्ञान का अमृत कलश हमको मिला।
किन्तु हम विष ही गटकते रह गए॥

आज फिर युग वेदना से हो द्रवित।
हो रही प्रज्ञा धरा पर, अवतरित॥
यह न हो इतिहास कल का यह कहे।
मूक प्रज्ञासुत निरखते रह गए॥

सजधज के जिस दिन

सजधज के जिस दिन, मौत की शहजादी आयेगी।
ना सोना काम आयेगा, ना चाँदी आयेगी॥

छोटा सा तू कितने बड़े अरमान हैं तेरे।
माटी का तू है सोने के सामान है तेरे॥
माटी की काया माटी में जिस दिन समायेगी॥

पर तोड़ के पंछी तू पींजरा तोड़ के उड़ जा।
माया महल के सारे बंधन छोड़ के उड़ जा॥
धड़कन में जिस दिन मौत तेरे गुन गुनाएगी॥

किये करम जो अच्छे तूने पाया है यह नर-तन।
पर अब पाप करम में डूबा है क्यों तेरा तन-मन॥
तेरी पाप की नैया तुझको जिस दिन डुबाएगी॥

मुक्तक-
जीर्ण शीर्ण पत्रों से निर्मित, बनी हुई यह काया।
इस सराय में किसको रहना, एक गया एक आया॥

माटी की ये महल अटारी, माटी की नर काया तेरी।
माटी के सब हाथी घोड़े, माटी के सब बेटा-बेटी॥
खाये माटी ओढ़े माटी, तन भी माटी मन भी माटी।
धन वैभव सब माटी-माटी, इत उत सब जग माटी माटी॥

ले गमछा डाल गले

ले गमछा डाल गले, तुलसी ससुराल चले।
वो चले जात भादों की रात, छाई अंधियारी है॥
प्यारे लगे न प्राण-प्राण से प्यारी नारी है॥

नदिया ने जुल्म गुजारे-हाँ गुजारे।
मन सोच रहे कैसे जाऊँ उसपारे॥
यूँ सोच रहे, विधि खोज रहे, ये राह करारी है॥

तभी मुर्दा बहता आया, हाँ आया।
मुर्दा देखा तुलसी मन हर्षाया॥
पहुँचे है पास, खींची है लाश, बाकी करी सवारी॥

घर पे जाकर हंकारे, हंकारे।
वहाँ कौन सुने, हो रहे बंद किवारे॥
समझी थी रास, लिए पकड़ नाग चढ़ गये अटारी है॥

तुम कैसे आये स्वामी, हाँ स्वामी।
तुम इतने क्यों बन गए जम के कामी॥
करो उसे प्रीत, वही सच्चा मीत, सुनो अर्ज हमारी है॥

ईश्वर से प्रीत जो करते, हाँ करते।
है कसम मेरी वो भवसागर तरते॥
जो जन अधार, वो सर्वाधार, हरे संकट भारी है॥

सोते से मुझे जगाया, हाँ जगाया।
तू गुरु मेरी तुमने, ज्ञान सिखाया॥
तूने ज्ञान दिया, मैने मान लिया, अबतू महतारी है॥

लागे पानी में अगिया

लागे पानी में अगिया, सम्भाल बबुआ।

हम पीते सिगरेट तम्बाखू, पियेगा बच्चा गाँजा।
लड़का मेरा हुआ अवारा, क्यों रोता है राजा॥
गिरे आँसू ऽऽऽ तो भीगे रूमाल बबुआ॥

दारू पीना पाप नहीं है, खूब दिन रात नहाओ।
घर खेती स्टेट बेंचकर, सीधे टिकट कटाओ॥
मौत सीधे ऽऽऽ न होंगे, बुरे हाल बबुआ॥

बिन दहेज की करो ना शादी, कर लो खूब कमाई।
बहुयें डण्डा चप्पल लेकर, करेंगी तेरी पिटाई॥
और वो लड़के ऽऽऽ बनेंगे तेरे काल बबुआ॥

चोरी, डाका, घूस, मिलावट, करके पैसा जोड़ो।
कुदरत का जब उठेगा डण्डा, पूरी दौलत छोड़ो॥
गले बिल्कुल नऽऽऽ वहाँ तेरी दाल बबुआ॥

अभी समय है सोच लो भाई, क्या रास्ता अपनायें।
अच्छा बनाकर देश को अपने, मिलकर स्वर्ग बनायें॥
करो आज ही सेऽऽऽ कल पर न टाल बबुआ॥

सरसब्ज उजड़ते देखे हैं

सरसब्ज उजड़ते देखे हैं, उजड़ों को भी बसते देखा है।
जो कल तक अकड़कर चलते थे, उनको भी झुकते देखा है॥

दौलत के नशे में जो भाई, सीधे मुँह बात न करते थे।
आते ही गरीबी में उनको, दानों को तरसते देखा है॥

मेंहदी न छुटी कंगना न खुला, दुल्हन का न जिसने मुँह देखा।
उस छोड़ अकेली दुल्हन को, अर्थी पर कसते देखा है॥

थी राज तिलक की तैयारी, हर चेहरे पे नूर बरसता था।
होते ही फज़ल उन आँखो को, सावन सा बरसते देखा है॥

कह दो इन खिलती कलियों से, इतराये न इतना गुलशन में।
इक हवा भी ऐसी चलती है, गुलशन भी झुलसते देखा है॥

साँसों के तार-तार में

साँसों के तार–तार में, प्रभु प्यार को पिरो लो।
शुभ कर्म करके पुण्य का, जीवन में बीज बो लो॥

जीवन का एक पल–पल, अनमोल है खजाना।
इनमें से एक पल भी, नहीं लौट के है आना।
आनन्द रस से अपना, अंतः करण भिगोलो॥

ज्ञानी की ये निशानी, मीठी सी उनकी वाणी।
मीठे से बोल ये है, प्रभु की झलक सुहानी।
बोलो तो मीठे बोल ही, अमृत हृदय में घोलो॥

बीती का गम सुनाकर, वो मिट गया अँधेरा।
खुलती जहाँ पे आँखे, होता वहाँ सवेरा।
तेरे द्वार प्रभु पधारे, अंतर के नैन खोलो॥

साथ देती नहीं ये किसी का

साथ देती नहीं ये किसी का॥
क्या भरोसा है इस जिन्दगी का॥

साँस रूक जायेगी चलते-चलते, शमां बुझ जायेगी जलते-जलते।
दम निकल जायेगा रोशनी का॥

हम रहें ना ये दुनियाँ रहेगी, दास्तां अपनी दुनियाँ कहेंगी।
नाम रह जायेगा आदमी का॥

जिन्दगी है हकीकत पुरानी, चलके रूकना है इसकी रवानी।
फर्ज़ पूरा करो बन्दगी का॥

हक अदा होगा कैसे जहाँ में, आदमी बनके आया जहाँ में।
गीत गाता चलूँ आशिकी का॥

हम हुए पैदा इस देश में

हम हुए पैदा इस देश में मिट जाने को।
हम दखल देने न देंगे, किसी बेगाने को॥

हिन्दू मुस्लिम ईसाई, सभी हैं भाई-भाई।
एक मिट्टी में खेले, क्यों करे बेवफाई।
है शहीदों का गुलशन, नहीं मिट जाने को॥

कोई भी संकट आये, सभी मिलकर उठायें।
भले ही बलि हो जायें, कदम न पीछे लायें।
खून काफी है तेरी, ऑन में बह जाने को॥

चीन हो या अमरिका, रूस हो या अफ्रिका।
आपसी प्यार बढ़ायें, द्वेष का छोड़ तरीका।
यही पैगाम अब देंगे, इस जमाने को॥

सुनकर करूण पुकार

सुनकर करूण पुकार, सद्‌गुरु आ जाना।
करो जन-जन का उद्धार, सद्‌गुरु आ जाना॥

भटक रहा हूँ मारा-मारा, कोई नहीं है मेरा सहारा।
मुझे कर दो भव से पार, सद्‌गुरु आ जाना॥

बीच भँवर में फँसी है नैय्या, कोई नहीं है पार लगईया।
नैय्या है मझधार, सद्‌गुरु आ जाना॥

बिन दर्शन व्याकुल हैं अँखियाँ, चैन न पाऊँ सूनी है गलियाँ।
दर्शन दो एक बार, सद्‌गुरु आ जाना॥

गुरु का ज्ञान ध्यान अलबेला, आई सुहानी अनुपम बेला।
जग के पालनहार, सद्‌गुरु आ जाना॥

दासनुदास शरण में तेरी, लाज राखो प्रभु अब मोरी।
प्रेमी रहे पुकार, सद्‌गुरु आ जाना॥

साधु लपक रहे थैले पर

साधु लपक रहे थैले पर, डाकू जपता माला।
देखो रे भैया, दुनियाँ का खेल निराला॥

बुरे तो अपने पैर पुजाते, भले को लगता धक्का।
उल्लू करते मौज महल में, गधा खाये मुनक्का॥
खेती करे लँगोटी वाला, खाये टाई वाला॥

नर नारी तो बने हुए हैं, फैशन के दीवाने।
निकल के माँ के पेट से बच्चे, गाते फिल्मी गाने॥
हर लड़का हो हीरो बना है, हिरोइन हर बाला॥

फरियादी से जज यूँ बोले, अपनी आँख दिखाकर।
मुज़रिम खूनी है तो क्या है, दूँगा उसे रिहाकर॥
क्योंकि वो तो मुज़रिम है, मेरे साले का साला॥

आँखों वाले ठोकर खाते, अन्धे राह दिखाते।
पढ़े लिखे शिक्षक मिलकर, फिर पत्थर पाठ पढ़ाते॥
जग में उनका नाम है भाई, जिनका धंधा काला॥

है अगर प्रभु प्रेम पाना

है अगर प्रभु प्रेम पाना, तो मनुज से प्यार करलो।
दूर कर दुर्भावनायें, तुम हृदय में प्यार भर लो॥

घोरतम में चाँदनी की, तुम अगर मुस्कान चाहो।
पतझरों में भी अगर तुम, कोकिला का गान चाहो॥
तो किसी की झोपड़ी में, फूल की शैय्या बिछाकर।
कण्टकों के बीच अपने, सेज का श्रृंगार कर लो॥

बोल मीठे बोलकर, सारा जगत अपना बना लो।
पद्‌दलित पीड़ितजनों को, तुम उठा उर से लगा लो॥
स्वर्ग आयेगा धरा पर, देखना सचमुच वहीं पर।
तुम अगर संसार में, शुचि प्रेम का विस्तार कर लो॥

पञ्च तत्वों का खिलौना, कब न जाने टूट जाये।
प्राण का सम्बन्ध तन से, कब न जाने छूट जाये॥
इसलिए तुम दीन दुखियों, की कुटी में दीप बनकर।
तेल, बाती की तरह, जल-जल सदा उपकार कर लो॥

प्रेम ही भगवान है, और प्रेम ही आराधना है।
प्रेम ही है भक्ति पावन, प्रेम ही शुभ साधना है॥
प्रेम सुख का मन्त्र सच्चा, प्रेम जीवन का सुफल है।
प्रेम अमृत कुम्भ है, इस हृदय का पात्र भर लो॥

हे ज्ञान रूप भगवन

हे ज्ञान रूप भगवन, हमको भी ज्ञान दे दो।
करुणा के चार छींटे, करुणा निधान दे दो॥
अपनी मदद हमेशा, खुद आप कर सके जो।
इन बाजुओं में शक्ति, हे शक्तिमान दे दो॥
दाता तुम्हारे दर पर, किस चीज की कमी है।
चाहो तो निर्धनों को, दौलत की खान दे दो॥
हे ईश तुम हो सबकी, बिगड़ी बनाने वाले।
जीवन सफल बने ये, थोड़ा सा ज्ञान दे दो॥
डर है प्रभु तुम्हारा, रास्ता न भूल जायें।
भक्तों की मण्डली में, हमको स्थान दे दो॥
सुलझा सकें हम अपनी, जीवन की उलझनों को।
प्रज्ञा ऋतम्भरा, बुद्धि का दान दो॥

झीनी झीनी बीनी चदरिया

झीनी झीनी बीनी चदरिया।।

काहे के ताना काहे के भरनी, कौन तार से बीनी चदरिया।
इंगला पींगला भरना दीना, सुषमना तार से बीनी चदरिया॥

अष्ट कमल दल चरखा डोले, पाँच तत्व गुण तीनी चदरिया।
साँई को सिंयत मास दस लागे, ठोक ठोक कर बीनी चदरिया॥

यह चादर सुर-नर मुनि ओढ़ी, ओढ़ि के मैली कीनी चदरिया।
दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया॥

हे मेरे गुरुदेव करुणासिन्धु

हे मेरे गुरुदेव करुणासिन्धु,करुणा कीजिए।
हूँ अधम आधीन अशरण अब, शरण में लीजिए॥

खा रहा गोते हूँ मैं, भवसिन्धु के मझधार में।
आसरा दूसरा न कोई, अब मेरा संसार में॥

मुझमें है जप, तप न साधन, और नहीं कुछ ज्ञान है।
निर्लज्जता है एक बाकी, और बस अभिमान है॥

पाप बोझे से लदी, नैया भँवर में जा रही।
नाथ दौड़ो अब बचाओ, जल्द डूबी जा रही॥

आप भी यदि छोड़ देंगे, फिर कहाँ जाऊँगा मैं।
जन्म दुःख से नाव कैसे, पार कर पाऊँगा मैं॥

सब जगह मंजुल भटककर, ली शरण अब आपकी।
पार करना या न करना, दोनों मर्जी आपकी॥

मुक्तक-

कोई अब नहीं हमारा है, गुरुदेव शरण में आये हैं।
कोई भी नहीं सहारा है, हर दर से हम ठुकराये हैं॥
हममें सामर्थ्य नहीं कुछ भी, है नहीं पात्रता भी हममें।
हैं करुणासिन्धु आप गुरुवर, कितनों को पार लगाये हैं॥

हीरा सी देही मिली हमें

(तर्ज–केशरिया रंग भावे ही माई)

हीरा सी देही मिली हमें भाई।
पिछले जनम की है यह कमाई॥

चौरासी लाख योनी में भटके, बता न पाये मन के दुखड़े।
करमन की गति समझ न आई, हीरा सी देही मिली हमें भाई॥

दीन–दयाल दया न कर दीन्ही, हमारी विपदा उनने चिन्ही।
करुणाकर करुणा बरसाई, हीरा सी देही मिली हमें भाई॥

मनुज जनम हीरा सी खानी, सद्‌करमन की यही निशानी।
है मूरख जो व्यर्थ गँवाई, हीरा सी देही मिली हमें भाई॥

या तन से सत्कार्य करें हम, दीन दुःखी की पीर हरें हम।
मनुज देह सेवा हित पाई, हीरा सी देही मिली हमें भाई॥

हीरा क्यों कोयला बनायें, भोगों की भट्‌टी न जलायें।
गुरु ने ज्ञान मशाल जलाई, हीरा सी देही मिली हमें भाई॥

हीरा खरादा तो मूल्य बढ़ेगा, वरना तो एक दिन राख बनेगा।
काम न आयेगी कछु चतुराई, हीरा सी देही मिली हमें भाई॥

दुनियाँ हो गई पुरानी

दुनियाँ हो गई पुरानी बदलो भैया।
कह गये आके युग निर्माणी बदलो भैया॥

सास बहू करती है झगड़ा बेटा बाप लड़ाई।
बना आज है जानी दुश्मन, अपना ही है भाई॥
यह है घर-घर की कहानी बदलो भैया॥

जिन्दे माता-पिता को भैया, रोटी नहीं खिलाते।
मर जाने पर मृतक भोज में, पैसा खूब उड़ाते॥
कैसी तेरी ये बचकानी, बदलो भैया॥

मांसाहार, नशेबाजी के सेवन से रोग बढ़ाया।
नकली फैशन करके भैया, झूठी शान बढ़ाया॥
छोड़ो-छोड़ो ये नादानी बदलो भैया॥

एटम् बम पर ऐंठ रही है, देखो दुनियाँ सारी।
निश्चित दुनियाँ की बरबादी, होगी अगर लड़ाई॥
रोको दुनियाँ की हैरानी, बदलो भैया॥

घूँस मिलावट, चोर बजारी, हिंसा चारो ओर।
खून चूसता रावण चारों ओर मचाये शोर॥
बढ़ गई कैसे बेइमानी, बदलो भैया॥

हम बदलेंगे-युग बदलेगा, आज लगाओ नारा।
व्यक्ति और परिवार बदलकर, बदलो भारत सारा॥
होगी बड़ी मेहरबानीए बदलो भैया॥

वीणावादिनी श्वेत वसना

वीणा वादिनी श्वैत वसना, ज्ञानदायिनी शारदे।
वाग्देवी महाश्वैता सरल शुद्ध विचार दे।।

ही रहे संकल्प कलुषित आज मानव मात्र के ।
ज्ञान की मंदाकिनी से अमलकर जग तार दे।।

दृष्टि जाती है जहाँ तक है तमस अज्ञानता का।
जगत की जड़ता निवारो दीप प्रज्ञा वार के।।

सजल नयनों ने पुकारा है तुझे ममतामई माँ।
जगशिशु हित दे बढ़ाकर सस्मित अङ्क पसार दे।।

मुक्तक-

या कुन्देन्दुं तुषार हार धवला या शुभ्र वस्त्रब्रतं।
या वीणा वर दण्ड मंडित्करा या श्वेत पद्म आसन।।

मेरे श्याम मेरे श्याम

मेरे श्याम मेरे श्याम, कहती है मीरा।
कहती है मीरा, जपती है मीरा।।

श्याम जैसी सूरत नहीं कोई भाया।
राज का भी मोह नहीं, और नहीं माया।।
राजपाठ छोड़ चली, संत करि संगा।।

ज़हर दिया राणा ने पी गई है प्याला।
श्याम मेरे दिल में वही रखवाला।।
मीरा को देख राणा हुआ है अचम्भा।।

जिस दिल में श्याम रहे, कौन है मिटाया।
हर घड़ी में हर पहर में, उसका ही साया।।
ज्योति उसकी एक जले, जग उजियारा।।

प्रबल प्रेम के पाले पड़कर

प्रबल प्रेम के पाले पड़कर, प्रभु को नियम बदलते देखा।
अपना मान भले ढल जाये, पर भक्त का मान न ढलते देखा।।

जिसकी केवल कृपा दृष्टि से, सकल विश्व को पलते देखा।
उसको गोकूल में माखन पर, सौ-सौ बार मचलते देखा।।

जिसका ध्यान विरंची शम्भू, संकादीक न सम्भलते देखा।
उसको ग्वाल सखा मण्डल में, लेकर गेंद उदलते देखा।।

सुरेश, गणेश, दिनेश, महेश, ध्यान धरे और पार न पाये।
ताको ब्रज की छौहरियाँ, छछिया भर छाछ पे नाच-नचाये।।

जिनके चरण कमल-कमला के, करतल से न निकलते देखा।
उनको ब्रज की कुञ्जगलिन में, कण्टक पथ पर चलते देखा।।

जिसकी बर्क भीकुटी के भय से, सागर सप्त उबलते देखा।
उसको माँ यशोदा के भय से, अश्रु बिन्दु द्विग ढलते देखा।।

मीठे रस से भरो री

मीठे रस से भरो री राधा रानी लागे, महारानी लागे।
मन्ने कारो-कारो जमुना जी रो पानी लागे।।

जमुना जी तो कारी-कारी, राधा गोरी-गोरी।
वृन्दावन में धुम मचाये, बरसाने की छोरी।।
ब्रजधाम तो राधा जू की, रजधानी लागे।।

कान्हा नित मुरली में तेरी, सुमरों बारम्बार।
कोटिन्ह रूप धरे मन-मोहन, तऊ न पायो पार।।
रूप रंगकी छविली, पर रानी लागे, पटरानी लागे।।

राधा-राधा नाम रटत है, जै नर आठो याम।
तिनकि बाधा दूर करत है, वो राधा नाम।
राधा नाम से सफल जिन्दगानी लागे।।

मैय्या मोरी मैं नहीं माखन

मैय्या मोरी मैं नहीं माखन खायो।।

भोर भयो गैयन के पाछे, तूने मधुबन मोहे पठायो।
चार पहर बंशीवट भट्क्यो, साँझ परे घर आयो।।

मैं बालक बहियन को छोटो, छीको केहि विधि पायो।
ग्वाल-बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो।।

तू जननी मन की अति भोली, इनके कहे पतियायो।
ये ले अपनी लकुटि कमरिया, बहुतहिं नाच-नचायो।।

जिय तेरे कछु भेद उपजिहैं, तूने जानि परायो जायो।
सूरदास तब बिहंसि यशोदा, लै उर कण्ठ लगायो।।

कुछ नहीं लगता प्रभु का

कुछ नहीं लगता प्रभु का, प्यार पाने के लिए।
शुद्ध मन ही चाहिए, प्रभु को रिझाने के लिए।।

सेव, केला, संतरे, अंगुर के भूख नहीं।
फूल-माला भी नहीं, कहते चढ़ाने के लिए।।

गंगा, यमुना सरस्वती, काशी गया हरिद्वार में।
कर्ज लेकर कब कहा, तीर्थों में जाने के लिए।।

मंत्र माला तिलक पर भी, वे कभी रीझे नहीं।
वेश भी है देश दुनियाँ को, दिखाने के लिए।।

लगन लगी है तेरे

लगन लगी है तेरे दरश की, दरश दिखा दो हे गिरधारी।

तेरे चरण के हैं हम पुजारी, दरश दिखा हे गिरधारी।
बसादो प्रेम हर एक मन में, छबि निहारू सभी के तन में।।
तुम्हारी करूणा झलक रही है, झलक दिखा दो हे गिरधारी।।

मैंने सुना है नजर में तेरी, गजब का जादू बसा हुआ है।
उठे नज़र जो किसी पे तेरी, वही दीवाना तेरा हुआ है।।
जरा दिखा दो करम नज़र का, निहाल दुनियाँ होके रहेगी।।

क्या रास तुमने नहीं रचाया, बनाई प्रीतों की प्रीत माया।
मिला जो एक पल तेरा सहारा, उसे न मोह-माया ने मारा।।
दिखा दो जग में जो भी हैं तेरे, सदा सहारा उन्हें मिला है।।

श्याम आओ जुमना तीरे

श्याम आओ जमुना तीरे, बुलाये राधा प्यारी।
बुलाये राधा प्यारी, बुलाये राधा प्यारी।।

नन्दनवन में, ढूँढ़े हम कुञ्जगलिन में ढूँढें।
हम ढूँढ–ढूँढ के हारे, नहीं पाये राधा प्यारी।।
ब्रसभान की दूलारी।।

तुम जमुना किनारे जइयो, राधा–राधा चिल्लइयो।
कोई कह दे राधेश्याम, आ जायें कुञ्जबिहारी।।
आ जायें कुञ्जबिहारी।।

जमुना किनारे मोहन, राधा–राधा चिल्लाये।
फिर मुरली दियो बजाय रे, वो दौड़ी चली आई।।
वो दौड़ी चली आई।।

राधा ने श्याम को देखा, हरि नाम की दीवानी।
वो ऐसी गई शरमाय रे, जैसे प्रेम पंख की मारी।।
जैसे प्रेम पंख की मारी।।

तारा है सारा ज़माना

तारा है सारा ज़माना, नाथ हमको भी तारो।।

हमने सुना है तुमने केवट को तारा।
केवट को तारा एक सेवक को तारा।।
नैय्या का करके बहाना, नाथ हमको भी तारो।।

हमने सुना है श्याम सुदामा को तारा।
सुदामा को तारा, अपने मित्र को तारा।।
चावल का करके बहाना, नाथ हमको भी तारो।।

हमने सुना है श्याम द्रोपदी को तारा।
द्रोपदी को तारा, एक अबला को तारा।।
साड़ी का करके बहाना, नाथ हमको भी तारो।।

हमने सुना है गोप–ग्वालों का तारा।
गोप–ग्वालों को तारा, अपने भक्तों को तारा।।
माखन का करके बहाना, नाथ हमको भी तारो।।

हमने सुना है तुमने शबरी का तारा।
शबरी को तारा, एक भिलनी को तारा।।
बेर का करके बहाना, नाथ हमको भी तारो।।

हमने सुना है अहिल्या को तारा।
अहिल्या को तारा एक अबला तारा।।
पत्थर का करके बहाना, नाथ हमको भी तारो।।

हे मातु मेरी यह प्रार्थना है

(धुन-नमो वेदमाता, नमो विश्वमाता)

हे मातु मेरी यही प्रार्थना भूलूँ न मैं नाम कभी तुम्हारा।
निष्काम होके दिन-रात गाऊँ, नमोवेद माता नमोविश्वमाता।।
नमो हंस आरूढ़िनी, बुद्धिदाता, नमो नमो नमो वेदमाता।।

देहान्त काले तुम्हारी छवि हो,
पुस्तक कमण्डल लिए हाथ में हो।
गाता यही मैं तनू मातु त्यागूँ।।

रचूँ यज्ञ जग को अमित पुण्य देकर,
चलूँ तो हृदय में अलख शांति देकर।
नहीं द्रोह ही हो नहीं मोह ही हो।।

प्यारे जरा तो मन में विचारो,
क्या साथ लाये और क्या ले चलोगे।
सेवा न की तो यह जिन्दगी धिक।।

सविता तुम्हारी महा भर्ग शक्ति,
वरेण्यं सदा ध्यान में हो हमारे।
करो प्रेरणा ले चलो सत्य पथ से।।

ऐसा जगा दो फिर सो न जाऊँ,
ज्योति तुम्हारी उर में जगाऊँ।
श्रद्धा विनत हो दिनरात गाऊँ।।

वह योग्यता दो सत्कर्म कर लूँ,
अपने हृदय में सद्भाव भरलूँ।
नरतन है साधन महामंत्र जपलूँ।।

हे मातु अब तो ऐसी दया हो,
जीवन में निरर्थक जाने से पाये।
यह मन तुम्हारा ही गीत गावे।।

मंदिर में न मिलेंगे

मंदिर में ना मिलेंगे, गुरुद्वारे ना मिलेंगे।
घर ही बैठे तेरे भगवान,
करले माँ को प्रणाम्, करले पिता को प्रणाम्।।

जिस माँ ने तुम्हें जन्म दिया, उस माँ को कैसे भूल गया।
पाल-पोस कर बड़ा किया, उस पिता को कैसे भूल गया।।
उनके ही चरणों में है चारो धाम, करले माँ को प्रणाम्।।

सब रिश्ते मिल जायेंगे जग में, नहीं मिलेंगे माता-पिता।
और तो रिश्ते स्वार्थ के हैं, सच्चे रिश्ते माता-पिता।।
उनके ही चरणों में मिले विश्राम, करले माँ को प्रणाम्।।

ऊँगली पकड़कर चलना सिखाया, भूखे रहकर तुझको खिलाया।
जब भी कभी तुम्हें कष्ट है आया, हर पल तेरा साथ निभाया।।
मात-पिता का न करना अपमान, करले माँ को प्रणाम्।।

पग घुँघरू बाँध मीरा नाचे रे

पग घुँघरू बाँध मीरा नाची रे॥
मै तो अपने नारायण की।
आपहि हो गई दासी रे।।
लोग कहै मीरा भई बावरी।
सास कहै कुल नासी रे॥
विष का प्याला राणा ने भेजा।
पीवत मीरा हाँसी रे।।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर।
सहज मिले अविनाशी रे॥

जीवन तुमने दिया है

जीवन तुमने दिया है, सम्भालोगे तुम।
आशा हमें हैं विश्वास है, हर मुश्किल से विधाता निकालोगे तुम।।

साचे में हम आपके ही पलें, सत्कर्म की राह पर हम चलें।
सारे जहाँ की भलाई करें, हम न किसी की बुराई करें।
इस दुनियाँ के दुःखो से बचालोगे तुम।। जीवन तुमने...।।
आशा हमें हैं विश्वास है, हर मुश्किल से विधाता निकालोगे तुम।।

हर पल तुम्हारा अगर साथ है, फिर हमको डरने की क्या बात है।
कठिनाईयों से न हारेंगे हम, तुमको हमेशा पुकारेंगे हम।।
अपने गले से हमें भी लगालोगे तुम।। जीवन तुमने...।।
आशा हमें हैं विश्वास है, हर मुश्किल से विधाता निकालोगे तुम।।

छाया कहीं तो कहीं धूप है, है नाम कितने कई रूप हैं।
हर सच में तुम हो समाये हुए, हम सब तुम्हारे बनाए हुए।।
हम जो रूठें कभी भी मनालोगे तुम।। जीवन तुमने...।।
आशा हमें हैं विश्वास है, हर मुश्किल से विधाता निकालोगे तुम।।

जीवन बड़ा अनमोल है

जीवन बड़ा अनमोल है, इसे हरपल जिया करो।
दो बोल मीठे बोल के, सुख सबको दिया करो।।

जीवन बने मधुर अगर, मन में मिठास हो।
अमृत दिलों में हो अगर, इक रब का वास हो।।
खुद को खुदा से जोड़के, नित अमृत पिया करो।।

मीठे वचन जो बोले तो, घटता नहीं है कुछ भी।
मिलता सुकून सब को, खुश हो जाता रब भी।।
कह कट वचन अन्याय मत, खुद से किया करो।।

मीठे वचन में शक्ति है, यह बात मान लो।
वशीकरण ये मंत्र है, यह सत्य जान लो।।
जो भी मिले इस मंत्र से, वश में किया करो।।

दर्शन दो घनश्याम

दर्शन दो घनश्याम नाथ मोरी, अंखिया प्यासी रे।
दर्शन दो घनश्याम...।।

मन मंदिर की ज्योति जलादो, घट-घटवासी रे।।
दर्शन दो घनश्याम नाथ मोरी, अंखिया प्यासी रे।।

मंदिर-मंदिर मूरत तेरी, फिर भी न देखे सूरत तेरी।
युग बीते न आये मिलन की, पूरणमासी रे।। दर्शन दो...।।

द्वार दया का जब तू खोले, पंचम स्वर में गूँगा बोले।
अंधा देखे लगड़ा चलकर, पहुँचे काशी रे।। दर्शन दो...।।

पानी पीकर प्यास बुझाऊँ, नैनन को कैसे समझाऊँ।
आँख मिचोली छोड़ो अब तो, मन के वासी रे।। दर्शन दो...।।

जो करते रहोगे भजन

जो करते रहोगे भजन धीरे-धीरे।
तो मिल जायेगा वो सजन धीरे-धीरे।।

जग के झमेलों से खुद को निकालो।
तृष्णा के बन्धन सभी तोड़ डालो।।
ये करके तो देखो यतन धीरे-धीरे।।

यहाँ पर तो तेरा ठिकाना नहीं है।
जहाँ से तू आया जाना वहीं है।।
हो हर में हरि का मनन धीरे-धीरे।।

करके जतन जिसको तुलसी ने पाया।
गीत प्यारे प्रीतम का मीरा ने गाया।।
प्रभु को तू सौंप दें जीवन धीरे-धीरे।।

तनिक मन की आँखों से खुद को निहारो।
प्यारे प्रभु तो है अन्तः में प्यारो।।
जो कर लोगे निर्मल ये तन धीरे-धीरे।।

हरि नाम का प्याला

हरि नाम का प्याला और हरे कृष्ण की हाला।
ऐसी हाला पी-पी करके, चला-चले मतवाला।।

राधा जैसी बाला और वृन्दावन का ग्वाला।
ऐसा ग्वाला मुरली मनोहर, जपो कृष्ण की माला।। हरि...

हरे कृष्ण का जप हो, और हरे कृष्ण की माला।
एक ज्योति से हृदय शुद्ध हो, निकले मन की ज्वाला।। हरि...

हरे कृष्ण में बल है, कृष्णा जल और थल है।
ऐसे जल थल नभ में तीनों, नारायण की हाला।। हरि...

ओम साईं जय साईं

साईं नाम सुमिरन जो भी करे, यही नाम सब दुःख दूर करे।
भवसागर से पार उतारे, जमन-जनम के पाप हरे।।

कोई मनोरथ मन में बसायें, तुम्हारी शरण जो आये।
इन चरणों में मन चाहा फल, बिन माँगे मिल जाये।।
साईं बिगड़ी बात सँवारे, सुख सम्पति भण्डार भरे।।

शिरडी तिरथ धाम मनोरथ, हम साईं के पुजारी।
साईं बाबा इस धरती पर, सिद्ध पुरूष अवतारी।।
जब रहे सर पे साया तुम्हारा, कौन किसी विपदा से डरे।।

मेरा जीवन है तेरे हवाले

मेरा जीवन है तेरे हवाले।
प्रभु इसे पग-पग तू ही सम्भाले।।

मोह-माया बन्धन खोलो, हे प्रभु अपनी शरण में ले लो।
अपने भक्तो को अपनाले, प्रभु इसे.......।।

ये जीवन प्रभु तुझसे पाया, सब तेरे हैं कोई न पराया।
अपनाले बैकुण्ड वाले, प्रभु इसे.......।।

भवसागर में जीवन नैया, डोल रही है ओ रखवैया।
नैया आके तू पार लगाले, प्रभु इसे.......।।

संतन के संग लाग रे

संतन के संग लाग रे, तेरी अच्छी बनेगी।
तेरी अच्छी बनेगी, तेरी बिगड़ी बनेगी।।
होय तेरो बेड़ा पार रे, तेरी अच्छी बनेगी।।

संतन संग करि पुण्य कमाई, राम चरण अनुराग रे।।
तेरी अच्छी बनेगी।।

ध्रुव की बन गई, प्रहलाद जी की बन गई।
हरि सुमिरन में लागरे, तेरी अच्छी बनेगी।।

कागा से तोये हंस करेंगे, मिट जाये उर के दाग रे।
तेरी अच्छी बनेगी।।

कहत कबीर राम सुमिरन में, पाग सके तो पाग रे।
तेरी अच्छी बनेगी।।

सुर की देवी सरस्वती माँ

सुर की देवी सरस्वती माँ, सुर का ज्ञान सिखा दे माँ।
है अँधियारा इस हृदय में, सुर का दीप जला दे माँ।।

रीत ना जानूँ गीत न जानूँ, प्रीत मैं जानूँ चरणों की।
ज्ञान नहीं अज्ञानी हूँ मैं, सच्ची राह दिखा दे माँ।। है अंधि..

साज तुम्हीं आवाज तुम्हीं हो, लाज तुम्हीं बस रख लेना।
तेरी चरण–शरण आया हूँ, पग की धूल बना ले माँ।। है अंधि..

पूजन, अर्चन, वन्दन सब कुछ, शब्द सुमन अर्पण माता।
प्रेम अकेला भेंट तुम्हें कर वरद्हस्त स्वीकारो माँ।। है अंधि..

एक बार तो राधा बनकर

(धुन-नफरत की दुनियाँ छोड़)

एक बार तो राधा बनकर देखो, मेरे सांवरिया।
राधा यूँ रो-रो कहे।।

क्या होते हैं आँसु, क्या पीड़ा होती है।
क्यों दर्द उठता है, क्यों आँखे रोती है।।
एक बार आँसु तो बहाकर देखो सांवरिया।।

जब कोई सुनेगा ना, तेरे मन के दुखड़े।
जब ताने सुन-सुनकर, होंगे दिल टुकड़े।।
एक बार जरा तुम ताने सुनकर देखो सांवरिया।।

क्या जानेगे मोहन तुम प्रेम की भाषा।
क्या होती है आशा, क्यों होती निराशा।।
एक बार जरा तुम, प्रेम करके देखो सांवरिया।।

पनघट में मधुवन में, तो इन्तजार करना।
कहे श्याम तेरे खातिर, वो घुट-घुट के मरना।।
एक बार किसी का इन्तजार, करके देखो सांवरिया।।

नहीं चाहिए दिल दुखाना किसी

नहीं चाहिए दिल दुखाना किसी का।
सदा ना रहा है, सदा ना रहेगा, जमाना किसी का।।

आयेगा बुलावा तो जाना पड़ेगा,
सर तुझको आखिर झुकाना पड़ेगा।
वहाँ ना चलेगा २, बहाना किसी का।।

शोहरत तुम्हारी बह जायेगी ये,
दौलत यहीं पर रह जायेगी ये।
नहीं साथ जाता २, खजाना किसी का।।

दुनियाँ का गुलशन सदा ही रहेगा,
ये तो जहाँ में लगा ही रहेगा।
आना किसी का जग में, जाना किसी का।।

सबसे ऊँची प्रेम सगाई

सबसे ऊँची प्रेम सगाई।।

दुर्योधन को मेवा त्याग्यो, साग विदूर घर खाई।। सबसे..

जूठे फल शबरी के खाये, बहु विधि प्रेम लगाई।। सबसे..

प्रेम के वश अर्जुन रथ हाक्यो, भूल गये ठकुराई।। सबसे..

ऐसी प्रित बढ़ी वृन्दावन, गोपिन नाच-नचाई।। सबसे..

सुर क्रूर इस लायक नाहिं, कह लक करे बड़ाई।। सबसे..

मैं तो जपूँ सदा तेरा नाम

(धुन-सुनकर करूण पुकार)

मैं तो जपूँ सदा तेरा नाम, दयालू दया करो।
दयालू दया करो, कृपालु कृपा करो।। मैं तो... ।।

द्वार खड़े हैं भक्त तुम्हारे, अपनी दया के खोलो द्वारे।
पूरण हो सब काम, दयालू दया करो।।

भजन कीर्तन गाऊँ मैं तेरा, नित उठ नाम ध्याऊँ मैं तेरा।
कृष्ण-कृष्ण श्रीराम, दयालू दया करो।।

साधु संत की संगति लेना, नाम अपने की रंगति देना।
दास बनालो घनश्याम, दयालू दया करो।।

मेरे मन की ज्योति जलादो, मुझको अपना रूप लखादो।
पहुँचा दो ब्रजधाम, दयालू दया करो।।

हे प्रभो मुझे बता दो

हे प्रभो मुझे बता दो, चरणों में कैसे आऊँ।
माया के बन्धनों से, अब मुक्ति कैसे पाऊँ।।

न जानूँ मैं कोई पूजन, अज्ञान हूँ मैं भगवन्।
शरणा कृपा दयालू, बन्धन से छूट जाऊँ।। हे प्रभो.. ।।

मैं हूँ पतित स्वामी, तुम हो पतित पावन।
अवगुण भरा हृदय, इसे कैसे मैं दिखाऊँ।। हे प्रभो.. ।।

अच्छा हूँ या बुरा हूँ, जैसा भी हूँ तुम्हारा।
ठुकराओ न मुझे अब, चरणों में सिर झुकाऊँ।। हे प्रभो.. ।।

भगवन् इतना कीजै, अपनी ही भक्ति दीजै।
हो प्रेम आप में ही, तुमको न भूल पाऊँ।। हे प्रभो.. ।।

दूर नगरी बड़ी दूर नगरी

दूर नगरी बड़ी दूर नगरी।
कैसे आऊँ मैं कन्हैया, तेरी गोकुल नगरी।।

जमुना जल जाऊँ कान्हा, पायल मोरी बाजे।
चपत चलुँ तो मोरी, छलके गगरी।। बड़ी दूर.... ।।

रात में आऊँ तो कान्हा, डर मोहे लागे।
डर मोहे लागे, शरम मोहे लागे।।
दिन में आऊँ तो देखे सारी नगरी।। बड़ी दूर.... ।।

तेरी नगरी में कान्हा, चोर बसत है।
चोर बसत है, लुटेरे बसत है।।
लुट ले लेगी मेरी, लख चुनरी।। बड़ी दूर.... ।।

सखी संग आऊँ कान्हा, लाज मोहे लागे।
लाज मोहे लागे, शरम मोहे लागे।।
अकेली आऊँ तो भूल जाऊँ डगरी।। बड़ी दूर.... ।।

मीराबाई का मैं प्यारा, गिरिधर नागर।
तुम्हरे दरश बिन हो गई बावरी।। बड़ी दूर.... ।।

हर बात को तुम भूलो भले

हर बात को तुम भूलो भले, माँ–बाप को मत भूलना।
उपकार इनके लाखों हैं, इस बात को मत भूलना।।

धरती पे देवों को पूजा, भगवान को लाख मनाया है।
तब तेरी सूरत पाई है, संसार में तुझको बुलाया है।।
इन पावन लोगों के दिल को, पत्थर बनकर मत तोड़ना।।

अपने ही पेट को काटा है, और तेरी काया सजाई है।
अपना हर कौर खिलाया तुझे, तब तेरी भूख मिटाई है।।
इन अमृत देने वालों के, जीवन में जहर मत घोलना।।

चाहे कमायें धन दौलत, ये बंगला कोठी बनाई है।
माँ–बाप ही ना खुश है तेरे, बेकार ये सारी कमाई है।।
ये लाख नहीं खाक है, इस राज़ को मत भूलना।।

गीले में सदा ही सोये हैं, सूखे में तुझे सुलाया है।
बाहों का बना करके झूला, तुझे दिन और रात झुलाया है।।
इन निर्मल निश्छल हाथों में, बस आँसु ही मत घोलना।।

जो चीज भी तूने मागी है, वो सब कुछ तुने पाया है।
हर बिल को लगाया सिने से, बड़ा तुझको नेह लगाया है।।
इन प्यार लुटाने वालों का, तुम प्रेम प्यार मत भूलना।।

जनम तेरा बातो ही

जनम तेरा बातो ही बीत गयो, रे तूने कबहुँ न कृष्ण कयो।।

पाँच बरस का भोला-भाला, अब तो बीस भयो।
मकर पच्चीसी माया कारण, देश-विदेश गयो।। रे तूने..

तीस बरस की अब मति उपजी, लोग बढ़े नित नयो।
माया जोड़ी लाख करोड़ी, अजहुँ ना तृप्त भयो।। रे तूने..

वृद्ध भयो तब आलस उपजी, कफ नित कण्ठ रहयो।
संगति कबहुँ ना किन्ही तूने, वृथा जनम गयो।। रे तूने..

ये संसार मतलब का लोभी, झूठा ठाट रचो।
कहत कबीर समझ मन मूरख, तू क्यों भूल गयो।। रे तूने.

राम से बड़ा राम का नाम

राम से बड़ा राम का नाम।
अंत में निकला ये परिणाम, राम से बड़ा राम का नाम।।

सीमरो नाम रूप बीन देखें, कौड़ी लगे न काम।
नाम के बाँधे खिंचे आयेंगे, आखिर एक दिन राम।।

जिस सागर को बिना सेतू के, लाँघ सके ना राम।
कूद गये हनुमान उसी को, लेकर राम का नाम।।

ओ दिलवाले क्या पायेंगे, जिनमें नहीं है राम।
वो पत्थर तैरेंगे जिन पर, लिखा हुआ श्रीराम।।

जो शरण गुरु की आया

जो शरण गुरु की आया, इह लोक सुखी परलोक सुखी।
जिसने गुरु ज्ञान पचाया, इह लोक सुखी परलोक सुखी।।

रामायण में शिवजी कहते भागवत में शुकदेव जी कहते।
गुरुवाणी में नानक कहते, जिसने हरिनाम कमाया।।

चिन्ता और भय सब मिट जाये, दुनिया के बंधन हट जाये।
संकट के बादल छंट जाये, जिसने गुरु को अपनाया।।

सांसो में हो प्रभु का सुमिरन और मन में गुरुवर का चिन्तन।
फिर कैसा माया का बंधन, जिसे द्वार गुरु का भाया।।

जो संत संग मे आ जायेंगे, वो गुरु कृपा पा जायेंगे।
वो भवसागर तर जायेंगे, जिसने जग को ठुकराया।।

दुःखहर्त्ता बनके

दुःखहर्ता बनके, सुखकर्त्ता बनके।
चले आना, गणपति चले आना।।

तुम विघ्न विनाशक आना,
इच्छा पूर्ण करो, हाथ सिर पर धरो।। चले आना..।।

तुम इष्ट विनाशक आना,
मोदक हाथ लेके, खुशियाँ साथ लेके।। चले आना..।।

तुम भाग्य विधाता आना,
ऋद्धि साथ लेके, सिद्धि साथ लेक।। चले आना..।।

तुम गौरी नन्दन आना,
वर्षा दया की करो, दुःख दर्द हरो।। चले आना..।।

माँ की महिमा

माँ की महिमा अपरम्पार,
सच्चे मन से जयमाता, बोलो सब एक बार।

तुझमें मुझमें माँ का नूर समाया।
जाने किस-किस रूप में हमने, माँ का दर्शन पाया।
जान गया जो भेद उनका, उसका बेड़ापार।।

माँ का नाम जुबां पर लेकर, हम सब जग में आये।
माँ का सुमिरन करने वाले, कभी कष्ट नहीं पाते।।
सबको मिला है माँ की पावन, ममता का उपकार।।

माँ से बढ़कर ना कोई तीरथ, ना काबा ना काशी।
माँ के आर्शीवाद से भरती, सबकी झोली खाली।।
वो किस्मत वाला है जिसने, पाया माँ का प्यार।।

करूँ आरती अम्बे गायत्री

करूँ आरती अम्बे गायत्री भवानी

कंचन थाल उतारूँ आरती।
घी के दीप जलाऊँ, गायत्री भवानी।।

पान, सुपाड़ी, ध्वजा नारियल।
ले तुझे भेंट चढ़ाऊँ, गायत्री भवानी।।

सुमिर-सुमिर माँ तेरे यश गाऊँ।
चरणों में चित लाऊँ, गायत्री भवानी।।

गुरु मेरी पूजा

गुरु मेरी पूजा, गुरु गोविन्द।
गुरु मेरा पार ब्रह्म, गुरु भगवन्त।।

गुरु में देहु, अलख अभेदु।
सर्व पूजा, चरण गुरु सेवु।।

गुरु बिन अवर नहीं मैं ठाऊँ।
अब बिन जपेऊ, गुरु-गुरु नाऊ।।

गुरु मेरा ज्ञान, गुरु हृदय ध्यान।
गुरु गोपाल, सुरत भगवान।।

ऐसे गुरु को बली-बली जाइये।
आप मुक्त मोह तारे।।

गुरु की शरण हो कर जोड़े।
गुरु बिना कै नाहि होरे।।

अंधकार में गुरु मंत्र उजारा।
गुरु संग सफल निस्तारा।।

गुरु पुरा पाइये बड़भागी।
गुरु की सेवा दुःख ना लागे।।

गुरु का सबद, न मिटे कोई।
गुरु नानक-नानक हरसोई।।

तुलसी महारानी नमो नमः

तुलसी महारानी नमो नमः।
हरि की पटरानी नमो नमः।।

करते जो तुलसी की पूजा, उसके सिवा धन्य नहीं दूजा।
तुलसी जी का प्रिय चरनामृत,पीकर भक्ति होती अकृत।।
लक्ष्मी महारानी नमो नमः।।

प्यारे श्याम की प्यारी तुलसी, वृन्दावन की न्यारी तुलसी।
दुःखियों के दुःख भंजन तुलसी, भक्तों की सुख रंजन तुलसी।।
सौभाग्य दायिनी नमो नमः।।

केशव जी का वरण किया है, कृष्ण कन्हैया बना पिया है।
सदा सुहागिन श्रेय लिया है, सबको सुख भरपुर दिया है।।
माँ शांति प्रदायिनी नमो नमः।।

तुलसी कृष्ण विवाह समय है, सबका आज पुण्य अक्षय है।
तुलसी की सेवा से जय है, तुलसी भक्त कृष्ण को प्रिय है।।
जय श्यामा रानी नमो नमः।।

झूला झूलत बिहारी

झुला झूलत बिहारी, वृन्दावन में।
कैसी छाई हरियाली, इन कुञ्जन में।।

इत नंद को बिहारी, उत भान की दुलारी।
जोड़ी लागे अति प्यारी, बसी नैनन में।।

यमुना के कुल बहे सुरंग दुकुल।
और खिल रहे फूल, कदमन में।।

गौर श्याम रंग, घन दामिनी के संग।
भई अंखिया अपंग, छबि भरि मन में।।

राधा मुख ओर नैना श्याम के चकोर।
सखियन प्रेम डोर, लगी चरनन में।।

तन का तनिक भरोसा

तन का तनिक भरोसा नाहि, कहि करत गुमाना रे।

मेरी-मेरी करता डोले, माया देख लुभाता रे।
या गोष्ठी में रहना नाहि, सांचे घर उठ जाना रे।।

पीर फकीर औलिया जोगी, रहे ना राजा-राना रे।
पेग-पेग कर तप जप मारे, काल अचानक आना रे।।

काम क्रोध मद लोभ छोड़ के, शरण धनी के आना रे।
कहत कबीर बिसार नाम तेहु, लोके नहीं ठिकाना रे।।

सांचे कोई न पति जई

सांचे कोई न पति जई, झूठे जग पतियाय।
गली-गली गोरस बिके, मदिरा बैठ बिकाय।।

प्रेम प्रीत का चोलना, पंहिर कबीरा नाच।
तन-मन तापर वारिहौं, जो कोई बोले सांच।।

जाति न पूछो साधु की, पूँछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार की, पड़ी रहन दो म्यान।।
सांई येता दीजिए, जामे कुटुम्भ समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।।

लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल।
लीली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल।।
उठा बबूला प्रेम का, तिनका उड़ा आकाश।
तिनका तिनके में मिला, तिनका तिनके पास।।

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पांय।
बलिहारी गुरु आपकी, जिन गोविन्द दियो बताय।।
यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान।
शीश दिये जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान।।

कबीरा खड़ा बाजार में, लिये लुकाटी हाथ।
जो घर जारे आपना, चले हमारे साथ।
कागा सब तन खाइयो, चुन-चुन खाइयो मास।
दौ नैना मत खइयो, जामे पिया मिलन की आस।।

जय-जय राम रमैया

जय–जय राम रमैया, जग के पार लगैया।
जय–जय कृष्ण कन्हैया, जग में रास रचैया।।
हे मर्यादा, हे युग दृष्टा, कहाँ गये तुम आज तो बोलो।
पाप है अपनी चरम बिन्दु पर, धनुष, चक्र से उसको तोड़ो।।

रामायण का राम कहाँ है, गीता का घनश्याम कहाँ है।
राम के वो आदेश कहाँ है, गीता के संदेश कहाँ है।।
यदा–यदा हि धर्मस्य...
अपने वचन चरितार्थ करो प्रभु, कलयुग में कृष्णा तुम सुनलो।।

जीवन का आधार कहाँ है, जीवन में संसार कहाँ है।
दुष्ट दलन रघुवीर कहाँ है, सूर्यवंशी का वीर कहाँ है।।
जग ने इष्ट माना तुमको, धर्मवीर रघुवंशी सुनलो।।

गाइये गणपति जगवन्दन

गाइये गणपति जगवन्दन्।
शंकर सुवन भवानी के नन्दन्।।

मोदक प्रिय मुद मंगल दाता।
विद्या वारिदी बुद्धि प्रदाता।।

सिद्धि सदन गज वदन विनायक।
कृपा सिन्धु सुन्दर सब लायक।।

मांगत तुलसी दास कर जोरे।
बसहिं राम सिय मानस मोरे।।

श्री बांके बिहारी जी

श्री बांके बिहारी जी, दूर करो दुःख मेरा।।

सुना है जो तेरे दर पे आये।
उसके सब दुखड़े मिट जाये।।
आया शरण तिहारी जी।। दूर करो दुःख मेरा।।

जनम-जनम का मैं हूँ भटका।
बेड़ा आय भँवर में अटका।।
पार करो बनवारी जी।। दूर करो दुःख मेरा।।

शबरी अहिल्या गणिता तारी।
सब ही तुमने पार उतारी।।
अब आई हमारी बारी जी।। दूर करो दुःख मेरा।।

मोर मुकुट पीताम्बर धारी।
संग में हो बस भानु दुलारी।।
मेरे मोहन गिरवर धारी जी।। दूर करो दुःख मेरा।।

हे राम हे श्याम

हे राम हे श्याम, मेरी सुनलो।

मेरे मन की कोई ना जाने, मेरो दुखड़ा कौन निवारे।
लोगे खबर कब श्याम।। मेरे राम..... ।।
अंधकार मेरो तुम ही हटाओ, राग द्वेष को तुम ही मिटाओ।
सुनलो अरज मोरे श्याम।। मेरे राम..... ।।
पाप-ताप को आज मिटाओ, प्रमुदित तन कर मन हरषाओ।
चरणन में विश्राम।। मेरे राम..... ।।
पाँच प्रहर जंजाल में खोया, तीन प्रहर में सोय गवाया।
शरण तिहारी अब श्याम।। मेरे राम..... ।।

जैसे सूरज की गर्मी से

जैसे सूरज की गर्मी से , जलते हुये तन को,
मिल जाये तरूवर की छाया।
ऐसा ही सुख मेरे, मन को मिला है मैं जब से,
शरण तेरी आया।।

भटका हुआ मेरा मन था कोई, मिल ना रहा था सहारा।
लहरों से लड़ती हुई नाव को, जैसे मिल ना रहा हो किनारा।।
उसे लड़खड़ाती हुई नाव को जैसे किसी ने किनारा दिखाया।।

शीतल बने आग चन्दन के जैसे। राघव कृपा हो जो तेरी।
उजियारी पूनम की जो जाये रातें, ज्योति अमावश अंधेरी।।
युग–युग से प्यासे मरु को मिले, जैसे सावन का संदेश पाया।।

जिस राह की मंजिल तेरा मिलन हो, उस पर कदम मैं बढ़ाऊँ।
फूलों में हारों में पतझड़ बहारों में, मैं न कभी डगमगाऊँ।।
पानी के प्यासे को तकदीर जैसे जी भर के अमृत पिलाया।।

हे दुःख भंजन

हे दुःख भंजन, मारुति नन्दन, सुनलो मेरी पुकार।
पवनसुत विनति बारम्बार, पवनसुत विनति बारम्बार।।

अष्टसिद्धि, नवनिधि के दाता, दुःखियों के तुम भाग्य विधाता।
सियाराम के काज सवारे, मेरा कर उद्धार, पवनसुत विनति...।।

अपरम्पार है शक्ति तुम्हारी, तुम पर रीझें अवध बिहारी।
भक्तिभाव से ध्याऊँ तोय, कर दुखों से पार, पवनसुत विनति...।।

जपूँ निरंतर नाम तिहारा, अब नहीं छोड़ूँ तेरा द्वारा।
रामभक्त मोहे शरण में लीजे, भवसागर से तार, पवनसुत विनति...।।

नित-नित पाप करे

नित–नित पाप करे तू प्राणी हरि का छोड़ा द्वार।
ये जनम तो चला–चली है, अगला जनम सुधार।।

पिछले जनम का भोग तू भोगे, तुझको नहीं है याद।
तड़प रहा है अधोगति में, कौन सुने फरियाद।।
अब भी थोड़ा समय है बंदे, करले प्रभु से प्यार।।

दुःख तू प्राणी सहजा जाये, सुख आये दुःख जाये।
धैर्य प्रेम से दुःख जो सहता, पाप कटे सुख आये।।
हरिनाम है जग में सांचा, सच्चा यही आधार।।

दुःख सहकर मन निर्मल होवें, प्रभु का यही विधान।
ज्ञान है तेरा बिल्कुल खाली, मान सके तो मान।।
हरिनाम से पाप है कटता, ये जीवन का सार।।

मंगल मूरति राम दुलारे

मंगल मूरति राम दुलारे, आन पड़ा अब तेरे द्वारे।
हे बजरंग बली हनुमान, हे महावीर करो कल्याण।।

तीनों लोक तेरा उजियारा, दुःखियों का तूने काज सँवारा।
हे जगवन्दन केसरी नन्दन, कष्ट हरो हे कृपा निधान।।

तेरे द्वारे जो भी आया, खाली नहीं कोई लौटाया।
दुर्गम काज बनावन हारे, मंगलमय दीजै वरदान।।

तेरा सुमिरन हनुमत बीरा, नासै रोग हरे भव भीरा।
राम लखन सीता मन बसिया, शरण पड़े का कीजै ध्यान।।

ये गर्व भरा मस्तक मेरा

ये गर्व भरा मस्तक मेरा, प्रभु चरण धूल तक झुकने दे।
अहंकार विकार भरे मन को, निज नाम की माला जपने दे।।

मैं मन के मैल को धो न सका, ये जीवन तेरा हो न सका।
मैं प्रेमी हूँ इतना ना झुका, गिर भी तो पडूँ तो उठने दे।।

मैं ज्ञान की बातों में खोया, और कर्महीन पड़कर सोया।
जब आँख खुली तो मन रोया, जब सोये मुझको जगने दे।।

जैसा हूँ मैं खोटा या खरा, निर्दोष शरण में आ तो गया।
एक बार जो कहदे खाली जा, या प्रीत की रीत छलकने दे।।

निर्गुन रंगी चादरिया रे

निर्गुन रंगी चादरिया रे, कोई ओढ़े सन्त सुजान।

कोई-कोई बिरला जतन से पावे।
या चुनरी पिय के मन भाये।।
कितने ओढ़ भये वैरागी, भये कई मस्तान।।

नाम की तार से बुनी चदरिया।
प्रेम भगति से रंगी चदरिया।।
सद्गुरु कृपा करे सो पावे, यह अनमोल दान।।

पोथी-पोथी पढ़ नैन गवावे।
सद्गुरु नाथ शरण नहीं आवे।।
हरि नारायण निर्गुण सगुण, सबही में पहचान।।

सुखहरण प्रभु नारायण हे

सुखहरण प्रभु नारायण हे, दुःख हरण प्रभु नारायण हे।
त्रिलोक पति दाता सुखधाम, स्वीकारो मेरे प्रणाम।।
स्वीकारो मेरे प्रणाम, प्रभु स्वीकारो मेरे प्रणाम।।

मन वाणी में जो शक्ति कहाँ, जो महिमा तुम्हारी गान करे।
अगम अगोचर अविकारी, निर्लेप हो हर शक्ति से परे।।
हम और तो कुछ भी जाने ना, केवल गाते है पावन नाम।।

आदि मध्य और अन्त तुम्हीं, और तुम ही आत्म अधारे हो।
भक्तों के तुम प्राण प्रभु, इस जीवन के रखवारे हो।।
तुममें जीवें जन्में तुममें और अन्त करें तुममें विश्राम।।

चरण कमल का ध्यान धरूँ, और प्राण करें सुमिरन तेरा।
दीनाश्रय दीनानाथ प्रभु, भवबन्धन काटो हरि मेरा।।
शरणागत हे श्याम हरि, हे नाथ मुझे तुम लेना थाम।।

विघ्न हरण गौरी के नन्दन, सुमिर सदा सुखदाई रे।
तुलसीदास जो गणपति सुमिरे, कोटि विघ्न टल जाई रे।।
वेद पुराण कथा से पहले, जो सुमिरे सुखदाई रे।
अष्टसिद्धि नवनिधि लक्ष्मी, मन इच्छा फलदाई रे।।

ना ये तेरा ना ये मेरा

ना ये तेरा ना ये मेरा, मंदिर है भगवान का।
पानी उसका भूमि उसी की, सब कुछ उसी महान का।।

हम सब खेल–खिलौने उसके, खेल रहा करतार रे।
उसकी ज्योति सब में दमके, सब में उसका प्यार रे।।
मन मंदिर में दर्शन करले, उन प्राणों के प्राण का।।

तीर्थ जायें मंदिर जायें, अनगिन देव मनायें रे।
दीन रूप में राम सामने, देख के नैन फिराये रे।।
मन की आँखे खुल जायें तो, क्या करना हमें ज्ञान का।।

कौन है ऊँचा कौन है नीचा, सब हैं एक समान रे।
प्रेम की ज्योत जगा हृदय में, सब में प्रभु पहचान रे।।
सरल हृदय को शरण में राखें, हरि भोले नादान का।।

द्रोपदी की लाज राखी

द्रोपदी की लाज राखी।
तुरत बढ़ायो चीर।।

भक्त कारण रूप नर हारे, धरयो आप शरीर।
हिरण कश्यप मारि लीन्हो, धरयो नाहि न धीर।।

बूड़तो गजराज राख्यो, कियो बहार नीर।
दासी मीरा लाल गिरिधर, दु:ख जहाँ तहाँ पीर।।

जय भोला भण्डारी

जय भोला भण्डारी शिवहर, जय भोला भण्डारी।
जय कैलाशापति शिव शंकर, सब जग के हितकारी।।

निशदिन तेरा ध्यान करें हम, सिमरें मंत्र तिहारा।
हे शिव शंकर मंत्र जगाओ, होवे घट उजियारा।।
नमामि शंकर नमामि शंकर, कृपा करो त्रिपुरारी।।

शंख नाद से शब्द जगाकर, स्वर संगीत बहाया।
युग-युग से ये सृष्टि नाचे, ऐसा डमरू बजाया।।
तेरी याद भुला के जग में, दु:ख पावें संसारी।।

तीनों ताप हरण कर लेता, ये त्रिशूल तिहारा।
तेरा नाम जपे से जग में, मिलता मुक्ति हारा।।
महादेव परब्रह्म विधाता, जाये शरण तिहारी।।

तुम मेरी राखो लाज हरि

तुम मेरी राखो लाज हरि।

तुम जानत सब अन्तर्यामी, करनी कछु न करी।

औगुन मोते बिसरत ना ही, पल छिन घरी-घरी।।

सब प्रपंच की पोट बांधि के,अपने शीश धरी।।

दारा सुत धन मोह लिये हैं, सुध-बुध सब बिसरी।।

सूर पतित को बेग उघारो, अब मेरी नाव भरी।।

इतना करना हे मेरे दाता

इतना करना हे मेरे दाता, जब आयेगी अन्त घड़ी।
जाऊँ तेरा नाम मैं गाता, केशव माधव हरि।।

जग में आके कर नहीं पाया, कोई नेक कमाई।
जीवन की अब साँझ हो आई, फिर तेरी सुध आई।।
तेरे बिन अब कौन बचावे, लूटी चोरों ने गठरी।।

तू ही था मेरा सांचा संगी, तुझसे ही सब पाया था।
मन बौरा अभिमान में फूला, माया में भरमाया था।।
अन्त में सबने फेर ली आँखे, देखी मतलब की नगरी।।

बिन माँगे हरि तूने मुझपे, अपनी किरपा बरसायी।
प्रेमाभक्ति भरदो अपनी, झोली मैने फैलायी।।
शरण में आया न ठुकराना, करनी मैंने कछु न करी।।

रहना नहीं देस बिराना

रहना नहीं देस बिराना है।

यह संसार कागज की पुड़िया।
बूँद पड़े धुल जाना।।

यह संसार कांट की बाड़ी।
उलझ पुलझ मरि जाना है।।

यह संसार झाड़ और झाँखर।
आग लगे बरि जाना है।।

कहत कबीर सुनो भई साधो।
सत्‌गुरु नाम ठिकाना है।।

मत बोल तू झूठे बोल

मत बोल तू झूठे बोल, तेरे बोल बड़े अनमोल।
यहाँ से इक दिन जाना है, खुदा को मुँह दिखाना है।।

तेरी ताकत न कोई देखेगा, तेरी सोहरत न कोई देखेगा।
बस तू और तेरे कर्म होंगे, तेरी दौलत न कोई देखेगा।।
तू समझले ओ नादान, तू मेरी बात ओ पगले मान।।

दो दिन का ये जग का है मेला, सब चला चली का है खेला।
मतलब की भरी दुनियाँ छोड़ के, तूझे जाना पड़ेगा अकेला।।
ये झूठी जग की प्रीति, तूने जानी न इसकी रीत।।

यहाँ सब तेरे रिश्ते है लेकिन, वहाँ रिश्ते न नाती होंगे।
जिन्हें अपना समझता है पगले, वहाँ के न साथी होंगे।।
तेरे स्वांस बड़े अनमोल, तू क्यों न जाने इन का मोल।।

शारदे जय हंस वाहिनी

शारदे जय हंस वाहिनी, जयति वाणी वादिनी।
जय सरस्वती, ज्ञान दायिनी, कमल वास विनासिनी।।

सिद्धि-सिद्धि विवेक दायिनी, तुम त्रिशूल विनासिनी।
देवि मंद सुवास विर्सनी, हृदय हंस विराजनी।।

मधुर काव्य कला धीषा, प्रणव नाद विकासिनी।
भगवती संगीत वरदे, भुवन मानस वासिनी।।

जय गणपति वन्दन

जय गणपति वन्दन गणनायक।
तेरी छबि अति सुन्दर सुखदायक।।

तू चारभुजा धारी मस्तक सिन्दुरी रूप निराला।
है मुषक वाहन तेरो तू ही जग का है रखवाला।।
तेरी सुन्दर मूरत मन में, तू पालक सिद्धि विनायक।।

मन मंदिर का अंधियारा, तेरा नाम हो उजियारा।
तेरे नाम की ज्योत जली तो, मन में बहती सुखधारा।।
तेरो समिरन हर पूजन में, सबसे पहले फलदायक।।

तेरे नाम को जिसने ध्याया, उस पर रहती सुखछाया।
मेरे रोम-रोम अन्तर में, एक तेरा रूप समाया।।
तेरा महिमा तू ही जाने, शिव पार्वती के बालक।।

तुम बिन मोरी कौन खबरले

तुम बिन मोरी कौन खबरले।
गोवर्धन गिरधारी, गोवर्धन गिरधारी। होऽऽऽतुम बिन मोरी...।।

मोर मुकुट सिर छत्र विराजे, कुण्डल की छबि न्यारी।
होऽऽऽ कुण्डल की छबि न्यारी।।

वृन्दावन में धेनु चरावे, बंशी बजाये गिरधारी।
होऽऽऽ बंशी बजाये गिरधारी।।

मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, चरण कमल पे बलिहारी।
होऽऽऽ चरण कमल पे बलिहारी।।

जपले हरि का नाम

जपले हरि का नाम, सांझ सकारे।
अन्तर्यामी दाता, हर दुःख तारे।।

जगतपिता का ध्यान न आया।
मदमाते प्राणी तूने जनम गँवाया।।
कभी नहीं खोले, तूने अन्तर द्वारे।।

स्वासों की तू जपले माला।
गुरु कृपा से होय निहाला।।
भवसागर से पार उतारे।।

शरण पड़े बिन निष्फल जीना।
जीवन दें शुभ कर्म न कीन्हा।।
यूँ ही ना प्राणी हीरा जनम गवाँ रे।।

पाप का समन्दर भरा तेरे

पाप का समन्दर भरा तेरे अन्दर।
भटका है तू चारो ओर, मांझी भूला है।।

कागज की नैया कब तक चलेगी,
पानी में थलनी खुल के रहेगी।
पकड़ा जायेगा चोर, मांझी भूला है।।

उठती लहरिया, विविध लहरिया।
मछुआ पे आना, चंचल मछरिया।।
तू है बंशी की डोर माँझी।।

होती नहीं है पगडंडी जल में।
जो सुना है मोती महल में।।
सब है बाहर का शोर मांझी।।

ऋद्धि-सिद्धि के दाता सुनो

ऋद्धि-सिद्धि के दाता सुनो गणपति,
आपकी मेहरबानी हमें चाहिए।
तुमने लाखों की बिगड़ी बनायी प्रभु,
दाता इतना तो हम पर रहम कीजिए।।

मालो दौलत हूकुमत नहीं चाहिए,
तेरे चरणों का पानी हमें चाहिए।
कण्ठ का शारदा माँ हमेशा रहे,
गीत गाने की वाणी हमें चाहिए।।

सुनके दुश्मन का दिल भी दहल जायेगा।
लव पे मीठी सी वाणी हमें चाहिए।।

कोई गैर हुजुरी करे क्यों भला,
जब तेरे सहारे पे दाता है हम।
शर्म से सर किसी के न आगे झुके,
शान की जिन्दगानी हमें चाहिए।।

ये समय बड़ा हरजाई

ये समय बड़ा हरजाई
ये समय से कौन लड़ा मेरे भाई।।

राजा से न लेकर घुमें, नगर-नगर हो आये
जिस माटी को जीते मूरख, उसमें ही खो जाये।।
ना काम आये ना चतुराई।। ये समय..... ।।

ढलता सूरज दिन ले जाये, चन्दा रात चुराये।
सांसो का अनमोल खजाना, पग-पग लुटता जाये।।
लुटेरा लुटे हर अंगनाई।। ये समय.... ।।

तेज हवाओं के झोंके में, जीवन ज्योत जगाये।
झाड़ी-झाड़ी बालक भटके, तितली हाथ न आये।।
उड़ाती धुल फिरे दानाई।। ये समय.... ।।

कृष्ण जनम भयो आज

कृष्ण जनम भयो आज, बधावा लेके आई।

ना लेवो छड़वा ना लेवो कड़वा।
लेवो यशोदा जी कंगना।।

ना लेवो बिंदिया, नो लेवो, बिछिया।
लेवो यशोदा जी का छल्ला।।

ना लेवो नथिया, ना लेवो बेसर।
लेवो यशोदा जी का हरवा।।

कन्हैया का बस एक नज़र देखना है।
जिधर तुम छुपे हो उधर देखना है।।

सारे जग में घूम मची है

सारे जग में घूम मची है, गोकुल नगरी सजने लगी है।
जन्म लियो नन्दलाल, बधाई बजे अंगाना में।।

ढोली ढोल, मृदंग बजायें, ब्रज बालाएँ मंगल गायें।
नाचें दे दे ताल।। बधाई बजे अंगाना में।।

दादुर मोर पपीहा बोलें, धरती झूमे अम्बर डोले।
छाई अबज बहार।। बधाई बजे अंगाना में।।

दर्शन को आवे नर नारी, श्याम सुन्दर पे जाये बलिहारी।
प्रगटे दीनदयाल।। बधाई बजे अंगाना में।।

बढ़ी अँखियाँ है कजराली, माथे झूले लट घुँघराली।
यशोदा देख निहाल।। बधाई बजे अंगाना में।।

निसदिन नमो गणपति चरण

निसदिन नमो गणपति चरण।
गणपति चरण, जग दुःख हरण।।

सन्ताप सब मन के हरे, मंगल सदा गणपति करे।।
मन का रहा प्रातः स्मरण।।

बल, बुद्धि के तुम देवता, हर भक्ति हृदय सेवता।।
शंकर सुवन तारण तरण।।

तुम्हरी कृपा बेअन्त है, दीनों पे तू दयावन्त है।।
हम आ गये तेरी शरण।।

मोहन हमारे मधुबन में

मोहन हमारे मधुबन में, तुम आया न करो।
जादू भरी ये बाँसुरी बजाया न करो।।

सूरत तुम्हारी देख के, सलोनी सांवरी।
सुन बाँसुरी की राग को, हम हो गई बावरी।।
माखन को चुराने वाले, दिल चुराया न करो।।

माथे मुकुट गल माल, कटी में काछनी सोहे।
कानों में कुण्डल झुमके, मन मेरे को मोहे।।
इस चन्द्रमा के रूप से, लुभाया न करो।।

अपनी यशोदा मात की, सौगंध है तुमको।
यमुना नदी के तीर पे, तुम न मिलो हमको।।
इस बासुरी की तान पे, बिलमाया न करो।।

देखे बिन कान्हा जब, मन नहीं माना।
इन आँखो से आज हमने, ब्रह्म पहचाना है।।
कृष्ण पद कमलों में, मन को लगाना।
इन गोपियों का ताना, ये उलाहना को बहाना है।।

धरती के प्यासे आंगन में

धरती के प्यासे आंगन में, बादल घिर–घिर आये।
परदेशी बेदर्दी साजन, लौट न तुम घर आये।।

सावन लौटा भादो लौटा, लौटे चातक के धन।
लेकिन लौटे कभी न निष्ठुर मेरे वे मधु के कण।।
मैं उन गीतों का गायक हूँ जो रह जाते अन गाये।।

जली कामनायें निशिवासर, अपने जले चितासी।
सौत बन गयी गयी न मन से, चिन्ता चहा उदासी।।
मूक हूक हो घालय मृग की, जो न कभी मुस्काये।।

मैं उस तट की प्यास अब भी, कभी न बुझने वाली।
मैं पनघट की आस अमिट हूँ, कभी न मिटने वाली।।
वह बदली हूँ जो नयनों में, तड़प–तड़त रह जायें।।

दो प्रेमी के विरह प्रेम को, जग कहता पागल पन।
कैसे कह दूँ पल–पल जलता, नहीं मोम सा तक मन।।
गूँगे की वह भाषा हूँ जो, रह जाती बिन गाये।।

किया तन और मन अर्पण

किया तन और मन अर्पण, सब प्रीत के बन्धन में।
रंग ली मीरा ने आज चुनरिया, गिरिधर के रंग में।।

जब प्रीत के झूले में मन, चितवन भूल गई।
दुनिया दारी क्या है तन सब कुछ भूल गई।।
हो गर्मी या सर्दी या झड़ी लगी बरसात।
जब याद कृष्ण आये, लगे सरसो फूल गई।।
लगे आयी ऋतु बसन्ती, जीवन के आंगन में।।

है चारो तरफ मेला मन, फिर भी अकेला है।
कोई सुखी-दुःखी कोई ये कैसा अकेला है।।
मन रह-रह के मेरा लगता घबराया है।
आजा मेरे मोहन मिलने की बेला है।।
देखूँ में नजर भरके, इस बात तो सावन में।।

कहूँ श्याम-श्याम जब में तो चैन हृदय पाये।
है श्याम तो राधे का जग ऐसा समझाये।।
मेरा कोई नहीं भगवन, अब तो इस जीवन में।
करदे जादू कोई वो मेरा हो जाये।।
नस-नस के बसे गिरिधर, तन-मन की धड़कन में।।

दुनियाँ में रहने वाले

दुनियाँ में रहने वाले, क्या तुझको ये खबर है।
दो दिन की जिन्दगी है, पलभर का ये सफर है।।

जीना जो चाहते थे, वो भी तो जीना पाये।
घर बार छोड़कर सब मिट्टी में जा समाये।।
कल तेरा मेरा सबका, अंजाम ये हश्र है।।

आँखों ने तेरी तुझको कितने दिखाये मुर्दे।
काधों पे तूने अपने कितने उठाये मुर्दे।।
फिर भी बना है अंधा, जब ये तेरी नजर है।।

जब मौत ने पुकारा, कुछ भी न काम आया।
जाते हुओं को देखो, कोई न रोक पाया।।
सच्चाई से तू इसकी, क्यों आज बेखबर है।।

मत नाज़ कर तू अपने, अहबाब दोस्तों पे।
लौटायेंगे, ये तूझको, बस खाक़ में मिला के।।
तेरा वहाँ न कोई, हम दम न हम सफ़र है।।

मरने से पहले तौबा, अपने गुनाह से करले।
अंजान मान जा तू, राहें खुदा पे चल दे।।
मरने के बाद तेरा, मुश्किल बहुत सफ़र है।।

राम रहिम में अन्तर नाहिं

राम रहिम में अन्तर नाहिं।
एक है वो हम सबका सांईं।।

अपने प्रभु का नाम लिये जा, अपने खुदा को याद किये जा।
सारा जग जिसकी परछाई।।

जीवन को संगीत बनाले, हरिनाम का गीत ये गाले।
काहे को अँखिया भर आई।।

दूर खड़ा है तू किस डर से, माँग ले खुद दाता के दर से।
सब ही मुरादें मन की आई।।

हिन्दु मुस्लिम, सिक्ख ईसाई, आपस में सब भाई-भाई।
एक है वो हम सब का साईं।।

भजो रे मन राम गोविन्द

भजो रे मन राम गोविन्द हरि।।

जप-तप साधन कछु नहीं लगता।
खरचत नहीं गठरी।।

सतती संपती सुख के कारण।
जाको फूल परी।।

राम नाम का सुमिरन करले।
सिर पे मौत खड़ी।।

कहत कबीर सुनो भई साधो।
ता मुख धूल परी।।

जहाँ डाल-डाल पर

जहाँ डाल–डाल पर साने की चिड़िया करती है बसेरा।
वो भारत देश है मेरा, वो भारत देश है मेरा।।
जहाँ सत्य अहिंसा और धरम का पग–पग लगता डेरा।
वो भारत देश है मेरा, वो भारत देश है मेरा।।

ये धरती वो जहाँ ऋषि–मुनि जपते प्रभु नाम की माला।
जहाँ हर बालक मोहन है और राधा एक–एक बाला।।
जहाँ सूरज सबसे पहले आकर, डाले अपना डेरा।।

जहाँ गंगा, जमुना, कृष्णा और कावेरी बहती जाये।
जहाँ उत्तर दक्षिण, पूरब–पश्चिम को अमृत पिलवाये।।
कहीं ये जल, फल और फूल उगाये केसर कहीं बिखेरा।।

अलबेलों की इस धरती के त्यौहार भी है अलबेले।
कहीं दीवाली की जगमग है, होली के कहीं मेरे।।
जहाँ राग–रंग और हसी–खुशी का, चारो ओर है डेरा।।

जहाँ आसमान से बाते करते, मंदिर और शिवाले।
किसी नगर में किसी द्वार पर, कोई न डाले ताले।।
और प्रेम की बंशी जहाँ बजाता आये शाम सबेरा।।

अम्बें तू है जगदम्बें काली

अम्बें तू है जगदम्बें काली, जय दुर्गे खप्पर वाली।
तेरे ही गुण गायें भारती, हो मैया हम सब उतारे तेरी आरती।।

तेरे जगत में भक्तजनों पर भीड़ पड़ी है भारी।
दानव दल पे टूट पड़ो माँ, करके सिंह सवारी।।
सौ–सौ सिंहों की तू बलशाली, अष्ट भुजाओं वाली।।
तेरे ही गुण गायें भारती, हो मैया........।।

माँ बेटे का सुना है जग में, बड़ा ही निर्मल नाता।
पूत कपूत भले हो लेकिन, माता नहीं कुमाता।।
मैया सबको हर्षाने वाली, अमृत बर्षाने वाली।।
मैया भँवर से उबारती, हो मैया........।।

नहीं माँगते धन और दौलत ना चाँदी ना सोना।
हम तो माँगे माँ तेरे मन में, एक छोटा सा कोना।।
मैया बर्षाने वाली, करुणा सरसाने वाली।।
भक्तों को तू ही तो उबारती।। हो मैया........।।

लोग रखते ही नहीं

लोग रखते ही नहीं, ईमान के रिश्ते।
किस तरह फूल–फले इन्सान के रिश्ते।।

ढूँढते रहते हैं अक्सर लोग दुनियाँ में।
उम्र भर अपने लिए पहचान के रिश्ते।।

आपके तर्कों में कोई तथ्य तो होता।
आपके तर्कों में है अनुमान के रिश्ते।।

आँख पर अपनी भरोसा आप रखियेगा।
आग फैलाते अक्सर, कान के रिश्ते।।

खत मुझे उसने लिखा परदेश में रहकर।
आ रहे हैं याद हिन्दुस्तान के रिश्ते।।

मोरे श्याम, घनश्याम

मोरे श्याम, घनश्याम, राधेश्याम श्याम।

अब राधेरानी दे डारो बंशी मोरी।
जो बंशी मोरे प्राण वसत है वो बंशी गई चोरी।।

काहे ये मैं गाऊँ राधे, काहे से बजाऊँ।
काहे से मिलाऊँ, गैया घेरी।।

मुख से तुम गाओ, कान्हा कर से बजाओ।
लकुटी से लाओ गैया घेरी।।

मीरा के प्रभु गिरिधर नागर।
बंशी लेकर छोड़ी।।

कभी न बिसरू राम को

कभी न बिसरू राम को, चाहे दुनियाँ बिसरी जाये।
सब अर्पण उस नाम को, भवसागर पार लगाये।।

वो ही सांचा मीत है, वो ही तारन हार।
इस जग में है कुछ नहीं, झूठा सब व्यवहार।।
चिर संगी मेरा राम है, वो ही प्रीत जगाये।।

सहज भजु हरिनाम को, तजूँ जगत सो नेग।
अपना कोई है नहीं अपनी सगी न देह।।
सब कुछ दीन्हा राम को, अन्तर अलख जगाये।।

तू ही दाता तू ही खिवैया, और कहीं क्यों जाऊँ।
तेरे चरण ही मथुरा काशी, तुझको शीश नवाऊँ।।
तेरा दर्शन करके भगवन, जनम मरण मिट जाये।।

तू राम भजन कर प्राणी

तू राम भजन कर प्राणी, तेरी दो दिन की जिन्दगानी।

यह काया है बादल छाया, मूरख मन तू क्यों भरमाया।
उड़ जायेगा स्वांस का पंछी, फिर क्या आनी-जानी।।

स्वजन सनेही सुख के संगी, दुनियाँ देखी है बदुरंगी।
नाच रहा है काल शीश पर, चेतर अभिमानी।।

जिन राम नाम गुण गाया, उनको लगे न दुःख की छाया।
निर्धन का धन राम नाम ही, मैं हूँ राम दिवानी।।

जीवन के दिन चार है

जीवन के दिन चार है पगले जीवन के दिन चार।
क्या करना है कब करना है, करले सोच विचार।।

चार दिनों की जीवन छाया, छोड़के जाना है धनमाया।
कौन अपना कौन पराया, कौन किसका यार।।

एक खिलौना बनकर आये, और तमाशा बनकर आये।
हम क्या यहाँ पे लेके आये, जिन्दगी लाये उधार।।

कुछ भी नहीं है इस भक्ति में, कुछ न समझ तू अपने जी।
मिल नादां सब मिट्टी में, हो जा तू तैयार।।

भाग्य में अपने कल क्या होगा, आज घटी तो कल क्या होगा।
इस पल क्या उस पल क्या होगा, पल नहीं एतबार।।

प्रभु जी तुम बिन

प्रभु जी तुम बिन कौन सहारा, कौन है पालन हारा।।
काली रातें उजियारे बिन, सब है महिमा तेरी।
और कहीं अब जाऊँ न भगवान, तुझमें श्रद्धा मेरी।।
राह दिखाई तूने मुझको, छाया जब अंधियारा।।
कल क्या होगा जानूँ न मैं, सब कुछ तुझपे छोड़ा।
तूने मुझको पास बिठाया, जब सबने मुख मोड़ा।।
तू ही सच्चा मीत कहाये, बेगाना जग सारा।।
दु:ख सुख मेला धूप छाँव का, आते जाते रहना।
जाने कब तक और रहेगा, इन श्वांसों का बहाना।।
तूने उसको दिया सहारा, जिसने तूझे पुकारा।।

हमें कौन पूछता था तेरी

हमें कौन पूछता था, तेरी बंदगी से पहले।
मैं तुझे ही ढूँढता था, इस जिन्दगी से पहले।।

मैं था खाक का एक जर्रा, और क्या थी मेरी हस्ती।
मैं थपेड़े खा रहा था, जैसे भँवर में कस्ती।।
दर-दर भटक रहा था, तेरी बंदगी से पहले।।

मैं था इस तरह जहां में, जैसे सीप खाली होती।
मेरी खुल गई किस्मत, तुने भर दिये हैं मोती।।
मेरा कौन आसरा था, तेरी बंदगी से पहले।।

यूँ तो है जहां में लाखो, तेरे जैसा कौन होगा।
जैसे तू है दरिया रहमत, भला ऐसा कौन होगा।।
कोई नाता जिन्दगी में, तेरी बंदगी से पहले।।

तू मेहरबां हुआ तो, सारा जग मेहरबां है।
यह जमीं भी मेहरबां है, आसमां भी मेहरबां है।।
मैं खुदा तलक जुदा था, तेरी बंदगी से पहले।।

तेरी शान सबसे ऊँची, व हस्ती व कमाल है।
भक्ति तेरी तुझे ही चाहुँ, यह दास का ख्वाब है।।
ना यह गीत ना स्वर था, तेरी बंदगी से पहले।।

राम दशरथ के घर जन्में

राम दशरथ के घर जन्में, घराना हो तो ऐसा हो।
लोक दर्शन को चल आये, सुहाना हो तो ऐसा हो।।

यज्ञ के काम करने को मुनीश्वर ले गये बन में।
उड़ाये शीश दैत्यन के निशाना हो तो ऐसा हो।।
धनुष हो जायकर तोड़ा जनक राजधानी में।
भूप सब मन में शरमाये, लजाना हो तो ऐसा।।

पिता की मानकर आज्ञा, राम वनको चले जब ही।
न छोड़ा संग सीता ने, जनाना हो तो ऐसा हो।।
सिय को ले गया रावण, बनाकर भेष जोगी का।
कराया नाश सब अपना, दिवाना हो तो ऐसा हो।।

प्रीत सुग्रीव से करके, गिराया बाण से बाली।
दिलाई नार फिर उसकी, याराना हो तो ऐसा हो।।
गये हनुमान सीता की खबर लेने को लंका में।
जला करके नगर आये, सियाना हो तो ऐसा हो।।

बाँध सेतु समुन्दर में, उतारा पार सेना को।
मिटाया वंश रावण का, हराना हो तो ऐसा हो।।
राज देकर विभिषण को, अयोध्या लौटकर आये।
वो ब्रह्मनंद बल अपना, दिखाना हो तो ऐसा हो।।

उद्धार करो भगवान

उद्धार करो भगवान, तुम्हरी शरण पड़े।
भवपार करो भगवान, तुम्हरी शरण पड़े।।

कैसे तेरा नाम जो ध्याये, कैसी तुम्हरी लगन लगाते।
हृदय जगा दो ज्ञान, तुम्हरी शरण पड़े।।

पंथमती की सुन-सुन बातें, द्वार तेरे तक पहुँच न पाते।।
भटके बीच जहान, तुम्हरी शरण पड़े।।

तू ही श्यामल कृष्ण मुरारी, राम तुम्हीं गणपति त्रिपुरारी।
तुम्हीं बने हनुमान, तुम्हरी शरण पड़े।।

ऐसी अन्तर ज्योति जगाना, हम दीनों को शरण जगाना।
हे प्रभु दयानिधान, तुम्हरी शरण पड़े।।

जब होगा सच्चा प्यार

जब होगा सच्चा प्यार, तुमको मिले कन्हैया।।

तन-मन अर्पण कर दो, संकट प्रभो आप सम्भालो।
तन मन कर कुरबान।। तुमको मिले कन्हैया।।

विषयों से तू मन को हटाले, श्याम सुन्दर का दर्शन पाले।
पहले मन को सुधार।। तुमको मिले कन्हैया।।

जो तू याद करे दिख राती, श्याम सुन्दर तेरा जीवन साथी।
प्रेम के साथ पुकार।। तुमको मिले कन्हैया।।

चली जा रही है

चली जा रही है, उमर धीरे-धीरे,
गुजरता हमारा सफल धीरे-धीरे।
बचपन भी बीता जवानी भी बीती,
हो रहा बुढ़ापे का असर धीरे-धीरे।।

ना आँखों से दिखता, ना कानों सुनता।
काले पे सफेदी चढ़ी धीरे-धीरे।।
ना हाथों में बल है, ना पावों में ताकत,
झुकी जा रही है कमर धीरे-धीरे।।

मुख में ना दांत है, ना जिह्वा में दम है,
बोली में फरक भी पड़ा धीरे-धीरे।
बास की घोड़ी पे तुझको चढ़ाकर,
ले चले मरघट पे तुझे धीरे-धीरे।।

जिन्हके हृदय हरिनाम बसे

जिन्हके हृदय हरिनाम बसे, तिन्ह और का नाम लिया न लिया।
जिनके द्वारे पे गंग बहे, तिन्ह कूपा का मीर पिया न पिया।।

जिन काम किया परमारथ का।
तिन्ह हाथ से दान दिया न दिया।।

जिन्हके घर एक सपूत भयो, तिन्ह लाख कपूत भया न भयो।
जिन्ह मात-पिता की सेवा करी, तिन्ह तीरथ कृत किया न किया।
तुलसी दास विचार किया, कपटी को मीत किया न किया।।

नाम जप की न टूटे लड़ी

नाम जप की न टूटे लड़ी, राम जपले घड़ी दो घड़ी।
जिन्दगी का भरोसा न ही जानें, क्या हो अगली घड़ी।।

उस मंदिर में झुकना भी क्या, जिसकी चौखट पे सजदा नहीं।
वो दुबारा भी दुवारा नहीं, जिस मन में ओ श्रद्धा नहीं।।
कण-कण में बसे है हरि।। राम जपले घड़ी दो घड़ी।।

उन राहों से चलना भी क्या, जिसकी कोई भी मंजिल नहीं।
वो किस्ती भी किस्ती नहीं, जिसका कोई भी सहिल नहीं।।
यह द्वार है बिल्कुल सही।। राम जपले घड़ी दो घड़ी।।

सौ सुखों से जो एक सुख मिले, उस सुख में भी तू है दुःखी।
सच्चा सुख है हरिनाम में, यह बात है बिल्कुल सही।।
जिन्दगी है दुःखो से भरी।। राम जपले घड़ी दो घड़ी।।

मन लग जा प्रभु के

मन लग जा प्रभु के चरण धीरे-धीरे।
चरण धीरे-धीरे धरण धीरे-धीरे।।
विषय वासना को तू मन से हटाले।
लगाले प्रभु से लगन धीरे-धीरे।।
नहीं संग साथी, न ही अन्त तेरा।
तो देगा सहारा भजन धीरे-धीरे।।
करो सच्ची प्रीति तो, रघुवर सिया से।
तो हट जाये माया, भरम धीरे-धीरे।।
कहे तुलसी मुड़ जाये मन हरि शरण में।
तो छुट जाये आवागमन धीरे-धीरे।।

हम तो दाता तेरे दर

हम तो दाता तेरे दर पर आ गये।
गम भुलाकर के भी आँसू आ गये।।

जो तुझे मंजूर है होगा वही।
लेकिन होठो पे फसाने आ गये।।

जिन्दगी एक आस बनकर रह गई।
तेरे बन्दे बे सहारे रह गये।।

माफ करदो या सजा दो हे प्रभो।
अपनी करनी की सजा हम पा गये।।

याद जिसने भी किया दिल से तुम्हें।
उसकी बिगड़ी को बनाने आ गये।।

घुंघट के पट खोल रे

घुंघट के पट खोल रे तोहे पिया मिलेंगे।

घट–घट में तोरे सांई बसत है।
कटुक वचन मत बोल रे।। तोहे पिया मिलेंगे।।

धन–दौलत का गर्व न कीजै,
झूठा इनका मोह रे।। तोहे पिया मिलेंगे।।

सुने मंदिर दिया जलाकर।
आसन में मत डोल रे।। तोहे पिया मिलेंगे।।

एक दिन तो इस जग से

एक दिन तो इस जग से, सबको ही जाना है।
फिर क्यों तेरा-मेरा, जब जग ही बसेरा है।।
केवल है दो दिन का।।

काहे भटकता है तेरा मेरा, एक माटी का ठेला है तेरा मन।
बूँद पड़े गल जाये, सूरज भी ढल जाये।।
रोशनी जो दिन-दिन का।।

हैं फूल खिले डाली पे मगर, उनको भी कांटे चुभते है पर।
कहीं फूल तो हैं कांटे, प्रभु ने है सबको बांटे।।
सुख-दुःख हर पल का।।

छुपके करे तू गुनाह मगर, लेकिन है उसकी तुझपे नज़र।
उससे नहीं छुपता है, सारा हाल लिखता ह।
तेरे हर एक दिन का।।

हर पल बदलता रहता जहां, पहले जो थे वो अब है कहाँ।
ये जो जिन्दगानी है, किस्सा और कहानी है।।
बीते हुये कल का।।

कोई ऐसा सुन्दर जग में

कोई ऐसा सुन्दर जग में काम किये जा।
नाम लिये जा तू हरि नाम लिये।।

धन के पीछे सदा जो मचलता है।
जीते जी वो नरक में भटकता है।।
माया में जो फंसा, काल उसपे हंसा।
फंसके यम जाल में वो तड़पता है।।

कोठी बंगला यही पे रह जायेगा।
हाथ खाली ही तू जग से जायेगा।।
है ये बात सही आज है कल नहीं।
क्या है तेरा तू जिसपे इतराता है।।

पल–पल बुझता हुआ तू दीपक है।
तुझे औरों को सताने का क्या हक है।।
झूठा जग का ये धन, तेरा माटी का तन।
फिर किसके लिए तू संवरता है।।

ओम नमः सिवाय

ओम नमः सिवाय तू जपले मन।
शीश पे गंगा गले भुजंगा भाल, त्रिषुंड़ सजाये हैं।
मन मंदिर में अपने जो देखा, शिवजी मेरे पधारे हैं।।

नित हाथ जोड़कर नमन करूँ, आराध्य देव का ध्यान करूँ।
मेरे सिर पे शिव का हाथ रहे, मैं अपना जीवन धन्य करूँ।।
जय-जय शंकर जय शिवशंकर, नाम की अलख जगाये हैं।।

क्यूँ मनवा भटके दर-दर, दानी है मेरे शिव शंकर।
तू उनके नाम को भजले रे, बिन माँगे सब कुछ दे शंकर।।
जय दीनानाथ जय भोलेनाथ, शिवभक्ति का दीप जलाये हैं।।

अभिषेक मैं शिव का करता हूँ, श्रद्धाजल अर्पित करता हूँ।
भावों केक बेल पत्र चढ़ाकर, भक्ति को समर्पित करता हूँ।।
हे उपामति, कैलाशपति, तुझमें ही ध्यान लगाये हैं।।

माँ बाप का दिल ना

माँ बाप का दिल ना तुम यूँ दुखाओ।
बुरे कर्म करके ना, उनको रूलाओ।।

खुद भूखे रहकर के, तुमको खिलाया।
उँगली पकड़कर, चलना सिखाया।।
ना तुम याद उनकी, दिल से भुलाओ।।

संस्कारों से जीवन को सींचा जिन्होंने।
तुम को पढ़ाया लिखाया उन्होंने।।
तुम होस से कितना उनको सताओ।।

अहसां कभी भी न, उतरेगा उनका।
जनमों जनम तक ऋणि है जिनका।।
सेवा से उनकी ये कर्ज चुकाओ।।

हर पल जो तेरी बलायें थे लेते।
आँखों का तारा जो तुमको थे कहते।।
उनकी खुशी के न दीपक बुझाओ।।

तुम भी तो एक दिन माँ बात बनोगे।
औलाद से जो अपनी दुःख ये सहोगे।।
गुजरेगी तुम पर क्या सोचो बताओ।।

हरेक जिद को तेरी, था दिल से लगाया।
तेरी गलतियों को जिन्होंने भुलाया।।
उन्हें प्यार के पालने में झुलाओ।।

जो ठुकराओगे अपने माँ बात को तुम।
नरक में भी स्थान पाओगे न तुम।।
यही भेद जीवन का सबको बताओ।।

मन शिव में ऐसे रमा है

मन शिव में ऐसे रमा है, ये भूल गये हम कहाँ हैं।
सारा जग शिवमय दिखता है, सारा जग शिवमय दिखता है।।
अम्बर शिव धरती उमा है।।

जब ध्यान में आते हैं शिवजी। मुझे अद्‌भूत शांति मिलती है।
मैं दिखला नहीं समता जग को, जो मन में ज्योति जलती है।।
जब भूल कोई हो जाती है, शिव करते मुझे क्षमा है।।

शिव भक्ति का आनन्द मधुर, कोई वर्णन कर न पाते हैं।
ये वो ही जाने भक्त यहाँ जो, शम्भुमय हो जाते हैं।।
जैसी मूरत मन में दिखती है, उसकी न कोई उषमा है।।

शिव की उदारता अति महान, जो पूजे वो पा जाते हैं।
जिसपे हो शिव शम्भु की कृपा, वे प्राणी अमर हो जाते हैं।।
भक्तों के हेतु बन बैठे शिव पाषाण की एक प्रतिमा है।।

दुनियाँ चले ना श्रीराम के

दुनियाँ चले ना श्रीराम के बिना।
रामजी चले ना हनुमान के बिना।।
जब से रामायण पढ़ ली है, एक बात हमने समझली है।
रावण मरे ना श्रीराम के बिना, लंका जरे ना हनुमान के बिना।।
सीता हरण की कहानी सुनो, बनवारी मेरी जुबानी सुनो।
वापिस आवे न श्रीराम के बिना, पता चले ना हनुमान बिना।।
लक्ष्मण का बचना मुश्किल था, कौन बूटी लाने के काबिल था।
लक्ष्मण बचे ना श्रीराम के बिना, बूटी आवे ना हनुमान के बिना।।
बैठे सिंहासन पै श्रीराम जी, चरणों में बैठे हैं हनुमान जी।
मुक्ति पावैं ना श्रीराम बिना, भक्ति पावै ना हनुमान के बिना।।

मुझे मोह और माया से

मुझे मोह और माया से, शिवजी उबार लो।
शरणागति देकर प्रभु जी, तुम मुझको तार लो।।
जय उमानाथ, जय विश्वेश्वर, जय नागेश्वर जय २

ठुकराती है सारी दुनियाँ, नाथ मैं भक्त तुम्हारा हूँ।
दीन जानकर दया करो प्रभु, मैं जीवन से हारा हूँ।।
मेरी श्रद्धा के सुमन भाव को, शिव स्वीकार लो।।

नहीं सुनोगे विनती हमारी, कौन सुनेगा फिर शम्भु।
दयावान नहीं दया करोगे, तो कौन करेगा शिव शम्भु।।
मैं तर जाऊँ मेरे भोले, जीवन संवार लो।।

शिव तुम ही शक्ति के स्वामी, तन में मेरे शक्ति दो।
मैं चरणों में शीश झुकाऊँ, मन में मेरे भक्ति दो।।
जीने के आधार खो गये, शिव आधार दो।।

साँसों का क्या भरोसा

साँसो का क्या भरोसा, रूक जाये कब कहाँ पर।
कर जाओ काम ऐसा, हो शान इस जहां पर।।

मत हँस कभी किसी पे, न सता कभी किसी को।
ना जाने कल को तेरा क्या हाल हो यहाँ पर।।

जो हंस जैसा जीवन, चाहता है यह बसर तू।
कर ले गुणों की खेती, तर जाएगा ये जीवन।।

कर कर्म इतना ऊँचा बुलन्दियों को छुले।
इज़्जत से नाम तेरा, आ जाये हर जुबा पर।।

शिक्षा पे तेरे जिसने, सद्‌गुरु अमल किया।
पहुँचा है वो जगत में, रहमत के आसमां पर।।

नहीं देखता करनी अपनी

नहीं देखता करनी अपनी करम वा देता दोष।
माया में बौराया तुझको, कब आयेगा होश रे।।

जिसने तीनों लोक बनाया, दुनियाँ को चमकाया।
जिसने सूरज चाँद सितारो को नभ में लहराया।।
कर देता वह नहीं की चंचल, धारा को खामाश रे।।

जनम दिया जो जग में तुझको, स्वांस दिया अनमोल रे।
घमण्ड में तू चूर हुआ है, अब तो आँखे खोल रे।।
रोम-रोम में बसा है तेरे मान प्रभु का कोस रे।।

दीन-दु:खी का दु:ख पहँचाकर, मत ले आह गरीब की।
जाने कौन कहाँ मिट जाये, रेखा तेरे नसीब की।।
सुख देकर दुसरे को देखो, मिलता है संतोष रे।।

जैसा करम करेगा जो फल पायेगा भगवान से।
अटल सत्य यह जान के भी तुम मधुर बने अजान रे।।
मिलेगा तुझको परमधाम जब रहोगे तुम निर्दोष रे।।

कितना बड़ा है मूर्ख मनुज जाल बिछाके।
अपने ही आप बंधवाय जंजीर लगाके।।
भूल प्रभु को नश्वर संसार में आके।
जायेगा कहाँ भागकर कहे हरि से आपके।।

मन में खोट भरी और

मन में खोट भरी और बाहर हरि।
फिर मंदिर में जाने से क्या फायदा।।
मैल मन का न धोया बदन धो लिया।
फिर गंगा नहाने से क्या फायदा।।

मन में मूरत प्रभु की उतारी नहीं,
है सबसे बड़ा तो भिखारी वही।।
धन-दौलत वस्तु क्यों गुमान करे।
जब संग ही न जाये तो क्या फायदा।।

तू रोज रामायण है पढ़ता मगर।
व्यर्थ है पढ़के मन न उतारी अगर।।
ना माने पिता माँ का कहना जो तू।
फिर रामायण चढ़ने से क्या फायदा।।

उपदेश तो अच्छे तू देता फिरे।
और करता काम तू सदा ही बुरे।।
पहले खुद पर करो तुम अमल बाद में।
ज्ञान दूजे को देने का है फायदा।।

तीर्थों पे गया तू मगर मन तेरा।
काम का तुने डोला था जिसपे डेरा।।
मन धाम जो सबसे बड़ा न किया।
चारो धामों में जाने से क्या फायदा।।

ये वो दर है जहाँ

ये वो दर है जहाँ, तकदीरें बदल जाती है।
होनी अनहोनी, घड़ियों में बदल जाती है।।
जिसके सर पे सदा बजता है काल का डंडा।
उसे जीवन मिले, उसमें है नहीं कोई सजा।।
सजा शूली की कांटो में बदला जाती है।।
यहाँ दुःख की भरी दुनियाँ में चैन न पाये।
अगर भटका हुआ भले से इधर आ जाये।।
डगमगाती हुई नैया भी सम्भल जाती है।।
इसी दर को मिली बक्शीश है क्या से क्या करदे।
पशु से इसां इसां से देवता कर दो।।
जिन्दगी-जिन्दगी के साँचे में ढल जाती है।।

मैया कृपा करदो

मैया कृपा करदो, झोली मेरी भरदो।
तेरी कृपा का हम सदा, गुण गान करेंगे।।
तेरा ध्यान धरेंगे।।
भक्तों की करती हरदम रखवाली हो।
हर संकट को पलभर में, तुम टाली हो।।
संकट क्यों न तुम पर भला अभिमान करेंगे।।
मेरी विनति सुनकर मत ठुकरा देना।
अपना बालक जान मुझे अपना लेना।।
हरदम तुम्हारी सेवा में हम प्राण करेंगे।।
दृष्टि दया भक्तों में, माँ अब तो करदो।
अपने भक्तों की मैया, झोली भरदो।।
हरदम तुम्हारे नाम का गुणगान करेंगे।।

अरे द्वारपालों

अरे द्वारपालों, कन्हैया से कहदो,
कि दर पे सुदामा गरीब आ गया है।
भटकते-भटकते ना जाने कहाँ से,
तुम्हारे महल के करीब आ गया है।।

न सर पे है पगड़ी, ना तन पे है जामा,
बता दो कन्हैया से नाम है सुदामा।
बस एक बार मोहन से जाकर के कह दो,
कि मिलने सखा बदनसीब आ गया है।।

सुनते ही दौड़े, चले आये मोहन,
लगाया गले से सुदामा को मोहन।
हुआ रूक्मणी को बहुत ही अचम्भा,
ये मेहमान कैसा, अजीब आ गया है।।

सिंहासन पे अपने सुदामा बिठाये,
चरण आँसुओं से श्याम धुलाये।
न घबराओ प्यारे जरा भी सुदामा,
खुशी का सका तेरे करीब आ गया है।।

देदि हमें वरदान हे मैया

देदि हमें वरदान हे मैया, देदि हमें वरदान हे मैया।
तोहरी महिमा सब केहु जाने, गावे वेद पुराण।।
जीवन नैया केहु न खेवइया, नैया रूकल मझधार में।
सद्बुद्धि के वनि पतवार तू, कई द हमें बेड़ापार।।
आदि शक्ति तू जगजननि मैया, रूप अनेक हर युग में।
दूर्गा, काली और गायत्री, सबके शक्ति समान।।
विश्व जगत में हलचल मचलवा, युद्ध कहीं तूफान हो।
सबके जीवन संकट में बा, ना कौनों आधार।।
धूप, दीप लेई पूजन खातिर, तुहरे दुअरिया अइली हो।
हर भक्तन पर किरपा कइके, सबके कर उद्धार।।

मुक्तक–

देवों वाली माता के चरणों में, जे भी ध्यान लगावेला।
आयु और विद्या धन दौलत, बिन माँगे सब पावेला।।

जनम से कोई छोटे न बड़वा

जनम से कोई छोटे न बड़वा, सबके गले लगावा।
जाति–पाँति के भेद भुलादे, बिछुड़न के अपनावा।।
भैया तोहरा के के युग निर्माणी, जुबानी बतिया या रखिहा।। भैया..
पुण्य करम से ही समाज में होखेला विभाजन।
गीता जी उपदेश सिखावत सब बनिनिय सनातन।। भैया..।।
ये हमरा के डसलेवा हो, नागकरण के तोड़ा।
जग कुटुम्बी ओके आपन, इविधान अब जोड़ा।। भैया..।।
युग–युग से जे गिरल लोगवा, निहुरी के उठावा।
हरनी का अब हमको बानी, जिकरा के समझावा।। भैया..।।

घर-घर के भूत भाग

घर–घर के भूत भाग, जईहें हो (भैया) तनि हवन कराल।।

हवन कराल भभूति लगाल,
सूतल बुद्धि के पल में जगाल।
दिशा सुगन्धित हो जईहें हो।। भैया तनि.... ।।

रोग भाग जईहें सुख–सम्पति अईहें,
अकाल मिट जईहें अनाज खूब अईहें।
बादल भी पानी बरसईहें हो।। भैया तनि.... ।।

जग से काया निर्मल हो जाई,
प्रेमवा में सब कुछ मिलल हो भाई।
स्वार्थ भाव मिट जईहें हो।। भैया तनि.... ।।

लड़िकन में सद्गुण के बिया लगाल,
घरवा में बैठल स्वर्ग बुलाल।
सुख–शांति घर भर में अईहें हो।। भैया तनि.... ।।

हरदम झुकाई माथा

हरदम झुकाई माथा, मंदिर में आके, बुद्धि बढ़ा द हमार।
गायत्री माता पूतवा के इहे वा पुकार।।

मईया घेरले वा आके, माय मोह के बाजार।
मईया कईलो न जाला, पूजा औ अर्चना तोहार।।
जनम-जनम की मैली चदरिया, बढ़ गईले गठरी के भार।।

मईया सरस्वती, लक्ष्मी, काली, वा नमवा तोहार।
मईया ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र पूजिले चरणिया तोहार।।
पार्वती, सीता मईया और अनुसूईया, रूकमणी कईली गुहार।।

मईया मनवा से झाँकी ले, सुन्दर मुरती तोहार।
मईया निर्मल बना द, वाणी और हृदय हमार।।
संसार सागर से सबके उबारेलु, हमरो बेड़ो कर द पार।।

मईया अचरा में ले ल, रोवे कपूतवा तोहार।
मईया अमृत पिला द, माया से हमके ल उबार।।
कुछो त नइखें जो तोहके चढ़ाई, स्वीकार अँसुवन के धार।।

जे जे दुनिया में आइल बा

जे जे दुनिया में आइल बा, उ जइबे करी।
जइसन कइले बा कमाई, वइसन पईबे करी।।

राजा, रानी, पण्डित, ज्ञानी, योगी या पुजारी।
नारी पुरूष चाहे, धनिक आ भिखारी।।
एक दिन आई काल सबहि के, खइबे करी।।

विधि के विधान अइसन, उबरी न कोई।
काटि पाई उहे इहवा, जे जे जवन बोई।।
कर्जा लेके आइलवा उ, सधईबे करी।।

काँच-काँच बँसवा के, डोलिया बनाइके।
लेई जैहं ललकी, चदरिया ओढ़ाई के।।
लोगवा मरघट तक, पहुँचइबे करी।।

माई, बाप, बेटा, बेटी, भाई भौजाई।
महल खजाना सब, इहें रही जाई।।
प्रेम गाई-गाई गीतिया, सुनइबे करी।।

केहू ना काम आई

केहू ना काम आईऽऽऽ, तब राम काम अइहै।
मुँह फेरली सभेत–२, आपन ऊहें कहइहेंऽऽऽ।।

मेवा मलाई छोड़ के, बिदुर के साग खइलें।
भव भाव के भिखारी, शिवरी के बेर खइलें।।
जब नाँव ई फँसी त–२, ओह पार ऊ लगईहें।।

गणिका सदन कसाई, ओइसन पापिन के तरलें।
मूरले वो ग्राह जल में, गजराज के उबरलें।।
ओसहीं जो तू बोलईबा–२, तग नंगे पाँव अइहें।।

सुन टेर प्रहलाद के भइले, उधम बुखारी।
मड़ई सुदामा जी के, झटसे बनल अटारी।।
उनके भरोसा कारा–२, कई ताला ओ उठइहें।।

पाँचो पति के सोझा, ए बस भइल ऊ नारी।
द्रौपदी के ऊ सहारा, बनले बढ़ाके साड़ी।।
दुलिहा भरथ ना राम के, बिगड़ल ऊहे बनइहें।।

आज थाल ल तू

आज थामल तू, ज्ञान के मशाल भइया।

एक हाथ माला धर, एक हाथ भाला।
बड़ा नदी में मिलाव, छोट-छोट नाला।।
तवे छूटी माया के, जंजाल भइया।।

चल घर-घर घूमि, अलख जगाव।
अज्ञानी राक्षस के, देश से भगाव।।
ना त करी देश के, कंगाल भइया।।

धर्म के गिराव नाहीं एहके बचाव।
सच्चा रूप धर्म के सबके बताव।।
छोड़ कपट धूर्तता के, चाल भइया।।

देवता के पैसा से खरीद मत भाई।
देवता के आड़ लेके कर मत कमाई।।
आज क्रुद्ध भइले, महाकाल भइया।।

ऋषि, मुनि कर्म कइले जवन उहे कर्म कर।
गायत्री जग करके सद्ज्ञान भर।।
मोहन करीहें तत्काल भइया।।

आवाज दे रहल बा

नवहन के ई जमाना, आवाज दे रहल बा।
ई वक्त के फसाना, आवाज दे रहल बा।।

आजाद देश जइसन, बुझात नइखे कतहुँ।
दिल आ दिमाग ओइसन, देखात नइखे कतहूँ।।
उ शहीद फिर से तोहके, आवाज दे रहल बा।।

बदलल चलन स्वदेशी, जाला सोचो बदल हो।
अपना संस्कृति में भी, देख होता दखल हो।।
बलिदान उ गीतिया, आवाज दे रहल बा।।

बा आजादी के उ पुतरी, टिकल तोहरे पर।
तोहरे लिखल उ गाथा, हवे ओकरे पर।।
उ जोश के खजाना, आवाज दे रहल बा।।

अब मँहगा ई आजादी, बचइब एके तू ही।
देव-संस्कृति के डंका, बजइब अब तू ही।।
महाकाल के निशाना, आवाज दे रहल बा।।

शरण लगाले मइया

शरण लगाले मइया, शरण लगाले मइया, शरण लगाले।
हम बालक नादान हो, मइया शरण लगाले।।

अक्षत चन्दन मइया, और धूप बाती।
गइया के घीवा मइया, जले दिन राती।।
गले में पहुनाऊँ, पुष्पहार हो, मइया शरण लगाले।।

नित्य सबेरे मइया, ध्यान लगाऊँ।
आँचल में तेरे मइया, सब सुख पाऊँ।।
स्वीकारो पूजाके थाला हो, मइया शरण लगाले।।

जिन्दगनियाँ बितवला तू

काहे जिन्दगनियाँ बितवला तू, सोई-सोई के।।

बाप, महतारी के, बात न मनाल।
मेहरी के गोड़वा, पियल धोई-धोई के।।

साधु सन्त के, सेवा न कइल।
वैश्यन के धनवा दिहला, ढोई-ढोई के।।

बालापन बीतल ह, बिति जवनिया।
आई बुढ़ापा चलबो, टोई-टोई के।।

कहत कबीर, सुनो भाई साधो।
नरक में जइब एक दिन रोई-रोई के।।

काहे चितवा से हमरा के

काहे चितवा से हमरा के, बिसार दिहला।
काहे नजरि से हमरा के, उतार दिहला।।

हम तो चाहब न कबहूँ, केहू के बुरा।
फिर भी मीलल न हमसे कबौ सुक्रिया।।
केतने भक्तन के भव से, उबार दिहला।।

सिन्धु में ग्राह गज के, डुबावत रहे।
आ, बचाई हरि जी, पुकारत रहे।।
मारि ग्राह के गज के, उबारि दिहला।।

सारी नारी के अनारी, उतारत रहे।
वो लाचारी में तोहके, पुकारत रहे।।
आके अबला की सरिया सँवार दिहला।।

अपनी भक्ति में मन

अपनी भक्ति में मन के लगावा मैया।।
राग, द्वेष मन से दूर भगाद।
बुद्धि हमार मैया निर्मल बनाद।।
पाप रहिया से हमके बचाव मैया।।
लवकुश, ध्रुव, प्रहलाद बनाद।
विकल मानवता के त्रास मिटाद।।
प्रेम गंगा के धारा बहाव मैया।।
भाई-भाई के मन में प्रेम बसाव।
एकता और समता के मंत्र सिखाद।।
नेह अपनों के संग में बढ़ाव मैया।।

कौनों ठगवा नगरिया

कौनों ठगवा नगरिया लूटलस हो।।

चन्दन खाट के बनल खटोलवा।
तापर दुलहिन सूतल हो।।
आओ री सखी मोरी माँग संवारो।
दुलहा मोसे रूठल हो।।

यमराज आये पलंग चढ़ि बैठे।
नैना आँसू छूटल हो।
चारि जने मिली खाट उठाइहैं।
चहूँ दिसि धूआँ उठल हो।।

कहत कबीर सुनो भाई साधो।
जग से नाता छूटल हो।।

अबली उमर मोरी बारी रे

अबही उमर मोरी बारी रे, आईल गवनवा की सारी।।

साजि समाज पिया ले आये, आउर कहरवा चारी।
बभना बेदर्दी अँचरा पकई के, जोड़त गाँठ हमारी।।
सखी सभ गावत गारी रे,आईल गवनवा की सारी।।

विधि गति वाम कछु समझि परत ना, बैरनि भई महतारी।
रोई-रोई मोरी पोछत अखियाँ, घर से देत निकारी।।
भई सभको हम भारी रे, आई गवनवा की सारी।।

गवना कराय पिया ले जाले, इत उत बाट निहारी।
छूटत गाँव नगर सो नाता, छूटत महल अटारी।।
करम गति टारे ना टारी रे, आई गवनवा की सारी।।

नदिया किनार बलम मोर रसिया, दीन्ह घूँघट पट टारी।
थर-थराय तन काँपन लागे, केहू न देत ओहारी।।
पिया लेके आये ओहारी रे, आई गवनवा की सारी।।

राम रसिया मोरे

राम रसिया मोरे मन बसिया।
रुचि-रुचि भोग लगाओ रसिया।।
दुर्योधन को मेवा त्यागो।
साग बिदुर घर खायो रसिया।।
शबरी के बेरे सुदामा के तन्दुल।
माँगि-माँगि हरि खायो रसिया।।
सीता माता के मन में बस गयो।
औरन को हरषायो रसिया।।
जो मोरे राम को भोग लगावे।
छूट जाये लख चौरसिया।।
ध्यान रहे प्रभु राम चरण में।
हृदय कमल में रहो बसिया।।

हम त दिया से

हम त दिया से दिया जराईब, अब त दियरी पर्व मनाइब।।
दूर करब अन्हार अनीति के, नयका युग के लाइब।।

मन के भरम जगत के अंधरिया, ना रहिंहें बेचारा।
ज्ञान और विज्ञान जुटाइब, नयका युग के सजाइल।।

बैर गरीबी न रहिंहे, छल रितिया के हटाइब।
प्रेम प्रितिया से लोगवा के, भेदवा के मिटाइब।।

स्वार्थ और आलस्य भगाइब, ना रहिंहे निराशा।
शांति और सहयोग बनाके, धरती स्वर्ग बनाईब।।

भाई हो कैसे जइब

भाई हो कैसे जइब गुरु के नगरिया।
मैली मोर चदरिया वा ना।।

एकाएक धनी बिसराईल, दूजा दुविधा में लिपटाईल।
तीना तीन गुनन के, लागल वा वजरिया।।

चौथा चार वेद पढ़ि आये, पंचम प्रेम भक्ति नहीं पाये।
छट्ठा छलबल से, भरल वा कोठरिया।।

सप्तमा शब्द सूरत नहीं पाये, अठमा आलस में अलसाये।
नवमाँ मुक्ति भईले, गर्भ के भीतरिया।।

दहला दसो द्वार जब जइवै, जमके पहरा दैखी डरेवै।
एग्यरमा एक पहर न कइल, ज्ञान विचरिया।।

बरमा बार–बार चेतावे, कहत कबीर दास समझाबे।
तेहरतमां जायके परि, जम घर के कचहरिया।।

माई हो कैसे जइब

माई के दुधवा से बढ़के कोई मिठाई नइखे।
ऊ अभागा बाटे जेकरा, घर में माई नइखे।।

माई केजे भाई को कोई करे अपमान हो।
ओकरा न होई भईया कबो कल्याण हो।।
वैसन पुतवा से बढ़के, कोई कसाई नइखे।।

माई केजे भाई कोई रखेला ध्यान हो।
ओकरो त पूरा होई सारा अरमान हो।।
माई के अचरा से बढ़के कोई रजाई नइखे।।

सब मिली कर भइया सविता के ध्यान हो।
गुरु जी से माँग भइया इहें वरदान हो।।
माई के दुआ से बढ़के कोई देवाई नइखे।।

लोगवा काहे खातिर

लोगवा काहे खातिर, डाकू चोर बे ईमान बनलबा।
जबकि देहिया चार दिन के, मेहमान बनलबा।।

लाख करवा तू कमाई, संग में कुछओं न आई।
संग में जाय खातिर, कफन के विधान बनलबा।।

लाख करवा तू गरुर, एक दिन जय बा तू जरूर।
तोरा जाय खातिर बांस, बिमान बनलबा।।

लाख करव तू पाप, सब होई जैतो साफ।
तारो तरे खातिर प्रज्ञा, और पुराण बनलबा।।

देशवा उजार अंगरेज ले

देशवा उजार अंगरेज ले गई ल हो, अंगरेज ले गईल।
अब बाकी जौन बचलु, दहेज ले गईल।।

लरिकन के मोल होला, लाखो और हजार में।
दूलहा बिकतवा, दहेज के बजार में।।
रूप गुन चाँदी के, चंगेज ले गईल हो।।

लरकिन के लदी जाला, अंग–अंग गहना।
अतनो परावेला, दहेज के उलहना।।
खेत के सनेस, हस्तावेज ले गईल हो।।

रनियांउ हिरनियां सुरुज के किरनियां।
हाथ के अंगोरवा, दहेज के अंगनियां।।
बाब एक काहे के, करेज ले गईल हो।।

अंखियन में नाचे फूल, बगियन के चेहरा।
माई बाप रोये बहिनी, भारी–भारी अंखियाँ।।
पपिहा कहा न भेज, भेज ले गईल हो।।

करीले हम एतने अरजिया

करीले हम एतने अरजिया हे,
हमरा के ज्ञान दीह मैया।
ज्ञान द हु मैया हे, वरदान द हु मैया।।

धवल आसन हे मैया, हंस के सवरिया।
कमले आसन संग, वेद महतरिया।।
बानी रउरा बीना के बजईया हे।।

कईसे करी हम अर्जी, शैली न भाषा।
सुर में संगीत भर द, तोहरे बा आशा।।
बानी दउरा नईया के खेवईया हे।।

दास तिहारो हे मैया, दिल के दुअरिया।
फेरी दहु आहें मैया, हम पे नज़रिया।।
ना त होई जगवा में हँसईया हे।।

भूलल भटकल से

भूलल भटकल से, करीले तू प्यार भैया।
मन में भरीले तू, क्रान्ति के विचार भैया।।
नइखे रहेला जवानी, देशवां मांगतबा कुर्बानी।
नइखे कुछो बा ठिकाना, करतब करके गाव गाना।।
दीन दुःखियो से करील, तू प्यार भैया।।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, काहे लड़तर भाई।
सबके हिम्मत सब से ताकत, आज देशवा अपन मांगत।।
सब में एकता के करील, संचार भैया।।
सब मिलकर ला युग निर्माण, आज आइलबा तूफान।
युग पुरुष के बारे बिचार, बांट भाई–भाई में प्यार।।
मानव धरम खातिर, हो जा सब तैयार।।

करीले हम एतने अरजिया

करीले हम एतने अरजिया हे,
हमरा के ज्ञान दीह मैया।
ज्ञान द हु मैया हे, वरदान द हु मैया।।
धवल आसन हे मैया, हंस के सवरिया।
कमले आसन संग, वेद महतरिया।।
बानी रउरा बीना के बजईया हे।।
कईसे करी हम अर्जी, शैली न भाषा।
सुर में संगीत भर द, तोहरे बा आशा।।
बानी दउरा नईया के खेवईया हे।।
दास तिहारो हे मैया, दिल के दुअरिया।
फेरी दहु आहें मैया, हम पे नज़रिया।।
ना त होई जगवा में हँसईया हे।।

भईया गायत्री के महिमा

भईया गायत्री के महिमा बा महान, कि दुनियां जाने ना।
माया में भूलाइल वारू ना।।

करार कैलू हरि गाईब, जहिया।
जहिया गरभ से बहरी आईब।।
यार छोड़ लू बांकि, देवरा पर लुभाई वारू।।

रहिना ऐसने जवानी उतरि।
मुँह के एक दिन पानी।।
पिया के ध्यान न धैयलू बसना में अझुराइल वारू।।

एह दुनियाँ के चाल दुरंगी।
होला केहू ना केहू के संगी।।
खाली जैबू जैसे, खीलीये हाथ आइल वारू।।

नाता एहे दुनियाँ से तोड़।
नेहिया राम सिया से जोड़।।
असली छोड़िके काहे नकली में भूलायल वारू।।

पगड़ी इजतिया केहू

पगड़ी इजरिया केहू उतारि गैले भैया हो।
सजना जुआरि हमके हारि गैले भैया हो।।

केसिया खुलल न खुलल बाटे साड़ी।
बाबा और दाता सब देखिहें उघारी।।
सभवा के मतिया-२ केहू मारि गैले भैया हो।।

जेकरा तरफ कब सुरुज न ताके।
चन्दा भी देख-देखे बहुत लजा के।।
वोकर मुँहमा अन्हरो-२ निहारि गैले भैया।।

साड़ी बनी आजा तीनों लोकवन के राजा।
हार जा दुहशासन साड़ी अतना बढ़ा जा।।
हारि गैले भैया हो।।

टेर सुनी देर नाहि कैलन कन्हाई।
दिह ले अकसवा से चुनरि बढ़ाई।।
द्रौपदी हँसली बेरी-२ आरे हारि गैले भैया हो।।

भजन बिना चैन न आये

भजन बिना, चैन न आये राम।
केहू न जाने कब हो जाई, एह जीवन के शाम।।

मोह-माया के आश त पगले होहीं कबहिं न पूरी।
करते-करते भजन प्रभु के मिट जाई सब दूरी।।
सब भगतन के साथ में लेके, ले ल प्रभु के नाम।।

प्रभु नाम के अमरीत प्याला, शाम सबेरे पील।
रोग द्वेष से मुक्त हो जैब, सुख के जीवन जील।।
भगति करब, तब बनि जाई, बिगड़ल तोहर काम।।

ए जे भजन कइल भगवन के, ओकर नाव किनारा।
भजन बिनाई व्यर्थ जीवनवां, ईश्वर एक सहारा।।
भज भगत तू सीता राम के या बोल घनश्याम।।

गुरु जी के महिमा

गुरु जी के महिमा बड़ी भारी, गावत नर–नारी।
माता जी के महिमा बड़ी भारी, गावत नर–नारी।।

आँवलखेड़ा में जनम लिहले, मथुरा में तप कइले।
शांतिकुंज के स्वर्ग बनवले, गावत नर–नारी।।

दानकुँवरी के लाल रहले, गायत्री के प्राण रहले।
प्रज्ञा पुत्र के मार्ग दर्शक बनले, गावत नर–नारी।।

दायें में श्रीराम शर्मा, बायें माता भगवती देवी।
बीचवा में बइसल गायत्री माता, गावत नर–नारी।।

पन्द्रह साल के उमर रहले, गायत्री के ध्यान कइले।
प्रकट भइले हिमगिरी वासी, गावत नर–नारी।।

पैंतीस सौ साहित्य लिखनले, उपनिषद् गीता ज्ञान दिहले।
चारों वेद के कइले उद्धार, गावत नर–नारी।।

३६ सौ शक्तिपीठ बनवले, गायत्री के प्राण फुँकते।
जन जागरण के केन्द्र बनवले, गावत नर–नारी।।

गुरुजी त शंकर रहले, माताजी ज पार्वती।
प्रज्ञा बनके युग बदलते, गावत नर–नारी।।

करब ना भजनिया

करब ना भजनिया बीती उलझन में जीवनीयां।
तहिया का करब, तहिया तू का करब।।

बचपन बीते खेलकूद में, जीवन के न ज्ञान रहे।
जिनगी जब नादान रहे, हर घर-घर में सामान रहे।।
बीतला जवनियां, दहिया हो जाई पुरनियां।।

थक जईब तू जहिया तहिया, भैया दूर हटा दीहें।
बात न पूछी मेहरी बेटवा, तोहरा के ठुकरा दीहें।।
गाँव नगरिया, दुनियाँ बैरी हो जाई सोहरनियां।।

ब्रह्मानन्द जहिया तोहरा के चार कहरिया ले जईहें।
गाँव नगरिया रोई, गंगा घाट ले साथी पहुँचहें।।
लहकी जब अगिनियाँ, बानहल जर जईब कफनियाँ।।

ओम भूर्भुवः स्वः गावे

ओम भूर्भुवः स्वः गावे, मैया सारा जहानियां।
सारा जहानियां मैया, सारा जहानियां।।

केरे चढ़ावे मैया अक्षत चंदनियां।
केरे चढ़ावे पनियां, मैया सारा जहानियां।।

पंडित चढ़ावे मैया, अक्षत चंदनियां।
पुजारिन चढ़ावे पनियां, मैया सारा जहानियां।।

केरे गावे प्रभु के भजनियां।
केरे गावे निर्गुणियां, मैया सारा जहानियां।।

सबे रे गवैया गाये, प्रभु के भजनियां।
हम गावौ निर्गुणियां, मैया सारा जहानियां।।

केरे मांगे मैया, धन सम्पत्तियां।
केरे मांगे दर्शनियां, मैया सारा जहानियां।।

पंडित पुजारी मांगे, धन सम्पत्तियां।
हम मांगे दर्शनियां, मैया सारा जहानियां।।

जब तोहे करवो मैया के भजनियां।
तब होवे दर्शनियां, मैया सारा जहानियां।।

भईया गायत्री के महिमा

भईया गायत्री के महिमा बा महान, कि दुनियां जाने ना।
भईया देली सबका के दरशन, कि दुनियां जाने ना।।

युग-युगवा से बस ऋषि मुनि ध्यावे।
वेद पुराण सब पार नहीं पावे।।
सब देव लोग करे गुणगान।। कि दुनियां... ।।

नारी पुरुष चाहे राजा या भिखारी।
चारो वरण के लोगवा समे अधिकारी।।
भईया सबके करे ली कल्याण।। कि दुनियां... ।।

धरती पर जब-जब बदेला बुराई।
देली जगदम्बा केहु संत के पेठाई।।
तब-तब होला नवयुग के निर्माण।। कि दुनियां... ।।

श्रीराम शर्मा जी के इहे बा संदेश बा।
व्यक्ति जब सुधरी हेत सुधरी ई देश बा।।
तबे बदल जाई सगरो जहान।। कि दुनियां... ।।

गायत्री माँ की आरती

जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता।
सत मारग पर हमें चलाओ, जो है सुख दाता॥

आदि शक्ति तुम अलख-निरंजन जग पालन कर्त्री।
दुःख-शोक-भय-क्लेश-कलह-दारिद्र्य-दैन्यहर्त्री॥

ब्रह्मरूपिणीं प्रणत पालिनी, जगत धातृ अम्बे।
भव-भयहारी, जन-हितकारी, सुखदा जगदम्बे॥

भय-हारिणि, भव-तारिणि, अनघे, अज आनन्द राशी।
अविकारी, अघहरी, अविचलित, अमले, अविनाशी॥

कामधेनु सत-चित- आनन्दा, जय गङ्गा-गीता।
सविता की शाश्वती, शक्ति तुम, सावित्री-सीता॥

ऋग्, यजु, साम, अथर्व प्रणयिनी, प्रणव महामहिमे।
कुण्डलिनी सहस्त्रार सुषुम्ना, शोभा गुण-गरिमे॥

स्वाहा, स्वधा, शची, ब्रह्माणी, राधा, रुद्राणी।
जय सतरूपा, वाणी, विद्या, कमला, कल्याणी॥

जननी हम हैं दीन, हीन, दुःख, दारिद के घेरे।
यदपि कुटिल, कपटी कपूत तऊ बालक हैं तेरे॥

स्नेह-सनी करुणामयि माता! चरण शरण दीजै।
बिलख रहे हम शिशु सुत तेरे, दया दृष्टि कीजै॥

काम-क्रोध-मद-लोभ-दम्भ-दुर्भाव-द्वेष हरिये।
शुद्ध बुद्धि निष्पाप हृदय, मन को पवित्र करिये॥

तुम समर्थ सब भाँति तारिणी, तुष्टि-पुष्टि त्राता।
सत मारग पर हमें चलाओ, जो है सुखदाता॥
जयति जय गायत्री माता। जयति जय गायत्री माता॥

मन तड़पत हरि दरशन

(राग–मालकोष)

मन तड़पत हरि दरशन को आज।
मोरे तुम बिन बिगड़े सगरे काज।।
हो..बिनति करत हुँ रखियो लाज।।
मन तड़पत हरि दरशन को आज।

तुम्हरी द्वार का मैं हुँ जोगी।
हमरि ओर नज़र कब होगी।।
सुन मोरे व्याकुल मन का बाज।
मन तड़पत हरि दरशन को आज।।

बिन गुरु ज्ञान कहाँ से पाऊँ।
दीजौ दान हरि गुण गाऊँ।।
सब गुनिजन पे तुम्हारा राज।।
मन तड़पत हरि दरशन को आज।।

मुरली मनोहर आश न तोड़ो,
दु:ख भजन मोरा साथ न छोडो।
मोहे दर्शन भिक्षा दे दो आज, दे दो आज।।

कौन श्याम खोजे रे

कौन श्याम खोजे रे ये बावरिया।
एक श्याम दशरथ के ललना,एक बन कृष्ण कन्हैया।।
कौन श्याम खोजे रे ये बावरिया।।

एक श्याम धनु भंज जनकपुर,इक वन नाग नथैया।।
कौन श्याम खोजे रे ये बावरिया।।

एक श्याम लंकापति तारे, इक वन कंस मरैया।।
कौन श्याम खोजे रे ये बावरिया।।

एक श्याम वन में मृग मारे, इक वन रास रचैया।।
कौन श्याम खोजे रे ये बावरिया।।

कवि सोमेश कहे,श्याम सुन्दर को,नैनन बीच बसैया।।
कौन श्याम खोजे रे ये बावरिया।।

मुक्तक-
त्रेता के श्रीराम चन्द्रजी, द्वापर के घनश्याम।
नारायण अवतार दानों, दोनों के रंग शाम।।
किस अवतारी शाम को, बोले रे प्यारी अँखियाँ।
राम श्याम हे, श्याम राम हे, एक रूप दो अखियाँ।।

सूरज निकलने से पहले

सूरज निकलने से पहले, दुनियाँ के जगने से पहले।
गायें हम गीत तुम्हारा, दो ऐसा वरदा भोले।।

शक्ति दो हम जहाँ जायें, तेरा ही यश हम फैलायें।
अब ना रहे भूखा कोई, घर-घर सुख पहुँचायें।।
सपने वही हो सुन्हले, दो ऐसा वरदा भोले।।

मन की मुरादें हो पुरी, आशा रहे ना अधूरी।
साँसों में तु ही बसा है, तेरी कृपा है जरुरी।।
माना में मनरु पहले, दो ऐसा वरदा भोले।।

सबका ही शुभ करने वाले, सब को दिशा देने वाले।
भक्तों का कष्ट मिटाकर, जगहित विष पीने वाले।।
बचालें तू गिरने से पहले, दो ऐसा वरदा भोले।।

भजन बिना नर बावरे

भजन बिना नर बावरे तुने, हीरा जनम गँवाया।
कभी न आया सन्त शरण में, कभी न हरि गुण गाया।।

ये संसार फूल सेमल का, शोभा देख लुभाया।
रह गये मरमिट बैल के माही, भोर भयो उठ धाया।।

ये जग है माया की लोभी, ममता महल बनायो।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, हक नहीं कुछ भाया।।

राधे राधे जपाकरो

राधे-राधे जपाकरो, कृष्ण नाम रस पिया करो।

राधे देगी तुम को शक्ति, मिलेगी तुमको कृष्ण की भक्ति।
राधे, कृपा दृष्टि बरसाया करो, कृष्ण नाम रस पिया करो।।

राधे रानी, है महारानी, महिमा उनकी सब जग जानी।
राधे, चरणों में प्रित किया करो, कृष्ण नाम रस पिया करो।।

भोली-भाली, सीधी-साधी, वो है सबको न्यारी -न्यारी।
राधे, चरणों में जाया करो, कृष्ण नाम रस पिया करो।।

राधे झुमे शरण तिहारी, तुम्हारे कृपा से मिले बिहारी।
राधे, राधे शरण में जाया करो, कृष्ण नाम रस पिया करो।।

ब्रज मण्डल में गूँज है राधे, कृष्ण की वो है प्राण आराधे।
ऐसी, जुगल छबि पे बलि जाया करो, कृष्ण नाम रस पिया करो।।

चलो मन जायें घर अपने

चलो मन जायें, घर अपने।
इस परदेश में, वो परभेष में, क्यों परदेशी रहे ऐ।।

आँखें जो भाये वो कोरा सपना।
सारे पराये हैं, कोई न अपना।।
ऐसे झुठे प्रेम में पड़ना, भुल में काहें जिऐ ऐ।।

साँचे प्रेम की ज्योति जलाके।
मन सुन मेरी, कान लगाके।।
पाप और पुण्य की, गठरी उठाके, अपने राह चले ऐ।।

नाम जपन क्यों छोड़ दिया

नाम जपन क्यों छोड़ दिया रे।
क्रोध न छोड़ा, झुठ न छोड़ा,
सत्य वचन क्यों छोड़ दिया रे।।

कौड़ी को तु खूब संभाला, धन दौलत को खूब संभाला।
असली रतन क्यों छोड़ दिया रे।।

जिन्ही सुमिरन से अति सुख पायो।
सो सुमिरन क्यों छोड़ दिया रे।।

हो ले एक भगवान भरोसे।
तन-मन-धन क्यों छोड़ दिया रे।।

नन्दलाल गोपाल दया करके

नन्दलाल गोपाल दया करके, भव सागर पार उतार मुझे।
विकराल विशाल तरंगों में, करूणा करके कर पार मुझे।।

पर सेवा पर उपकार नहीं, सत्संग सृजन सत्कार नहीं।
न विनय,विवेक न विमल हृदय, मुझमें काई सुचि संस्कार नहीं।।
तुझसे विनति भी कर पाऊँ, इतना भी कहाँ अधिकार मुझे।।

मैं दुर्जन और दयामय तू, मैं कृपण कुमति करूणामय तू।
मैं वंचित हूँ तु वत्सल है, मैं आश्रित हूँ और आश्रय तू।।
मैं अधम-अधम उद्धारक तू, इस नाते ही नाथ उभार मुझे।।

मैं विकृत हुँ प्रभु धन्य है तू, मैं अणु हूँ नाथ अनन्य है तू।
तज तुझको भला मैं किधर जाऊँ, शरणागत हूँ मैं शरण्य है तू।।
मैं विषमय तू विषहारी है, मत कर रे अस्वीकार मुझे।।

मैं पतित-पतितजन प्राण है तू, मैं त्रस्त त्रिषित और त्राण है तू।
कहीं और न ठौर ठिकाना मुझे, मैं भोग मुक्त भगवान है तू।।
मैं तेरे पथ का रज कण हूँ, रहने दे अपने द्वार मुझे।।

भजो रे मन राम नाम सुखदायी

भजो रे मन राम नाम सुखदायी।
राम नाम के दो अक्षर में, सब सुख शान्ति समाई।।

राम नाम को लेते मुख से, भव सागर तर जाई।
राम नाम भजले मन मूरख, बनत–बनत बन जाई।।

राम नाम के कारण तर गई, दासी मीराबाई।
गणिका, गिद्ध, अजामिल तारे, तारे सदन कसाई।।

झुठे बैरन में शबरी के, भर गई कौन मिठाई।
मीठे समझ के प्रभु नहीं खाए, प्रेम की थी अधिकाई।।

मन रे तु काहे न धीर धरे

मन रे तु काहे न धीर धरे।
वो निर्मोही मोह न जाने, जिनका मोह करे।।

इस जीवन की चढ़ती ढलती, धूप को किसी ने बाँधा।
रंग पे किसी ने पेहरा डाले, रूप को किसी ने बाँधा।।
काहे ये यतन करे..............।।

उतना ही उपकार समझ तुम, जितना साथ निभादे।
जनम–मरण का मैल है सपना, ये सपना बिसरादे।।
काहे न संग मरे ....।।

प्रेम मुदित की औषधि

प्रेम मुदित मन से कहो राम-राम-राम।।

पाप कटे दुःख मिटे, लेत राम-नाम।
भव समुन्दर सुखद नाव एक राम नाम।।
श्री राम राम राम............

परम शान्ति सुख निधान, दिव्य नाम।
निराधार को आधार, एक राम नाम।।
श्री राम राम राम............

महादेव सत्त जपत, दिव्य राम नाम।
काशी मरत मुक्ति करत, कहत राम नाम।।
श्री राम राम राम............

माता-पिता बन्धु सखा, सब ही राम नाम।
भक्त जनन जीवन धन, एक राम नाम।।
श्री राम राम राम............

मुक्तक-राम नाम की औषधि, भरे कन्ठ से खाया।
अंग पीड़ा व्यापे नहीं, महारोग मिट जाए।।

।। तुलसी, सूर, कबीर एवं रहीम के दोहे ।।

संत समागम हरि कथा–तुलसी दुर्लभ दोय।
सुत, दारा, औ लक्ष्मी–पापी घर भी होय॥

तीरथ नहाये एक फल–संत मिले फल चार।
सद्‌गुरु मिले अनन्त फल–कहत कबीर विचार॥

तुलसी–तुलसी सब करे–तुलसी बन की घास।
हो गई कृपा राम की–बन गये तुलसीदास॥

चाकी–चाकी सब कहे–कीला कहे न कोय।
जो किले से बँधा रहे–बाल न बाँका होय॥

विपत्ति बुढ़ापा आपदा–सब काहू को होय।
ज्ञानी काटे ज्ञान से–मूरख काटे रोय॥

बाजीगर का बाँदरा–ऐसा मन पहचान।
बाँध ले ओ तो खेल है–नहीं तो आफत जान॥

क्षमा बड़न को चाहिए–छोटन को उत्पात।
कहे रहीम प्रभु का घट्यो–जो भृगु मारी लात॥

सरस्वती भण्डार की–बड़ी अपूरब बात।
ज्यों ज्यों खरचें त्यों बढ़े–बिन खरचे घट जाय॥

दया, धर्म, सतसंग नहीं–नहीं राम का नाम।
नेम, व्रत, पूजा, नहीं–वो काया किस काम॥

श्वांस श्वांस में राम जप–वृथा श्वांस मत खोय।
क्या जाने ये स्वांस ही–तेरा अंतिम होय॥

रात गँवाई सोयकर–दिवस गँवाया खाय।
हीरा जन्म अन्मोल था–कौड़ी बदले जाय॥

चार वेद छ:शास्त्र में–बात मिली है दोय।
सुख दीने सुख होत है–दु:ख दीने दु:ख होय॥

राम नाम मणि दीप धर–जेहि देहरि द्वार।
तुलसी भीतर बाहरी–जो चाहेसि उजियार॥

राम जपे कीर्तन करे–भजन करे भरपूर।
जब तक मन निर्मल नहिं–मुक्ति कोसों दूर॥

मन के भीतर ही छिपी–स्वर्ग सुखों की खान।
मन के भीतर धधकती–ज्वाला नरक समान॥

कबिरा मन निर्मल भया–जैसा गंगा नीर।
पाछे पाछे हरि फिरे–कहत कबीर कबीर॥

मानुष जन्म अमोल है–मिले न दूजी बार।
पक्का फल जो गिर गया–लगे न दूजी बार॥

पर सेवा ही पुण्य है–पर पीड़न ही पाप।
पुण्य किये सुख ही मिले–पाप किये संताप॥

कस्तूरी कुण्डलि बसै–मृग ढूँढे बन माँहि।
ऐसे घट–घट राम हैं–दुनियाँ देखे नाँहि॥

तुलसी इस संसार में–सबसे मिलिये धाय।
ना जाने किस रुप में–नारायण मिल जाय॥

माटी कहे कुम्हार से–तू क्या रौदें मोय।
एक दिन ऐसा आयेगा–मैं रौदूँगी तोय॥

आया है सो जायेगा–राजा रंक फकीर।
एक सिंहासन चढ़ि, चले–एक बंधे जंजीर॥

दुर्बल को न सताइये–जाकी मोटी हाय।
बिना जीव की श्वाँस से–सार भसम हो जाय॥

चलती चक्की देख के–दिया कबिरा रोय।
दो पाटन के बीच में–साबुत बचा न कोय॥

हाड़ जले ज्यूँ लाकड़ी–केश जले ज्यूँ घांस।
सब जग जलता देख के–भया कबीर उदास॥

रहिमन बड़न को देख के–लघु न दीजे डार।
जहाँ काम आये सुई–काह करे तलवार॥

रहिमन धागा प्रेम का–मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ये ना जुड़े–जुड़े गाँठ पड़ जाय॥

राम राम रटते रहो–जब लग घट में प्रान।
कबहुँक दीनदयाल के–भनक पड़ेगी कान॥

छिप्यो न दिखे पारधी, बिध्यों न दिखे बाण।
मैं तने पूँछू बीरबल, किस विधि त्यागे प्राण॥

जल थोड़ो नेहो घणो, बिंध्या प्रीत का बाण।
तू पी तू पी करन में, दोनों त्यागे प्राण॥

ऐसी दैनी देन ज्यूँ, कित सीखें हो सैन।
ज्यों ज्यों कर ऊँचो करो, त्यों त्यों नीचे नैन॥

देनहार कोई और है, देत रहत दिन रैन।
लोग भरम हम पर करे, तासो नीचे नैन॥

कबीरा यह मन लालची, समझे नहीं गँवार।
भजन करन को आलसी, भोजन को हुसियार॥

चिड़ि चोंच भर ले गई, नदी न घटियो नीर।
दान दिये धन ना घटे, कह गये दास कबीर॥

नाम लियो तिन सब कियो,सकल शास्त्र को भेद।
बिना नाम करके गयो, पढ़-पढ़ चारो वेद॥

नाम है तीरथ नाम व्रत, नाम शम्भु को काम।
एको अक्सर तत्वभर, जिव्हा जप श्रीराम॥

राम नाम रटते रहो, धरि राखो मन धीर।
एक दिन काज सुधारेंगे, कृपा सिन्धु रघुवीर॥

दीन दु:खी असहाय का, करो सदा उपचार।
जानो वेद पुराण का, यही एक है सार॥

दो बातन को भूल मत, जो चाहत कल्याण।
नारायण एक मौत को, दूजे श्री भगवान॥

आठ पहर चौसठ घरी, करो प्रभु का ध्यान।
ना जाने कौनी घरी, आई मिलैं भगवान॥

राम राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम।
तनु परिहरि रघुबर बिरह, राउ गयऊ सुरधाम॥

मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपते, क्या लागत है मोर॥

बहुत गई थोरी रही, नारयण अब चेत।
काल चिरैया चुगि रही, निसिदिन आयु खेत॥

धन, यौवन यों जायेंगे, जा विधि उड़त कपूर।
नारायण गोपाल भज, क्यों चाटे लग धूर॥

संत सभा झाँकी नहीं, कियो न हरि गुन गान।
नारायण फिर कौन विधि, तू चाहत कल्यान॥

जो चाहो हरि भजन को, तजो विषय विष मान।
हिय में रहे न एक संग, भोग और भगवान॥

सुख के माथे सिल परे, नाम हरि का जाय।
बलिहारी वा दुःख की, पल-पल नाम रटाय॥

गुरु मुख वचन प्रतीति कर, हर्ष, शोक बिसराय।
दया, क्षमा सत शील गहि, अमर लोक को जाय॥

प्रीतम प्रीति बढ़ाय के, दूर देश मति जाय।
हम तुम एकहि नगर बसि, भीख माँग नित खाय।

कबीर मुख से राम कहु, मनहि राम को ध्यान।
राम का सुमिरन ध्यान नित, यहि भक्ति यहि ज्ञान॥

मुस्करा के जिनको ग़म का, ज़हर पीना आ गया।
यह हकीकत है जहाँ में, उनको जीना आ गया॥

काम अच्छे कर लो, अच्छी जिन्दगानी आपकी।
लागे भी सीखें सबक, सुनकर कहानी आपकी॥

बात बड़ी है अटपटी, झटपट लखे न कोय।
जो मन की खटपट मिटे, चटपट दर्शन होय॥

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय॥

क्षण-क्षण-क्षण-क्षण बीतते,जीवन बीता जाय।
क्षण-क्षण का उपयोग कर, बीता क्षण न आय॥

माला फेरत जुग भया, गया न मनका फेर।
कर का मनका डारि दे, मन-का मनका फेर॥

माला तो कर में फिरे, जीभ फिरे मुख माँहि।
मनुवा तो चहुँ दिशि फिरे, ऐसो सुमिरन नाँहि॥

इकट्ठे गर जहाँ के ज़र, सभी मुल्कों के माली थे।
सिकन्दर जब गया दुनियाँ से, दोनों हाथ खाली थे॥

अस्थि चर्म मम देह यह, तामें ऐसी प्रीति।
जो होती रघुवीर संग, तो होती भवभीति॥

आछे दिन पाछे गये, कियो न हरि सों हेत।
अब पछताये होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत॥

पंच तत्वों का खिलौना, कब न जाने टूट जाये।
प्राण का सम्बन्ध तन से, कब न जाने छूट जाये॥

पति के लिए 'चरित्र'
संतान के लिए 'ममता'
समाज के लिए 'शील'
विश्व के लिए 'दया'
जीव मात्र के लिए 'करूणा'
संजोने वाली कृति का नाम नारी है।